चन्द्रकान्ता

बाबू देवकीनन्दन खत्री

चन्द्रकान्ता

बाबू देवकीनन्दन खत्री

भाग-1

संध्या का समय है, कुछ-कुछ सूर्य दिखाई दे रहा है, सुनसान मैदान में एक पहाड़ी के नीचे दो शख्स बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह एक पत्थर की चट्टान पर बैठे आपस में कुछ बातें कर रहे हैं।

बीरेन्द्रसिंह की आयु इक्कीस या बाईस वर्ष की होगी। यह नौगढ़ के राजा सुरेन्द्रसिंह का इकलौता पुत्र है। तेजसिंह राजा सुरेन्द्रसिंह के दीवान जीतसिंह का प्यारा लड़का और कुँवर बीरेन्द्रसिंह का दिली दोस्त, बड़ा चालाक और फुर्तीला, कमर में सिर्फ खंजर बाँधे, बगल में बटुआ लटकाये, हाथ में एक कमन्द लिए बड़ी तेजी के साथ चारों तरफ देखता और इनसे बातें करता जाता है।

कुंवर बीरेन्द्रसिंह कह रहे हैं, 'भाई तेजसिंह, देखो मुहब्बत भी क्या बुरी बला है जिसने इस दर्जे तक पहुँचा दिया। कई दफे तुम विजयगढ़ से राजकुमारी चन्द्रकान्ता की चिटठी मेरे पास लाये और मेरी चिट्ठी उन तक पहुँचाई जिससे साफ मालूम होता है कि जितनी मुहब्बत मैं चन्द्रकान्ता से रखता हूँ उतना ही चन्द्रकान्ता मुझसे रखती है, और हमारे राज्य से उसके राज्य के बीच सिर्फ पाँच कोस का फासला भी है। इस खत में भी चन्द्रकान्ता ने यही लिखा है कि 'जिस तरह बने जल्द मिल जाओ।'

तेजसिंह ने उत्तर दिया, 'मैं हर तरह से आपको वहाँ ले जा सकता हूँ मगर एक तो आजकल चन्द्रकान्ता के पिता महाराज जयसिंह ने महल के चारों तरफ सख्त पहरा बैठा रक्खा है, दूसरे उनके मन्त्री का लड़का क्रूरसिंह उस पर मुग्ध हो रहा है ऊपर से उसने अपने दोनों ऐयारों[1] को

---

1. ऐयार उसको कहते हैं जो हर एक फन जानता हो, शक्ल बदलना और दौड़ना उसका मुख्य काम है।

जिनका नाम नाजिमअली और अहमदखाँ है, इस बात की ताकीद कर दी है कि बराबर वे लोग महल की निगहबानी किया करें, क्योंकि आपकी मुहब्बत का हाल क्रूरसिंह और उसके ऐयारों को बखूबी मालूम हो गया है। चाहे चन्द्रकान्ता क्रूरसिंह से बहुत ही नफरत करती है और राजा भी अपनी लड़की अपने मन्त्री के लड़के को नहीं दे सकता, फिर भी उसे उम्मीद बँधी हुई है और आपकी लगावट बहुत बुरी मालूम होती है। अपने बाप के जरिये उसने महाराज जयसिंह के कान तक आपकी लगावट का हाल पहुँचा दिया है और इसी से पहरे की सख्ती हो गई है। आपको ले चलना अभी मुझे पसन्द नहीं, जब तक कि मैं वहाँ जाकर फसादियों को गिरफ्तार न कर लूँ।

'इस वक्त मैं फिर विजयगढ़ जाकर चन्द्रकान्ता और चपला से मुलाकात करता हूँ क्योंकि चपला ऐयारा और चन्द्रकान्ता की प्यारी सखी है और चन्द्रकान्ता को जान से ज्यादा मानती है। जब मैं अपने दुश्मनों की चालाकी और कार्रवाई देखकर लौटूँ तब आपको चलने के बारे में राय दूँ। कहीं ऐसा न हो कि बिना समझे-बूझे काम करके हम लोग वहाँ गिरफ्तार हो जायें।'

बीरेन्द्रसिंह, 'जो मुनासिब समझो करो, मुझको तो सिर्फ अपनी ताकत का भरोसा है लेकिन तुमको अपनी ताकत और ऐयारी दोनों का।'

तेजसिंह, 'मुझे यह भी पता लगा है कि हाल ही में क्रूरसिंह के दोनों ऐयार नाजिम और अहमद यहाँ आकर पुनः हमारे महाराज का दर्शन कर गये हैं। न मालूम किस चालाकी से आये थे? अफसोस उस वक्त मैं यहाँ न था।'

बीरेन्द्र, 'मुश्किल तो यह है कि तुम क्रूरसिंह के दोनों ऐयारों को फँसाना चाहते हो और वे लोग तुम्हारी गिरफ्तारी की फिक्र में हैं, परमेश्वर ही कुशल करे। खैर, अब तुम जाओ और जिस तरह बने चन्द्रकान्ता से मेरी मुलाकात का बन्दोबस्त करो।'

तेजसिंह फौरन उठ खड़े हुए और बीरेन्द्रसिंह को वहीं छोड़ पैदल विजयगढ़ की तरफ रवाना हुए। बीरेन्द्रसिंह भी घोड़े को दरख्त से खोल उस पर सवार हुए और अपने किले की तरफ चले गये।

☐ विजयगढ़ में क्रूरसिंह अपनी बैठक के अन्दर नाजिम और अहमद, दोनों ऐयारों, के साथ बैठा बातें कर रहा है।

क्रूर, 'देखो नाजिम, महाराज को तो यह ख्याल है कि मैं राजा होकर मंत्री के लड़के को कैसे दामाद बनाऊँ, और चन्द्रकान्ता वीरेन्द्रसिंह को चाहती है। अब कहो कि मेरा काम कैसे निकले ? अगर सोचा जाय कि चन्द्रकान्ता को लेकर भाग जाऊँ, तो कहाँ जाऊँ और कहाँ रहकर आराम करूँ ? फिर ले जाने के बाद मेरे बाप की महाराज क्या दुर्दशा करेंगे ? इससे तो यही मुनासिब होगा कि पहिले वीरेन्द्रसिंह और उसके ऐयार तेजसिंह को किसी तरह गिरफ्तार कर किसी ऐसी जगह ले जाकर खपा डाला जाय कि हजार वर्ष तक पता न लगे, और इसके बाद मौका पाकर महाराज को मारने की फिक्र की जाय, फिर तो मैं झट गद्दी का मालिक बन जाऊँगा और तब अपनी जिन्दगी में चन्द्रकान्ता से ऐश कर सकूँगा। मगर यह तो कहो कि महाराज के मरने के बाद मैं गद्दी का मालिक कैसे बनूँगा ? लोग कैसे मुझे राजा बनाएँगे ?

नाजिम, 'हमारे राजा के यहाँ मुसलमान ज्यादा हैं, उन सभी को आपकी मदद के लिए मैं राजी कर सकता हूँ और उन लोगों से कसम खिला सकता हूँ कि महाराज के बाद आपको राजा मानें, मगर शर्त यह है कि काम हो जाने पर आप भी हमारे मजहब मुसलमानी को कबूल करें ?'

'क्रूरसिंह, 'अगर ऐसा है तो तुम्हारी शर्त मैं दिलोजान से कबूल करता हूँ।'

अहमद, 'तो बस ठीक है, आप इस बात का एकरारनामा लिखकर मेरे हवाले करें, मैं सब मुसलमान भाइयों को दिखला कर उन्हें अपने साथ मिला लूँगा।'

क्रूरसिंह ने काम हो जाने पर मुसलमानी मजहब अख्तियार करने का एकरारनामा लिखकर फौरन नाजिम और अहमद के हवाले किया, जिस पर अहमद ने क्रूरसिंह से कहा, 'हम दोनों आदमियों के लिए भी एक एकरारनामा इस बात का हो जाना चाहिए कि आपके राजा होने पर हमीं दोनों वजीर मुकर्रर किये जायेंगे।'

क्रूरसिंह ने झटपट इस बात का भी एकरारनामा लिख दिया जिससे वे दोनों बहुत ही खुश हुए। इसके बाद नाजिम ने कहा, 'इस वक्त हम लोग चन्द्रकान्ता के हालचाल की खबर लेने जाते हैं।'

यह कहकर दोनों ऐयार क्रूरसिंह से विदा हुए।

☐ संध्या का समय है, चन्द्रकान्ता, चपला और चम्पा बाग में टहल रही हैं। एक तरफ बाग से सटा हुआ ऊँचा महल और दूसरी तरफ सुन्दर-सुन्दर बुर्जियाँ अपनी बहार दिखला रही हैं। चपला जो चन्द्रकान्ता की प्यारी सखी है अपने चंचल हाव-भाव के साथ चन्द्रकान्ता को संग लिए चारों ओर घूमती और तारीफ करती हुई खुशबूदार फूलों को तोड़-तोड़ कर चन्द्रकान्ता के हाथ में दे रही है मगर चन्द्रकान्ता को बीरेन्द्रसिंह की जुदाई में ये सब बातें कब अच्छी मालूम होती हैं। चन्द्रकान्ता और चपला धीरे-धीरे टहलती हुई बीच के फौवारे के पास जा निकलीं और उसकी चक्करदार टूटियों से निकलते हुए जल का तमाशा देखने लगीं।

चपला, 'न मालूम चम्पा किधर चली गई।'

चन्द्रकान्ता, 'कहीं इधर-उधर घूमती होती।'

चपला, 'दो घड़ी से ज्यादा हुआ कि हम लोगों के साथ नहीं है।'

चन्द्रकान्ता, 'देखो वह आ रही है।'

चपला, 'इस वक्त तो इसकी चाल में फ़र्क मालूम होता है।'

इतने में चम्पा ने आकर फूलों का एक गुच्छा चन्द्रकान्ता के हाथ में दिया और कहा, 'देखिये यह कैसा अच्छा गुच्छा बना लाई हूँ, अगर इस वक्त कुंवर बीरेन्द्रसिंह होते तो इसको देख मेरी कारीगरी की तारीफ करते और मुझको कुछ इनाम देते।'

बीरेन्द्रसिंह का नाम सुनते ही यकायक चन्द्रकान्ता का अजब हाल हो गया। भूली हुई बात फिर याद आ गई, कमल मुख मुरझा गया। कहने लगी, 'न मालूम विधाता ने मेरे भाग्य में क्या लिखा है? न मालूम मैंने उस जन्म में कौन ऐसे पाप किए हैं जिनके बदले यह दुःख भोगना पड़ा। देखो पिता को क्या धुन समाई है। कहते हैं कि चन्द्रकान्ता को कुंवारी रक्खूँगा। हाय बीरेन्द्र के पिता ने शादी करने के लिए कैसी-कैसी खुशामदें कीं मगर क्रूर के बाप कुपथसिंह ने उसको अपने बस में कर रक्खा है।'

एकाएक चपला ने चन्द्रकान्ता का हाथ पकड़ कर जोर से दबाया।

चपला के इशारे को समझ चन्द्रकान्ता चुप हो रही और चपला का हाथ पकड़कर फिर बाग में टहलने लगी, मगर अपना रूमाल उसी जगह जान-बूझ कर गिराती गई। थोड़ी दूर आगे बढ़कर उसने चम्पा से कहा, 'सखी देख तो फौवारे के पास कहीं मेरा रूमाल गिर पड़ा है।'

चम्पा रूमाल लेने फौवारे की तरफ चली गई तब चन्द्रकान्ता ने चपला से पूछा, 'सखी तूने बोलते समय मुझे यकायक क्यों रोका?'

चपला ने कहा, 'मेरी प्यारी सखी, मुझको चम्पा पर शक हो गया है। उसकी बातों और चितवनों से मालूम होता है कि वह असली चम्पा नहीं है।' इतने में चम्पा ने रूमाल लाकर चपला के हाथ में दिया। चपला ने चम्पा से पूछा, 'सखी, कल रात को मैंने तुझको जो कहा था सो तैंने किया?' चम्पा बोली, 'नहीं, मैं तो भूल गई।' तब चपला ने कहा, 'भला वह बात तो याद है या वह भी भूल गई?' चम्पा बोली, 'बात तो याद है।' तब फिर चपला ने कहा, 'भला दोहरा के मुझसे कह तो सही तब मैं जानूँ कि तुझे याद है।'

इस बात का जवाब न देकर चम्पा ने दूसरी बात छेड़ दी जिससे शक की जगह यकीन हो गया कि यह चम्पा नहीं है। आखिर चपला यह कहकर कि 'मैं तुझसे एक बात कहूँगी' चम्पा को एक किनारे ले गई और कुछ मामूली बातें करके बोली, 'देख तो चम्पा मेरे कान से कुछ बदबू तो नहीं आती। क्योंकि कल से कान में दर्द है!' नकली चम्पा चपला के फेर में पड़ गई और फौरन कान सूँघने लगी। चपला ने चालाकी से बेहोशी की बुकनी कान में रखकर नकली चम्पा को सुँघा दिया जिसके सूँघते ही चम्पा बेहोश होकर गिर पड़ी।

चपला ने चन्द्रकान्ता को पुकार कर कहा, 'आओ सखी अपनी चम्पा का हाल देखो।' चन्द्रकान्ता ने पास आकर चम्पा को बेहोश पड़ी हुई देख चपला से कहा, 'सखी कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारा ख्याल धोखा ही निकले और पीछे चम्पा से शरमाना पड़े!' 'नहीं ऐसा न होगा।' कह कर चपला चम्पा को पीठ पर लाद फौवारे के पास ले गई और चन्द्रकान्ता से बोली, 'तुम फौवारे से चिल्लू भर-भर पानी इसके मुँह पर डालो, मैं धोती हूँ।' चन्द्रकान्ता ने ऐसा ही किया और चपला खूब रगड़-रगड़ कर उसका मुँह धोने लगी। थोड़ी देर में चम्पा की सूरत बदल गई और साफ नाजिम की सूरत निकल आई। देखते ही चन्द्रकान्ता का चेहरा गुस्से से लाल हो गया और वह बोली, 'सखी इसने तो बड़ी बेअदबी की।'

'देख तो अब मैं क्या करती हूँ।' कहकर चपला नाजिम को फिर पीठ पर लाद बाग के कोने में ले गई जहाँ बुर्ज के नीचे एक छोटा-सा तहखाना था। उसके अन्दर बेहोश नाजिम को ले जाकर लिटा दिया और अपने ऐयारों के बटुए में से मोमबत्ती निकाल कर जलाई। एक रस्सी से नाजिम के पैर और दोनों हाथ पीठ की तरफ खूब कस कर बाँधे और डिबिया से लखलखा निकाल उसको सुँघाया जिससे नाजिम ने एक छींक

मारी और होश में आकर अपने को कैद और बेबस देखा। चपला कोड़ा लेकर खड़ी हो गई। और मारना शुरू किया।

'माफ करो, मुझसे बड़ा कसूर हुआ, अब मैं ऐसा कभी न करूँगा बल्कि इस काम का नाम भी न लूँगा!' कह कर नाजिम चिल्लाने और रोने लगा मगर चपला कब सुनती थी? वह कोड़ा जमाए ही गई और बोली, 'सब्र कर अभी तो तेरे पीठ की खुजली भी मिटी न होगी! तू यहाँ क्यों आया था? क्या बाग की हवा अच्छी मालूम हुई थी? क्या बाग की सैर को जी चाहा था? क्या तू नहीं जानता था कि चपला भी यहाँ होगी? हरामजादे के बच्चे, बेईमान, अपने बाप के कहने से तूने यह काम किया? देख मैं उसकी भी तबीयत खुश कर देती हूँ!' यह कहकर फिर मारना शुरू किया तब पूछा, 'सच बता तू कैसे यहाँ आया और चम्पा कहाँ गई?'

मार के खौफ से नाजिम को असल हाल कहना ही पड़ा। वह बोला, 'चम्पा को मैंने ही बेहोश किया था, बेहोशी की दवा छिड़क कर फूलों का गुच्छा उसके रास्ते में रख दिया जिसको सूँघकर वह बेहोश हो गई, तब मैंने उसे मालती लता के कुंज में डाल दिया और उसकी सूरत बना उसके कपड़े पहिन तुम्हारी तरफ चला आया।'

चम्पा को खोजती हुई चपला मालती लता के पास पहुँची और ढूँढ़ने लगी। देखा सचमुच चम्पा एक झाड़ी में बेहोश पड़ी है और बदन पर उसके एक कपड़ा भी नहीं है। लखलखा सुँघा कर होश में लाई और पूछा, 'क्यों मिजाज कैसा है, खा गई न धोखा!'

चम्पा ने कहा, 'मुझको क्या मालूम था कि इस समय यहाँ ऐयारी होगी? इस जगह फूलों का एक गुच्छा पड़ा था जिसको उठा कर सूँघते ही मैं बेहोश हो गई, फिर न मालूम क्या हुआ।'

वहाँ पर नाजिम के कपड़े पड़े हुए थे जिनमें से दो-एक लेकर चपला ने चम्पा का बदन ढाँका और तब यह कह के कि 'मेरे साथ आ, मैं उसे दिखलाऊँ जिसने तेरी ऐसी हालत की' चम्पा को साथ ले उस जगह आई जहाँ चन्द्रकान्ता और नाजिम थे। नाजिम की तरफ इशारा करके चपला ने चम्पा से कहा, 'देख इसी ने तेरे साथ यह भलाई की थी!' चम्पा को नाजिम की सूरत देखते ही बड़ा गुस्सा आया और वह चपला से बोली, 'बहिन अगर इजाजत दो तो मैं भी दो-चार कोड़े लगाकर अपना गुस्सा निकाल लूँ।'

चपला ने कहा, 'हाँ-हाँ, जितना जी चाहे इस मुए को जूतियाँ

लगाओ।' बस फिर क्या था, चम्पा ने मनमाने कोड़े नाजिम को लगाये, यहाँ तक कि नाजिम घबड़ा उठा और जी में कहने लगा, 'खुदा क्रूरसिंह को गारत करे जिसकी बदौलत मेरी यह हालत हुई!'

आखिरकार नाजिम को उसी तहखाने में कैद कर तीनों महल की तरफ रवाना हुई। यह छोटा-सा बाग चन्द्रकान्ता के टहलने और हवा खाने के लिए ही बनवाया गया था।

[ ] तेजसिंह बीरेन्द्रसिंह से रुखसत होकर विजयगढ़ पहुँचे और चन्द्रकान्ता से मिलने की कोशिश करने लगे, मगर कोई तरकीब न बैठी क्योंकि पहरे वाले बड़ी होशियारी से पहरा दे रहे थे।

आखिर तेजसिंह एकान्त में गये और वहाँ अपनी सूरत एक चोबदार की-सी बना महल की ड्यूटी पर पहुँचे। देखा कि बहुत से चोबदार और प्यादे बैठे पहरा दे रहे हैं। एक चोबदार से बोले, 'यार, हम भी महाराज के नौकर हैं, आज चार महीने से महाराज ने हमको अपनी अर्दली में नौकर रखा है, इस वक्त छुट्टी थी, चाँदनी रात का मजा देखने टहलने इस तरफ आ निकले, तुम लोगों को तम्बाकू पीते देख जी में आया कि चलो दो फूंक हम भी लगा लें।'

'हाँ-हाँ आइए, बैठिए, तम्बाकू पीजिए।' कहकर चोबदार और प्यादों ने हुक्का तेजसिंह के आगे रखा। तेजसिंह ने कहा, 'मैं हिन्दू हूँ, हुक्का तो नहीं पी सकता। हाँ, हाथ से जरूर पी लूंगा।' यह कह चिलम उतार ली और पीने लगे।

दो फूंक भी तम्बाकू के नहीं पीए थे कि खाँसना शुरू किया, इतना खाँसा कि थोड़ा सा पानी भी मुँह से निकाल दिया और तब कहा, 'मियाँ तुम लोग अजब कड़वा तम्बाकू पीते हो? मैं तो हमेशा सरकारी तम्बाकू पीता हूँ। महाराज के हुक्काबर्दार से दोस्ती हो गई है, वह बराबर महाराज के पीने वाले तम्बाकू में से मुझको दिया करता है, अब ऐसी आदत पड़ गई है कि सिवाय उस तम्बाकू के और कोई तम्बाकू अच्छा नहीं लगता!'

इतना कह चोबदार बने हुए तेजसिंह ने अपने बटुए में से एक चिलम तम्बाकू निकाल कर दिया और कहा, 'तुम लोग भी पीकर देख लो कि कैसा तम्बाकू है।'

भला चोबदारों ने महाराज के पीने का तम्बाकू कभी काहे को पीया

होगा। पीना क्या सपने में भी न देखा होगा। झट हाथ फैला दिया और कहा, 'लाओ भाई तुम्हारी बदौलत हम भी सरकारी तम्बाकू तो पी लें। तुम बड़े किस्मतवर हो कि महाराज के साथ रहते हो, तुम तो खूब चैन करते होगे!' यह कह नकली चोबदार (तेजसिंह) के हाथ से तम्बाकू ले लिया और खूब डबल जमाकर तेजसिंह के सामने लाए। तेजसिंह ने कहा, 'तुम लोग सुलगाओ, फिर मैं भी ले लूँगा।'

अब हुक्का गुड़गुड़ाने लगा और साथ ही गप्पें भी उड़ने लगीं।

थोड़ी ही देर में सब चोबदार और प्यादों का सर घूमने लगा, यहाँ तक कि झुकते-झुकते सब औंधे होकर गिर पड़े और बेहोश हो गये।

अब क्या था, बड़ी आसानी से तेजसिंह फाटक के अन्दर घुस गये और नजरबाग में पहुँचे। देखा कि हाथ में रोशनी लिए सामने से एक लौंडी चली आ रही है। तेजसिंह फुर्ती से पास जाकर उसके गले में कमन्द डाली और ऐसा झटका दिया कि वह चूँ तक न कर सकी और जमीन पर गिर पड़ी। तुरन्त उसे बेहोशी की बुकनी सुंघाई और जब वह बेहोश हो गई तो उसे वहाँ से उठा कर किनारे ले गए। बटुए में से सामान निकाल मोमबत्ती जलाई और सामने आइना रख अपनी सूरत उसी के जैसी बनाई, इसके बाद उसको वहीं छोड़ उसी का कपड़ा पहिन महल की तरफ रवाना हुए और वहाँ पहुँचे जहाँ चन्द्रकान्ता चपला और चम्पा दस-पाँच लौंडियों के साथ बैठी बातें कर रही थीं। लौंडी की सूरत बने हुए तेजसिंह भी एक किनारे जाकर बैठ गये।

तेजसिंह को देख चपला बोली, 'क्यों केतकी, जिस काम के लिए मैंने तुझको भेजा था क्या वह काम तू कर आई जो चुपचाप आकर बैठ रही है?'

चपला की बात सुन तेजसिंह को मालूम हो गया कि कि लौंडी को मैंने बेहोश किया है या जिसकी सूरत बनकर आया हूँ, उसका नाम केतकी है।

तेजसिंह, 'हाँ काम करने तो गई थी मगर रास्ते में एक नया तमाशा देख तुमसे कुछ कहने के लिए लौट आई हूँ।'

चपला, 'ऐसा! अच्छा तैंने क्या देखा कह?'

तेजसिंह, 'सभी को हटा दो तुम्हारे और राजकुमारी के सामने बात कह सुनाऊँ।'

सब लौंडियाँ हटा दी गईं और केवल चन्द्रकान्ता चपला और चम्पा रह गईं। अब केतकी ने हँसकर कहा, 'कुछ इनाम दो तो खुशखबरी

सुनाऊँ।'

चन्द्रकान्ता ने केतकी से कहा, 'हाँ-हाँ इनाम दूँगी, तू कह तो सही क्या खुशखबरी लाई है?'

तेजसिंह ने कहा, 'पहिले दे दो तो कहूँ नहीं तो जाती हूँ।' यह कह उठकर खड़ी हो गई।

केतकी के ये नखरे देख चपला से न रहा गया और वह बोल उठी, 'क्यों रे केतकी, आज तुझको क्या हो गया है कि ऐसी बढ़-बढ़ के बातें कर रही है। लगाऊँ दो लात उठ के!'

केतकी ने जवाब दिया, 'क्या मैं तुमसे कमजोर हूँ जो तू लात लगावेगी और मैं छोड़ दूँगी!'

अब तो चपला से न रहा गया और केतकी का झोंटा पकड़ने के लिए दौड़ी यहाँ तक कि दोनों आपुस में गुथ गईं। इत्तिफाक से चपला का हाथ नकली केतकी की छाती पर जा पड़ा जहाँ की सफ़ाई देख वह घबरा उठी और झट अलग हो गई।

नकली केतकी, '(हँसकर) क्यों, भाग क्यों गई, आओ लड़ो!''

चपला कमर से कटार निकाल सामने हुई और बोली, 'ओ ऐयार, सच बता तू कौन है नहीं तो अभी जान ले डालती हूँ!'

इसका जवाब नकली केतकी ने चपला को कुछ न दिया और बीरेन्द्र सिंह की चिट्ठी निकाल कर चन्द्रकान्ता के सामने रख दी। चपला की नजर भी इस चिट्ठी पर पड़ी और गौर से देखने लगी। बीरेन्द्रसिंह के हाथ की लिखावट देख समझ गई कि तेजसिंह हैं क्योंकि सिवाय तेजसिंह के और किसी के हाथ बीरेन्द्रसिंह कभी चिट्ठी नहीं भेजेंगे। यह सोच-समझ चपला शर्मा गई और गर्दन नीची कर चुप हो रही मगर जी में तेजसिंह की सफाई और चालाकी की तारीफ करने लगी बल्कि सच तो यह है कि तेजसिंह की मुहब्बत ने उसके दिल में जगह पकड़ ली।

चन्द्रकान्ता ने बड़ी मुहब्बत से बीरेन्द्रसिंह का खत पढ़ा और तब तेज सिंह से बातचीत करने लगी—

चन्द्र, 'क्यों तेजसिंह, उनका मिजाज तो अच्छा है?'

तेज, 'मिजाज क्या खाक अच्छा होगा? खाना-पीना सब छूट गया, रोते-रोते आंखें सूज आईं, दिन-रात तुम्हारा ध्यान है, बिना तुम्हारे मिले उनको कब आराम है। हजार समझाता हूँ मगर कौन सुनता है। कहते थे कि मैं खुद चलूंगा, किसी तरह समझा-बुझा कर यहाँ आने से रोका और कहा कि आज मुझको जाने दो। खैर किसी तरह समझ गए और

तुम्हारी चिट्ठी का जवाब देकर मुझे इधर विदा किया।'

चन्द्र, 'अफसोस तुम उनको अपने साथ न लाए, भला मैं उनका दर्शन तो कर लेती। देखो यहाँ क्रूरसिंह के दोनों ऐयारों ने इतना ऊधम मचा रखा है कि कुछ कहा नहीं जाता! पिताजी को मैं कितना रोकती और और समझाती हूँ कि क्रूरसिंह के दोनों ऐयार मेरे दुश्मन हैं मगर महाराज कुछ नहीं सुनते। कल महाराज से कहूँगी कि आप अपने क्रूरसिंह की सच्चाई को देखिए, अगर मेरे पहरे पर मुकर्रर किया ही था तो बाग के अन्दर आने की इजाजत इसे किसने दी थी?'

यह कह कर चन्द्रकान्ता ने नाजिम के गिरफ्तार होने और बाग के तहखाने में कैद करने का हाल तेजसिंह से कह सुनाया।

तेजसिंह चपला की चालाकी सुनकर हैरान हो गए और दिल में उसको प्यार करने लगे पर कुछ सोचने के बाद बोले, 'चपला ने चालाकी तो खूब की मगर धोखा खा गई।'

यह सुन चपला हैरान हो गई कि या राम मैंने क्या धोखा खाया, पर कुछ समझ में नहीं आया। आखिर न रहा गया, तेजसिंह से पूछा, 'जल्दी बताओ मैंने क्या धोखा खाया?' तेजसिंह ने कहा, 'क्या तुम इस बात को नहीं जानती थीं कि नाजिम बाग में पहुँचा तो अहमद भी जरूर आया होगा? फिर बाग ही में नाजिम को क्यों छोड़ दिया? तुमको मुनासिब था कि जब उसको गिरफ्तार ही किया था तो महल में लाकर कैद करतीं या उसी वक्त महाराज के पास भेजवा देतीं, अब जरूर अहमद नाजिम को छुड़ा ले गया होगा।'

इतनी बात सुनते ही चपला के होश उड़ गये और बहुत शर्मिन्दा होकर बोली, 'सच है, बड़ी भारी गलती हुई, इसका किसी ने खयाल न किया।'

तेजसिंह, 'और कोई क्यों ख्याल करता! तुम तो चालाक बनती हो, ऐयारा कहलाती हो, इसका ख्याल तुमको होना चाहिए कि दूसरों को? खैर जाके देखो भी तो है या नहीं।'

चपला दौड़ी हुई बाग की तरफ गई। तहखाने के पास जाते ही देखा कि दरवाजा खुला पड़ा है। बस फिर क्या था? यकीन हो गया कि नाजिम को अहमद छुड़ा ले गया। तहखाने के अन्दर जाकर देखा तो खाली पड़ा हुआ। अपनी बेवकूफी पर अफसोस करती लौट आई और बोली, 'क्या कहूँ, सचमुच अहमद नाजिम को छुड़ा ले गया।' अब तेजसिंह ने छेड़ना शुरू किया, 'बड़ी ऐयारा बनती थीं, कहती थीं हम चालाक

हैं, होशियार हैं, ये हैं वो हैं। बस एक अदने ऐयार ने नाकों दम कर डाला !'

चपला झुँझला उठी और चिढ़ कर बोली, 'चपला नाम नहीं जो अबकी दोनों को गिरफ्तार कर इसी कमरे में ला बेहिसाब जूतियाँ न लगाऊँ।'

तेजसिंह ने कहा, 'बस तुम्हारी कारीगरी देखी गई अब देखो मैं कैसे एक-एक को गिरफ्तार कर अपने शहर में ले जा के कैद करता हूँ।'

इसके बाद तेजसिंह ने अपने आने का पूरा हाल चन्द्रकान्ता और चपला से कह सुनाया और यह भी बतला दिया कि फलानी जगह पर मैं केतकी को बेहोश करके डाल आया हूँ, तुम जाकर उसे उठा लाना।

चन्द्रकान्ता ने तेजसिंह से ताकीद की कि 'दूसरे-तीसरे तुम जरूर यहाँ आया करो, तुम्हारे आने से ढाढ़स बनी रहती है।'

तेजसिंह, तब वहाँ से रवाना हो केतकी की सूरत में दरवाजे पर आये। देखा तो दो-चार प्यादे होश में आये हैं बाकी चित्त पड़े हैं, कोई औंधे पड़ा है, कोई उठा तो है मगर फिर भी झुका ही जाता है। नकली केतली ने डपट कर दरबानों से कहा, 'तुम लोग पहरा देते हो या जमीन सूँघते हो। इतनी अफीम क्यों खाते हो कि आँखें नहीं खुलतीं और सोते हो तो मुर्दों से बाजी लगाकर ! देखो मैं बड़ी रानी से कह कर तुम्हारी क्या दशा कराती हूँ !'

जो चोबदार होश में आ चुके थे, केतकी की बातें सुन कर सन्न हो गए और खुशामद करने लगे।

नकली केतकी ने कहा, 'अच्छा आज तो छोड़ देती हूँ मगर खबरदार जो फिर कभी ऐसा हुआ !' यह कहते हुए तेजसिंह बाहर निकल गये। डर के मारे किसी ने यह भी न पूछा कि केतकी तू कहाँ जा रही है ?

[ ] अहमद ने जो बाग के पेड़ पर बैठा हुआ था जब देखा कि चपला ने नाजिम को गिरफ्तार कर लिया और महल में चली गई तो सोचने लगा कि चन्द्रकान्ता चपला और चम्पा बस यही तीनों महल में गई हैं, नाजिम इनके साथ नहीं गया तो जरूर वह इस बगीचे में ही कहीं कैद होगा; यह सोच वह पेड़ से उतर इधर-उधर ढूंढ़ने लगा। जब उस तहखाने के पास पहुँचा जिसमें नाजिम कैद था तो भीतर से चिल्लाने की आवाज आई जिसे सुन उसने पहिचान लिया कि नाजिम की आवाज है। तहखाने

के किवाड़ खोल अन्दर गया, नाजिम को बँधा पा झट उसकी रस्सी खोली और तहखाने से बाहर लाकर बोला, 'चलो जल्दी, इस बगीचे के बाहर हो जायें तब सब हाल सुनें कि क्या हुआ।'

नाजिम और अहमद बगीचे के बाहर आए और चलते-चलते आपस में बातचीत करने लगे। नाजिम ने चपला के हाथ फँस जाने और कोड़ा खाने का पूरा हाल कहा।

अहमद, 'भाई नाजिम, जब तक पहिले चपला को हम लोग न पकड़ लेंगे तब तक कोई काम न होगा क्योंकि चपला बड़ी चालाक है और धीरे-धीरे चम्पा को भी तेज कर रही है। अगर वह गिरफ्तार न की जायेगी तो थोड़े ही दिनों में एक की दो हो जायेंगी यानी चम्पा भी इस काम में तेज होकर चपला का साथ देने के लायक हो जायेगी।'

नाजिम, 'ठीक है खैर आज तो कोई काम नहीं हो सकता। मुश्किल से जान बची है, कल पहिले यही काम करना है, यानी जिस तरह हो चपला को पकड़ना और ऐसी जगह छिपाना कि जहाँ पता न लगे और अपने ऊपर भी किसी को शक न हो।'

ये दोनों आपस में धीरे-धीरे बातें करते चले जा रहे थे। थोड़ी देर में जब महल के अगले दरवाजे के पास पहुँचे तो देखा कि केतकी जो कुमारी चन्द्रकान्ता की लौंडी है सामने से चली आ रही है।

तेजसिंह ने भी जो केतकी के वेष में चले आ रहे थे, नाजिम और अहमद को देखते ही पहिचान लिया और सोचने लगे कि भले मौके पर ये दोनों मिल गए हैं और अपनी भी सूरत अच्छी है, इस समय इन दोनों से कुछ खेल करना चाहिए और बन पड़े तो दोनों नहीं एक को तो जरूर ही पकड़ना चाहिए।

तेजसिंह जान-बूझकर इन दोनों के पास से होकर निकले। नाजिम और अहमद भी यह सोचकर उसके पीछे हो लिए कि देखें कहाँ जाती है। नकली केतली (तेजसिंह) ने फिर कर देखा और कहा, 'तुम लोग मेरे पीछे-पीछे क्यों चले आ रहे हो? जिस काम पर मुकर्रर हो उस काम को करो!' अहमद ने कहा, 'किस काम पर मुकर्रर हैं और क्या करें? तुम क्या जानती हो!' केतकी ने कहा, 'मैं सब जानती हूँ! तुम वही काम करो जिसमें चपला के हाथ की जूतियाँ नसीब हों! जिस जगह तुम्हारी मददगार एक लौंडी तक नहीं है, वहाँ तुम्हारे किए क्या होगा!'

नाजिम ने कहा, 'सुनो केतकी, हम लोगों का तो काम ही चालाकी

करने का है। हम लोग अगर पकड़े जाने और मरने-मारने से डरें तो कभी काम न चले। अब तुमको भी मुनासिब है कि हमारी मदद करो, जो कुछ हमको मिलेगा उसमें से हम तुमको भी हिस्सा देंगे।'

केतकी ने कहा, 'सुनो जी मैं उम्मीद के ऊपर जान देने वाली नहीं हूँ। अब इस वक्त अगर कुछ मुझको दो तो मैं अभी तेजसिंह को तुम्हारे हाथ गिरफ्तार करा दूँ। नहीं तो जाओ जो कुछ करते हो करो।'

तेजसिंह की गिरफ्तारी का नाम सुनते ही इन दोनों की तबीयत खुश हो गई! नाजिम ने कहा, 'अगर आज तेजसिंह को पकड़ा दो तो जो कहो हम तुमको दें।'

केतकी, 'एक हजार रुपये से कम मैं हरगिज न लूँगी। अगर मंजूर हो तो लाओ रुपये मेरे सामने रक्खो।'

नाजिम, 'अच्छा अहमद यहाँ तुम्हारे पास ठहरता है, मैं जाकर रुपये ले आता हूँ।'

यह कहकर नाजिम ने अहमद को तो उसी जगह छोड़ा और आप खुशी-खुशी क्रूरसिंह की तरफ रुपये लेने को चला।

नाजिम के चले जाने के बाद थोड़ी देर तक केतकी और अहमद इधर-उधर की बातें करते रहे। बात करते-करते केतकी ने दो-चार इलायची बटुए से निकाल कर अहमद को दीं और आप भी खाईं। अहमद को तेजसिंह के पकड़े जाने की उम्मीद में इतनी खुशी थी कि कुछ सोच न सका और इलायची खा गया, मगर थोड़ी ही देर बाद उसका सर घूमने लगा। तब वह समझ गया कि बेशक यह कोई ऐयार (चालाक) है जिसने धोखा दिया। चट कमर से खन्जर खींच बिना कुछ कहे केतकी को मारा, मगर केतकी पहिले से होशियार थी, दाँव बचा कर उसने अहमद की कलाई पकड़ ली जिससे अहमद कुछ न कर सका बल्कि जरा ही देर बाद बेहोश होकर गिर पड़ा। तेजसिंह ने उसकी मुश्कें बाँध कर चादर में गठरी कसी और पीठ पर लाद नौगढ़ का रास्ता लिया। खुशी के मारे जल्दी-जल्दी कदम बढ़ते चले गए, यह भी खयाल था कि कहीं ऐसा न हो कि नाजिम आ जाय और पीछा करे।

इधर नाजिम रुपये लेने के लिए गया तो सीधे क्रूरसिंह के मकान पर पहुँचा। उस वक्त क्रूरसिंह गहरी नींद में सो रहा था। जाते ही नाजिम ने उसको जगाया, क्रूरसिंह ने पूछा, 'क्या है जो इस वक्त आधी रात के समय आकर मुझे उठा रहे हो?'

नाजिम ने क्रूरसिंह से अपनी पूरी कैफियत सुनाई। क्रूरसिंह ने नाजिम

के पकड़े जाने का हाल सुन कर कुछ अफसोस तो किया मगर पीछे तेजसिंह के गिरफ्तार होने की उम्मीद सुन कर उछल पड़ा और बोला, 'लो अभी हजार रुपये देता हूँ बल्कि मैं खुद तुम्हारे साथ चलता हूँ' यह कह कर हजार रुपये सन्दूक में से निकाले और नाजिम के साथ हो लिया।

जब नाजिम क्रूरसिंह को साथ लेकर वहाँ पहुँचा जहाँ अहमद और केतकी को छोड़ गया था तो दोनों में से कोई न मिला। नाजिम तो सन्न हो गया और उसके मुँह से झट यह बात निकल पड़ी कि 'धोखा हुआ !'

क्रूरसिंह, 'कहो नाजिम, क्या हुआ ?'

नाजिम, 'क्या कहूँ, वह जरूर केतकी नहीं कोई ऐयार था, जिसने पूरा धोखा दिया और अहमद को तो ले ही गया।

नाजिम ने शक मिटाने के लिए थोड़ी देर तक इधर-उधर खोज भी की पर कुछ पता न लगा, आखिर रोते-पीटते दोनों ने घर का रास्ता लिया।

[ ] तेजसिंह को विजयगढ़ की तरफ बिदा कर बीरेन्द्रसिंह अपने महल में आए मगर किसी काम में उनका दिल न लगता था। बीरेन्द्रसिंह के बाप सुरेन्द्रसिंह को बीरेन्द्रसिंह का सब हाल मालूम था मगर क्या करते, कुछ बस नहीं चलता था, क्योंकि विजयगढ़ का राजा उनसे बहुत जबरदस्त था और हमेशा उन पर हुकूमत रखता था।

सवेरा हुआ ही चाहता था कि तेजसिंह पीठ पर एक गट्ठर लादे आ पहुँचे। पहरे वाले इस हालत में इनको देख हैरान थे मगर खौफ से कुछ कह नहीं सकते थे। तेजसिंह ने बीरेन्द्रसिंह के कमरे में पहुँच कर देखा कि अभी तक वे जाग रहे हैं। बीरेन्द्रसिंह तेजसिंह को देखते ही उठ खड़े हुए और बोले, 'कहो भाई क्या खबर लाये ?'

तेजसिंह ने वहाँ का सब हाल सुनाया, चन्द्रकान्ता की चिट्ठी हाथ पर रख दी, अहमद की गठरी खोल के दिखा दिया और कहा, 'यह चिट्ठी है और यह सौगात !'

बीरेन्द्रसिंह बहुत खुश हुए। चिटठी को कई मर्तबा पढ़कर आँखों से लगाया, फिर तेजसिंह से कहा, 'सुनो भाई, इस अहमद को ऐसी जगह रक्खो जहाँ किसी को मालूम न हो, अगर जयसिंह को खबर लगेगी तो फंसाद बढ जायेगा।'

तेजसिंह ने फिर अहमद की गठरी बाँधी और एक प्यादे को भेज कर

देवीसिंह नामी ऐयार को बुलाया जो तेजसिंह का शागिर्द, दिली दोस्त, और रिश्ते में साला भी लगता था। जब देवीसिंह आ गये, तेजसिंह ने अहमद की गठरी अपनी पीठ पर लादी और देवीसिंह से कहा, 'आओ हमारे साथ चलो, तुमसे एक काम है।' देवीसिंह ने कहा, 'गुरुजी, यह गठरी मुझको दो, मैं ले चलूँ, मेरे रहते यह काम आपको अच्छा नहीं लगता।' आखिर देवीसिंह ने वह गठरी पीठ पर लाद ली और तेजसिंह के पीछे चल निकले।

ये दोनों शहर के बाहर हो जंगल और पहाड़ियों के घूमघूमौवे पेचीदे रास्तों से जाते-जाते दो कोस के करीब पहुँच कर एक अंधेरी खोह में घुसे। थोड़ी देर चलने के बाद कुछ रोशनी मिली। वहाँ जाकर तेजसिंह ठहर गए और देवीसिंह से बोले, 'गठरी रख दो। और मैं जो बातें तुमसे कहता हूँ उनका अच्छी तरह ख्याल रक्खो। यह सामने जो पत्थर का दरवाजा देखते हो तुमको इसका खोलना बतलाए देता हूँ। जिस-जिस को मैं पकड़ कर लाया करूँगा इसी जगह लाकर कैद किया करना जिससे किसी को मालूम न हो और कोई छुड़ा के भी न ले जा सके। इसके अन्दर कैद करने से कैदियों के हाथ-पैर बाँधने की जरूरत नहीं रहेगी, सिर्फ हिफाजत के लिए एक खुलासी बेड़ी उनके पैर में डाल देनी पड़ेगी जिससे धीरे-धीरे चल फिर सकें। कैदियों के खाने-पीने की भी फिक्र तुमको नहीं करनी पड़ेगी क्योंकि इसके अन्दर एक छोटी-सी कुदरती नहर है जिसमें बराबर पानी रहता है और मेवों के दरख्त भी बहुत हैं। इस ऐयार को, इसी में कैद करते हैं, बाद में इसके महाराज से यह बहाना करके कि आजकल में बीमार रहता हूँ अगर एक महीने की छुट्टी मिले तो आबोहवा बदल आऊं, महीने भर की छुट्टी ले लो। मैं कोशिश करके तुम्हें छुट्टी दिला दूँगा। तब तुम भेष बदल कर विजयगढ़ जाओ और बराबर वहीं रह कर इधर-उधर की खबर लिया करो, जो कुछ हाल हो मुझसे कहा करो और जब मौका देखो तो बदमाशों को गिरफ्तार करके इसी जगह ला उनको कैद भी कर दिया करो।

और भी बहुत-सी बातें देवीसिंह को समझाने के बाद तेजसिंह दरवाजा खोलने चले। दरवाजे के ऊपर एक बड़ा-सा चेहरा शेर का बना हुआ था जिसके मुँह में हाथ बखूबी जा सकता था। तेजसिंह ने देवीसिंह से कहा, 'इस चेहरे के मुँह में हाथ डालकर इसकी जुबान बाहर खींचो।' देवीसिंह ने वैसा ही किया और हाथ भर के करीब जुबान खैंच लिया। उसके खैंचते ही एक आवाज़ हुई और दरवाजा खुल गया। अहमद की गठरी लिए हुए

दोनों, अन्दर गए।

सुबह हो गई। सूरज निकल आया। तेजसिंह ने अहमद की गठरी खोली। उसका ऐयारी का बटुआ और खंजर जो कमर में बँधा था ले लिया और एक बेड़ी उसके पैर में डालने के बाद होशियार किया। जब अहमद होश में आया, बीबी केतकी की सूरत आँखों के सामने फिर गई, खौफ ने उसका गला ऐसा दबाया कि एक हर्फ भी मुँह से न निकल सका।

अहमद को उसी मैदान में चश्मे के किनारे छोड़ दोनों ऐयार बाहर निकल आये। तेजसिंह ने देवीसिंह से कहा, 'इस शेर की जुबान जो तुमने बाहर खींच ली है उसी के मुँह में डाल दो।' देवीसिंह ने वैसा ही किया। जबान उसके मुँह में डालते ही जोर से दरवाजा बन्द हो गया और दोनों आदमी पेचीली राह से घर की तरफ रवाना हुए।

पहर भर दिन चढ़ा होगा जब ये दोनों लौट कर बीरेन्द्रसिंह के पास पहुँचे। बीरेन्द्रसिंह ने पूछा, 'अहमद को कहाँ कैद करने ले गये थे जो इतनी देर लगी?' तेजसिंह ने जवाब दिया, 'एक पहाड़ी खोह में कैद कर आया हूँ, आज आपको भी वह जगह दिखाऊँगा, पर अब मेरी राय है कि देवीसिंह थोड़े दिन भेष बदल कर विजयगढ़ में रहें। ऐसा करने से मुझको बड़ी मदद मिलेगी।'

स्नान-पूजा और मामूली कामों से फुरसत पा दोनों आदमी देवीसिंह को साथ लिए राजदरबार में गये। देवीसिंह ने छुट्टी को अर्ज किया। राजा देवीसिंह को बहुत चाहते थे, छुट्टी देना मंजूर न था, कहने लगे—'यहाँ ही हम तुम्हारी दवा कराएँगे।' आखिर बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह की सिफारिश से छुट्टी मिली।

दूसरे दिन तेजसिंह अपने साथ बीरेन्द्रसिंह को उस घाटी में ले गये जहाँ अहमद को कैद किया था। कुमार उस जगह को देख कर बहुत ही खुश हुए।

बीरेन्द्रसिंह उस घाटी की कैफियत जानने के लिए जिद्द करने लगे। आखिर तेजसिंह ने वहाँ का हाल जो कुछ अपने गुरु से सुना था, कहा जिसे सुन बीरेन्द्रसिंह बहुत प्रसन्न हुए।

दोनों यहाँ से रवाना हो अपने मकान पर आए। कुमार ने कहा, 'भाई अब तो मेरा हौसला बहुत बढ़ गया और जी में आता है कि जयसिंह से लड़ जाऊँ।' तेजसिंह ने कहा, 'आपका हौसला ठीक है मगर जल्दी करने से चन्द्रकान्ता की जान का खौफ है। आप इतना घबड़ाते क्यों हैं देखिये तो क्या होता है, कल मैं फिर जाऊँगा और मालूम करूँगा कि अहमद के

पकड़े जाने से दुश्मनों की क्या कैफियत हुई, फिर दूसरी दफं आपको ले चलूँगा।' वीरेन्द्रसिंह ने कहा, 'नहीं अब की मैं जरूर चलूँगा, इस तरह एकदम से डरपोक होकर बैठे रहना मर्दों का काम नहीं।'

तेजसिंह ने कहा, 'अच्छा आप भी चलिये, हर्ज क्या है, मगर एक काम होना जरूरी है वो यह कि महाराज से पाँच-चार रोज के लिए शिकार की छुट्टी लीजिये और अपनी सरहद पर खेमा डेरा डाल दीजिये, वहाँ से कुल ढाई कोस चन्द्रकान्ता का महल रह जाएगा, तब बहुत तरह का सुभीता होगा।' इस बात को बीरेन्द्रसिंह ने भी पसन्द किया, आखिर यही राय पक्की ठहरी।

कुछ दिन बाद वीरेन्द्रसिंह ने अपने पिता राजा सुरेन्द्रसिंह से शिकार के लिए आठ दिन की छुट्टी ले ली और थोड़े से अपने दिली आदमियो को साथ ले रवाना हुए। थोड़ा-सा दिन वाकी था जब नौगढ़ और विजयगढ़ के सिवाने पर इन लोगों का डेरा पड़ गया। रात भर वहाँ मुकाम रहा और यह राय ठहरी कि पहिले तेजसिंह विजयगढ़ जाकर हाल-चाल ले आवें।

☐ अहमद के पकड़े जाने से नाजिम बहुत उदास हो गया और क्रूरसिंह को तो अपनी ही फिक्र पड़ गई कि कहीं तेजसिंह मुझको न पकड़ ले जाये! इस खौफ से वह हरदम चौकन्ना रहता था, मगर महाराज जयसिंह के दरबार में रोज जाता और बीरेन्द्रसिंह की तरफ से उनको भड़काया करता।

एक दिन नाजिम ने क्रूरसिंह को यह सलाह दी कि जिस तरह हो सके अपने बाप कुपथसिंह को मार डालो, उसके मरने के बाद जयसिंह जरूर तुमको मंत्री (वजीर) बनायेंगे, उस वक्त तुम्हारी हुकूमत हो जाने से सब काम बहुत जल्द होगा। आखिर क्रूरसिंह ने जहर दिलवा कर अपने बाप को मरवा डाला। महाराज ने कुपथसिंह के मरने पर अफसोस किया और कई दिन दरबार में न आये। शहर में भी कुपथसिंह मंत्री के मरने का गम छा गया।

क्रूरसिंह ने जाहिर में अपने बाप के मरने का बड़ा भारी मातम किया और बारह रोज के वास्ते अलग बिस्तर जमाया। दिन भर तो अपने बाप को रोता पर रात को नाजिम के साथ बैठकर चन्द्रकान्ता के मिलने तथा तेजसिंह और बीरेन्द्रसिंह को गिरफ्तार करने की फिक्र करता। इन्हीं दिनों

बीरेन्द्रसिंह ने भी शिकार के बहाने विजयगढ़ की सरहद पर खेमा डाल दिया था, जिसकी खबर नाजिम ने क्रूरसिंह को पहुँचाई। और क्रूरसिंह से विदा हो बालादवी[1] के वास्ते चला गया।

तेजसिंह बीरेन्द्रसिंह से रुखसत हो विजयगढ़ पहुँचे और मंत्री के मरने तथा शहर भर में गम छाने का हाल लेकर बीरेन्द्रसिंह के पास लौट आये, यह खबर लाये कि दो रोज में सूतक निकल जाने पर महाराज जयसिंह क्रूर को अपना दीवान बनावेंगे।

शाम के वक्त ये दोनों टहलने के लिए खेमे से बाहर निकले और अपने प्यादों से कह गये कि अगर हम लोगों को आने में देर हो तो घबराना मत। टहलते हुए दोनों विजयगढ़ की तरफ रवाना हुए।

कुछ रात गई जब चन्द्रकान्ता के नजरबाग के पास पहुँचे।

रात अँधेरी थी, इसलिए इन दोनों को बाग में जाने के लिए कोई तरद्दुद न करना पड़ा, पहरे वालों को बचाकर कमन्द फेंका और उसके जरिये बाग के अन्दर जा दोनों एक घने पेड़ के नीचे खड़े हो इधर-उधर निगाह दौड़ा कर देखने लगे।

बाग के बीचों-बीच संगमरमर के साफ चिकने चबूतरे पर मोमी शमादान जल रहा था, जहाँ चन्द्रकान्ता चपला और चम्पा बैठी बातें कर रही थीं।

चन्द्रकान्ता को देखते ही बीरेन्द्रसिंह का अजब हाल हो गया, बदन में कंपकंपी होने लगी यहाँ तक कि बेहोश होकर गिर पड़े। तेजसिंह ने ऐयारी के बटुए से लखलखा निकाल सुँघा दिया और होश में लाकर कहा, 'देखिये दूसरे के मकान में आपको इस तरह बेसुध न होना चाहिए। अब आप अपने को सम्हालिए और इसी जगह ठहरिए मैं जाकर बात कर आऊँ तब आपको ले चलूँ।' यह कह कर उन्हें उसी पेड़ के नीचे छोड़ उस जगह गए जहाँ चन्द्रकान्ता चपला और चम्पा बैठी थीं। तेजसिंह को देखते ही चन्द्रकान्ता बोली, 'क्यों जी, इतने दिन कहाँ रहे? अब की भी आए तो अकेले ही आए। वाह, ऐसा ही था तो हाथ में चूड़ी पहन लेते। जब उनकी मुहब्बत का यही हाल है तो मैं जी कर क्या करूँगी?' कह कर चन्द्रकान्ता रोने लगी, यहाँ तक कि हिचकी बँध गई। तेजसिंह उसकी यह हालत देख बहुत घबड़ाये और बोले, 'बस इसी को नादानी कहते हैं! अच्छी तरह हाल भी न पूछा और लगीं रोने, ऐसा ही है तो मैं अभी उन

1. बालादवी-- टोह लेने के लिए गश्त करना।

को लिए आता हूं !'

यह कहकर तेजसिंह वहां गए जहां बीरेन्द्रसिंह को छोड़ा था और उनको अपने साथ ले चन्द्रकान्ता के पास लौटे। चन्द्रकान्ता को बीरेन्द्रसिंह के मिलने से बड़ी खुशी हुई, दोनों मिलकर खूब रोये यहाँ तक कि बेहोश हो गये मगर थोड़ी देर बाद होश में आ गये और आपस में शिकायत मिली मुहब्बत की बातें करने लगे।

अब जमाने का उलट-फेर देखिये। घूमता-फिरता टोह लगाता नाजिम भी उसी जगह आ पहुँचा और दूर से इनकी खुशी भरी मजलिस देखकर जल मरा। तुरन्त ही लौटकर क्रूरसिंह के पास पहुँचा। क्रूरसिंह ने नाजिम को घबड़ाया हुआ देखा और पूछा, 'क्यों क्या है जो तुम इतना घबड़ाये हुए हो ?'

नाजिम, 'है क्या, जो मैं सोचता था वही हुआ ! यही वक्त चालाकी का है, अगर अब भी कुछ बन न पड़ा तो बस तुम्हारी किस्मत फूट गई, ऐसा ही समझना पड़ेगा।'

क्रूरसिंह, 'तुम्हारी बातें तो कुछ समझ में नहीं आतीं।'

नाजिम, 'खुलासा यही है कि बीरेन्द्रसिंह चन्द्रकान्ता के पास पहुँच गया और इस समय बाग में चहचहे उड़ रहे हैं।'

यह सुनते ही क्रूरसिंह की आँखों के आगे अँधेरा छा गया, दुनिया उदास मालूम होने लगी, कहाँ तो बाप के जाहिरी गम में वह सर मुंडाए बरसाती मेंढक बना बैठा था, तेरह रोज कहीं बाहर जाना हो ही नहीं सकता था, मगर इस खबर ने उसको अपने आपे में न रहने दिया, फौरन उठ खड़ा हुआ और उसी तरह नंग-धडंग औंधी हाँडी-सा सर लिए महाराज जयसिंह के पास पहुँचा। जयसिंह क्रूरसिंह को इस तरह आते देख हैरान हो बोले, 'क्रूरसिंह, सूतक और बाप का गम छोड़कर तुम्हारा इस तरह आना मुझको हैरानी में डाल रहा है !'

क्रूरसिंह ने कहा, 'महाराज हमारे बाप तो आप हैं, उन्होंने तो पैदा किया, परवरिश आप ही की बदौलत होती है। जब आप ही की इज्जत में बट्टा लगा तो मेरी जिन्दगी किस काम की है और मैं किस लायक गिना जाऊँगा ?'

जयसिंह, (गुस्से में आकर) 'क्रूरसिंह, ऐसा कौन है जो हमारी इज्जत बिगाड़े ?'

क्रूरसिंह, 'एक अदना आदमी।'

जयसिंह (दाँत पीसकर), 'जल्दी बताओ वह कौन है जिसके सर पर

मौत सवार हुई है !!'

क्रूरसिंह, 'बीरेन्द्रसिंह !'

जयसिंह, 'उसकी क्या मजाल जो मेरा मुकाबला करे, इज्जत बिगाड़ना तो दूसरी चीज है ! तुम्हारी बात कुछ समझ में नहीं आती, साफ-साफ जल्द बताओ क्या बात है ? बीरेन्द्रसिंह कहाँ है ?'

क्रूर, 'आपके चोर महल के बाग में !'

यह सुनते ही महाराज का बदन मारे गुस्से के काँपने लगा। तड़पकर हुक्म दिया, 'अभी जाकर बाग को घेर लो।'

☐ बीरेन्द्रसिंह चन्द्रकान्ता से मीठी-मीठी बातें कर रहे हैं, चपला से तेजसिंह उलझ रहे हैं, चम्पा बेचारी इन लोगों का मुँह ताक रही है। अचानक एक काला कलूटा आदमी सिर से पैर तक आबनूस का कुन्दा, लाल-लाल आँखें, लँगोटा कसे, उछलता-कूदता इनके बीच में आ खड़ा हुआ। पहिले तो ऊपर-नीचे के दाँत खोल तेजसिंह की तरफ दिखाया, तब बोला—'खबर भई राजा को तुमरी सुनो गुरुजी मेरे।' इसके बाद उछलता-कूदता चला गया। जाती दफे चम्पा की टाँग पकड़ थोड़ी दूर घसीटता ले गया, आखिर छोड़ दिया। यह देख सब हैरान हो गये और डरे कि यह पिशाच कहाँ से आ गया, चम्पा बेचारी तो चिल्ला उठी मगर तेजसिंह फौरन उठ खड़े हुए और बीरेन्द्रसिंह का हाथ पकड़ के बोले, 'चलो जल्दी उठो, अब बैठने का मौका नहीं !' चन्द्रकान्ता की तरफ देखकर बोले, 'हम लोगों के जल्दी चले जाने का रंज तुम मत करना और जब तक महाराज यहाँ न आयें इसी तरह सब की सब बैठी रहना !'

चन्द्रकान्ता, 'इतनी जल्दी करने का सबब क्या है। और यह कौन था जिसकी बात सुनकर भागना पड़ा ?'

तेज (जल्दी से), 'अब बात करने का मौका नहीं रहा।'

यह कहकर बीरेन्द्रसिंह को जबरदस्ती उठाया और साथ के कमन्द के जरिये बाग के बाहर हो गए।

चन्द्रकान्ता को बीरेन्द्रसिंह का इस तरह चला जाना बहुत बुरा मालूम हुआ। आँखों में आँसू भर चपला से बोली, 'यह क्या तमाशा हो गया कुछ समझ में नहीं आता। उस पिशाच को देखकर मैं कैसा डरी, मेरे कलेजे पर हाथ रखकर देखो अभी तक धड़धड़ा रहा है। तुमने क्या खयाल किया ?'

चपला ने कहा, 'कुछ ठीक समझ में नहीं आता, हाँ इतना जरूर है कि इस समय बीरेन्द्रसिंह के यहाँ आने की खबर महाराज को हो गई, वे जरूर आते होंगे।' चम्पा बोली, 'न मालूम मुए को मुझसे क्या दुश्मनी थी!'

चम्पा की बात पर चपला को हँसी आ गई मगर हैरान थी कि यह क्या खेल हो गया। थोड़ी देर तक इसी तरह की ताज्जुब भरी बातें होती रहीं, इतने में ही बाग के चारों तरफ आदमियों के शोरगुल की आवाज आने लगी। चपला ने कहा, 'रंग बुरे नजर आने लगे, मालूम होता है कि इस बाग को सिपाहियों ने घेर लिया।' बात पूरी भी न होने पाई थी कि सामने से महाराज आते दिखाई पड़े।

देखते ही सब-की-सब उठ खड़ी हुईं। चन्द्रकान्ता ने बढ़कर पिता के आगे सिर झुकाया और कहा, 'इस समय आपके यकायक आने ··!' इतना कहकर चुप हो गई। जयसिंह ने कहा, 'कुछ नहीं, तुम्हें देखने को जी चाहा इसी से चले आये। अब तुम भी महल में जाओ, यहाँ क्यों बैठी हो। ओस पड़ती है तुम्हारी तबीयत खराब हो जायेगी।' यह कहकर महल की तरफ रवाना हुए।

चन्द्रकान्ता, चपला और चम्पा भी महाराज के पीछे-पीछे महल में गईं। जयसिंह अपने कमरे में आए और जी में बहुत शर्मिन्दा होकर कहने लगे, 'देखो हमारी भोली-भाली लड़की को क्रूरसिंह झूठमूठ बदनाम करता है। उसे सजा देनी चाहिए जिससे फिर ऐसा कमीनापन न करे।' यह सोच हरीसिंह नामी एक चोबदार को हुक्म दिया कि बहुत जल्द क्रूर को हाजिर करो।

हरीसिंह क्रूरसिंह को खोजता और पता लगाता हुआ बाग के पास पहुँचा। हरीसिंह ने कहा, 'चलिए महाराज ने बुलाया है।' क्रूरसिंह घबड़ा उठा कि महाराज ने क्यों बुलाया, क्या चोर नहीं मिला? महाराज तो मेरे सामने महल में चले गये थे। हरीसिंह से पूछा, 'महाराज क्या कर रहे हैं?' उसने कहा, 'अभी महल से आए हैं, गुस्से में भरे बैठे हैं, आपको जल्दी बुलाया है।' यह सुनते ही क्रूरसिंह की नानी मर गई, डरता-काँपता हरीसिंह के साथ महाराज के पास पहुँचा।

महाराज ने क्रूरसिंह को देखते ही कहा, 'क्यों बे क्रूर! बेचारी चन्द्रकान्ता को इस तरह झूठमूठ बदनाम करना और हमारी इज्जत में बट्टा लगाना यही तेरा काम है। यह इतने आदमी जो बाग को घेरे हुए हैं अपने जी में क्या कहते होंगे? नालायक, गदहा, पाजी, तूने कैसे कहा कि महल

में बीरेन्द्र है !'

मारे गुस्से के महाराज जयसिंह के होंठ कांप रहे थे, आँखें लाल हो रही थीं। यह कैफियत देखकर क्रूरसिंह की तो जान सूख गई, घबड़ा के बोला, 'मुझको तो यह खबर नाजिम ने पहुँचाई थी जो आजकल महल के पहरे पर मुकर्रर है।' यह सुनते ही महाराज ने हुक्म दिया, 'बुलाओ नाजिम को।' थोड़ी देर में नाजिम भी हाजिर किया गया। गुस्से में भरे हुए महाराज के मुँह से साफ आवाज नहीं निकलती थी। टूटे-फूटे शब्दों में नाजिम से पूछा, 'क्यों बे तैंने कैसी खबर पहुँचाई ?' उस वक्त डर के मारे उसकी क्या हालत थी वही जानता होगा, जान से नाउम्मीद हो चुका था, डरता हुआ बोला, 'मैंने तो अपनी आँखों से देखा था हुजूर शायद किसी तरह भाग गया होगा।'

अब जयसिंह से गुस्सा बर्दाश्त न हो सका। हुक्म दिया, 'पचास कोड़े क्रूर को और दो सौ कोड़े नाजिम को लगाए जाएं ! आगे फिर कभी ऐसा होगा तो सिर उतार लिया जाएगा।'

क्रूरसिंह और नाजिम दोनों घबराए और एक जगह बैठकर लगे झगड़ने। क्रूर नाजिम से कहने लगा—'तेरी बदौलत आज मेरी इज्जत मिट्टी में मिल गई ! कल दीवान होंगे यह उम्मीद भी न रही।'

अन्त में क्रूरसिंह ने कहा, 'हम-तुम दोनों को लानत है अगर इतनी सजा पाने पर भी बीरेन्द्रसिंह को गिरफ्तार न किया।'

नाजिम ने कहा, 'इसमें तो कोई शक नहीं कि बीरेन्द्र अब रोज महल में आया करेगा क्योंकि इसी वास्ते वह अपना डेरा सरहद पर ले आया है, मगर अब कोई काम करने का हौसला नहीं पड़ता, कहीं फिर मैं देखूं और खबर करने पर वह दुबारा निकल जाये तो अबकी जरूर ही जान से मारा जाऊँगा।'

बहुत देर सोचने के बाद नाजिम ने कहा, 'चुनारगढ़ के महाराज शिवदत्तसिंह के दरबार में एक पण्डित जगन्नाथ नामी ज्योतिषी हैं, जो रमल भी बहुत अच्छा जानते हैं। उनके रमल फेंकने में इतनी तेजी है कि जब चाहो पूछ लो कि फलाना आदमी इस समय कहाँ है, क्या कर रहा है या कैसे पकड़ा जायेगा !'

आखिर क्रूरसिंह बहुत कुछ जवाहिरात अपने कमर में बाँध दो तेज घोड़े मँगवा नाजिम के साथ सवार हो उसी समय चुनार की तरफ रवाना हो गया और घर में सबसे कह गया कि अगर महाराज के यहाँ से कोई आवे तो कह देना कि बहुत बीमार हैं।

☐ बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह बाग के बाहर हो खेमे की तरफ रवाना हुए। जब खेमे में पहुँचे तो आधी रात बीत चुकी थी मगर तेजसिंह को कब चैन पड़ता था बीरेन्द्रसिंह को पहुँचा कर फिर लौटे और अहमद की सूरत बना क्रूरसिंह के मकान पर पहुँचे। क्रूरसिंह चुनार की तरफ रवाना हो चुका था, जिस आदमी को घर में हिफाजत के लिए छोड़ गया था और कह गया था कि अगर महाराज पूछें तो कह देना बीमार हैं उन लोगों ने यकायक अहमद को देखा तो ताज्जुब से पूछा, 'कहो अहमद, तुम कहाँ थे अब तक?' नकली अहमद ने कहा, 'मैं जहन्नुम की सैर करने गया था, अब लौटकर आया हूँ। यह बताओ कि क्रूरसिंह कहाँ है?' सभी ने उसका पूरा-पूरा हाल सुनाया और कहा, 'अब चुनार गये हैं, तुम भी वहीं जाते तो अच्छा होता!'

अहमद ने कहा, 'हाँ मैं भी जाता हूँ, अब घर न जाऊँगा, सीधे चुनार ही पहुँचता हूँ।' यह कह वहाँ से रवाना हो अपने खेमे में आये और बीरेन्द्र सिंह से सब हाल कहा। बाकी रात आराम किया, सवेरा होते ही नहा-धो कुछ भोजन कर, सूरत बदल, विजयगढ़ की तरफ रवाना हुए। नंगे सिर, हाथ-पैर, मुँह पर धूल डाले रोते-पीटते महाराज जयसिंह के दरबार में पहुँचे। इनकी हालत देखकर सब हैरान हो गए। महाराज ने मुंशी से कहा, 'पूछो कौन है और क्या कहता है?'

तेजसिंह ने कहा, 'हुजूर मैं क्रूरसिंह का नौकर हूँ, मेरा नाम रामलाल है। महाराज से बागी होकर क्रूरसिंह चुनारगढ़ के राजा के पास चला गया है। मैंने मना किया कि महाराज का नमक खाकर ऐसा न करना चाहिए, जिस पर मुझको खूब मारा और जो कुछ मेरे पास था सब छीन लिया। हाय रे, मैं बिलकुल लुट गया, एक कौड़ी भी नहीं रही, अब मैं क्या खाऊँगा, घर कैसे पहुँचूँगा, लड़के वाले तीन बरस की कमाई खोजेंगे, कहेंगे कि रजवाड़े की कमाई क्या लाए हो? उनको क्या दूँगा! दोहाई महाराज की, दोहाई दोहाई दोहाई!'

बड़ी मुश्किल से सभी ने चुप कराया। महाराज को बड़ा गुस्सा आया, हुक्म दिया, 'क्रूरसिंह कहाँ है?' चोबदार खबर लाया, 'बहुत बीमार हैं, उठ नहीं सकते।' रामलाल (तेजसिंह) बोला, 'दोहाई महाराज की! यह भी उन्हीं की तरफ मिल गया, झूठ बोलता है। मुसलमान सब उसके दोस्त हैं, दोहाई महाराज की! खूब तहकीकात की जाय!' महाराज ने मुंशी से कहा, 'तुम जाकर पता लगाओ कि क्या मामला है?' थोड़ी देर बाद मुंशी वापस आये और बोले, 'महाराज क्रूरसिंह घर में तो नहीं है,

और घर वाले कुछ बताते नहीं कि कहाँ गये हैं।' महाराज ने कहा, 'जरूर चुनारगढ़ गया होगा! अच्छा, उसके यहाँ के किसी प्यादे को बुलाओ।' हुक्म पाते ही चोबदार गया और एक बदकिस्मत प्यादे को पकड़ लाया। महाराज ने पूछा, 'क्रूरसिंह कहाँ गया है?' प्यादे ने ठीक पता नहीं दिया। रामलाल ने फिर कहा, 'दोहाई महाराज की, बिना मार खाये न बतायेगा!' महाराज ने मारने का हुक्म दिया। पिटने के पहिले ही उस बदनसीब ने बतला दिया कि चुनार गए हैं।

महाराज जयसिंह को क्रूर का हाल सुनकर जितना गुस्सा आया, बयान के बाहर है। हुक्म दिया—

(1) क्रूरसिंह के घर के सब औरत-मर्द घण्टे भर के अन्दर जान बचा के हमारी सरहद के बाहर चले जाएँ।

(2) उसका मकान लूट लिया जाये।

(3) उसकी दौलत में से जितना रुपया अकेला रामलाल उठा ले जा सके ले जाए, बाकी सरकारी खजाने में दाखिल किया जाए।

(4) रामलाल अगर नौकरी कबूल करे तो दी जाये।

हुक्म पाते ही सबसे पहिले रामलाल क्रूरसिंह के घर पहुँचा।

मुंशी ने दो हजार रुपया आगे रखवा दिया और कहा, 'ले ले जा!' रामलाल ने कहा, 'वाह कुछ याद है? महाराज ने क्या हुक्म दिया है? इतना तो मेरे जेब में आ जाएगा, मैं उठा के क्या ले जाऊँगा?' मुंशी झुंझला उठा, नकली रामलाल को खजाने के सन्दूक के पास ले जाकर खड़ा कर दिया और कहा, 'उठा देखें कितना उठाता है!' देखते-देखते उसने दस हजार रुपये उठा लिए। सिर पर, बटुए में, कमर में, जेब में, यहाँ तक कि मुंह में भी कुछ रुपये भर लिए और रास्ता लिया। सब हँसने लगे और कहने लगे, 'आदमी नहीं इसे राक्षस समझना चाहिए!'

महाराज के हुक्म की तामील हो गई, घर लूट लिया गया, औरत-मर्द सभी ने रोते-पीटते चुनार का रास्ता पकड़ा।

तेजसिंह रुपया लिए हुए बीरेन्द्रसिंह के पास पहुँचे और बोले, 'आज तो मुनाफा कर लाए मगर यार माल शैतान का है, इसमें कुछ आप भी मिला दीजिए जिससे पाक हो जाये!' बीरेन्द्रसिंह ने कहा, 'यह तो बताओ कि लाए कहाँ से?' उन्होंने सब हाल कहा। बीरेन्द्रसिंह ने कहा, 'जो कुछ मेरे पास यहाँ है मैंने सब दिया!' तेजसिंह ने कहा, 'मगर शर्त यह कि उससे कम न हो, क्योंकि आपका रुतबा उससे कहीं ज्यादे है। अब मैं चुनार जाऊंगा, देखूं शैतान का बच्चा वहाँ क्या बन्दोबस्त कर रहा है।'

☐ क्रूरसिंह की तबाही का हाल शहर भर में फैल गया। महारानी रत्नगर्भा (चन्द्रकान्ता की माँ) और चन्द्रकान्ता इन सभी ने भी सुना। कुमारी और चपला को बड़ी खुशी हुई ! जब महाराज महल में गए, हँसी-हँसी में महारानी ने क्रूरसिंह का हाल पूछा। महाराज ने कहा, 'वह बड़ा बदमाश तथा झूठा था, मुफ्त में लड़की को बदनाम करता था।'

महारानी ने बात छेड़कर कहा, 'आपने क्या सोचकर बीरेन्द्रसिंह का आना-जाना बन्द कर दिया ! देखिये यह वही बीरेन्द्र है जो लड़कपन से, जब चन्द्रकान्ता पैदा भी नहीं हुई थी, यहाँ आता और कई-कई दिनों तक रहा करता था। जब यह पैदा हुई तो दोनों बराबर खेला करते और इसी से इन दोनों की आपस में मुहब्बत भी बढ़ गई।

महाराज ने कहा, 'मैं आप हैरान हूँ कि मेरी बुद्धि को क्या हो गया था। मेरी समझ पर पत्थर पड़ गये ! कौन-सी ऐसी बात हुई, जिसके सबब से मेरे दिल से बीरेन्द्रसिंह की मुहब्बत जाती रही। हाय, इस क्रूर-सिंह ने तो गजब ही किया। इसके निकल जाने पर अब मुझे मालूम होता है !' महारानी ने कहा, 'देखें अब वह चुनार में जाकर क्या करता है? जरूर महाराज शिवदत्त को उभाड़ेगा। और कोई नया बखेड़ा पैदा करेगा।' महाराज ने कहा, 'खैर देखा जायेगा, परमेश्वर मालिक है, उस नालायक ने तो अपने भरसक बुराई में कुछ भी कमी नहीं की,'

यह कहकर महाराज महल के बाहर चले गए। अब उनको यह फिक्र हुई कि किसी को दीवान बनाना चाहिए नहीं तो काम न चलेगा। कई दिन तक सोच-विचार कर हरदयालसिंह नामी नायब दीवान को मन्त्री की पदवी और खिलअत दी। यह शख्स बड़ा ईमानदार, नेकबख्त, रहमदिल और साफ तबीयत का था, कभी किसी का दिल इसने नहीं दुखाया।

☐ क्रूरसिंह को बस एक यही फिक्र लगी हुई थी कि जिस तरह बने बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह को मार डालना चाहिए बल्कि नौगढ़ का राज्य ही गारत कर देना चाहिए। नाजिम को साथ लिए हुए चुनार पहुँचा और महाराज शिवदत्त के दरबार में हाजिर होकर नजर दिया। महाराज इसे बखूबी जानते थे इसलिए नजर लेकर हाल पूछा। क्रूरसिंह ने कहा, 'महाराज, जो कुछ हाल है मैं एकान्त में कहूँगा।'

दरबार बर्खास्त हुआ, शाम को तखलिए (एकान्त) में महाराज ने

क्रूर को बुलाया और हाल पूछा। उसने जितनी शिकायत महाराज जयसिंह की करते बनी की और यह भी कहा कि—'लश्कर का इन्तजाम आजकल बहुत खराब है, मुसलमान सब हमारे मेल में हैं अगर आप चाहें तो इस समय विजयगढ़ को फतह कर लेना कोई मुश्किल बात नहीं है। चन्द्रकान्ता महाराज जयसिंह की लड़की भी जो खूबसूरती में अपना सानी नहीं रखती, आप ही के हाथ लगेगी।'

ऐसी-ऐसी बहुत-सी बातें कह उसने महाराज शिवदत्त को पूरे तौर से भड़काया। आखिर महाराज ने कहा, 'हमको लड़ने की अभी कोई जरूरत नहीं। पहले हम अपने ऐयारों से काम लेंगे फिर जैसा होगा देखा जायेगा। मेरे यहाँ छ: ऐयार हैं जिनमें से चार ऐयारों के साथ पण्डित जगन्नाथ ज्योतिषी को तुम्हारे साथ कर देते हैं। इन सभी को लेकर तुम चलो देखो तो ये लोग क्या करते हैं।'

अभी ये लोग बैठे ही थे कि एक चोबदार ने आकर अर्ज किया, 'महाराज, ड्योढ़ी पर कई आदमी फ़रियादी खड़े हैं, कहते हैं कि हम लोग क्रूरसिंह के रिश्तेदार हैं, इनके चुनार जाने का हाल सुनकर महाराज जयसिंह ने घर-बार लूट लिया और हम लोगों को निकाल दिया। उन लोगों के लिए क्या हुक्म होता है?'

यह सुनकर क्रूरसिंह के तो होश उड़ गए। महाराज शिवदत्त ने सभी को अन्दर बुलाया और हाल पूछा। जो कुछ हुआ था उन्होंने बयान किया, इसके बाद क्रूरसिंह और नाजिम की तरफ देखकर कहा, 'अहमद भी तो आपके पास आया है!' नाजिम ने पूछा, 'अहमद! वह कहाँ है? यहाँ तो नहीं आया!' सभी ने कहा, 'वाह, वहाँ तो घर पर गया था और यह कह कर चला गया कि मैं भी चुनार जाता हूँ!'

नाजिम ने कहा, 'बस, मैं समझ गया, वह जरूर तेजसिंह होगा इसमें कोई शक नहीं! उसी ने महाराज को भी खबर पहुँचाई होगी, यह सब फसाद उसी का है!' यह सुन क्रूरसिंह रोने लगा। महाराज शिवदत्त ने कहा, 'जो होना था सो हो गया, सोच मत करो। देखो इसका बदला जयसिंह से मैं लेता हूँ। तुम इसी शहर में रहो, हमाम के सामने वाला मकान तुम्हें दिया जाता है, उसी में अपने कुटुम्ब को रक्खो, रुपये की मदद सरकार से हो जायगी।' क्रूरसिंह ने महाराज के हुक्म के मुताबिक उसी मकान में डेरा जमाया।

कई दिन बाद दरबार में हाजिर होकर क्रूरसिंह ने महाराज से विजयगढ़ जाने के लिए अर्ज किया। सब इन्तजाम हो ही चुका था। महा-

राज ने मय चारों ऐयार ~~और पण्डित~~ जगन्नाथ ज्योतिषी के क्रूरसिंह और नाजिम को बिदा किया। ऐयार लोग भी अपने-अपने सामान से लैस हो गए। कई तरह के कपड़े लिए, बटुआ ऐयारी का अपने-अपने कन्धे से लटका लिया, खंजर बगल में लिया। ज्योतिषीजी ने भी पोथी-पत्रा पटड़ी और कुछ ऐयारी का सामान ले लिया क्योंकि वह थोड़ी-बहुत ऐयारी भी जानते थे। अब यह शैतानों का झुण्ड विजयगढ़ की तरफ रवाना हुआ।

☐ बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह नौगढ़ के किले से बाहर निकल बहुत से आदमियों को साथ लिए चन्द्रप्रभा नदी के किनारे बैठे शोभा देख रहे हैं।

इतने में एक साधू रामरज से रंगी हुई कफनी पहरे, रामनन्दी तिलक लगाए हाथ में खंजरी लिए कुछ दूर नदी के किनारे बैठा यह गाता हुआ दिखाई पड़ा :—

'गए चुनार क्रूर बहुरंगी लाए चार चितारी[1]।
संग में उनके पण्डित देवता, जो हैं सगुन विचारी॥
इनसे रहना बहुत सम्हल के रमल चले अति कारी।
क्या बैठे हो तुम बेफिकरे, काम करो कोई भारी॥

यह आवाज कान में पड़ते ही तेजसिंह ने गौर के साथ उस तरफ देखा। वह साधू भी इन्हीं की तरफ मुँह करके गा रहा था। तेजसिंह को अपनी तरफ देखते देख दाँत निकाल कर दिखला दिया और उठ के चलता बना।

बीरेन्द्रसिंह अपनी चन्द्रकान्ता के ध्यान में डूबे हैं, उनको इन सब बातों की कोई खबर नहीं। तेजसिंह ने बाजू पकड़ कर हिलाया, कुमार, चौंक पड़े। तेजसिंह ने धीरे से पूछा, 'कुछ सुना?' बीरेन्द्रसिंह ने पूछा, 'कहो क्या?' तेजसिंह ने कहा, 'सुनिये, यह तो आपको मालूम हो ही चुका है कि क्रूरसिंह महाराज शिवदत्त से मदद लेने चुनार गया है, अब उसके वहाँ जाने का क्या नतीजा निकला, वह भी सुनिये! वहाँ से महाराज शिवदत्त ने चार ऐयार और एक ज्योतिषी को उसके साथ कर दिया है वह ज्योतिषी बहुत अच्छा रमल फेंकता है, नाजिम पहिले ही से उसके

1. चितारी—ऐयार।

साथ है। अब इन लोगों की मण्डली भारी हो गई, ये लोग कम फसाद नहीं करेंगे, इसलिए मैं अर्ज करता हूँ कि आप सम्हले रहिये। मैं अब काम की फिक्र में जाता हूँ, मुझे यकीन है कि उन ऐयारों में से कोई-न-कोई जरूर इस तरफ भी आवेगा और फँसाने की फिक्र करेगा। आप होशियार रहिएगा, सिवाय मेरे और किसी के साथ कहीं न जाइएगा, न किसी का दिया कुछ खाइएगा, बल्कि इत्र-फूल वगैरह भी कुछ दे तो न सूँघिएगा और इस बात का भी ख्याल रखिएगा कि मेरी सूरत बन के भी वे लोग आवें तो ताज्जुब नहीं। इस तरह आप मुझको पहिचान लीजिएगा, देखिये मेरी आँख के अन्दर नीचे की तरफ यह एक तिल है जिसको कोई नहीं जानता। आज से लेकर दिन में चाहे जै दफे हो जब भी मैं आपके पास आया करूँगा, इस तिल को छिपे तौर से दिखला कर अपना परिचय आपको दिया करूँगा। अगर यह काम मैं न करूँ तो समझ लीजिएगा कि धोखा है।'

पहर रात रहे तेजसिंह ऐयारी के सामान से लैस हो वहाँ से रवाना हो गये।

□ चपला बालादवी के लिए मर्दाने भेष में शहर के बाहर निकली। आधी रात बीत गई थी। साफ छिटकी हुई चाँदनी देख यकायक जी में आया कि नौगढ़ चलूं और तेजसिंह से मुलाकात करूँ। इसी ख्याल से कदम बढ़ाये नौगढ़ की तरफ चली। उधर तेजसिंह अपनी असली सूरत में ऐयारी के सामान से सजे हुए विजयगढ़ की तरफ चले आ रहे थे। इत्तिफाक से दोनों की रास्ते ही में मुलाकात हो गयी। चपला ने पहिचान लिया और नजदीक जाकर अपनी असली बोली में पूछा, 'कहिए आप कहाँ जा रहे हैं?'

तेजसिंह ने बोली से चपला को पहिचाना और कहा, 'वाह-वाह क्या मौके पर मिल गईं। सुनो, यह तो तुम जानती ही हो कि क्रूर चुनार गया है। अब वहाँ का हाल सुनो, चार ऐयार और एक पण्डित जगन्नाथ ज्योतिषी को महाराज शिवदत्त ने मदद के लिए उसके संग कर दिया है और वे लोग यहाँ पहुँच गये हैं। उनकी मण्डली अब भारी हो गई और इधर हम तुम दो ही हैं, इसलिए अब हम दोनों को बड़ी होशियारी करनी पड़ेगी। वे ऐयार लोग महाराज जयसिंह को भी पकड़ ले जायें तो ताज्जुब नहीं और चन्द्रकान्ता के वास्ते तो आये ही हैं, इन्हीं

सब बातों से तुम्हें होशियार करने मैं चला था।' चपला ने पूछा, 'फिर अब क्या करना चाहिए ?' तेजसिंह ने कहा, 'एक काम करो, मैं हरदयाल सिंह नए दीवान को पकड़ता हूँ और उसकी सूरत बनाकर दीवान का काम करूँगा। ऐसा करने से फौज और सब नौकर हमारे हुक्म में रहेंगे और मैं बहुत कुछ कर सकूँगा। तुम भी महल में होशियारी के साथ रहा करना और जहाँ तक हो सके एक दफे मुझसे मिला करना। मैं दीवान तो बना रहूँगा ही मिलना कुछ मुश्किल न होगा, बराबर असली सूरत में मेरे घर अर्थात् हरदयालसिंह के यहाँ मिला करना, मैं उसके घर में भी उसी की तरह रहा करूँगा।'

थोड़ी देर तक चुहल के बाद चपला अपने महल की तरफ रुखसत हुई। तेजसिंह ने बाकी रात उसी जंगल में काटी और सुबह होते ही अपनी सूरत एक गन्धी की बना कई शीशी इत्र की कमर और दो एक हाथ में ले विजयगढ़ की गलियों में घूमने लगे। दिन भर इधर-उधर फिरते रहे, शाम के वक्त मौका देख हरदयालसिंह के मकान पर पहुँचे। देखा कि दीवान साहब लेटे हुए हैं और दो-चार दोस्त सामने बैठे गप्पें उड़ा रहे हैं। बाहर-भीतर खूब सन्नाटा है।

तेजसिंह इत्र की शीशियाँ लिए सामने पहुँचे और सलाम कर बैठ गए, तब कहा, 'लखनऊ का रहने वाला गन्धी हूँ, आपका नाम सुनकर आप ही के लायक अच्छे-अच्छे इत्र लाया हूँ!' यह कह शीशी खोल फाहा बना-बना देने लगे। हरदयालसिंह बहुत रहमदिल आदमी थे, इत्र सूँघने लगे और फाहा सूँघ-सूँघ अपने दोस्तों को भी देने लगे। थोड़ी देर में हरदयालसिंह और उनके सब दोस्त बेहोश होकर जमीन पर लेट गये। तेजसिंह ने हरदयालसिंह की गठरी बाँध पीठ पर लादी और मुँह पर कपड़ा ओढ़ नौगढ़ का रास्ता लिया, राह में अगर कोई मिला भी तो धोबी समझ कर न बोला।

शहर के बाहर निकल गए और बहुत तेजी के साथ चलकर उस खोह में पहुँचे जहाँ अहमद को कैद किया था। किवाड़ खोल के अन्दर गये और दीवान साहब को उसी तरह बेहोश वहाँ रख अंगूठी मोहर की उनकी उंगली से निकाल ली, कपड़े भी उतार लिए और बाहर चले आये। बेड़ी डालने और होश में लाने की कोई जरूरत नहीं देखी। तुरन्त लौटे और विजयगढ़ आ हरदयालसिंह की सूरत बनाकर उनके घर पहुँचे।

इधर दीवान साहब के भोजन करने का वक्त आ पहुँचा। लौंडी बुलाने आई, क्योंकि दीवान साहब तो हैं नहीं, उनके पाँच-चार दोस्त

गाफिल पड़े हैं। उसे बड़ा ताज्जुब हुआ और यकायक चिल्ला उठी। उसकी चिल्लाहट सुन नौकर और प्यादे आ पहुँचे तथा यह तमाशा देख हैरान हो गये, दीवान साहब को इधर-उधर ढूंढ़ा मगर कहीं पता न लगा।

ऐसी-ऐसी ताज्जुब भरी बातें हो रही थीं और सवेरा हुआ ही चाहता था कि सामने से दीवान हरदयालसिंह आते दिखाई पड़े जो दरअसल श्री तेजसिंह बहादुर थे। दीवान साहब को आते देख सबने घेर लिया और पूछने लगे कि 'आप कहाँ गये थे?' दोस्तों ने पूछा, 'वह नालायक गन्धी कहाँ गया और हम लोग बेहोश कैसे हो गए?' दीवान साहब ने कहा, 'वह चोर था, मैंने पहिचान लिया। अच्छी तरह से उसका इत्र नहीं सूँघा, अगर सूँघता तो तुम्हारी तरह मैं भी बेहोश हो जाता। मैंने उसको पहिचान कर पकड़ने का इरादा किया तो वह भागा, मैं भी गुस्से में उसके पीछे चला गया लेकिन वह निकल ही गया, अफसोस!'
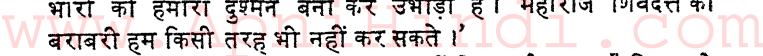
इतने में लौंडी ने अर्ज किया, 'कुछ भोजन कर लीजिए, सब के सब घर में भूखे बैठे हैं, इस वक्त तक सब को रोते ही गुजरा!' दीवान साहब ने कहा, 'अब तो सवेरा हो गया, भोजन क्या करूँ? मैं थक भी गया हूँ, सोने को जी चाहता है।' यह कह कर पलंग पर जा लेटे, उनके दोस्त भी अपने घर चले गये।

सवेरे मामूली वक्त पर दरबारी पोशाक पहने गुप्त रीति से ऐयारी का बटुआ कमर में बाँध दरबार की तरफ चले। दीवान साहब को देख रास्ते में बराबर दोपट्टी लोगों के हाथ उठने लगे, यह भी जरा-जरा सिर हिला सभी के सलामों का जवाब देते हुए कचहरी में पहुँचे। महाराज अभी नहीं आए थे। तेजसिंह हरदयालसिंह की खसलत से वाकिफ थे। उन्हीं के मामूल के मुताबिक यह भी दरबार में दीवान की जगह बैठ काम करने लगे, थोड़ी देर में महाराज भी आए।

दरबार में मौका पाकर हरदयालसिंह धीरे-धीरे अर्ज करने लगे, 'महाराजाधिराज, ताबेदार को पक्की खबर मिली है कि चुनार के राजा शिवदत्तसिंह ने क्रूरसिंह की मदद की है और पाँच ऐयार साथ करके सरकार से बेअदबी करने के लिए इधर रवाना किया है बल्कि यह भी कहा है कि पीछे हम भी लश्कर लेकर आवेंगे। आजकल वे ऐयार लोग जरूर सूरत बदल कर शहर में घूमते और बदमाशी की फिक्र करते होंगे।'

महाराज जयसिंह ने कहा, 'ठीक है, मुसलमानों का रंग हम भी बेढब देखते हैं। फिर तुमने क्या बन्दोबस्त किया?' धीरे-धीरे महाराज

और दीवान में बातें हो रही थीं कि इतने में दीवान साहब की निगाह एक चोबदार पर पड़ी जो दरबार में खड़ा छिपी निगाहों से चारों तरफ देख रहा था। वे गौर से उसकी तरफ देखने लगे। दीवान साहब को गौर के देखते हुए पा वह चोबदार चौकन्ना हो गया और कुछ संभल गया। बात छोड़ कड़क के दीवान साहब ने कहा, 'पकड़ो उस चोबदार को!' हुक्म पाते ही लोग उसकी तरफ झुके लेकिन वह सिर पर पैर रख के ऐसा भागा कि किसी के हाथ न लगा। तेजसिंह चाहते तो उस ऐयार को जो चोबदार बन के आया था पकड़ लेते मगर इनको तो सब काम बल्कि उठना-बैठना भी उसी तरह से करना था जैसा हरदयालसिंह करते थे, इस किए वह अपनी जगह से न उठे। वह ऐयार भाग गया जो चोबदार बना हुआ था, जो लोग पकड़ने गये वापस आये।

महाराज को यह तमाशा देख कर खौफ हुआ, जल्दी दरबार बर्खास्त कर दीवान को साथ ले तखलिए में चले गए। जब बैठे तो हरदयालसिंह से पूछा, 'क्यों जी, अब क्या करना चाहिए? उस दुष्ट क्रूर ने तो एक बड़े भारी को हमारा दुश्मन बना कर उभाड़ा है। महाराज शिवदत्त की बराबरी हम किसी तरह भी नहीं कर सकते।'

दीवान साहब ने कहा, 'महाराज मैं फिर अर्ज करता हूँ कि हमारे सरकार में इस समय कोई ऐयार नहीं, नाजिम और अहमद थे सो क्रूर ही की तरफ जा मिले हैं, ऐयारों का जवाब बिना ऐयार के कोई नहीं दे सकता। वे लोग बड़े चालाक और फसादी होते हैं, हजार-पाँच सौ की जान ले लेना उन लोगों के आगे कोई बात नहीं है, इसलिए जरूर कोई ईमानदार ऐयार मुकर्रर करना चाहिए, पर यह भी यकायक नहीं हो सकता। सुना है कि राजा सुरेन्द्रसिंह के दीवान का लड़का तेजसिंह बड़ा भारी ऐयार निकला है, मैं उम्मीद करता हूँ कि अगर महाराज चाहेंगे और तेजसिंह को मदद के लिए माँगेंगे तो राजा सुरेन्द्रसिंह को देने में उज्र न होगा क्योंकि वे महाराज को दिल से चाहते हैं। क्या हुआ अगर महाराज ने बीरेन्द्रसिंह का आना-जाना बन्द कर दिया, अब भी राजा सुरेन्द्रसिंह का दिल महाराज की तरफ से वैसा ही है जैसा पहिले था।'

हरदयालसिंह की बात सुन के थोड़ी देर तक महाराज गौर करते रहे फिर बोले, 'तुम्हारा कहना ठीक है, सुरेन्द्रसिंह और उनका लड़का बीरेन्द्रसिंह दोनों बड़े लायक हैं। इसमें कुछ शक नहीं कि बीरेन्द्रसिंह वीर है और राजनीति भी अच्छी तरह जानता है, हजार सेना लेकर दस हजार से लड़ने वाला है और तेजसिंह की चालाकी में भी कोई फर्क

नहीं। जैसा तुम कहते हो वैसा ही है, मगर मुझसे उन लोगों के साथ बड़ी ही बेमुरौवती हो गई है जिसके लिए मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ, मुझे उनसे मदद माँगते शर्म मालूम होती है, इसके अलावा क्या जाने उनको मेरी तरफ से रंज हो गया हो, हाँ तुम जाओ और उनसे मिलो, अगर मेरी तरफ से कुछ मलाल उनके दिल में हो तो उसको मिटा दो और तेजसिंह को लाओ तो काम चले।'

हरदयालसिंह महाराज से विदा हो अपने घर आये मगर अन्दर जनाने में न जाकर बाहर ही रहे, खाने को वहाँ ही मंगवाया। खा-पी कर बैठे और सोचने लगे कि चपला से मिल के सब हाल कह लें तो जायें। थोड़ा दिन बाकी था जब चपला आई। एकान्त में ले जाकर हरदयालसिंह ने सब हाल कहा और वह चिट्ठी भी दिखाई जो महाराज ने लिख दी थी। चपला बहुत ही खुश हुई और बोली, 'हरदयालसिंह तुम्हारे मेल में आ जाएगा, वह बहुत ही लायक है। अब तुम जाओ, इस काम को जल्दी करो।' चपला तेजसिंह की चालाकी की तारीफ करने लगी, अब बीरेन्द्रसिंह से मुलाकात होगी यह उम्मीद दिल में हुई।

नकली हरदयालसिंह नौगढ़ की तरफ रवाना हुए, रास्ते में अपनी सूरत असली बना ली।

[नौगढ़ और विजयगढ़ का राज पहाड़ी है, जंगल भी बहुत भारी और घना है उन ऐयारों ने जो चुनार से क्रूर और नाजिम के संग आये थे, शहर में न जाकर इसी दिलचस्प जंगल में मय क्रूर के अपना डेरा जमाया और आपस में यह राय हो गई कि सब अलग-अलग जाकर ऐयारी करें तथा जब जरूरत हो जंगल में जफील बजा कर इकट्ठे हो जाया करें। बद्रीनाथ ने जो इन ऐयारों में सबसे ज्यादा चालाक और होशियार था यह राय निकाली कि एक दफे सब कोई अलग-अलग भेष बदल कर शहर में घुस दरबार और महल के सब आदमियों तथा लौंडियों बल्कि रानी तक को देख के पहिचान आवें तथा चाल-चलन तजबीज कर नाम भी याद कर लें जिसमें वक्त पर ऐयारी करने के लिए सूरत बदलने और बातचीत करने में फर्क न पड़े। इस राय को सबने पसन्द किया, नाजिम ने सबका नाम बताया और जहाँ तक हो सका पहिचनवा भी दिया। वे ऐयार लोग तरह-तरह के भेष बदल कर महल में भी घुस गये और सब कुछ देख-भाल आये, मगर ऐयारी का मौका चपला की होशियारी से किसी

को न मिला और उनको ऐयारी करना मंजूर भी न था जब तक कि हर तरह से देखभाल न लेते।

जब वे लोग हर तरह से होशियार और वाकिफ हो गये तब ऐयारी करना शुरू किया। भगवानदत्त चपला की सूरत बना नौगढ़ में बीरेन्द्रसिंह को फाँसने के लिए चला। वहाँ पहुँच कर जिस कमरे में बीरेन्द्रसिंह थे उसके दरवाजे पर पहुँच पहरे वाले से कहा, 'जाकर कुमार से कहो कि विजयगढ़ से चपला आई है।' उस प्यादे ने जाकर खबर दी। कुछ रात गुजर गई थी, कुंवर बीरेन्द्रसिंह चन्द्रकान्ता की याद में बैठे तबीयत से हजारों तरकीबें निकाल रहे थे, बीच-बीच में ऊँची साँस भी लेते जाते थे, उसी वक्त चोबदार ने आकर अर्ज किया—'पृथ्वीनाथ, विजयगढ़ से चपला आई हैं और ड्योढ़ी पर खड़ी हैं, क्या हुक्म होता है?' कुमार चपला का नाम सुनते ही चौंक उठे और खुश होकर बोले, 'उसे जल्दी अन्दर लाओ।' हुक्म के बमूजिब चपला हाजिर हुई, कुमार चपला को देखकर उठ खड़े हुए और हाथ पकड़ अपने पास बैठा बातचीत करने लगे, चन्द्रकान्ता का हाल पूछा। चपला ने कहा, 'अच्छी हैं सिवाय आपकी याद के और किसी तरह की तकलीफ नहीं है, वह हमेशा कहा करती हैं कि बड़े बेमुरौवत हैं, कभी खबर भी नहीं लेते कि जीती है या मर गई। आज घबरा कर मुझको भेजा है और यह दो नासपातियाँ अपने हाथ से छील काट कर आपके वास्ते भेजी हैं तथा अपने सर की कसम दी है कि इन्हें जरूर खाइएगा!' बीरेन्द्रसिंह चपला की बातें सुन बहुत खुश हुए। चन्द्रकान्ता का इश्क पूरे जोरों पर था, धोखे में आ गये, भले-बुरे की कुछ तमीज न रही, चन्द्रकान्ता की कसम कैसे टालते, झट नासपाती का टुकड़ा उठा लिया और मुँह से लगाया था कि सामने से आते हुए तेजसिंह दिखाई पड़े। तेजसिंह ने देखा बीरेन्द्रसिंह बैठे हैं, सामने चपला भी बैठी है, आगे नासपाती के टुकड़े रखे हैं, एक टुकड़ा हाथ में है। देखते ही आग हो गये। ललकारकर बोले, 'खबरदार, मुँह में मत डालना!' इतना सुनते ही बीरेन्द्रसिंह रुक गये और बोले, 'क्यों क्या है?' तेजसिंह ने कहा, 'मैं जाती दफे हजार बार समझा गया, अपना सर मार गया, मगर आपको ख्याल न हुआ! कभी आगे भी चपला यहाँ आई थी! आपने क्या खाक पहिचाना कि यह चपला है या कोई ऐयार! बस सामने रंडी को देख मीठी-मीठी बातें सुन मजे में आ गए!'

तेजसिंह की घुड़की सुन बीरेन्द्रसिंह तो शरमा गये और चपला के मुँह की तरफ देखने लगे मगर नकली चपला से न रहा गया, फँस तो चुकी

ही थी, झट खंजर निकाल कर तेजसिंह पर दौड़ी। बीरेन्द्रसिंह भी जान गये कि यह ऐयार है, उसको खंजर ले तेजसिंह पर दौड़ते देख लपक कर एक हाथ से उसकी कलाई पकड़ी जिसमें खंजर था, दूसरा हाथ कमर में डाल उठा लिया और सिर से ऊँचा कर चाहते थे कि फेंकें जिससे हड्डी-पसली सब चूर हो जाय कि तेजसिंह ने आवाज दी, 'हाँ-हाँ पटकना मत मर जाएगा, ऐयार लोगों का तो काम ही यही है, छोड़ दो, मेरे हवाले करो।' यह सुन कुमार ने उसे धीरे से जमीन पर पटक कर मुश्कें बाँध तेजसिंह के हवाले किया। तेजसिंह ने जबरदस्ती उसके नाक में दवा ठूंस बेहोश किया और गठरी में बाँध किनारें रख बातें करने लगे।

तेजसिंह ने कुमार को समझाया और कहा, 'देखिये जो हो गया सो हो गया, मगर अब धोखा मत खाइयेगा।' कुमार बहुत शर्मिन्दा थे, इसका कुछ जवाब न दे विजयगढ़ का हाल पूछने लगे। तेजसिंह ने सब खुलासा ब्यौरा कहा और चिट्ठी भी दिखाई जो महाराज जयसिंह ने राजा सुरेन्द्रसिंह के नाम लिखी थी। कुमार यह सब सुन और चिट्ठी देख उछल पड़े, मारे खुशी के तेजसिंह को गले से लगा लिया और बोले, 'अब जो कुछ भी करना हो जल्दी कर डालो।' तेजसिंह ने कहा, 'हाँ देखो सब कुछ हो जाता है, घबराओ मत।' इसी तरह दोनों को बातें करते तमाम रात गुजर गई।

सवेरा हुआ चाहता था जब तेजसिंह उस ऐयार की गठरी पीठ पर लादे उसी तहखाने की तरफ रवाना हुए जिसमें अहमद को कैद कर आये थे। तहखाने का दरवाजा खोल अन्दर गए, टहलते-टहलते चश्मे के पास जा निकले। देखा कि अहमद नहर के किनारे सोया है और हरदयालसिंह एक पेड़ के नीचे पत्थर की चट्टान पर सर झुकाये बैठे हैं। तेजसिंह को देख कर हरदयालसिंह उठ खड़े हुए और बोले, 'क्यों तेजसिंह मैंने क्या कसूर किया जो मुझको कैद कर रखा है?' तेजसिंह ने हँस कर जवाब दिया, 'अगर कोई कसूर किया होता तो पैर में बेड़ी पड़ी होती, जैसा कि अहमद को आपने देखा होगा। आपने कोई कसूर नहीं किया सिर्फ एक दिन आपको रोक रखने से मेरा बहुत काम निकलता था इसलिए मैंने ऐसी बेअदबी की। माफ कीजिए। अब आपको अख्तियार है चाहे जहाँ जाएँ मैं ताबेदार हूँ। विजयगढ़ में नेक ईमानदार, इन्साफ पसन्द सिवाय आपके और कोई नहीं है, इसी सबसे मैं भी मदद का उम्मीदवार हूँ।'

हरदयालसिंह ने कहा, 'सुनो तेजसिंह तुम खुद जानते हो कि मैं

हमेशा से तुम्हारा और कुँअर बीरेन्द्रसिंह का दोस्त हूँ, मुझको तुम लोगों की खिदमत करने में कोई उज्र नहीं। मैं तो हैरान था कि दोस्त आदमी को तेजसिंह ने क्यों कैद किया! पहले तो मुझको यह भी नहीं मालूम हुआ कि मैं यहाँ कैसे आया, मर के आया हूँ या जीते जी, पर जब अहमद को देखा तो समझ गया कि यह तुम्हारी ही करामात है, भला यह तो कहो मुझको यहाँ रखकर तुमने क्या कार्रवाई की और मैं तुम्हारा क्या काम कर सकता हूँ?'

तेज, 'मैं आपकी सूरत बना कर आपके जनाने में नहीं गया इससे आप खातिर जमा रखिये।'

हर, 'तुमको तो मैं अपने लड़के से ज्यादा समझता हूँ, अगर जनाने में जाते ही तो क्या था! खैर हाल कहो।'

तेजसिंह ने महाराज जयसिंह की चिट्ठी दिखाई, हरदयालसिंह के कपड़े जो पहिने हुए थे उनको दे दिये और सब खुलासा हाल कह कर बोले, 'अब आप अपने कपड़े सहेज लीजिये और यह चिट्ठी लेकर दरबार में जाइये, राजा से मुझको माँग लीजिये जिसमें मैं आपके साथ चलूँ, नहीं तो वे ऐयार जो चुनार से आये हैं, विजयगढ़ को गारत कर डालेंगे और महाराज शिवदत्त अपना कब्जा विजयगढ़ में कर लेंगे। मैं आपके संग चल कर उन ऐयारों को गिरफ्तार करूँगा। आप दो बातों का ज्यादा ख्याल रखिएगा, एक यह कि जहाँ तक बने मुसलमानों को बाहर कीजिये और हिन्दुओं को रखिये, दूसरे यह कि कुँअर बीरेन्द्रसिंह का हमेशा ध्यान रखिये और महाराज से बराबर उनकी तारीफ किया कीजिये जिससे महाराज मदद के वास्ते उनको भी बुलावें!'

हरदयालसिंह ने कसम खाकर कहा, 'मैं हमेशा से तुम लोगों का खैरखाह हूँ, जो कुछ तुमने कहा है उससे ज्यादे कर दिखाऊँगा।'

तेजसिंह ने ऐयार की गठरी खोली और एक खुलासा बेड़ी उसके पैर में डाल तथा ऐयारी का बटुआ और खंजर उसके कमर से निकालने के बाद उसे होश में लाए। उसके चेहरे को साफ किया तो मालूम हुआ कि भगवानदत्त है।

ऐयार होने के कारण चुनार के सब ऐयारों को तेजसिंह पहिचानते थे और वे सब लोग भी उनको बखूबी जानते थे। तेजसिंह ने भगवानदत्त को नहर के किनारे छोड़ा और हरदयालसिंह को साथ ले खोह के बाहर चले। दरवाजे के पास आए, हरदयालसिंह से कहा कि 'आप मेहरबानी करके मुझे इजाजत दें कि मैं थोड़ी देर के लिए आपको फिर बेहोश करूँ,

तहखाने के बाहर होश में ले आऊँगा।' हरदयालसिंह ने कहा, 'इसमें मुझको कुछ उज्र नहीं है, मैं यह नहीं चाहता कि इस तहखाने में आने का रास्ता देख लूँ, यह तुम्हीं लोगों का काम है, मैं देख कर क्या करूँगा !'

तेजसिंह हरदयालसिंह को बेहोश करके बाहर लाए और होश में लाकर बोले, 'अब आप कपड़े पहिन लीजिए और मेरे साथ चलिए।' उन्होंने वैसा ही किया।

शहर में आकर तेजसिंह के कहे मुताबिक हरदयालसिंह अलग होकर अकेले राजा सुरेन्द्रसिंह के दरबार में गए। राजा ने उनकी बड़ी खातिर की और हाल पूछा। उन्होंने बहुत कुछ कहने के बाद महाराज जयसिंह की चिट्ठी दी जिसको राजा ने इज्जत के साथ लेकर अपने वजीर जीतसिंह को पढ़ने के लिए दिया, जीतसिंह ने जोर से खत पढ़ा। राजा सुरेन्द्रसिंह चिट्ठी सुन कर बहुत खुश हुए और हरदयालसिंह की तरफ देख कर बोले, 'मेरा राज्य महाराज जयसिंह का है जिसे चाहें बुला लें मुझे कुछ उज्र नहीं, तेजसिंह आपके साथ जायेगा।' यह कह अपने वजीर जीतसिंह को हरदयालसिंह की मेहमानी का हुक्म दिया और दरबार बर्खास्त किया।

दीवान हरदयालसिंह की मेहमानी तीन दिन तक बहुत अच्छी तरह से की गई जिससे वे बहुत ही खुश हुए। चौथे दिन दीवान साहब ने राजा से रुखसत माँगी, राजा ने बहुत कुछ दौलत-जवाहिरात से उनकी विदाई की और तेजसिंह को बुला समझा-बुझा कर दीवान साहब के संग किया।

बड़े साज समान के साथ ये दोनों विजयगढ़ पहुँचे और शाम के दरबार में महाराज के पास हाजिर हुए। हरदयालसिंह ने महाराज की चिट्ठी का जवाब दिया और सब हाल कह सुरेन्द्रसिंह की बड़ी तारीफ की जिससे महाराज बहुत ही खुश हुए और तेजसिंह को उसी वक्त खिलअत देकर हरदयालसिंह को हुक्म दिया कि 'इनके रहने के लिए मकान का बन्दोबस्त कर दो और इनकी खातिरदारी और मेहमानी का बोझ अपने ऊपर समझो।'

दूसरे दिन तेजसिंह महाराज के दरबार में हाजिर हुए, दीवान हरदयालसिंह के बगल में एक कुर्सी उनके वास्ते मुकर्रर की गई।

☐ दूसरे दिन शाम के वक्त तेजसिंह ने अपनी सूरत भगवानदत्त की बनाई जिसको तहखाने में बन्द कर आये थे और शहर से निकल जंगल में इधर-उधर घूमने लगे, पर कहीं कुछ पता न लगा। बरसात का दिन आ चुका था, रात अंधेरी और बदली छाई थी, आखिर तेजसिंह ने एक टीले पर खड़े होकर जफील बजाई।

थोड़ी देर में तीनों ऐयार मय पण्डित जगन्नाथ ज्योतिषी के उसी जगह पहुँचे और भगवानदत्त को खड़े देख बोले, 'क्यों जी, तुम नौगढ़ न गये थे? क्या किया, खाली क्यों चले आये?'

तेजसिंह ने सबको पहिचानने के बाद जवाब दिया, 'वहाँ तेजसिंह की बदौलत कोई कार्रवाई न चली, तुम लोगों में से कोई एक आदमी हमारे साथ चले तो काम बने!'

पन्ना, 'अच्छा कल हम तुम्हारे साथ चलेंगे, आज चलो महल में कोई कार्रवाई करें।'

तेज, 'अच्छा चलो, मगर मुझको इस वक्त भूख बड़े जोर की लगी है, कुछ खा लूँ तो काम में जी लगे। तुम लोगों के पास कुछ हो तो लाओ।'

जगन्नाथ, 'पास में तो जो कुछ है बेहोशी मिला है, बाजार से जाकर कुछ लाओ तो सब कोई खा-पीकर छुट्टी करें।'

भगवान, 'अच्छा एक आदमी मेरे साथ चलो।'

पन्नालाल साथ हुए, दोनों शहर की तरफ चले। रास्ते में पन्नालाल ने कहा, 'हम लोगों को अपनी सूरत बदल लेनी चाहिए क्योंकि तेजसिंह कल से इसी शहर में आया है और हम सभी को पहिचानता भी है, शायद घूमता-फिरता कहीं मिल जाय।'

भगवानदत्त ने यह सोचकर कि सूरत बदलेंगे तो रौगन लगाते वक्त शायद यह पहिचान ले, जवाब दिया, 'कोई जरूरत नहीं, कौन रात को मिलता है।' भगवानदत्त के इन्कार करने से पन्नालाल को शक हो गया और गौर से इनकी सूरत देखने लगा मगर रात अंधेरी थी पहिचान न सका, आखिर को जोर से जफील बजाई। शहर के पास आ चुके थे, ऐयार लोग दूर थे जफील न सुन सके; तेजसिंह भी समझ गये कि इसको शक हो गया, अब देर करने की कुछ जरूरत नहीं, झट उसके गले में हाथ डाल दिया, पन्नालाल ने भी खंजर निकाल लिया, दोनों में खूब हो गई। आखिर को तेजसिंह ने पन्नालाल को उठा के दे मारा और मुश्कें कस बेहोश करके गठरी बाँध ली तथा पीठ पर लाद शहर की तरफ रवाना

हुए।

असली सूरत बनाए हुए डेरे पर पहुँचे। एक कोठरी में पन्नालाल को बन्द कर दिया और पहरे वालों को सख्त ताकीद कर आप उसी कोठरी के दरवाजे पर पलंग बिछवा सो रहे, सवेरे पन्नालाल को साथ ले दरबार की तरफ चले।

इधर रामनारायण बद्रीनाथ और ज्योतिषीजी राह देख रहे थे कि अब दोनों आदमी खाने का सामान लाते होंगे मगर कुछ नहीं, यहाँ तो मामला ही दूसरा था। उन लोगों को शक हो गया कि कहीं दोनों गिरफ्तार न हो गये हों मगर यह ख्याल में न आया कि भगवानदत्त असल में दूसरे ही कृपा-निधान थे।

उस रात तो कुछ न कर सके पर सवेरे सूरत बदल कर खोज में निकले। पहले महाराज जयसिंह के दरबार की तरफ चले, देखा कि तेज-सिंह दरबार में जा रहे हैं और उनके पीछे-पीछे दस-पन्द्रह सिपाही कैदी की तरह पन्नालाल को लिए चल रहे हैं। उन ऐयारों ने भी साथ ही साथ दरबार का रास्ता पकड़ा।

तेजसिंह पन्नालाल को साथ लिए दरबार में पहुँचे, देखा कि कचहरी खूब लगी हुई है, महाराज बैठे हैं। महाराज ने पूछा, 'क्यों तेजसिंह किसको लाए हो!' तेजसिंह ने जवाब दिया, 'महाराज, उन पाँचों ऐयारों में से जो चुनार से आये हैं एक गिरफ्तार हुआ है, इसको सरकार में लाया हूँ। जो इसके लिए मुनासिब हो हुक्म किया जाय।'

महाराज ने हुक्म दिया, 'बस इससे ज्यादे पूछने की कोई जरूरत नहीं, सीधे कैदखाने में ले जाकर इसको बन्द करो, सख्त पहरा बैठा दो।' हुक्म पाते ही प्यादों ने उस ऐयार के हाथों में हथकड़ी और पैरों में बेड़ी डाल दी और कैदखाने की तरफ ले गये। महाराज ने खुश होकर तेजसिंह को सौ अशर्फी इनाम दीं। तेजसिंह ने खड़े होकर महाराज को सलाम किया और अशर्फियाँ बटुए में रख लीं।

रामनारायण बद्रीनाथ और ज्योतिषीजी भेष बदले हुए दरबार में खड़े यह सब तमाशा देख रहे थे। जब पन्नालाल को कैदखाने का हुक्म हुआ वे लोग भी बाहर चले आए और आपस में सलाह कर भारी चालाकी की। किनारे जाकर बद्रीनाथ ने तो तेजसिंह की सूरत बनाई और रामनारायण और ज्योतिषीजी प्यादे बनकर तेजी के साथ उन सिपाहियों की तरफ चले जो पन्नालाल को कैदखाने की तरफ लिए जा रहे थे। पास पहुँच कर बोले, 'ठहरो-ठहरो, इस नालायक ऐयार के लिए महाराज ने दूसरा हुक्म दिया

है, क्योंकि मैंने अर्ज किया था कि कैदखाने में इसके संगी-साथी इसको किसी-न-किसी तरह छुड़ा ले जायेंगे, अगर मैं इसको अपनी हिफाजत में रक्खूंगा तो बेहतर होगा क्योंकि मैंने इसको पकड़ा है, मेरी ही हिफाजत में यह रह भी सकेगा, सो तुम लोग इसको मेरे हवाले करो।'

प्यादे तो जानते ही थे कि इसको तेजसिंह ने पकड़ा है, कुछ इन्कार न किया और उसे उनके हवाले कर दिया। नकली तेजसिंह ने पन्नालाल को ले जंगल का रास्ता लिया। उसके चले जाने पर उसका हाल अर्ज करने के लिए प्यादे फिर दरबार में लौट आये। दरबार उसी तरह से लगा हुआ था, तेजसिंह भी अपनी जगह बैठे हुए थे। उनको देख प्यादों के होश उड़ गये और अर्ज करते-करते रुक गये। तेजसिंह ने उनकी तरफ देखकर पूछा, 'क्यों क्या है, उस ऐयार को कैद कर आये?' प्यादों ने डरते-डरते कहा, 'जी उसको तो आप ही ने हम लोगों से ले लिया।' तेजसिंह उनकी बात सुनकर चौंक पड़े और बोले, 'मैंने क्या किया, मैं तो तब से इसी जगह बैठा हूँ!'

प्यादों की जान डर और ताज्जुब से सूख गई, कुछ जवाब न दे सके, पत्थर की तस्वीर की तरह जैसे के तैसे खड़े रहे। महाराज ने तेजसिंह की तरफ देखकर पूछा, 'क्यों क्या हुआ?' तेजसिंह ने कहा, 'महाराज, ऐयार चालाकी खेल गए, मेरी सूरत बना उस कैदी को इन लोगों से छुड़ा ले गए।' यह सुन महाराज को बड़ा रंज हुआ और उन प्यादों पर बहुत खफा हुए। तेजसिंह ने अर्ज किया, 'महाराज इन लोगों का कोई कसूर नहीं, ऐयार लोग ऐसे ही होते हैं, बड़े-बड़ों को धोखा दे जाते हैं, इन लोगों की क्या हैसियत है।'

तेजसिंह के कहने से महाराज ने उन प्यादों का कसूर माफ किया, मगर उस ऐयार के निकल जाने का रंज देर तक रहा।

बद्रीनाथ वगैरह पन्नालाल को लिए हुए जंगल में पहुँचे, एक पेड़ के नीचे बैठ कर उसका हाल पूछा, उसने सब हाल कहा। अब इन लोगों को मालूम हुआ कि भगवानदत्त को भी तेजसिंह ने पकड़ के कहीं छिपाया है, यह सोच सभी ने पण्डित जगन्नाथ से कहा, 'आप रमल के जरिए दरियाफ्त कीजिए कि भगवानदत्त कहाँ हैं?' ज्योतिषीजी ने रमल फेंका और कुछ गिनगिना कर कहा, 'बेशक भगवानदत्त को भी तेजसिंह ने पकड़ा है और यहाँ से दो कोस उत्तर की तरफ एक खोह में कैद कर रक्खा है।' यह सुन सभी ने उस खोह की तरफ का रास्ता लिया। ज्योतिषीजी बार-बार रमल फेंकते और विचार करते हुए उस खोह तक पहुँचे और अन्दर गये, जब

उजाला नजर आया तो देखा सामने एक फाटक है मगर यह नहीं मालूम होता कि किस तरह खुलेगा। ज्योतिषीजी ने फिर रमल फेंका और सोच कर कहा, 'यह दरवाजा एक तिलिस्म के साथ मिला हुआ है और रमल तिलिस्म में कुछ काम नहीं कर सकता, इसके खोलने की कोई तरकीब निकाली जाय तो काम चले।' लाचार वे सब उस खोह के बाहर निकल आये और ऐयारी की फिक्र करने लगे।

☐ एक दिन तेजसिंह वालादवी के लिए विजयगढ़ के बाहर निकले। पहर दिन बाकी था जब घूमते-फिरते बहुत दूर निकल गये। देखा कि एक पेड़ के नीचे कुँवर बीरेन्द्रसिंह बैठे हैं। उनकी सवारी का घोड़ा पेड़ से बँधा हुआ है, सामने एक बारहसिंघा मरा पड़ा है, उसके एक तरफ आग सुलग रही है, और पास जाने पर देखा कि कुमार के सामने पत्तों पर कुछ टुकड़े गोश्त के भी पड़े हैं।

तेजसिंह को देख कर कुमार ने जोर से कहा, 'आओ भाई तेजसिंह। आज मैं कई आदमियों को साथ ले सवेरे ही शिकार के लिए निकला, दोपहर तक तो हैरान रहा कुछ हाथ न लगा, आखिर को यह बारहसिंघा सामने से निकला और मैंने इसके पीछे घोड़ा फेंका। इसने मुझको बहुत हैरान किया, संग के सब साथी छूट गये, अब इस समय तीर खाकर गिरा है। मुझको भूख बड़ी जोर की लगी थी इससे जी में आया कि कुछ गोश्त भून के खाऊँ। इसी फिक्र में बैठा था कि सामने से तुम दिखाई पड़े, अब लो तुम ही इसको भूनो। मेरे पास कुछ मसाला था उसको मैंने धो-धाकर इन टुकड़ों में लगा दिया है अब तैयार करो, तुम भी खाओ मैं भी खाऊँ मगर जल्दी करो आज दिन-भर से कुछ नहीं खाया।

तेजसिंह ने बहुत जल्द गोश्त तैयार किया। और एक सोते के किनारे जहाँ साफ पानी निकल रहा था बैठ कर दोनों खाने लगे। बीरेन्द्रसिंह मसाला पोंछ-पोंछ कर खाते थे, तेजसिंह ने पूछा, 'आप मसाला क्यों पोंछ रहे हैं?' कुमार ने जवाब दिया, 'फीका अच्छा मालूम होता है। दो-तीन टुकड़े खाकर बीरेन्द्रसिंह ने सोते में से चिल्लू भर-भर के खूब पानी पिया और कहा, 'बस भाई मेरी तबीयत भर गई, दिन-भर भूखे रहने पर कुछ खाया नहीं जाता।' तेजसिंह ने कहा, 'आप खाइये चाहे न खाइये मैं तो छोड़ना नहीं, बड़े मजे का बन पड़ा है।' आखिर जहाँ तक बन पड़ा खूब खाया और तब हाथ-मुंह धोकर बोले, 'चलिये अब आपको नौगढ़

पहुँचा कर फिर फिरेंगे।' बीरेन्द्रसिंह 'चलो' कह कर घोड़े पर सवार हुए और तेजसिंह पैदल साथ चले।

थोड़ी दूर जाकर तेजसिंह बोले, 'न मालूम क्यों मेरा सिर घूमता है।' कुमार ने कहा, 'तुम मांस ज्यादे खा गये हो, उसने गर्मी की है।' थोड़ी दूर गये थे कि तेजसिंह चक्कर खाकर जमीन पर गिर पड़े। बीरेन्द्रसिंह ने झट से घोड़े पर से कूदकर उनके हाथ-पैर खूब कसके गठरी में बाँध पीठ पर लाद लिया और घोड़े की बाग थाम विजयगढ़ का रास्ता लिया। थोड़ी दूर जाकर जोर से जफील (सीटी) बजाई जिसकी आवाज जंगल में दूर दूर गूंज गई। थोड़ी देर में क्रूरसिंह, पन्नालाल, रामनारायण और ज्योतिषी आ पहुँचे। पन्नालाल ने खुश होकर कहा, 'वाह जी बद्रीनाथ, तुमने तो बड़ा भारी काम किया। बड़े जबर्दस्त को फाँसा! अब क्या है, ले लिया!!' क्रूरसिंह मारे खुशी के उछल पड़ा। बद्रीनाथ ने जो अभी तक कुँवर बीरेन्द्रसिंह बना हुआ था गठरी पीठ से उतार जमीन पर रख दी और रामनारायण से कहा, 'तुम इस घोड़े को नौगढ़ पहुँचा दो, जिस अस्तबल से चुरा लाये थे उसी के पास छोड़ आओ आप ही लोग बाँध लेंगे।' यह सुनकर रामनारायण घोड़े पर सवार हो नौगढ़ चला गया। बद्रीनाथ ने तेजसिंह की गठरी फिर अपनी पीठ पर लादी और ऐयारों को कुछ समझा कर चुनार का रास्ता लिया।

तेजसिंह को रोज महाराज जयसिंह के दरबार में जाते और सलाम करके अपनी कुर्सी पर बैठ जाते। यह बात महाराज को मालूम थी। दो एक दिन महाराज ने तेजसिंह की कुर्सी खाली देखी, हरदयालसिंह से पूछा कि 'आजकल तेजसिंह नजर नहीं आते क्या तुमसे मुलाकात हुई थी?' दीवान साहब ने अर्ज किया, 'नहीं मुझसे भी मुलाकात नहीं हुई, आज दरियाफ्त करके अर्ज करूंगा।' दरबार बर्खास्त होने के बाद दीवान साहब तेजसिंह के डेरे पर गए, मुलाकात न होने पर नौकरों से दरियाफ्त किया। सभी ने कहा, कई दिन से वे यहाँ नहीं हैं, हम लोगों ने बहुत खोज की मगर पता न लगा।'

दीवान हरदयालसिंह यह सुनकर हैरान हो गए। अपने मकान पर जाकर सोचने लगे कि अब क्या किया जाये। अगर तेजसिंह का पता न लगेगा तो बड़ी बदनामी होगी, जहाँ से हो खोज लगाना चाहिए। आखिर बहुत से आदमियों को इधर-उधर पता लगाने के लिए रवाना किया और अपनी तरफ से एक चिट्ठी नौगढ़ के दीवान जीतसिंह के पास भेज कर ले जाने वाले को ताकीद कर दी कि कल दरबार के पहिले इस

का जवाब लेकर आ जाना। वह आदमी खत लिए शाम को नौगढ़ पहुँचा और दीवान जीतसिंह के मकान पर जाकर अपने आने की इत्तिला करवाई। दीवान साहब ने अपने सामने बुलाकर हाल पूछा, उसने सलाम करके खत दिया जिसको दीवान साहब से गौर से पढ़ा। दिल में यकीन हो गया कि तेजसिंह जरूर ऐयारों के हाथ पकड़ गया। यह जवाब लिख कर कि 'वह यहाँ नहीं है' आदमी को तो विदा कर दिया और अपने कई जासूसों को बुला कर पता लगाने के लिए इधर-उधर रवाना किया। दूसरे दिन दरबार में जीतसिंह ने राजा सुरेन्द्रसिंह से अर्ज किया, 'महाराज, कल विजयगढ़ के दीवान हरदयालसिंह का पत्र लेकर एक आदमी आया था, यह दरियाफ्त किया था कि तेजसिंह नौगढ़ में है कि नहीं क्योंकि कई दिनों से वह विजयगढ़ में नहीं है। मैंने जवाब में लिख दिया है कि 'यहाँ नहीं है।'

राजा को यह सुन ताज्जुब हुआ और दीवान साहब से पूछा, 'तेजसिंह वहाँ भी नहीं है और यहाँ भी नहीं आया तो कहाँ चला गया ? कहीं ऐसा तो नहीं हुआ कि ऐयारों के हाथ पड़ गया, क्योंकि महाराज शिवदत्त के कई ऐयार विजयगढ़ में पहुँचे हुए हैं और उससे मुकाबला करने के लिए अकेला तेजसिंह ही गया था।' दीवान साहब ने कहा, 'जहाँ तक मैं समझता हूँ वह ऐयारों के ही हाथ में गिरफ्तार हो गया होगा, खैर जो कुछ होगा दो चार दिन में मालूम हो जाएगा।'

कुँवर बीरेन्द्रसिंह भी दरबार में राजा के दाहिने तरफ कुर्सी पर बैठे यह बात सुन रहे थे। उन्होंने अर्ज किया, 'अगर हुक्म हो तो मैं तेजसिंह का पता लगाने जाऊँ।' दीवान जीतसिंह ने यह सुन कुमार की तरफ देखा और हँसकर जवाब दिया, 'आपकी हिम्मत और जवांमर्दी में कोई शक नहीं, मगर किसी ऐयार को कोई ऐयार पकड़ता है तो सिवाय कैद रखने के जान से नहीं मारता, अगर तेजसिंह उन लोगों के हाथ में पड़ गया है तो कैद होगा, किसी तरह छूट ही जायगा क्योंकि वह अपने फन में बड़ा होशियार है, सिवाय इसके जो ऐयारी का काम करेगा चाहे वह कितना ही चालाक क्यों न हो कभी न कभी फँस ही जाएगा, फिर इसके लिए सोचना क्या ? दस-पाँच दिन सब्र कीजिए देखिए क्या होता है इस बीच में अगर वह न आया तो आपको जो कुछ करना हो कीजिएगा।'

बीरेन्द्रसिंह ने जवाब दिया, 'हाँ आपका कहना ठीक है मगर पता लगाना जरूरी है, यह सोचकर कि वह चालाक है खुद छूट आवेगा—

खोज न करना मुनासिब नहीं।' जीतसिंह ने कहा, 'सच है, आपको मुहब्बत के सबब से उसका ज्यादा ख्याल है, खैर देखा जायेगा।' यह सुन राजा सुरेन्द्रसिंह ने कहा, 'और कुछ नहीं तो किसी को पता लगाने के लिए तो भेज ही दो।' इसके जवाब में दीवान साहब ने कहा, 'कई जासूसों को पता लगाने के लिए मैं भेज चुका हूँ।' राजा और कुँवर बीरेन्द्रसिंह चुप हो रहे मगर खयाल इस बात का किसी के दिल से न गया।

विजयगढ़ में दूसरे दिन दरबार में महाराज जयसिंह ने फिर हरदयाल सिंह से पूछा, 'कहीं तेजसिंह का पता लगा?' दीवान साहब ने कहा, 'यहाँ तो तेजसिंह का पता नहीं लगता शायद नौगढ़ में हों। मैंने वहाँ भी आदमी भेजा है, अब आता ही होगा, जो कुछ है मालूम हो जाएगा।' ये बातें हो ही रही थीं कि खत का जवाब लिए वह आदमी आ पहुँचा जो नौगढ़ गया था। हरदयालसिंह ने जवाब पढ़ा और बड़े अफसोस के साथ महाराज से अर्ज किया कि 'नौगढ़ में भी तेजसिंह नहीं है, यह उनके बाप जीतसिंह के हाथ का खत मेरे खत के जवाब में आया है।' महाराज ने कहा, 'उसका पता लगाने की कुछ फिक्र की गई है या नहीं?' हरदयाल सिंह ने कहा, 'हाँ कई जासूस मैंने इधर-उधर भेजे हैं।'

महाराज को तेजसिंह का बहुत अफसोस रहा, दरबार बरखास्त करके महल में चले गए। बात ही बात में महाराज ने तेजसिंह का जिक्र महारानी से किया। संयोग से चपला उस वक्त वहीं खड़ी थी, यह हाल सुन वहाँ से चली और चन्द्रकान्ता के पास पहुँची। तेजसिंह का हाल जब कहना चाहती थी जी उमड़ आता था कुछ कह न सकती थी। चन्द्रकान्ता ने उसकी ऐसी दशा देख पूछा, 'क्यों क्या है? इस वक्त तेरी अजब हालत हो रही है कुछ मुँह से तो कह।' इस बात का जवाब देने के लिए चपला ने मुँह खोला ही था कि गला भर आया, आँखों से आँसू टपक पड़े, कुछ जवाब न दे सकी। चन्द्रकान्ता को और भी ताज्जुब हुआ, पूछा, 'तू रोती क्यों है, कुछ बोल भी तो।'

आखिर चपला ने अपने को सम्हाला और मुश्किल से कहा, 'महाराज की जुबानी सुना है कि तेजसिंह को महाराज शिवदत्त के ऐयारों ने गिरफ्तार कर लिया। चपला ने कहा, 'मुझको राजकुमारी हुक्म दें तो मैं खोज में जाऊँ।' चन्द्रकान्ता ने कहा, 'इसमें भी हुक्म की जरूरत! तेरी मेहनत से अगर वे छूटेंगे तो जन्म भर उनको कहने लायक रहेगी। अब तू जाने में देर मत कर जा।' चपला ने चम्पा से कहा, 'देख मैं जाती

हूँ, पर ऐयार लोग बहुत से आये हुए हैं, ऐसा न हो कि मेरे जाने के बाद कुछ नया बखेड़ा मचे। खैर और तो जो होगा देखा जायगा, तू राजकुमारी से होशियार रहियो। अगर तुझसे कुछ भूल हुई या राजकुमारी पर किसी तरह की आफत आई तो मैं जन्म-भर तेरा मुँह न देखूँगी!' चम्पा ने कहा, 'इस बात से आप खातिर जमा रक्खें मैं बराबर होशियार रहा करूँगी।'

चपला अपने ऐयारी के सामान से लैस हो और कुछ दक्षिणी ढंग के जेवर तथा कपड़े साथ ले तेजसिंह की खोज में निकली।

☐ चपला कोई साधारण औरत न थी। खूबसूरती और नजाकत के सिवाय उसमें ताकत भी थी। दो-चार आदमियों से लड़ जाना या उनको गिरफ्तार कर लेना उसके लिए एक अदना काम था।

चपला अपनी असली सूरत में चली जा रही है, ऐयारी का बटुआ बगल में लटकाये कमन्द कमर में कसे और खंजर भी लगाये हुए जंगल ही जंगल कदम बढ़ाए जा रही है। तेजसिंह की याद ने उनको ऐसा बेसुध कर दिया है कि अपने बदन की खबर नहीं है। आगे एक नाला आया जिस पर चपला ने कुछ ध्यान न दिया और धम्म से उस नाले में गिर पड़ी, सिर फट गया, खून निकलने लगा, कपड़े बदन के सब भीग गये। अब उसको इस बात का ख्याल हुआ कि तेजसिंह को छुड़ाने या खोजने चली है। उसके मुँह से झट यह बात निकली—'हाय प्यारे, मैं तुमको बिल्कुल भूल गई, तुम्हारे छुड़ाने की फिक्र मुझको जरा भी न रही, उसी की यह सज़ा मिली!' अब चपला सम्हल गई और सोचने लगी कि किस जगह है। खूब गौर करने से उसे मालूम हुआ कि रास्ता बिल्कुल भूल गई और एक भयानक जंगल में आ फँसी। हजार खराबी से आधी रात गुजर जाने के बाद रास्ता मिला तब सीधे चुनार की तरफ पहाड़-ही-पहाड़ चल निकली, जब सुबह करीब हुई उसने अपनी सूरत एक मर्द सिपाही की-सी बना ली। आखिर भूखी-प्यासी शाम होते चुनार पहुँची। दिल में ठान लिया था कि जब तक तेजसिंह का पता न लगेगा अन्न-जल न करूँगी कहीं आराम न लिया, इधर-उधर ढूँढ़ने और तलाश करने लगी। यकायक उसे कुछ चालाकी सूझी, उसने अपनी सूरत पन्नालाल की बना ली और घसीटासिंह के डेरे पर पहुँची।

घसीटासिंह और चुन्नीलाल चुनार में ही रह गये थे। घसीटासिंह

पन्नालाल को देखकर उठ खड़े हुए और साहब सलामत के बाद पूछा, 'कहो पन्नालाल, अबकी किसको लाए ?'

'पन्ना, अबकी लाए तो किसी को नहीं सिर्फ इतना पूछने आये हैं कि नाजिम यहां है ? या नहीं उसका पता नहीं लगता।'

घसीटा, 'यहाँ तो नहीं आया।'

पन्ना, 'फिर उसको पकड़ा किसने ? वहाँ तो अब कोई ऐयार नहीं है ?

घसीटा, 'यह मैं नहीं कह सकता कि वहाँ और भी कोई ऐयार है या नहीं, सिर्फ तेजसिंह का नाम तो मशहूर था सो कैद ही हो गये, इस वक्त किले में बन्द पड़े रोते होंगे।'

पन्ना, 'खैर कोई हर्ज नहीं पता लग ही जायगा, अब जाता हूं रुक नहीं सकता।'

यह कह नकली पन्नालाल वहां से रवाना हुए।

अब चपला का जी ठिकाने हुआ। यह सोचकर कि तेजसिंह का पता लग गया और वे यहीं मौजूद हैं कोई हर्ज नहीं जिस तरह होगा वैसे छुड़ा ही लूँगी, वह मैदान में निकल गई और अपनी सूरत एक गाने वाली औरत की बनाई। चपला को खूबसूरत बनने की कोई जरूरत न थी, वह खुद ऐसी थी कि हजार खूबसूरतों का मुकाबला करे, मगर इस सबब से कि कोई पहिचान न ले। उसको अपनी सूरत बदलनी पड़ी। जब हर तरह से लैस हो गई, एक वंशी हाथ में ले राजमहल के पिछवाड़े की तरफ जा एक साफ जगह देख बैठ गयी और चढ़ी आवाज से बिरहा गाने लगी, एक दफा गाकर फिर उसी गत को वंशी पर बजाती।

रात आधी से ज्यादा बीत चुकी थी, राजमहल में शिवदत्तसिंह महल की छत पर महारानी के साथ मीठी-मीठी बातें कर रहे थे, यकायक गाने की आवाज उनके कानों में गई और महारानी ने भी सुनी। दोनों ने बातें करना छोड़ दिया और कान लगाकर गौर से सुनने लगे। थोड़ी देर बाद वंशी की आवाज आने लगी जिसका बोल साफ मालूम पड़ता था। महाराज की तबीयत बेचैन हो गई, झट लौंडी को बुलाकर हुक्म दिया, 'किसी को कहो अभी जाकर उसको इस महल के नीचे ले आये जिसके गाने की आवाज आ रही है।'

हुक्म पाते ही पहरेदार दौड़ गए, देखा कि एक नाजुक बदन बैठी गा रही है। उसकी सूरत देख कर लोगों के हवास ठिकाने न रहे, बहुत देर के बाद बोले, 'महाराज ने महल के करीब आपको बुलाया है और

आपका गाना सुनने के बहुत मुश्तहक हैं।' चपला ने कुछ इन्कार न किया, उन लोगों के साथ-साथ महल के नीचे चली आई और गाने लगी। उसके गाने ने महाराज को बेताब कर दिया। दिल को रोक न सके, हुक्म दिया कि उसको दीवानखाने में ले जाकर बैठाया जाए और रोशनी का बन्दोबस्त हो, हम भी आते हैं। महारानी ने कहा, 'आवाज से यह औरत मालूम होती है, क्या हर्ज है अगर महल में बुला ली जाय।' महाराज ने कहा, 'पहिले उसको देख-समझ लें तो फिर जैसा होगा किया जायेगा, अगर यहाँ आने लायक होगी तो तुम्हारी भी खातिर कर दी जायेगी।'

हुक्म की देर थी, सब सामान लैस हो गया। महाराज दीवानखाने में जा विराजे। बीबी चपला ने झुक कर सलाम किया। महाराज के होश जाते रहे, झट मुँह से निकल पड़ा, 'वाह क्या कहना है!' टकटकी बँध गई। महाराज ने कहा, 'आओ यहाँ बैठो।' बीबी चपला कमर को बल देती हुई अठखेलियों के साथ कुछ नजदीक जा सलाम करके बैठ गई। महाराज उसके हुस्न के रोआब में आ गए ज्यादे कुछ कह न सके। एकटक सूरत देखने लगे। फिर पूछा, 'तुम्हारा मकान कहाँ है? कौन हो? काम क्या है? तुम्हारी सी औरत का अकेली रात के समय घूमना ताज्जुब में डालता है।' उसने जबाब दिया, 'मैं ग्वालियर की रहने वाली पटलापा कत्थक की लड़की हूँ। रम्भा मेरा नाम है। मेरा बाप बड़ा भारी गवैया था। एक आदमी पर मेरा जी आ गया, बात-ही-बात में वह मुझ से रंज हो के चला गया, उसकी तलाश में मारी-मारी फिरती हूँ। क्या करूँ अक्सर दरबारों में जाती हूँ कि शायद कहीं मिल जाये क्योंकि वह भी बड़ा भारी गवैया है सो ताज्जुब नहीं, किसी दरबार में हो, इस वक्त तबीयत की उदासी में यों ही कुछ गा रही थी कि सरकार ने याद किया, हाजिर हुई।' महाराज ने कहा, 'तुम्हारी आवाज बहुत भली है कुछ गाओ तो अच्छी तरह सुनूं!' चपला ने कहा, 'महाराज ने इस नाचीज पर बड़ी मेहरबानी की जो नजदीक बुला कर बैठाया और लौंडी को इज्जत दी। अगर आप मेरा गाना सुनना चाहते हैं तो अपने मुलाजिम सफरदाओं को तलब करें, वे लोग साथ दें तो कुछ गाने का लुत्फ आये, वैसे तो मैं हर तरह से ही गाने को तैयार हूँ।' यह सुन महाराज बहुत खुश हुए और हुक्म दिया कि, 'सफर्दा हाजिर किए जाएँ।' अब क्या था, साज व समान के साथ गाना, पिछली रात का समा, महाराज को बुत बना दिया, सफर्दा भी दंग हो गये; तमाम इल्म आज खर्च करना पड़ा। बेवक्त की महफिल

थी तिस पर भी बहुत से आदमी जमा हो गये। दो चीज दरबारी की गाई थी कि सुबह हो गई। एक भैरवी गाने के बाद चपला ने गाना बन्द करके अर्ज किया, 'महाराज, अब सुबह हो गई, मैं भी कल की थकी हुई हूँ क्योंकि दूर से आई थी, अब हुक्म हो तो रुखसत होऊँ।' चपला की बात सुन महाराज चौंक पड़े। देखा तो सचमुच सवेरा हो गया है। अपने गले से मोती की माला उतार कर इनाम में दी और बोले, 'अभी हमारा जी तुम्हारे गाने से बिल्कुल नहीं भरा है, कुछ रोज यहाँ ठहरो, फिर जाना!' रम्भा ने कहा, 'अगर महाराज की इतनी मेहरबानी लौंडी के हाल पर है तो मुझको रहने में कोई उज्र नहीं!'

महाराज ने हुक्म दिया कि रम्भा के रहने का पूरा बन्दोबस्त हो और आज रात को आम महफिल का सामान किया जाये! हुक्म पाते ही सब सरजाम हो गया, एक सुन्दर मकान में रम्भा का डेरा पड़ गया, नौकर मजदूर सब तैनात कर दिए गए।

आज रात को आम महफिल थी। अच्छे आदमी सब इकट्ठे हुए, रम्भा भी हाजिर हुई, सलाम करके बैठ गई। महफिल में कोई ऐसा न था जिसकी निगाह रम्भा की तरफ न हो। जिसको देखिये लम्बी साँसे भर रहा है, आपस में सब यही कहते हैं कि 'वाह, क्या भोली सूरत है, क्यों कभी आज तक ऐसी हसीन तुमने देखी थी!'

रम्भा ने गाना शुरू कर दिया। अब जिसको देखिये मिट्टी की मूरत हो रहा है। एक गीत गाकर चपला ने अर्ज किया, 'महाराज एक दफे नौगढ़ में राजा सुरेन्द्रसिंह की महफिल में लौंडी ने गाया था। वैसा गाना आज तक मेरा फिर न जमा, वजह यह थी कि उनके दीवान के लड़के तेजसिंह ने मेरी आवाज के साथ मिला कर बीन बजाई थी। हाय, मुझको वह महफिल कभी न भूलेगी! दो-चार रोज हुआ मैं फिर नौगढ़ गई थी, मालूम हुआ कि वह गायब हो गया। तब मैं भी वहाँ न ठहरी तुरन्त वापस चली आई।' इतना कह रम्भा अटक गई। महाराज तो उस पर दिलो-जान दिये बैठे थे। बोले, 'आजकल तो वह मेरे यहाँ कैद है पर मुश्किल तो यह है कि मैं उसको छोड़ूँगा नहीं और कैद की हालत में वह कभी बीन न बजायेगा!' रम्भा ने कहा, 'जब वह मेरा नाम सुनेगा जरूर इस बात को कबूल करेगा, मगर उसको एक तरीके से बुलाया जाये तो वह अलबत्ते मेरा संग देगा नहीं तो मेरी भी न सुनेगा क्योंकि वह बड़ा जिद्दी है।' महाराज ने पूछा, 'वह कौन-सा तरीका है?' रम्भा ने कहा, एक तो उसको बुलाने के लिए ब्राह्मण जाये और वह उम्र में बीस वर्ष

से ज्यादा न हो, दूसरे जब वह उसको लावे दूसरा कोई संग न हो, अगर भागने का खौफ हो तो बेड़ी उसके पैर में पड़ी रहे इसका कोई मुजायका नहीं, तीसरे यह कि बीन कोई उम्दा होनी चाहिए।' महाराज ने कहा, 'यह कौन बड़ी बात है।' इधर-उधर देखा तो एक ब्राह्मण का लड़का चेतराम नामी उस उम्र का नजर आया, उसे हुक्म दिया कि तू जाकर तेजसिंह को ले आ, मीरमुंशी से कहा कि, 'तुम जाकर पहरे वालों को समझा दो कि तेजसिंह के आने में कोई रोक-टोक न करें, हाँ एक बेड़ी उस के पैर में जरूर पड़ी रहे।'

हुक्म पा चेतराम तेजसिंह को लेने गया और मीरमुंशी ने भी पहरे वालों को महाराज का हुक्म सुनाया। उन लोगों को क्या उज्र था, तेजसिंह को अकेले रवाना कर दिया। तेजसिंह तुरन्त समझ गये कि मेरा कोई दोस्त जरूर यहाँ आ पहुँचा। जब महफिल में आये देखा कि एक बहुत ही खूबसूरत औरत बैठी है। रम्भा ने आवाज दी—'आओ-आओ तेजसिंह रम्भा कब से आपकी राह देख रही है! भला वह बीन कब भूलेगी जो आपने नौगढ़ में बजाई थी!' तेजसिंह समझ गए कि यह चपला है, बोले, 'रम्भा तू आ गई। अगर मौत भी सामने नजर आती हो तब भी तेरे साथ बीन बजा के मरूँगा, क्योंकि तेरे-सी गाने वाली भला काहे को मिलेगी!' तेजसिंह और रम्भा की बात सुनकर महाराज को बड़ा ताज्जुब हुआ मगर धुन तो यह थी कि कब बीन बजे और रम्भा गाये। बहुत उम्दा बीन तेजसिंह के सामने रक्खी गई और उन्होंने बजाना शुरू किया, रम्भा भी गाने लगी। अब जो समा बँधा है उसकी क्या तारीफ की जाये। महाराज तो सकते की-सी हालत में आ गए। औरों की कैफियत दूसरी हो गयी।

एक ही गीत का साथ देकर तेजसिंह ने बीन हाथ से रख दी। महाराज ने कहा, 'क्यों और बजाओ।' तेजसिंह ने कहा, 'बस मैं एक रोज में एक ही गीत या बोल बजाता हूँ इससे ज्यादा नहीं। अगर आपको सुनने का ज्यादा शौक हो तो कल फिर सुन लीजिएगा!' रम्भा ने भी कहा, 'हाँ महाराज, यही तो इनमें ऐब है! राजा सुरेन्द्रसिंह जिनके यह नौकर थे, कहते-कहते थक गए मगर इन्होंने एक न मानी, एक ही बोल बजाकर रह गए। क्या हर्ज है कल फिर सुन लीजिएगा।' महाराज सोचने लगे कि यह भी अजीब आदमी है, भला इसमें इसने क्या फायदा सोचा है। अफसोस मेरे दरबार में यह न हुआ। रम्भा ने भी बहुत कुछ उज्र करके गाना मौकूफ किया। सभी के दिल में हसरत बनी रह गई! महाराज ने अफसोस के साथ मजलिस बर्खास्त की और तेजसिंह फिर उसी चेतराम ब्राह्मण के साथ

में भेज दिये गये।

महाराज को तो अब इश्क हो गया कि तेजसिंह की बीन के साथ रम्भा का गाना सुनें। फिर दूसरे रोज महफिल हुई और उसी चेतराम ब्राह्मण को भेजकर तेजसिंह बुलाए गये। उस रोज भी एक बोल बजा कर उन्होंने बीन रख दी! महाराज का दिल न भरा, हुक्म दिया कि कल पूरी महफिल हो। दूसरे दिन फिर महफिल का सामान हुआ, सब कोई आकर पहिले ही से जमा हो गए, मगर रम्भा महफिल में जाने के वक्त से घंटे भर पहिले ही दांव बचा चेतराम की सूरत बना कैदखाने में पहुँची। पहरे वाले जानते ही थे कि चेतराम अकेला ही तेजसिंह को ले जायेगा, महाराज का हुक्म ही ऐसा है। उन्होंने ताला खोल कर तेजसिंह को निकाला और पैर में बेड़ी डाल चेतराम के हवाले कर दिया। थोड़ी दूर जाकर चेतराम ने तेजसिंह की बेड़ी खोल दी। अब क्या था, दोनों ने जंगल का रास्ता लिया।

कुछ दूर जाकर चपला ने अपनी सूरत बदल ली और असली सूरत में हो गई, अब तेजसिंह उसकी तारीफ करने लगे।

बहुत देर तक आपस में सोच-विचार कर दोनों ने एक चालाकी ठहराई जिसे करने के लिए ये उस जगह से दूसरे घने जंगल में चले गए।

☐ महाराज शिवदत्तसिंह महफिल में आ विराजे। जब रम्भा के आने में देर हुई तो एक चोबदार को कहा कि जाकर उसको बुला लाए और चेतराम ब्राह्मण को तेजसिंह के लाने के लिए भेजा। थोड़ी देर बाद चोब-दार ने आकर अर्ज किया कि महाराज रम्भा तो अपने डेरे में नहीं है कहीं चली गई। महाराज को बड़ा ताज्जुब हुआ क्योंकि उसको जी से चाहने लगे थे, दिल में रम्भा के लिए अफसोस करने लगे और हुक्म दिया कि फौरन उसे तलाश करने के लिए आदमी भेजे जायें। इतने में चेतराम ने आकर दूसरी खबर सुनाई कि कैदखाने में तेजसिंह नहीं है। अब तो महा-राज के होश उड़ गए। सारी महफिल दंग हो गई कि अच्छी गाने वाली आई जो सभी को बेवकूफ बनाकर चली गई। घसीटासिंह और चुन्नीलाल ऐयार ने अर्ज किया, 'महाराज बेशक वह कोई ऐयार था जो इस तरह आकर तेजसिंह को छुड़ा ले गया।' महाराज ने कहा, 'ठीक है, मगर काम उसने इनाम के काबिल किया। चालाकों ने भी तो उसका गाना सुना था, महफिल में मौजूद थे, उन लोगों की अक्ल पर क्या पत्थर पड़ गए थे कि

उसको न पहिचाना ! लानत है तुम लोगों के ऐयार कहलाने पर !' यह कह महाराज गम और गुस्से से भरे हुए उठ कर महल में चले गए। महफिल में जो लोग बैठे थे उन लोगों ने अपने घर का रास्ता लिया, तमाम शहर में यह बात फैल गई।

दूसरे दिन जब गुस्से में भरे हुए महाराज दरबार में आये एक चोबदार ने अर्ज किया, 'महाराज वह जो गाने वाली आई थी असल में वह औरत ही थी। वह चेतराम मिश्र की सूरत बनाकर तेजसिंह को छुड़ा ले गई। मैंने अभी उन दोनों को उस सलई वाले जगल में देखा है।' यह सुन महाराज को और भी ताज्जुब हुआ, हुक्म दिया कि बहुत-से आदमी जायें और उनको पकड़ लावें पर चोबदार ने अर्ज किया—'महाराज इस तरह वे गिरफ्तार न होंगे, भाग जायेंगे। हाँ, बसीटासिंह और चुन्नीलाल मेरे साथ चलें तो मैं दूर से इन लोगों को दिखला दूँ, ये लोग कोई चालाकी करके उन्हें पकड़ लें।' महाराज ने इस तरकीब को पसन्द करके दोनों ऐयारों को चोबदार के साथ जाने के लिए हुक्म दिया। चोबदार उन दोनों को लिए हुए उस जगह पहुँचा जिस जगह उसने तेजसिंह का निशान दिया था, पर देखा कि वहाँ कोई नहीं है। घसीटासिंह ने चोबदार से पूछा, 'अब किधर देखें ?' उसने कहा, 'क्या यह जरूरी है कि वे तब से अब तक इसी पेड़ के नीचे बैठे रहें ? इधर-उधर देखिये यहीं कहीं होंगे !' यह सुन घसीटासिंह ने कहा, 'अच्छा चलो, तुम ही आगे चलो।'

वे लोग इधर-उधर ढूंढ़ने लगे, इसी समय एक अहिरिन सिर पर खंचिए में दूध लिए आती नजर पड़ी। चोबदार ने उसको अपने पास बुला कर पूछा कि, 'तूने इस जगह कहीं एक औरत और मर्द को देखा है ?' उसने कहा, 'हाँ-हाँ उस जंगल में मेरा अड़ार है, बहुत गाय-भैंस मेरी वहाँ रहती हैं, अभी मैंने उन दोनों के हाथ दो पैसे का दूध बेचा है और बाकी दूध लेकर शहर में बेचने जा रही हूँ।' यह सुन कर चोबदार बतौर इनाम के चार पैसे कमर से निकाल उसको देने लगा, मगर उसने इनकार किया और कहा कि मैं तो सेंत के पैसे नहीं लेती, हाँ चार पैसे का दूध आप लोग लेकर पी लें तो मैं शहर जाने से बचूँ और आपका अहसान मानूँ।' चोबदार ने कहा, 'क्या हर्ज है तू दूध ही दे दे।' बस अहिरिन ने खाँचा रख दिया और दूध देने लगी। चोबदार ने उन दोनों ऐयारों से कहा, 'आइये, आप भी पी लीजिए।' उन दोनों ऐयारों ने कहा, 'हमारा जी नहीं चाहता !' वह बोला, 'अच्छा आपकी खुशी।' चोबदार ने दूध पिया और तब फिर दोनों ऐयारों से कहा, 'वाह क्या दूध है। शहर में तो रोज आप पीते ही हैं, भला

आज इसको भी तो पी कर मजा देखिये।' उसके जिद् करने पर दोनों ऐयारों ने भी दूध पिया और चार पैसे दूध वाली को दिए।

अब वे तीनों तेजसिंह को ढूँढ़ने चले, थोड़ी दूर जाकर चोबदार ने कहा, 'न जाने क्यों मेरा सर घूमता है।' घसीटासिंह बोले, 'मेरी भी वही दशा है।' चुन्नीलाल तो कुछ कहना ही चाहते थे कि गिर पड़े। इसके बाद चोबदार और घसीटासिंह भी जमीन पर लेट गये। दूध बेचने वाली बहुत दूर नहीं गई थी, उन तीनों को गिरते देख दौड़ती हुई पास आई और लखलखा सुँघा कर चोबदार को होशियार किया। वह चोबदार तेजसिंह थे, जब होश में आए अपनी असली सूरत बना ली, इसके बाद दोनों की मुश्कें बाँध गठरी कस एक को चपला और दूसरे को तेजसिंह ने पीठ पर लादा और नौगढ़ का रास्ता लिया।

तेजसिंह को छुड़ाने के लिए जब चपला चुनार गई तब चम्पा ने जी में सोचा ऐसी तरकीब करनी चाहिए जिसमें ऐयारों का डर न रहे और रात को भी आराम से सोने में आए। यह सोचकर उसने एक मसाला बनाया। जब रात को सब लोग सो गए और चन्द्रकान्ता भी पलंग पर जा लेटी तब चम्पा ने उस मसाले को पानी में घोल कर जिस कमरे में चन्द्रकान्ता सोती थी उसके दरवाजे के दो गज इधर-उधर लेप कर दिया और निश्चिन्त हो राजकुमारी के पलंग के नीचे जा लेटी। इस मसाले में यह गुण था कि जिस जमीन पर इसका लेप किया जाय सूख जाने पर अगर किसी का पैर उस जमीन पर पड़े तो जोर से पटाखे की आवाज आवे मगर देखने से यह न मालूम हो कि इस जमीन पर कुछ लेप किया गया है। रात भर चम्पा आराम से सोई रही कोई आदमी उस कमरे के अन्दर न आया, सुबह को चंपा ने पानी से वह मसाला धो डाला। दूसरे दिन उसने दूसरी चालाकी की। मिट्टी की एक खोपड़ी बनाई और उसको रंग-रंगा ठीक चन्द्रकान्ता की मूरत बनाकर जिस पलंग पर कुमारी सोया करती थी तकिए के सहारे वह खोपड़ी रख दी, और धड़ की जगह कुछ कपड़ा रख कर एक हलकी चादर उस पर उढ़ा दी, मगर मुँह खुला रखा और खूब रोशनी करके उस चारपाई के चारों तरफ वही लेप कर दिया। कुमारी से कहा, 'आज आप दूसरे कमरे में आराम करें।' चन्द्रकान्ता समझ गई और दूसरे कमरे में जा लेटी। जिस कमरे में चन्द्रकान्ता सोई उसके दरवाजे पर भी लेप कर दिया और जिस कमरे में पलंग पर खोपड़ी

रखी थी उसके बगल में एक कोठरी थी, चिराग बुझा कर आप उसमें सो रही।

आधी रात गुजर जाने के बाद उस कमरे के अन्दर से जिसमें खोपड़ी रखी थी पटाखे की आवाज आई। सुनते ही चम्पा झट उठ बैठी और दौड़ कर बाहर से किवाड़ बन्द कर खूब गुल करने लगी, यहाँ तक कि बहुत-सी लौंडिया वहाँ आकर इकट्ठी हो गईं और एक ने जाकर महाराज को खबर दी कि चन्द्रकान्ता के कमरे में चोर घुसा है। यह सुन महाराज खुद दौड़ आए और हुक्म दिया कि महल के पहरे से दस-पाँच सिपाही अभी आवें। जब सब इकट्ठे हुए कमरे का दरवाजा खोला गया। देखा कि रामनारायण और पन्नालाल दोनों ऐयार भीतर हैं।

महाराज ने उनको कैद में रखने का हुक्म दिया और चम्पा से हाल पूछा। उसने अपनी कार्रवाई कह सुनाई। महाराज बहुत खुश और उसको इनाम देकर पूछा कि 'चपला कहाँ है?' उसने कहा, 'वह बीमार है।' फिर महाराज ने और कुछ न पूछा, अपने आरामगाह में चले गये। सुबह को दरबार में महाराज ने उन ऐयारों को तलब किया। जब वे आए, पूछा, 'तुम्हारा नाम क्या है?' पन्नालाल बोला, 'सरतोड़सिंह।' महाराज को इस ढिठाई पर बड़ा गुस्सा आया, कहने लगे कि 'ये लोग बदमाश हैं, जरा भी नहीं डरते। खैर ले जाकर इन दोनों को खूब होशियारी से कैद रखो।' हुक्म के मुताबिक वे कैदखाने में भेज दिये गये।

महाराज ने हरदयालसिंह से पूछा, 'कुछ तेजसिंह का पता लगा?' हरदयालसिंह ने कहा, 'महाराज अभी तक तो पता नहीं लगा। ये ऐयार जो पकड़े गये हैं उन्हें खूब पीटा जाय तो शायद ये लोग कुछ बतावें।' महाराज ने कहा, 'ठीक है मगर तेजसिंह आवेगा तो नाराज होगा कि ऐयारों को क्यों मारा ऐसा कायदा नहीं है। खैर कुछ दिन तेजसिंह की राह देख लो फिर जैसा मुनासिब होगा किया जाएगा मगर एक बात का ख्याल रखना, वह यह है कि तुम फौज के इन्तजाम से होशियार रहना क्योंकि शिवदत्तसिंह का चढ़ आना अब ताज्जुब नहीं है।' महाराज ने कहा, 'ठीक है, हम अब कह देते हैं कि तुम धीरे-धीरे मब मुसलमानों को नाजुक कामों से बाहर कर दो।' हरदयालसिंह ने कहा, 'बहुत अच्छा, ऐसा ही होगा।'

☐ महाराज शिवदत्तसिंह ने घसीटासिंह और चुन्नीलाल को तेजसिंह को पकड़ने के लिए भेजकर दरबार बर्खास्त किया और महल में चले गये। वहाँ अपने खास कमरे में चले गए और पलंग पर लेटकर रम्भा को याद करने और मन में सोचने लगे यह रम्भा कौन थी ?

दिल की बेताबी और रम्भा के ख्याल में रात-भर नींद न आई। सुबह को महाराज ने दरबार में आकर दरियाफ्त किया, 'घसीटासिंह और चुन्नीलाल तेजसिंह का पता लगा कर आये या नहीं !' मालूम हुआ कि अभी तक वे लोग नहीं आए। यह सुनकर महाराज को और भी तरद्दुद हुआ। अर्जियाँ तो सभी की सुनते थे मगर ख्याल रम्भा ही की तरफ लगा था। इतने में बद्रीनाथ, नाजिम ज्योतिषीजी और क्रूरसिंह पर नजर पड़ी। उन लोगों ने सलाम किया और एक किनारे बैठ गए। उन लोगों के चेहरे पर सुस्ती और उदासी देख और भी रंज बढ़ गया, मगर कचहरी में कोई हाल उनसे न पूछा। दरबार बर्खास्त करके तखलिए में गए और पण्डित बद्रीनाथ, क्रूरसिंह, नाजिम और जगन्नाथ ज्योतिषी को तलब किया। महाराज ने पूछा, 'कहो, तुम लोगों ने विजयगढ़ जाकर क्या किया ?' पण्डित बद्रीनाथ ने कहा, 'हुजूर काम तो यही हुआ कि भगवानदत्त को तेजसिंह ने गिरफ्तार कर लिया और पन्नालाल और रामनारायण को चम्पा नामी औरत ने बड़ी चालाकी और होशियारी से पकड़ लिया, बाकी मैं बच गया। उनके आदमियों में सिर्फ तेजसिह पकड़ा गया जिसको ताबेदार ने हुजूर में भेज दिया था, सिवाय इसके और कोई काम नहीं हुआ।' महाराज ने कहा, 'तेजसिंह को भी एक औरत छुड़ा ले गई। काम तो उसने सजा पाने लायक किया था मगर अफसोस। यह तो मैं जरूर कहूँगा कि वह औरत ही थी जो तेजसिंह को छुड़ा ले गई, खैर अब तुम लोग यह पता लगाओ कि वह औरत कौन थी जिसने गाना सुनाकर मुझे बेताब कर दिया और सभी की आँखों में धूल डालकर तेजसिंह को छुड़ा ले गई। अभी तक उसकी मोहनी सूरत मेरी आँखों के आगे फिर रही है।'

नाजिम ने तुरन्त कहा, 'हुजूर मैं पहचान गया। वह जरूर चन्द्रकान्ता की सखी चपला थी, यह काम सिवाय उसके दूसरे का नहीं !' महाराज ने पूछा, 'क्या चपला चन्द्रकान्ता से भी ज्यादा खूबसूरत है !' नाजिम ने कहा, 'महाराज चन्द्रकान्ता को तो चपला क्या पावेगी मगर उसके बाद दुनिया में कोई खूबसूरत है तो चपला ही है, और वह तेजसिंह पर आशिक भी है।' इतना सुन महाराज कुछ देर तक हैरानी में रहे फिर बोले,

'चाहे जो हो जब तक चन्द्रकान्ता और चपला मेरे हाथ न लगेंगी मुझको आराम न मिलेगा। बेहतर है कि मैं इन दोनों के लिए जयसिंह को चिट्ठी लिखूँ।' यह कह मीर मुन्शी को तलब किया, जब वह आ गया तो हुक्म दिया, 'राजा जयसिंह के नाम मेरी तरफ से खत लिखो कि चन्द्रकान्ता की शादी मेरे साथ कर दें और दहेज में चपला को दे दें।' मीर मुन्शी ने बमूजिब हुक्म के खत लिखा जिस पर महाराज ने मोहर करके पण्डित बद्रीनाथ को दिया और कहा, 'तुम्हीं इस चिट्ठी को लेकर जाओ यह काम तुम्हीं से बनेगा।' पण्डित बद्रीनाथ को क्या उज्र था, खत लेकर उसी वक्त विजयगढ़ की तरफ रवाना हुए।

☐ दूसरे दिन महाराज जयसिंह दरबार में बैठे हरदयालसिंह से तेजसिंह का हाल सुन रहे थे कि अभी तक पता लगा या नहीं, कि इतने में सामने से तेजसिंह एक बड़ा भारी गट्ठर पीठ पर लादे हुए आ पहुँचे। गठरी तो दरबार के बीच में रख दी और झुककर महाराज को सलाम किया और हरदयालसिंह की तरफ देखा। उन्होंने प्यादों को गठरी खोलने का हुक्म दिया, प्यादों ने गठरी खोली। तेजसिंह ने उन दोनों को होशियार किया और प्यादों ने उनको ले जाकर उसी जेल में बन्द कर दिया जिसमें रामनारायण और पन्नालाल थे।

तेजसिंह ने महाराज से अर्ज किया, 'मेरे गिरफ्तार होने से नौगढ़ में सब कोई परेशान होंगे, अगर इजाजत हो तो मैं जाकर सभी से मिल आऊँ!' महाराज ने कहा, 'हाँ जरूर तुमको वहाँ जाना चाहिए, जाओ मगर जल्दी वापस चले आना।' इसके बाद महाराज ने हरदालसिंह को हुक्म दिया, 'तुम भी मेरी तरफ से तोहफा लेकर तेजसिंह के साथ नौगढ़ जाओ!' 'बहुत अच्छा' कहके हरदयालसिंह ने तोहफे का सामान तैयार किया और कुछ आदमी संग ले तेजसिंह के साथ नौगढ़ रवाना हुए।

चपला जब महल में पहुँची उसको देखते ही चन्द्रकान्ता ने खुश होकर उसे गले लगा लिया और थोड़ी देर बाद हाल पूछने लगी। चपला ने अपना पूरा हाल खुलासा तौर पर बयान किया। थोड़ी देर तक चपला और चन्द्रकान्ता में चुहल होती रही। कुमारी ने चम्पा की चालाकी का हाल बयान करके कहा कि 'तुम्हारी शागिर्द ने भी दो ऐयारों को गिरफ्तार किया है।' यह सुनकर चपला बहुत खुश हुई और चम्पा को जो उसी जगह मौजूद थी गले लगाकर बहुत शाबाशी दी।

इधर तेजसिंह जो नौगढ़ गए थे रास्ते में हरदयालसिंह से बोले, 'अगर हम लोग सबेरे दरबार के समय पहुँचते तो अच्छा होता क्योंकि उस वक्त सब कोई वहाँ रहेंगे।' इस बात को हरदयालसिंह ने भी पसन्द किया और रास्ते में ठहर गए, दूसरे दिन दरबार के समय ये दोनों पहुँचे और सीधे कचहरी में चले गये। राजा साहब के बगल में बीरेन्द्रसिंह भी बैठे थे, तेजसिंह को देखकर इतने खुश हुए मानो दोनों जहान की दौलत मिल गई हो। हरदयालसिंह ने झुककर महाराज और कुमार को सलाम किया और जीतसिंह से बराबर की मुलाकात की। तेजसिंह ने राजा सुरेन्द्र सिंह के कदमों पर सर रखा, राजा साहब ने प्यार से उनका सर उठाया। तब अपने पिता को पालागन करके तेजसिंह कुमार की बगल में जा बैठे। हरदयालसिंह ने तोहफा पेश किया और एक पोशाक जो कुंअर बीरेन्द्रसिंह के वास्ते लाये थे वह उनको पहिराया जिसे देख राजा सुरेन्द्रसिंह बहुत खुश हुए और कुमार की खुशी का तो कुछ ठिकाना ही न रहा। राजा ने तेजसिंह से गिरफ्तार होने का हाल पूछा, तेजसिंह ने पूरा हाल अपने गिरफ्तार होने का तथा कुछ बनावटी हाल अपने छूटने का बयान किया और यह भी कहा, 'आती दफे वहाँ के दो ऐयारों को भी गिरफ्तार कर लाया हूँ जो विजयगढ़ में कैद हैं।' यह सुनकर राजा ने खुश होकर तेजसिंह को बहुत कुछ इनाम दिया और कहा, 'तुम अभी जाओ, महल में सबसे मिलकर अपनी माँ से भी मिलो।'

कई दिन बाद हरदयालसिंह ने दरबार में महाराज से अर्ज किया, 'कई रोज हो गये ताबेदार को आये, अब रुखसत मिलती तो अच्छा था, और महाराज ने यह भी फरमाया था कि आती दफे तेजसिंह को साथ लेते आना, अब जैसी मर्जी हो।' राजा सुरेन्द्रसिंह ने कहा, 'बहुत अच्छी बात तुम उसको अपने साथ लेते जाओ।' यहाँ से विदा होकर दोनों उसी रोज विजयगढ़ पहुँचे। दूसरे दिन दरबार में दोनों आदमी हाजिर हुए और महाराज को सलाम कर अपनी-अपनी जगह पर बैठे। तेजसिंह से महाराज ने राजा सुरेन्द्रसिंह की खैरवाकफियत पूछी जिसको उन्होंने बड़ी बुद्धिमानी के साथ बयान किया। इसी समय बद्रीनाथ भी राजा शिवदत्त की चिट्ठी लिए हुए आ पहुँचे और आशीर्वाद देकर चिट्ठी महाराज के हाथ में दे दी जिसको पढ़ने के लिए महाराज ने दीवान हरदयालसिंह को दिया। खत पढ़ते-पढ़ते हरदयालसिंह का चेहरा मारे गुस्से के लाल हो गया। महाराज और तेजसिंह हरदयालसिंह के मुंह की तरफ देख रहे थे, उनकी रंगत देखकर समझ गये कि खत में कुछ बेअदबी की बातें

लिखी हैं। खत पढ़कर हरदयालसिंह ने अर्ज किया कि यह खत तखलिए में सुनने लायक है। महाराज ने कहा, 'अच्छा पहिले बद्रीनाथ के टिकने का बन्दोबस्त करो फिर हमारे पास दीवानखाने में आओ, तेजसिंह को भी साथ ले आना।'

महाराज ने दरबार बरखास्त कर दिया और महल में चले गए। दीवान हरदयालसिंह पंडित बद्रीनाथ के रहने और जरूरी सामानों का इन्तजाम कर तेजसिंह को अपने साथ ले कोट में महाराज के पास गए और सलाम करके बैठ गए महाराज ने शिवदत्त का खत सुनाने के लिए हुक्म दिया। हरदयालसिंह ने खत को महाराज के सामने ले जाकर अर्ज किया कि अगर सरकार खुद पढ़ लेते तो अच्छा था। महाराज ने खत पढ़ा, पढ़ते ही आँखें मारे गुस्से से सुर्ख हो गईं। खत फाड़ कर फेंक दिया और कहा, 'बद्रीनाथ से कह दो कि इस खत का जवाब यही है कि यहाँ से चला जाय।' इसके बाद थोड़ी देर तक महाराज कुछ सोचते रहे तब जरा धीमी आवाज से बोले, 'क्रूर के चुनार चले जाने ही से हमने सोच लिया था कि जहाँ तक बनेगा वह आग लगाने से न चूकेगा, और आखिर यही हुआ।' महाराज ने कहा, 'मैं इस बात को खूब जानता हूँ कि शिवदत्त के पास तीस हजार फौज है और हमारे पास सिर्फ दस हजार, मगर क्या मैं डर जाऊँगा।' तेजसिंह ने कहा, 'दस हजार फौज महाराज की और पाँच हजार हमारे सरकार की, पन्द्रह हजार हो गई, ऐसे गीदड़ को मारने को इतनी फौज काफी है। अब महाराज दीवान साहब को एक खत देकर मेरे साथ नौगढ़ भेजें मैं जाकर तमाम फौज ले आता हूँ बल्कि महाराज की राय हो तो कुंअर बीरेन्द्रसिंह को भी बुला लें और फौज का इन्तजाम उनके हवाले करें फिर देखिए क्या कैफियत होती है।'

दीवान हरदयालसिंह बोले, 'कृपानाथ, इस राय को तो मैं भी पसन्द करता हूँ।' महाराज ने कहा, 'सो तो ठीक है मगर बीरेन्द्रसिंह को अभी लड़ाई का काम सुपुर्द करने को जी नहीं चाहता! चाहे वह इस फन में होशियार हो मगर क्या हुआ, जैसा सुरेन्द्रसिंह का लड़का वैसा मेरा, मैं कैसे उसको लड़ने के लिए कहूँगा।' तेजसिंह ने जवाब दिया, 'राजा सुरेन्द्र-सिंह भी वीर हैं कुछ कायर नहीं, वीरेन्द्रसिंह को घर बैठने न देंगे बल्कि खुद भी मैदान में बढ़कर लड़ें तो ताज्जुब नहीं!'

महाराज जयसिंह तेजसिंह की बात सुनकर बहुत खुश हुए और दीवान

हरदयालसिंह को हुक्म दिया कि 'तुम राजा सुरेन्द्रसिंह को शिवदत्त की गुस्ताखी का हाल लिखो और पूछो कि आपकी क्या राय है। इस बात का जवाब आ ले तो जैसा होगा किया जायेगा। और खत भी तुम्हीं लेकर जाओ और कल ही लौट आओ क्योंकि अब देरी करने का मौका नहीं है।' हरदयालसिंह ने बमूजिब हुक्म के खत लिखा और महाराज ने उस पर मोहर करके उसी वक्त दीवान हरदयालसिंह को बिदा कर दिया। दीवान साहब महाराज से बिदा होकर नौगढ़ की तरफ रवाना हुए। थोड़ा-सा दिन बाकी था जब वहाँ पहुँचे। सीधे दीवान जीतसिंह के मकान पर चले गए। हरदयालसिंह ने सब हाल खुलासा कहा। जीतसिंह गुस्से में आकर बोले, 'आजकल शिवदत्त के दिमाग में खलल आ गया है, हम लोगों को उसने साधारण समझ लिया है। आप शाम को राजा साहब से मिलें।'

शाम के वक्त हरदयालसिंह जीतसिंह के साथ राजा सुरेन्द्रसिंह की मुलाकात को गये। वहाँ कुंअर बीरेन्द्रसिंह भी बैठे थे। राजा साहब ने बैठने के लिए इशारा किया और हालचाल पूछा। उन्होंने महाराज जयसिंह का खत दे दिया, महाराज ने खुद उस चिट्ठी को पढ़ा, गुस्से के मारे कुछ बोल न सके और खत कुंवर बीरेन्द्रसिंह के हाथ में दे दिया। कुमार ने भी उसको बखूबी पढ़ा, इनकी भी वही हालत हुई। हाथ जोड़ कर पिता से अर्ज किया, 'मुझको हुक्म हो तो अपनी फौज लेकर जाऊँ और विजयगढ़ पर चढ़ाई करने से पहले ही शिवदत्त को कैद कर लाऊँ।' राजा सुरेन्द्रसिंह ने कहा, 'उस तरफ जल्दी करने की कोई जरूरत नहीं है, तुम अभी विजय-गढ़ जाओ, अपनी कुल फौज लेकर महाराज जयसिंह को मदद पहुँचाओ और नाम पैदा करो।' फिर जीतसिंह की तरफ देखकर कहा, 'फौज में मुनादी करा दो कि रात-भर में सब लैस हो जाएँ, सुबह को कुमार के साथ जाना होगा' इसके बाद हरदयालसिंह ने कहा, 'आज आप रह जाएँ और कल अपने साथ ही फौज तथा कुमार को लेकर तब जाएँ।' यह हुक्म दे राजमहल में चले गए।

जीतसिंह दीवान हरदयालसिंह को साथ लेकर घर गए, और कुमार अपने कमरे में जाकर लड़ाई का सामान ठीक करने लगे। चन्द्रकान्ता को देखने और लड़ाई पर चलने की खुशी में रात किधर गई कुछ मालूम ही न हुआ।

☐ सुबह होते ही कुमार जंगी कपड़े पहिन हथियारों को बदन पर सजा बाप-माँ से बिदा होने के लिए महल में गए।

माँ-बाप से बिदा होकर कुमार बाहर आये, दीवान हरदयालसिंह को मुस्तैद देखा, आप भी एक घोड़े पर सवार हो रवाना हुए। पीछे-पीछे फौज भी समुद्र की तरह लहर मारती चली। जब विजयगढ़ के करीब पहुँचे तो कुमार घोड़े पर से उतर पड़े और हरदयालसिंह से बोले, मेरी राय है कि इस जंगल में अपनी फौज उतारूँ और सब इन्तजाम कर लूँ तो शहर में चलूँ।' हरदयालसिंह ने कहा, 'आपकी राय बहुत अच्छी है। मैं भी पहिले से चलकर आपके आने की खबर महाराज को देता हूँ फिर लौटकर आपको साथ लेकर चलूँगा।' कुमार ने कहा, 'अच्छा जाइए।' हरदयालसिंह विजयगढ़ पहुँचे, कुमार के आने की खबर देने के लिए महाराज के पास गये और खुलासा हाल बयान करके बोले, 'कुमार सेना सहित यहाँ से कोस भर पर उतरे हैं।' यह सुन महाराज बहुत खुश हुए और बोले, 'फौज के वास्ते वह मुकाम बहुत अच्छा है मगर बीरेन्द्रसिंह को यहाँ ले आना चाहिए। तुम यहाँ के सब दरबारियों को ले जाकर इस्तकबाल करके कुमार को यहाँ ले आओ!'

बमूजिब हुक्म के हरदयालसिंह बहुत-से सरदारों को लेकर रवाना हुए। यह खबर तेजसिंह को भी हुई, सुनते ही बीरेन्द्रसिंह के पास पहुँचे और दूर ही से बोले, 'मुबारक हो!' तेजसिंह को देखकर कुमार बहुत खुश हुए और हालचाल पूछा, तेजसिंह ने कहा, 'जो कुछ है सब अच्छा है, जो बाकी है अब बन जाएगा!' यह कह तेजसिंह लश्कर के इन्तजाम में लगे। इतने में दीवान हरदयालसिंह मय दरबारियों के आ पहुँचे और महाराज ने जो हुक्म दिया था कहा। कुमार ने मंजूर किया और सज-सजाकर घोड़े पर सवार हो एक-सौ फौजी सिपाही साथ ले महाराज की मुलाकात को विजयगढ़ चले, शहर-भर में मशहूर हो गया कि महाराज की मदद को कुंअर बीरेन्द्रसिंह आये हैं, इस वक्त किले में जायेंगे। सवारी देखने के लिए अपने-अपने मकानों पर औरत-मर्द पहले ही से बैठ गये और सड़कों पर भी बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई। सभी की आँखें उत्तर की तरफ सवारी के इन्तजार में थीं।

कुछ सवार जो धीरे-धीरे महल की तरफ आ रहे थे। फौलादी जेरा पहने हुए थे जिस पर डूबते सूर्य की किरण पड़ने से अजब चमक-दमक मालूम होती थी। हाथ में झंडेदार नेजा लिए ढाल-तलवार लगाए,

जवानी की उमंग में अकड़े हुए बहुत ही भले मालूम पड़ते थे। उनके आगे-आगे एक खूबसूरत ताकतवर और जेवरों से सजे हुए घोड़े पर जिस पर जड़ाऊ जीन कसी हुई थी और अठखेलियाँ कर रहा था, कुँवर बीरेन्द्रसिंह सवार थे। गोरा रंग, बड़ी-बड़ी आँखें, गालों पर सुर्खी छा रही थी। बड़े-बड़े पन्ने के दानों का कण्ठा और भुजबन्द भी पन्ने का था जिसकी चमक चेहरे पर पड़कर खूबसूरती को दूना कर रही थी। महारानी ने जो बीरेन्द्रसिंह को बहुत दिनों बाद इस ठाठ और रोआब से आते देखा, सौगुनी मुहब्बत आगे से ज्यादा बढ़ गई। मुँह से निकल पड़ा, 'अगर चन्द्रकान्ता के लायक वर है तो बीरेन्द्र! चाहे जो हो मैं तो इसी को दामाद बनाऊँगी।'

इतने में कुमार किले के नीचे आ पहुँचे। महाराज से न रहा गया, खुद उतर आये और जब तक वे किले के अन्दर आवें महाराज भी वहाँ पहुँच गए। बीरेन्द्रसिंह ने महाराज को देखकर पैर छुआ, उन्होंने उठाकर छाती से लगा लिया और हाथ पकड़े सीधे महल में ले गये। महारानी उन दोनों को आते देख आगे तक बढ़ आईं। कुमार ने चरण छुआ, महारानी की आंखों में प्रेम का जल भर आया, बड़ी खुशी से कुमार को बैठने के लिए कहा। महाराज भी बैठ गये। चन्द्रकान्ता भी किवाड़ की आड़ में खड़ी उनको देख रही थी। महाराज से विदा होकर कुमार अपने कमरे में गए। तेजसिंह भी पहुँचे, कुछ देर चुहल में गुजरी, चन्द्रकान्ता को महल में न देखने से इनकी तबीयत उदास थी, सोचते थे कि कैसे मुलाकात हो इसी सोच में आँख लग गई।

सुबह जब महाराज दरबार में गये, बीरेन्द्रसिंह स्नान-पूजा से छुट्टी पा दरबारी पोशाक पहिने कलगी सरपेच समेत सर पर रख, तेजसिंह को साथ ले दरबार में गए। महाराज ने अपने सिंहासन के बगल में एक जड़ाऊ कुर्सी पर कुमार को बैठाया। हरदयालसिंह ने महाराज की चिट्ठी का जवाब पेश किया जो राजा सुरेन्द्रसिंह ने लिखा था। उसको पढ़कर महाराज बहुत खुश हुए। थोड़ी देर बाद दीवान साहब को हुक्म दिया कि कुमार की फौज में हमारी तरफ से बाजार लगाया जाय और गल्ले वगैरह का पूरा इन्तजाम किया जाय, किसी को किसी तरह की तकलीफ न हो। कुमार ने अर्ज किया, 'महाराज सामान सब साथ आया है।' महाराज ने कहा, 'क्या तुमने इस राज्य को दूसरे का समझा है! जैसा मुनासिब समझो, बन्दोबस्त और इन्तजाम करो।' कुमार ने तेजसिंह की तरफ देखकर कहा, 'तुम जाओ, मेरी फौज के तीन हिस्से करके दो-दो हजार

विजयगढ़ के दोनों तरफ भेजो और हजार फौज के दस टुकड़े करके इधर-उधर पाँच-पाँच कोस तक फैला दो और खेमे वगैरह का पूरा बन्दोबस्त कर दो। जासूसों को चारों तरफ रवाना करो। बाकी महाराज की फौज की कल कवायद देखकर जैसा होगा इन्तजाम करेंगे।' हुक्म पाते ही तेजसिंह रवाना हुए, इस इन्तजाम और हमदर्दों को देखकर महाराज को और भी तसल्ली हुई। हरदयालसिंह को हुक्म दिया कि फौज में मुनादी करा दो कि कल कवायद होगी। इतने में महाराज के जासूसों ने आकर अदब सलाम कर खबर दी कि शिवदत्तसिंह अपनी तीस हजार फौज लेकर सरकार से मुकाबला करने के लिए रवाना हो चुका है, दो-तीन दिन तक नजदीक आ जायेगा। कुमार ने कहा, 'कोई हर्ज नहीं समझ लेंगे, तुम फिर अपने काम पर जाओ।'

दूसरे दिन महाराज जयसिंह और कुमार एक हाथी पर बैठकर फौज की कवायद देखने गए। हरदयालसिंह ने मुसलमानों को बहुत कम कर दिया था तो भी एक हजार मुसलमान रह गये थे। कवायद देख कुमार बहुत खुश हुए मगर मुसलमानों की सूरत देख त्योरी चढ़ गई। कुमार की सूरत से महाराज समझ गए और धीरे से पूछा, 'इन लोगों को जवाब दे देना चाहिए?' कुमार ने कहा, 'नहीं, निकाल देने से ये लोग दुश्मन के साथ हो जायेंगे! मेरी समझ में तो बेहतर होगा कि दुश्मन को रोकने के लिए पहले इन्हीं लोगों को भेजा जाय। इनके पीछे तोपखाना और थोड़ी फौज हमारी रहेगी, वे लोग इन लोगों की नीयत खराब देखने या भागने का इरादा मालूम होने पर पीछे से तोप मारकर इन सभी की सफाई कर डालेंगे। ऐसा खौफ रहने से ये लोग एक दफे तो खूब लड़ जायेंगे, मुफ्त मारे जाने से लड़कर मरना बेहतर समझेंगे।' इस राय को महाराज ने बहुत पसन्द किया और दिल में कुमार की अक्ल की तारीफ करने लगे।

जब महाराज फिरे तो कुमार ने अर्ज किया, 'मेरा जी शिकार खेलने को चाहता है, अगर इजाजत हो तो जाऊँ।' महाराज ने कहा, 'अच्छा दूर मत जाना और दिन रहते जल्दी लौट आना।' यह कहकर हाथी बैठवाया। कुमार उतर पड़े और घोड़े पर सवार हुए। महाराज का इशारा पा दीवान हरदयालसिंह ने सौ सवार साथ कर दिए। कुमार शिकार के लिए रवाना हुए। थोड़ी देर बाद तेजसिंह भी पहुँचे, कुमार ने पूछा, 'क्या सब इन्तजाम हो चुका जो तुम यहाँ चले आये।' तेजसिंह ने कहा, 'क्या आज ही हो जायेगा? कुछ आज हुआ कुछ कल दुरुस्त हो

जायेगा। इस वक्त मेरे जी में आया कि चलें जरा उस तहखाने की सैर कर आवें जिसमें अहमद को कैद किया है, इसलिए आपसे पूछने आया हूँ कि अगर इरादा हो तो आप भी चलिए।'

'हाँ मैं चलूंगा।' कहकर कुमार ने उस तरफ घोड़ा फेरा। तेजसिंह भी घोड़े के साथ रवाना हुए। थोड़ी देर में कुमार और तेजसिंह तहखाने के पास पहुँचे और अन्दर घुसे। जब अंधेरा निकल गया और रोशनी आई तो सामने एक दरवाजा दिखाई देने लगा। कुमार घोड़े से उतर पड़े। अब तेजसिंह ने कुमार से पूछा, 'भला यह कहिए कि आप यह दरवाजा खोल भी सकते हैं कि नहीं?' कुमार ने कहा, 'क्यों नहीं इसमें क्या कारीगरी है!' यह कह झट आगे बढ़ शेर के मुँह से जबान बाहर निकाल ली, दरवाजा खुल गया। तेजसिंह ने कहा, 'याद तो है!' कुमार ने कहा, 'क्या मैं भूलने वाला हूँ।' दोनों अन्दर गए और सैर करते-करते चश्मे के किनारे पहुँचे। देखा कि अहमद और भगवानदत्त एक चट्टान पर बैठे बातें कर रहे हैं, पैर में बेड़ी पड़ी हैं। कुमार को देख दोनों उठ खड़े हुए, झुक कर सलाम किया और बोले, 'अब तो हम लोगों का कसूर माफ होना चाहिए।' कुमार ने कहा, 'हाँ थोड़े रोज और सब्र करो।'

कुछ देर तक वीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह टहलते और मेवों को तोड़ कर खाते रहे। इसके बाद तेजसिंह ने कहा, 'अब चलना चाहिए देर हो गई।' कुमार ने कहा, 'चलो।' दोनों बाहर आये। तेजसिंह ने कहा, 'इस दरवाजे को आपने खोला है, आप ही बन्द कीजिए।' कुमार ने यह कहकर कि 'अच्छा लो हम ही बन्द कर देते हैं।' दरवाजा बन्द कर दिया और घोड़े पर सवार हुए। जब विजयगढ़ के करीब पहुँचे, तेजसिंह ने कहा, 'अब आप जाइये मैं जरा फौज की खबर लेता हुआ आता हूँ।' कुमार ने कहा, 'अच्छा जाओ।' यह सुन तेजसिंह दूसरी तरफ चले गये और कुमार किले में चले आये, घोड़े से उतर कमरे में गये, आराम किया। थोड़ी रात बीते तेजसिंह कुमार के पास आये। कुमार ने पूछा, 'कहो क्या हाल है? तेजसिंह ने कहा, 'सब इन्तजाम आपके हुक्म मुताबिक हो गया, आज दिन भर में एक घण्टे की छुट्टी न मिली जो आपसे मुलाकात करता।' यह सुन वीरेन्द्रसिंह हँस पड़े और बोले, 'दोपहर तक तो हमारे साथ रहे तिस पर कहते हो कि मुलाकात न हुई!' यह सुनते ही तेजसिंह चौंक पड़े और बोले, 'आप क्या कहते हैं!' कुमार ने कहा, 'कहते क्या हैं तुम मेरे साथ उस तहखाने में नहीं गये थे जहाँ अहमद और भगवान दत्त बन्द हैं?'

अब तो तेजसिंह के चेहरे का रंग उड़ गया और कुमार का मुँह देखने लगे। तेजसिंह की यह हालत देखकर कुमार को भी ताज्जुब हुआ। तेजसिंह ने कहा, 'भला यह तो बताइए कि मैं आपसे कहाँ मिला था, कहाँ तक साथ गया, और कब वापस आया ?' कुमार ने सब कुछ कह दिया। तेजसिंह बोले, 'बस आपने चौका फेरा। अहमद और भगवानदत्त के निकल जाने का तो इतना गम नहीं है। मगर दरवाजे का हाल दूसरे को मालूम हो गया इसका बड़ा अफसोस है।' कुमार ने कहा, 'तुम क्या कहते हो कुछ समझ में नहीं आता।' तेजसिंह ने कहा, 'ऐसा ही समझते तो धोखा क्यों खाते। तब न समझे तो अब समझिए कि शिवदत्त के ऐयारों ने धोखा दिया और तहखाने का रास्ता देख लिया। जरूर यह काम बद्रीनाथ का है दूसरे का नहीं, ज्योतिषी उसको रमल के जरिये से पता देता है।'

कुमार यह सुन दंग हो गए और अपनी गलती पर अफसोस करने लगे। तेजसिंह ने कहा, 'अब तो जो होना था हो गया उसका अफसोस काहे का। मैं इस वक्त जाता हूँ, कैदी तो निकल गये होंगे मगर मैं जाकर ताले का बन्दोबस्त करूँगा ?' कुमार ने पूछा, 'ताले का बन्दोबस्त क्या करोगे ?' तेजसिंह ने कहा, 'उस फाटक में और भी ताले हैं जो इससे ज्यादा मजबूत हैं मगर लगाने और बन्द करने में बड़ी देर लगती है इसलिए उन्हें नहीं लगाता था मगर अब लगाऊँगा।' कुमार ने कहा, 'मुझे भी वह ताला दिखाओगे ?' तेजसिंह ने कहा, 'अभी नहीं जब तक चुनार पर फतह न पा लेंगे न बतावेंगे। नहीं तो फिर धोखा होगा।' कुमार ने कहा, 'अच्छा मर्जी तुम्हारी।'

तेजसिंह उसी वक्त तहखाने की तरफ रवाना हुए और सवेरा होने के पहले ही लौट आये। सुबह को जब कुमार सोकर उठे तो तेजसिंह से पूछा, 'कहो तहखाने का क्या हाल है ?' उन्होंने जवाब दिया, 'कैदी तो निकल गये मगर ताले का बन्दोबस्त कर आया हूँ।'

नहा-धोकर कुछ खाकर कुमार को तेजसिंह दरबार में ले गये। आज जासूसों ने खबर दी कि शिवदत्त की फौज और पास आ गई, अब दस कोस पर है। कुमार ने महाराज से अर्ज किया, 'अब मौका आ गया कि मुसलमानों की फौज दुश्मनों को रोकने के लिए आगे भेजी जाय।' महाराज ने कहा, 'अच्छा भेज दो।' कुमार ने तेजसिंह से कहा, 'अपना एक तोपखाना भी इस मुसलमानी फौज के पीछे रवाना करो।' फिर

कान में कहा, 'अपने तोपखाने वालों को समझा देना कि जब फौज की नीयत खराब देखें तो जिन्दा किसी को न जाने दें।'

☐ शाम को महाराज से मिलने के लिए बीरेन्द्रसिंह गये। महाराज उन्हें अपने बगल में बैठाकर बातचीत करने लगे। इतने में हरदयालसिंह और तेजसिंह भी आ पहुँचे। महाराज ने हाल पूछा, उन्होंने अर्ज किया 'कि फौज मुकाबले में भेज दी गई है।' लड़ाई के बारे में राय और तरकीबें होने लगीं। सब सोचते-विचारते आधी रात गुजर गई, यकायक कई चोबदारों ने आकर अर्ज किया, 'महाराज, चोर-महल में से कुछ आदमी निकल कर भागे जिनको दुश्मन समझ पहरे वालों ने तीर मारा, मगर, वे जख्मी होकर भी निकल गए।'

यह खबर सुन महाराज सोच में पड़ गए। कुमार और तेजसिंह भी हैरान थे। इतने में ही महल में से रोने की आवाज आने लगी। सभी का ख्याल उस रोने पर चला गया। पल-पल में रोने और चिल्लाने की आवाज बढ़ने लगी, यहाँ तक कि तमाम महल में हाहाकार मच गया। महाराज और कुमार वगैरह सभी के मुँह पर उदासी छा गई। उसी समय लौंडिया दौड़ती हुई आई और रोते-रोते बड़ी मुश्किल से बोली, 'चन्द्रकान्ता और चपला का सिर काट कर कोई ले गया।' यह खबर तीर के समान सभी को छेद गई। महाराज ने अपने को संभाला और कुमार की अजब हालत देख गले लगा लिया, इसके बाद रोते हुए कुमार का हाथ पकड़े महल में दौड़े चले गये। देखा कि हाहाकार मचा हुआ है, महारानी चन्द्रकान्ता की लाश पर पछाड़ें खा रही है, सिर फट गया है, खून जारी है। महाराज भी जाकर उसी लाश पर गिर पड़े। कुमार को तो इतनी भी ताकत न रही कि अन्दर जाते। दरवाजे पर ही गिर पड़े।

यकायक महाराज की निगाह दरवाजे पर गई। देखा बीरेन्द्रसिंह पड़े हुए हैं, सिर में खून जारी है। दौड़े और कुमार के पास आए, देखा तो बदन में दम नहीं, नब्ज का पता नहीं, नाक पर हाथ रखा तो साँस ठंडी चल रही है। अब तो और भी जोर से महाराज चिल्ला उठे, बोले, 'गजब हो गया! हमारे चलते नौगढ़ का राज्य भी गारत हुआ। हम तो समझे थे कि बीरेन्द्रसिंह को राज्य दे जंगल में चले जायेंगे, मगर हाय, विधाता को यह भी अच्छा न लगा, अरे कोई जाओ, जल्दी तेजसिंह को लिवा लाओ,

कुमार को देखें ! हाय-हाय ! अब तो इसी मकान में मुझको भी मरना पड़ा । मैं समझता हूँ राजा सुरेन्द्रसिंह की जान भी इसी मकान में जायेगी ! हाय, अभी क्या सोच रहे थे क्या हो गया । विधाता तूने क्या किया ?'

इतने में तेजसिंह आए। देखा कि वीरेन्द्रसिंह पड़े हैं और महाराज उनके ऊपर हाथ रखे रो रहे हैं। तेजसिंह की जो कुछ जान बची थी वह भी निकल गई ! बीरेन्द्रसिंह की लाश के पास बैठ गए और जोर से बोले, 'कुमार, मेरा जी तो रोने को भी नहीं चाहता क्योंकि मुझको अब इस दुनिया में रहना नहीं है, मैं तो खुशी-खुशी तुम्हारा साथ दूँगा !' यह कह कर कमर से खंजर निकाल और पेट में मारा ही चाहते थे कि दीवार फाँद एक आदमी ने आकर हाथ पकड़ लिया।

तेजसिंह ने उस आदमी को देखा जो सिर से पैर तक सिन्दूर से रंगा हुआ था। उसने कहा—

'काहे को देते हौ जान। मेरी बात सुनो दे कान।
यह सब खेल ठगी को मान। लाश देखकर लो पहिचान।
उठो देखो भालो, खोजो खोज निकालो।'

यह कह दाँत दिखलाता उछलता-कूदता भाग गया।

भाग-2

इस आदमी को सभी ने देखा मगर हैरान थे कि यह कौन है, कैसे आया और क्या कह गया ! तेजसिंह ने जोर से पुकार कर सबको कहा, 'आप लोग चुप रहें, मुझको मालूम हो गया कि यह सब ऐयारी हुई है, असल में कुमारी और चपला दोनों जीती हैं, यह लाशें उन लोगों की नहीं हैं !'

तेजसिंह की बात से सब चौंक पडे और एकदम सन्नाटा हो गया। सभी ने रोना-धोना छोड़ दिया और तेजसिंह के मुँह की तरफ देखने लगे। तेजसिंह ने कहा, 'यह पता लग गया कि चन्द्रकान्ता और चपला को शिवदत्तसिंह के ऐयार चुरा ले गये हैं और यह बनावटी लाश यहाँ रख गये हैं जिससे सब कोई जानें कि वे मर भी गई और खोज न करें।' महाराज तेजसिंह के साथ लाश के पास गए महारानी गई। तेजसिंह ने अपने कमर से खंजर निकाल कर चपला की लाश की टाँग काट ली और महाराज को दिखला कर बोले, 'देखिये इसमें कहीं हड्डी है ?' महाराज ने गौर से देखकर कहा, 'ठीक है, बनावटी लाश है।'

तेजसिंह के समझाने से सभी को ढांढस हुई, मगर कुमार वीरेन्द्रसिंह अभी तक बदहवास पड़े हैं, उनको इन सब बातों की कुछ खबर नहीं। अब महाराज को यह फिक्र हुई कि कुमार को होश में लाना चाहिये। वैद्य बुलाये गये, सभी ने बहुत-सी तरकीबें कीं मगर कुमार को होश न आया। तेजसिंह ने कहा कि 'कुमार को उठवा के उनके रहने के कमरे में भिजवाना चाहिए, वहाँ अकेले में मैं इनका इलाज करूँगा।' यह सुन महाराज ने इन्हें खुद उठाना चाहा मगर तेजसिंह ने कुमार को गोद में ले लिया और उनके रहने वाले कमरे में चले। महाराज भी संग हुए। तेजसिंह ने कहा, 'आप साथ न चलिए, ये अकेले ही में अच्छे होंगे।' महाराज उसी जगह ठहर गये। तेजसिंह कुमार को लिए हुए उनके कमरे में पहुँचे और चारपाई पर लिटा दिया, चारों तरफ से दरवाजे बन्द कर दिये और उनके कान के पास मुँह लगा कर बोलने लगे—'चन्द्रकान्ता मरी

नहीं, जीती है, वह देखो महाराज शिवदत्त के ऐयार उसे लिए जाते हैं। जल्दी दौड़ो, छीनो, नहीं तो बस ले ही जाएँगे ! क्या इसी को वीरता कहते हैं। छिः चन्द्रकान्ता को दुश्मन लिये जाएँ और आप देखकर भी कुछ न बोलें ? राम राम राम !!'

इतनी आवाज कान में पड़ते ही कुमार ने आँखें खोल दीं और घबरा कर बोले, 'हैं! कौन लिए जाता है ? कहाँ है चन्द्रकान्ता ?' यह कहकर इधर-उधर देखने लगे। देखा तो तेजसिंह बैठे हैं। पूछा, 'अभी कौन कह रहा था कि चन्द्रकान्ता जीती है और उसको दुश्मन लिए जाते हैं ?' तेजसिंह ने कहा, 'मैं कहता था और सच कह रहा था। कुमारी जीती हैं मगर दुश्मन उनको चुरा ले गए हैं और उनकी जगह नकली लाश रख इधर-उधर रंग फैला दिया है जिससे लोग कुमारी को मरी हुई जान कर पीछा और खोज न करें।'

कुमार ने कहा, 'तुम हमें धोखा देते हो ! हम कैसे जानें कि वह लाश नकली है ?' तेजसिंह ने कहा, 'मैं अभी आपको यकीन करा देता हूँ !' यह कह कमरे का दरवाजा खोला। देखा कि महाराज खड़े हैं, आँखों से आँसू जारी हैं। तेजसिंह को देखते ही पूछा, 'क्या हाल है ?' जवाब दिया, 'अच्छे हैं, होश में आ गये, चलिये देखिये।' यह सुन महाराज अन्दर गए, उन्हें देखते ही कुमार उठ खड़े हुए। महाराज ने गले से लगा लिया। पूछा, 'मिजाज कैसा है !' कुमार ने कहा, 'अच्छा है।' कई लौंडियाँ भी उस जगह आईं जिनको कुमार का हाल लेने के लिए महारानी ने भेजा था। एक लौंडी से तेजसिंह ने कहा, 'दोनों लाशों में से जो टुकड़े हाथ-पैर के मैंने काटे थे उन्हें ले आ।' यह सुन लौंडी दौड़ी गई और वे टुकड़े ले आई। तेजसिंह ने कुमार को दिखला कर कहा, 'देखिये यह बनावटी लाश है या नहीं !'

सवेरा हो गया। महाराज, कुमार और तेजसिंह बैठे बातें कर रहे थे कि हरदयालसिंह ने पहुँच कर महाराज को सलाम किया। दीवान साहब ने कहा, 'और गजब देखिये ! कुमारी के मरने की खबर सुन कर सब परेशान थे, सरकारी नौकरों में से जिन लोगों ने यह खबर सुनी, दौड़े हुए महल के दरवाजे पर रोते-चिल्लाते चले आये, उधर जहाँ ऐयार लोग कैद थे पहरा कम रह गया, मौका पाकर उनके साथी ऐयारों ने वहाँ धावा किया और पहरे वालों को जख्मी कर अपनी तरफ के सब ऐयारों को जो कैद थे छुड़ा ले गये।'

यह खबर सुनकर तेजसिंह, कुमार और महाराज सन्न हो गये।

कुमार ने कहा, 'बड़ी मुश्किल में पड़ गये। अब कोई भी ऐयार उनका हमारे यहाँ न रहा, सब छूट गये। कुमारी और चपला को ले गये यह तो गजब ही किया! अब नहीं बर्दाश्त होता, हम आज ही कूच करेंगे और दुश्मनों से इसका बदला लेंगे।' यह बात कर ही रहे थे, कि एक चोबदार ने अर्ज किया कि, 'लड़ाई की खबर लेकर एक जासूस आया है, दरवाजे पर हाजिर है, उसके बारे में क्या हुक्म होता है?' हरदयालसिंह ने कहा, 'इसी जगह हाजिर करो।' जासूस लाया गया। उसने कहा, 'दुश्मनों को रोकने के लिए अगर फौरन मदद न भेजी जायेगी तो तोपखाने वाले भी मारे जाएँगे।'

यह सुनते ही कुमार ने दीवान हरदयालसिंह को हुक्म दिया कि 'पाँच हजार फौज जल्दी मदद पर भेजी जाय और वहाँ पर हमारे लिये भी खेमा रवाना करो, दोपहर को हम भी उस तरफ कूच करेंगे।' हरदयालसिंह फौज भेजने के लिये चले गये। महाराज ने कुमार से कहा, 'हम भी तुम्हारे साथ चलेंगे।' कुमार ने कहा, 'ऐसी जल्दी क्या है? आप यहाँ रहें, राज्य का काम देखें। मैं जाता हूँ, जरा देखूं तो राजा शिवदत्त कितनी बहादुरी रखता है, अभी आपको तकलीफ करने की कुछ जरूरत नहीं।'

थोड़ी देर तक बातचीत होने के बाद महाराज उठ कर महल में चले गये। कुमार और तेजसिंह भी स्नान और सन्ध्या पूजा की फिक्र में उठे। सबसे जल्दी तेजसिंह ने छुट्टी पाई और मुनादी वाले को बुला कर हुक्म दिया कि 'तू तमाम शहर में इस बात की मुनादी कर आ कि—'दस्तारबीर का जिसको इष्ट हो वह तेजसिंह के पास हाजिर हो।' बमूजिब हुक्म के मुनादी वाला मुनादी करने चला गया। सभी को ताज्जुब था कि तेजसिंह ने यह क्या मुनादी करवाई है।

[ ] मामूली वक्त पर महाराज ने दरबार किया। कुमार और तेजसिंह भी हाजिर हुए। आज का दरबार बिल्कुल सुस्त और उदास था मगर कुमार ने लड़ाई पर जाने के लिए महाराज से इजाजत ले ली और वहाँ से चले गये। महाराज भी उदासी की हालत में उठ के महल में चले गये। महाराज जब महल में गये, महारानी ने पूछा कि, 'चन्द्रकान्ता का पता लगाने की कुछ फिक्र की गई।' महाराज ने कहा, 'हाँ तेजसिंह उसकी खोज में जाते हैं, उनसे ज्यादा पता लगाने वाला कौन है जिससे मैं कहूँ?

बीरेन्द्रसिंह भी इस वक्त मुझसे लड़ाई पर जाने के लिए बिदा हो गये, अब देखो क्या होता है।'

☐ कुछ दिन बाकी है, एक मैदान में हरी-हरी दूब पर पन्द्रह-बीस कुर्सियाँ रखी हुई हैं और सिर्फ तीन आदमी कुँवर बीरेन्द्रसिंह, तेजसिंह और फतहसिंह[1] सेनापति बैठे हैं, बाकी कुर्सियाँ खाली पड़ी हैं। उनके पूरब तरफ सैकड़ों खेमे अर्धचन्द्राकार खड़े हैं। कुमार ने फतहसिंह से कहा, 'मैं समझता हूँ कि मेरा डेरा खेमा सुबह तक 'लोहरा' के मैदान में दुश्मनों के मुकाबले में खड़ा हो जायेगा ?' फतहसिंह ने कहा, 'जी हाँ, जरूर सुबह तक वहाँ सब सामान लैस हो जायेगा ! हमारी फौज भी कुछ रात रहे यहाँ से कूच करके पहर दिन चढ़ने के पहिले ही वहाँ पहुँच जायेगी।' बातें हो रही थीं कि सामने से देवीसिंह ऐयारी के ठाठ में आते दिखाई दिये। देवीसिंह को देख कर कुमार बहुत खुश हुए और उठ कर गले लगा लिया। कुमार ने पूछा, 'कहो देवीसिंह तुमने यहाँ आकर क्या-क्या किया ?' तेजसिंह ने कहा, 'इनका हाल मुझसे सुनिये, मैं मुख्तसर में आपको समझा देता हूँ।' कुमार ने कहा, 'कहो।' तेजसिंह बोले, 'जब आप चन्द्रकान्ता के बाग में बैठे थे और भूत ने आकर कहा था कि 'खबर भई राजा की तुमरी सुनो गुरुजी मेरे', जिसको सुन कर मैंने जबर्दस्ती आपको वहाँ से उठाया था वह भूत यही थे। नौगढ़ में भी इन्होंने जाकर क्रूरसिंह के चुनार जाने और ऐयारों को संग लाने की खबर खंजरी बजा कर दी थी। जब चन्द्रकान्ता के मरने का गम महल में छाया हुआ था और आप बेहोश पड़े थे तब भी इन्होंने ही चन्द्रकान्ता और चपला के जीते रहने की खबर मुझको दी थी, तब मैंने उठ कर लाश पहिचानी, नहीं तो पूरे घर का नाश हो चुका था। इतना काम इन्होंने किया। इन्हीं को बुलाने के वास्ते मैंने सुबह मुनादी करवाई थी, क्योंकि इनका कोई ठिकाना तो था ही नहीं।' यह सुन कर कुमार ने देवीसिंह की पीठ ठोंकी और बोले, 'शाबाश ! किस मुँह से तारीफ करें, दो घर तुमने बचाये।' 'देवीसिंह, यह तो बताओ चन्द्रकान्ता कहाँ है।' देवीसिंह ने जवाब दिया कि 'यह तो नहीं मालूम कि चन्द्रकान्ता कहाँ हैं, हाँ इतना जानता हूँ कि नाजिम और बद्रीनाथ मिल कर कुमारी और

1. फतहसिंह की उम्र पचीस वर्ष से ज्यादा न होगी।

चपला को ले गये, पता लगाने से लग ही जायेगा।' तेजसिंह ने कहा, 'अब तो दुश्मन के सब ऐयार छूट गये, वे सब मिल के नौ हैं और हम दो आदमी ठहरे। चन्द्रकान्ता और चपला को खोजें चाहे फौज में रहकर कुमार की हिफाजत करें, बड़ी मुश्किल है।' देवीसिंह ने कहा, 'कोई मुश्किल नहीं है सब काम हो जायेगा।'

आधी रात तक ये लोग आपस में बातचीत करते रहे। इसके बाद कुमार उठ कर अपने खेमे में चले गये। कुमार के बगल में तेजसिंह का खेमा था जिसमें देवीसिंह और तेजसिंह दोनों ने आराम किया। चारों तरफ फौज का पहरा फिरने लगा, गश्त की आवाज आने लगी। थोड़ी रात बाकी थी कि एक छोटी तोप की आवाज हुई। कुछ देर बाद बाजा बजने लगा; कूच की तैयारी हुई और धीरे-धीरे फौज चल पड़ी। जब सब फौज जा चुकी, पीछे एक हाथी पर कुमार सवार हुए जिन्हें चारों तरफ से बहुत से सवार घेरे हुए थे। तेजसिंह और देवीसिंह अपने ऐयारों के सामान से सजे हुए कभी आगे कभी पीछे कभी साथ, पैदल चले जाते थे। पहर दिन चढ़े कुँवर बीरेन्द्रसिंह का लश्कर शिवदत्तसिंह की फौज के मुकाबले में जा पहुँचा जहाँ पहिले से महाराज जयसिंह की फौज डेरा जमाये हुए थी। बीरेन्द्रसिंह ने अपने खेमे में कचहरी की और मुंशी को हुक्म दिया, 'एक चिट्ठी शिवदत्त को लिखो कि चन्द्रकान्ता और चपला को इज्जत के साथ महाराज जयसिंह के पास भेज दो और तुम वापस जाओ नहीं तो पछताओगे जिस वक्त हमारे बहादुरों की तलवारें मैदान में चमकेंगी, भागते राह न मिलेगी।'

मीर मुन्शी ने चिट्ठी लिखकर तैयार की। कुमार ने कहा, 'यह खत कौन ले जायेगा?' यह सुन देवीसिंह सामने आ हाथ जोड़कर बोले, 'मुझको इजाजत मिले कि इस खत को ले जाऊँ, क्योंकि शिवदत्तसिंह से बातचीत करने की मेरे मन में बड़ी लालसा है।' कुमार ने कहा, 'इतनी बड़ी फौज में तुम्हारा अकेला जाना अच्छा नहीं है।' तेजसिंह ने कहा, 'कोई हर्ज नहीं, जाने दीजिये।' आखिर कुमार ने अपनी कमर से खंजर निकाल कर दिया जिसे देवीसिंह ने लेकर सलाम किया, चिट्ठी बटुए में रख ली और तेजसिंह के चरण छूकर रवाना हुए।

महाराज शिवदत्तसिंह के पल्टन वालों में कोई भी देवीसिंह को नहीं पहिचानता था। दूर से इन्होंने देखा कि बड़ा-सा कारचोबी का खेमा खड़ा है। समझ गये कि यही महाराज का खेमा है, सीधे धड़धड़ाते हुए खेमे के दरवाजे पर पहुँचे और पहरे वालों से कहा, 'अपने राजा को खबर करो

कि कुंवर बीरेन्द्रसिंह का एक ऐयार खत लेकर आया है, जाओ, जल्दी जाओ !' सुनते ही प्यादा दौड़ा गया और महाराज शिवदत्त से इस बात की खबर की। उन्होंने हुक्म दिया, 'आने दो।' देवीसिंह खेमे के अन्दर गये। देखा कि बीच में महाराज शिवदत्त बैठे हैं, बाईं तरफ दीवान साहब और बाद इसके दोनों तरफ बड़े-बड़े बहादुर बैठे हैं।

देवीसिंह किसी को सलाम किये बिना ही बीच में जाकर खड़े हो गए और कुमार की चिट्ठी महाराज के सामने रख दी। देवीसिंह की बेअदबी देखकर महाराज शिवदत्त मारे गुस्से के लाल हो गये और बोले—'एक मच्छर को इतना हौसला हो गया कि हाथी का मुकाबला करे !' देवीसिंह की आँखें लाल हो गईं। बोले, 'जिसके सिर पर मौत सवार होती है उसकी बुद्धि पहिले ही हवा खाने चली जाती है।' देवीसिंह की बात तीर की तरह शिवदत्त के कलेजे के पार हो गई। बोले, 'पकड़ो इस बेअदब को !!' इतना कहना था कि कई चोबदार देवीसिंह की तरफ झुके। इन्होंने खंजर निकाल दो-तीन चोबदारों की सफाई कर डाली और फुर्ती से अपने ऐयारी के बटुए में से एक गेंद निकाल कर जोर से जमीन पर मारी जिससे बड़ी भारी आवाज हुई। दरबार दहल उठा, महाराज एकदम चौंक पड़े जिससे शमला सिर का जिस पर हीरे का सरपेंच था जमीन पर गिर पड़ा। लपक के देवीसिंह ने उसे उठा लिया और कूदकर खेमे के बाहर हो गये। सबके-सब देखते रह गये, किसी के किये कुछ न बन पड़ा।

सारा गुस्सा शिवदत्त ने ऐयारों पर निकाला जो कि उस दरबार में बैठे थे। कहा—'लानत है तुम लोगों की ऐयारी पर जो तुम लोगों के देखते दुश्मन का एक अदना ऐयार हमारी बेइज्जती कर जाये !' बद्रीनाथ ने जवाब दिया, 'महाराज हम लोग ऐयार हैं, हजार आदमियों में अकेले घुसकर काम करते हैं। मगर एक आदमी पर दस ऐयार नहीं टूट पड़ते। यह हम लोगों के कायदे के बाहर है। बड़े-बड़े पहलवान तो बैठे थे, इन लोगों ने क्या कर लिया ?' बद्रीनाथ की बात का जवाब शिवदत्त ने कुछ न देकर कहा, 'अच्छा कल हम देख लेंगे !'

☐ महाराज शिवदत्त का शमला लिए हुए देवीसिंह कुँवर बीरेन्द्रसिंह के पास पहुँचे और जो कुछ हुआ था बयान किया। कुमार यह सुन हँसने लगे और बोले, 'चलो सगुन तो अच्छा हुआ !' तेजसिंह ने कहा—'सबसे

ज्यादा अच्छा सगुन तो मेरे लिए हुआ कि शागिर्द पैदा कर लाया।' यह कह शमले में से सरपेंच खोल बटुए में दाखिल किया। कुमार ने कहा, 'भला तुम इसका क्या करोगे, तुम्हारे किस मतलब का है?' तेजसिंह ने जवाब दिया, 'इसका नाम फतह का सरपेंच है, जिस रोज आपकी बारात निकलेगी महाराज शिवदत्त की सूरत बन इसी को माथे पर बाँध मैं आगे-आगे झण्डा लेकर चलूँगा।' यह सुनकर कुमार ने हँस दिया, पर साथ ही इसके दो बूँद आँसू आँखों से निकल पड़े जिसको जल्दी से कुमार ने रूमाल से पोंछ लिया। तेजसिंह समझ गये कि वह चन्द्रकान्ता की जुदाई का है। तेजसिंह ने कुमार से कहा, 'आपके पास देवीसिंह हैं। मैं जाता हूँ, जरा होशियारी से रहियेगा और लड़ाई में जल्दी न कीजियेगा।' कुमार ने कहा, 'अच्छा जाओ, ईश्वर तुम्हारी रक्षा करें।'

बातचीत करते शाम हो गई बल्कि कुछ रात भी चली गई, तेजसिंह उठ खड़े हुए और जरूरी चीजें ले ऐयारी के सामान से लैस हो वहां से एक घने जंगल की तरफ चले गये।

☐ सुबह ही हरकारे ने आकर खबर दी कि 'दुश्मनों की तरफ लड़ाई का सामान हो रहा है।' कुमार ने कहा, 'हमारे यहां भी जल्द तैयारी की जाये।' हुक्म पाकर हरकारा रवाना हुआ। कुमार भी अपने अरबी घोड़े पर सवार हो मैदान में आ गये और देवीसिंह से कहा, 'शिवदत्त को कहना चाहिए कि बहुत से आदमियों का खून करना अच्छा नहीं, जिस-जिसको बहादुरी का घमण्ड हो एक-पर-एक लड़ के जल्दी मामला तय कर ले। शिवदत्तसिंह अपने को अर्जुन समझते हैं, उनके मुकाबले के लिए मैं मौजूद हूँ, क्यों बेचारे गरीब सिपाहियों की जान जाये।' देवीसिंह ने कहा, 'बहुत अच्छा, अभी इस मामले को तय कर डालता हूँ।' यह कह मैदान में गये और अपनी चादर हवा में दो-तीन दफे उछाली। चादर उछालनी थी कि झट बद्रीनाथ ऐयार महाराज शिवदत्त के लश्कर से निकल के मैदान में देवीसिंह के पास आये और बोले, 'जय माया की!' देवीसिंह ने भी जवाब दिया, 'जय माया की!' बद्रीनाथ ने पूछा, 'क्यों क्या है जो मैदान में आकर ऐयारों को बुलाते हो?'

देवी, 'क्यों नहीं एक पर एक लड़ के हौसला निकाल देते। ऐसा करने से मामला भी जल्द तय हो जायेगा और बेचारे सिपाहियों की भी जानें

मुफ्त में न जायेंगी! हमारे कुमार तो कहते हैं कि महाराज शिवदत्त को अपनी बहादुरी का बड़ा भरोसा है, आवें पहिले हमसे ही भिड़ जायें, या वही जीत जायें या हम ही चुनार की गद्दी के मालिक हों, बात की बात में मामला तय होता है।'

बद्री, 'तो इसमें हमारे महाराज कभी पीछे न हटेंगे, वह बड़े बहादुर हैं। तुम्हारे कुमार को तो चुटकी से मसल डालेंगे।'

इस बातचीत के बाद बद्रीनाथ लौटकर अपनी फौज में गये और जो कुछ देवीसिंह से बात हुई थी जाकर महाराज शिवदत्त से कहा। सुनते ही महाराज शिवदत्त झट घोड़ा कुदा के मैदान में आ गये और भाला उठाकर हिलाया, जिसको देख बीरेन्द्रसिंह ने भी अपने घोड़े को एड़ मारी और मैदान में शिवदत्त के मुकाबले में पहुँचकर ललकारा।

शिवदत्त बहुत बिगड़ा और तलवार निकालकर कुमार पर दौड़ा। कुमार ने तलवार का जवाब तलवार से दिया। दो पहर तक दोनों में लड़ाई होती रही। महाराज शिवदत्त को मालूम हो गया कि कुमार हर तरह से जबरदस्त है, अगर थोड़ी देर और लड़ाई होगी तो हम बेशक मारे जायेंगे या पकड़े जायेंगे। यह सोच अपनी फौज को कुमार पर धावा करने का इशारा किया। बस एकदम से कुमार को दुश्मनों ने घेर लिया। यह देख कुमार की फौज ने भी मारना शुरू किया। फतहसिंह सेनापति और देवीसिंह कोशिश करके कुमार के पास पहुँचे और तलवार तथा खंजर चलाने लगे। दोनों फौजें आपस में खूब गुथ गईं और गहरी लडाई होने लगी।

शिवदत्त के बड़े-बड़े पहलवानों ने चाहा कि इसी लड़ाई में कुमार का काम तमाम कर दें मगर कुछ बन न पड़ा। कुमार के हाथ से बहुत दुश्मन मारे गये। शाम को उतारे का डंका बजा और लड़ाई बन्द हुई। फौज ने कमर खोली। कुमार अपने खेमे में आये मगर बहुत सुस्त हो रहे थे, फतहसिंह सेनापति भी जख्मी हो गये थे। रात को सभी ने आराम किया।

महाराज शिवदत्त ने अपने दीवान और पहलवानों की राय ली कि अब क्या करना चाहिए। रात को कुमार के लश्कर पर धावा मारें इस राय को सभी ने पसन्द किया। थोड़ी रात रहे शिवदत्त ने कुमार की फौज पर पाँच सौ सिपाहियों के साथ धावा किया, बड़ी ही गड़बड़ मची, अंधेरी रात में दोस्त दुश्मनों का पता लगाना मुश्किल था। कुमार की फौज दुश्मन समझ अपने ही लोगों को मारने लगी। यह खबर बीरेन्द्रसिंह को भी लगी। झट अपने खेमे से बाहर निकल आये। देवीसिंह ने बहुत से

आदमियों को मशाल जलाने के लिए बांटी। यह मशाल तेजसिंह ने अपनी तरकीब से बनाई थी। इसके जलाते ही उजाला हो गया और दिन की तरह मालूम होने लगा। अब क्या था, कुल पाँच सौ आदमियों का मारना क्या, सुबह होते-होते शिवदत्त के पाँच सौ आदमी मारे गये मगर रोशनी होने के पहले करीब हजार आदमी कुमार की तरफ के नुकसान हो चुके थे जिसका रंज वीरेन्द्रसिंह को बहुत हुआ और सुबह को लड़ाई बन्द न होने दी।

दोनों फौजें फिर गुथ गईं। एकाएक पूरब और उत्तर के कोने से कुछ फौजी सवार तेजी से आते हुए दिखाई दिए। अगले सवार की पोशाक और रूप से मालूम होता था कि यह सभी का सरदार है। यह सरदार मुँह पर नकाब डाले हुए था और उसके साथ जितने सवार पीछे चले आ रहे थे उन लोगों के मुँह पर भी नकाब पड़ी हुई थी।

इस फौज ने पीछे से महाराज शिवदत्त की फौज पर धावा किया और खूब मारा। इधर से बीरेन्द्रसिंह की फौज ने जब देखा कि दुश्मनों को मारने वाला एक और आ पहुँचा, तबीयत बढ़ गई और हौसले के साथ लड़ने लगे। दो तरफी चोट महाराज शिवदत्त की फौज संभाल न सकी और भाग चली। फिर तो कुमार की बन पड़ी, दो कोस तक पीछा किया आखिर फतह का डंका बजाते अपने पड़ाव पर आये।

महाराज शिवदत्त का माल खजाना और खेमा वगैरह कुमार के हाथ लगा। जब कुमार निश्चिन्त हुए उन्होंने देवीसिंह से पूछा, 'क्या तुम कुछ बता सकते हो कि वे नकाबपोश कौन थे जिन्होंने हमारी मदद की?' देवीसिंह ने कहा, मेरे कुछ भी ख्याल में नहीं आता, मगर वाह बहादुरी इसको कहते हैं!!' इतने में एक जासूस ने आकर खबर दी कि दुश्मन थोड़ी दूर जाकर अटक गये हैं और फिर लड़ाई की तैयारी कर रहे हैं।

☐ तेजसिंह चन्द्रकान्ता और चपला का पता लगाने के लिए कुंअर बीरेन्द्रसिंह से बिदा हो फौज के हाते से बाहर आये और चुनार की तरफ रवाना हुए और दूसरे दिन सवेरे वहाँ पहुँचे सूरत बदलकर इधर-उधर घूमने लगे। रात को तेजसिंह सूरत बदल किले के अन्दर घुस गये और इधर-उधर ढूँढ़ने लगे। घूमते-घूमते मौका पाकर वे एक काले कपड़े से अपने बदन को ढाँक कमन्द फेंक महल पर चढ़ गये। एक आलीशान कमरे में एक औरत सो रही थी। चारों तरफ उसके कई औरतें भी फर्श पर पड़ी हुई थीं। तेजसिंह आगे बढ़े और एक-एक करके रोशनी बुझाने लगे,

खूबसूरत चेहरा खुला था, करवट के सबब कुछ हिस्सा मुँह का नीचे के मखमली तकिये पर होने से छिपा हुआ था। तेजसिंह को यकीन हो गया कि बेशक महाराज शिवदत्त की रानी यही है। कुछ देर सोचने के बाद उन्होंने अपने बटुए में से कलम दावात और एक टुकड़ा कागज का निकाला और जल्दी से उस पर यह लिखा—

'न मालूम क्यों इस वक्त मेरा जी चन्द्रकान्ता से मिलने को चाहता है। जो हो, मैं तो उससे मिलने जाती हूं। रास्ता और ठिकाने का पता मुझे लग चुका है।'

इसके बाद पलंग के पास जा बेहोशी का धूरा रानी की नाक के पास ले गये जो साँस लेती दफे उसके दिमाग पर चढ़ गया और वह एकदम से बेहोश हो गई। तेजसिंह ने नाक पर हाथ रखकर देखा, बेहोशी की साँस चल रही थी, झट रानी को तो कपड़े में बाँधा और पुर्जा जो लिखा था वह तकिये के नीचे रखकर वहाँ से उसी कमन्द के जरिये से बाहर हुए और गंगा किनारे वाली खिड़की, जो भीतर से बन्द थी, खोल तेजी के साथ पहाड़ी की तरफ निकल गये। बहुत दूर जा एक दर्रे में रानी को और ज्यादा बेहोश करके रख दिया और फिर लौटकर किले के दरवाजे पर आ एक तरफ किनारे छिपकर बैठ गये।

☐ अब सवेरा हुआ ही चाहता है, महल में लौंडियों की आँखें खुलीं तो महारानी को न देखकर घबरा गईं, इधर-उधर देखा, कहीं नहीं। आखिर खूब शोरगुल मचा, चारों तरफ खोज होने लगी, पर कहीं पता न लगा। यह खबर बाहर तक फैल गई, सभी को फिक्र पैदा हुई। महाराज शिवदत्त लड़ाई से भागे हुए दस-पन्द्रह सवारों के साथ चुनार पहुँचे, किले के अन्दर घुसते ही मालूम हुआ कि महल में से महारानी गायब हो गईं। सुनते ही जान सूख गई, दोहरी चपेट बैठी, धड़धड़ाते हुए महल में चले आये, देखा कि कुहराम मचा हुआ है।

इस वक्त महाराज शिवदत्त की अजब हालत थी, हवास ठिकाने नहीं थे। आखिर उदास होकर महारानी के बिस्तर के पास आये और बैठकर रोने लगे। तकिये के नीचे से एक कागज का कोना निकला हुआ दिखाई पड़ा जिसे महाराज ने खोला, देखा कुछ लिखा है। अब उस पुर्जे को देख महाराज कई तरह की बातें सोचने लगे। एक तो महारानी का लिखा नहीं मालूम होता है, उनके अक्षर इतने साफ नहीं हैं। फिर किसने लिखकर रख दिया?

ऐसी-ऐसी बहुत-सी बातें देर तक महाराज सोचते रहे, आखिर जी में यही आया कि चाहे जो हो मगर एक दफे जरूर जाकर उस जगह देखना चाहिए जहाँ चन्द्रकान्ता कैद है। कोई हर्ज नहीं अगर हम अकेले जाकर देखें मगर दिन में नहीं शाम हो जाये तो चलें। यह सोचकर बाहर आये और अपने दीवानखाने में भूखे-प्यासे चुपचाप बैठे रहे, किसी से कुछ न कहा मगर बिना हुक्म महाराज के बहुत से आदमी महारानी का पता लगाने जा चुके थे।

शाम होने लगी, महाराज ने अपनी सवारी का घोड़ा मँगवाया और सवार हो अकेले ही किले के बाहर निकले और पूरब की तरफ रवाना हुए। अब बिल्कुल शाम बल्कि रात हो गई मगर चाँदनी रात होने के सबब साफ दिखाई देता था। तेजसिंह जो किले के दरवाजे के पास ही छिपे हुए थे महाराज शिवदत्त को अकेले घोड़े पर जाते देख साथ हो लिये, तीन कोस तक पीछे-पीछे तेजी के साथ चले गये।

यकायक कुछ दूर पर एक छोटी-सी रोशनी नजर पड़ी जिससे तेजसिंह ने समझा कि शायद यह रास्ता यहीं तक आने का है और यही ठीक भी निकला। जब रोशनी के पास पहुँचे देखा कि एक छोटी-सी गुफा है जिसके बाहर दोनों तरफ लम्बे-लम्बे ताकतवर सिपाही नंगी तलवार हाथ में लिये पहरा दे रहे हैं जो बीस के लगभग होंगे। भीतर भी साफ दिखाई देता था कि दो औरतें पत्थरों पर ढासना लगाये बैठी हैं। तेजसिंह ने पहिचान तो लिया कि दोनों चन्द्रकान्ता और चपला हैं मगर उनकी सूरत साफ-साफ नहीं नजर पड़ी।

महाराज ने आते ही इधर-उधर देखा, जहाँ चन्द्रकान्ता बैठी थी वहाँ भी चारों तरफ देखा, मगर कुछ मतलब न निकला क्योंकि यह तो रानी को खोजने आये थे, उस पुर्जे पर जो रानी के बिस्तर पर पाया था महाराज को बड़ी उम्मीद थी मगर कुछ न हुआ, किसी से कुछ पूछा भी नहीं, चन्द्रकान्ता की तरफ भी अच्छी तरह नहीं देखा और लौटकर घोड़े पर सवार हो पीछे फिरे, सिपाहियों को महाराज के इस तरह आकर फिर जाने से ताज्जुब हुआ मगर पूछता कौन? मजाल किसकी थी? तेजसिंह ने जब महाराज को फिरते देखा तो चाहा कि वहीं बगल में छिपे रहें मगर छिप न सके क्योंकि नाला तंग था और ऊपर चढ़ जाने को कहीं जगह न थी, लाचार नाले के बाहर होना ही पड़ा। तेजी के साथ महाराज के पहिले नाले के बाहर हो गये और एक किनारे छिप रहे। महाराज वहाँ से निकल महल की तरफ रवाना हुए।

अब तेजसिंह सोचने लगे कि यहाँ से मैं अकेला चन्द्रकान्ता को कैसे छुड़ाऊँ।

यही सब कुछ सोच तेजसिंह विजयगढ़ की तरफ चले, रात भर चले गये दूसरे दिन दोपहर को वीरेन्द्रसिंह के पास पहुँचे। तेजसिंह ने सब हाल कह सुनाया और बोले, 'अगर किसी दूसरे को छुड़ाना होता या किसी गैर को पकड़ना होता तो मैं अपनी चालाकी कर गुजरता, अगर काम बिगड़ जाता तो भाग निकलता, मगर मामला चन्द्रकान्ता का है। मैं सिर्फ देवीसिंह को लेने आया हूँ और अभी लौट जाऊँगा। मुझे मालूम हो गया कि आपने महाराज शिवदत्त पर फतह पाई है। अभी कोई हर्ज भी देवीसिंह के बिना आपका न होगा।'

कुमार ने कहा, देवीसिंह भी चलें और मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ, क्योंकि यहाँ तो अभी लड़ाई की कोई उम्मीद नहीं और फिर फतहसिंह हैं कोई हर्ज भी नहीं।' तेजसिंह ने कहा, 'अच्छी बात है आप भी चलिये।' यह सुनकर कुमार उसी वक्त तैयार हो गये और फतहसिंह को बहुत सी बातें समझा-बूझाकर शाम होते-होते वहाँ से रवाना हुए। कुमार घोड़े पर, तेजसिंह और देवीसिंह पैदल कदम बढ़ाते चले।

कुल चार कोस के लगभग गये होंगे कि रास्ते में पंडित बद्रीनाथ अकेले दिखाई पड़े और उन्होंने भी कुमार को देख पास आ सलाम किया। कुमार ने सलाम का जवाब हँसकर दिया। देवीसिंह ने कहा, 'अजी बद्रीनाथजी आप क्या उस डरपोक गीदड़ दगाबाज और चोर का संग किए हैं। हमारे दरबार में आइए देखिए हमारा सरदार क्या शेर-दिल और इन्साफ पसन्द है!' बद्रीनाथ ने कहा, 'तुम्हारा कहना बहुत ठीक है और एक दिन ऐसा ही होगा, मगर जब तक महाराज शिवदत्त से मामला तै नहीं होता मैं कब आपके साथ हो सकता हूँ, और अगर हो भी जाऊँ तो आप लोग कब मुझ पर विश्वास करेंगे, आखिर मैं भी ऐयार हूँ!' इतना कह और कुमार को सलाम कर जल्दी दूसरा रास्ता पकड़ एक घने जंगल में जा नजर से गायब हो गये। तेजसिंह ने कुमार से कहा, 'रास्ते में बद्रीनाथ का मिलना ठीक न हुआ, अब वह जरूर इस बात की खोज में होगा कि हम लोग कहाँ जाते हैं।' देवीसिंह ने कहा, 'हाँ इसमें कोई शक नहीं कि यह सगुन खराब हुआ।' यह सुनकर कुमार का कलेजा धड़कने लगा। बोले, 'फिर अब क्या किया जाय?' तेजसिंह ने कहा, 'इस वक्त और कोई तरकीब तो हो ही नहीं सकती, हाँ एक बात है कि हम लोग जंगल का रास्ता छोड़ मैदान-मैदान चलें। ऐसा

करने से पीछे का आदमी आता हुआ मालूम होगा।' कुमार ने कहा, 'अच्छा तुम आगे चलो।'

अब वे तीनों जंगल छोड़ मैदान में हो लिए। पीछे फिर-फिर के देखते जाते थे मगर कोई आता हुआ मालूम न पड़ा। थोड़ी देर में वह नाले के पास जा पहुँचे, पहले दूर ही खड़े होकर चारों तरफ निगाह दौड़ा कर देखा, जब किसी की आहट न मिली तब नाले में घुसे।

कुमार इस नाले को देख बहुत हैरान हुए और बोले, 'अजब भयानक नाला है!' धीरे-धीरे आगे बढ़े, कब नाले के आखिर में पहुँचे जहाँ पहिले दिन तेजसिंह ने चिराग जलते देखा था तो वहाँ अँधेरा पाया। तेजसिंह का माथा ठनका कि यह क्या मामला है। आखिर उस कोठरी के दरवाजे पर पहुँचे जिसमें कुमारी चपला थीं। देखा कि कई आदमी जमीन पर पड़े हैं। अब तो तेजसिंह ने अपने बटुए में से सामान निकाल रोशनी की जिससे साफ मालूम हुआ कि जितने पहरे वाले पहिले दिन देखे थे सब जखमी होकर मरे पड़े हैं। अन्दर घुसे, कुमारी और चपला का पता नहीं, हाँ दोनों के गहने टूटे-फूटे पड़े थे और चारों तरफ खून जमा हुआ था। कुमार से न रहा गया, 'हाय' करके गिर पड़े और आँसू बहाने लगे।

कुंअर वीरेन्द्रसिंह की इस वक्त कैसी हालत थी उसका न कहना ही ठीक है। बहुत समझा बुझा कर वहाँ से कुमार को उठाया और नाले के बाहर लाये। देवीसिंह ने कहा, 'भला वहाँ तो चलो जहाँ शिवदत्त की रानी को रक्खा है।' तेजसिंह ने कहा, 'चलो।' तीनों वहाँ गये, देखा कि महारानी कलावती भी वहाँ नहीं हैं, और भी तबीयत परेशान हुई।

आधी रात से ज्यादा जा चुकी थी, तीनों आदमी बैठे सोच रहे थे कि यह क्या मामला हो गया। यकायक देवीसिंह बोले, 'गुरुजी, मुझे एक तरकीब सूझी है जिसके करने से सब पता लग जायेगा कि यह क्या मामला है। आप ठहरिए, इसी जगह आराम कीजिए, मैं पता लगाता हूँ, अगर बन पड़ेगा तो ठीक पता लगने का सबूत भी लेता आऊँगा।' तेजसिंह ने कहा, 'जाओ, तुम ही कोई तारीफ का काम करो हम दोनों इसी जंगल में रहेंगे।' देवीसिंह एक देहाती पण्डित की सूरत बना रवाना हुए। वहाँ से चुनार करीब ही था, थोड़ी देर में पहुँचे। दूर से देखा एक सिपाही टहलता हुआ पहरा दे रहा है। एक शीशी हाथ में ले उसके पास गये और एक अशर्फी दिखाकर देहाती बोली में बोले, 'इस अशर्फी को आप ले लीजिए और इस इत्र को पहिचान दीजिए कि किस चीज का है। हम देहात के रहने वाले हैं, वहाँ एक गन्धी गया और उसने यह इत्र

दिखाकर हमसे कहा कि 'अगर इसको पहिचान दो तो हम पाँच अशर्फी तुमको दें, सो हम देहाती आदमी क्या जानें कौन चीज का इत्र है इसलिए रातों-रात यहाँ चले आये, परमेश्वर ने आपको मिला दिया है, आप राजदरबार के रहने वाले ठहरे, बहुत इत्र देखा होगा, इसको पहिचान के बता दीजिए तो हम इसी समय लौट के गाँव पहुँच जायें, सवेरे ही जवाब देने का उस गन्धी से वादा है।' देवीसिंह की बात सुन और पास ही एक दूकान के दरवाजे पर जलते हुए चिराग की रोशनी में अशर्फी को देख खुश हो वह दिल ही दिल में सोचने लगा कि अजब बेवकूफ आदमी से काम पड़ा है। मुफ्त की अशर्फी मिलती है ले लो, जो कुछ जी में आवे बता दो, क्या कल मुझसे अशर्फी फेरने आएगा ? यह सोच अशर्फी तो अपने खलीते में रख ली और कहा, 'यह कौन बड़ी बात है, हम बता देते हैं !' उसी शीशी का मुँह खोलकर सूँघा, बस फिर क्या था सूँघते ही जमीन पर लेट गया, दीन दुनिया की खबर ही न रही, बेहोश होने पर देवीसिंह उस सिपाही की गठरी बाँध तेजसिंह के पास ले आए और कहा कि 'यह किले पर पहरा देने वाला है, पहिले इससे पूछ लेना चाहिए, अगर काम न चलेगा तो फिर दूसरी तरकीब की जायेगी।' यह कह उस सिपाही को होश में लाये। वह हैरान हो गया कि यकायक यहाँ कैसे आ फँसे, देवीसिंह को उस देहाती पण्डित की सूरत में सामने खड़े देखा, दूसरी तरफ दो बहादुर और दिखाई दिये। कुछ कहना ही चाहता था कि देवीसिंह ने पूछा, 'यह बताओ कि तुम्हारी महारानी कहाँ है ? बताओ जल्दी।' उस सिपाही ने हाथ-पैर बँधे रहने पर भी कहा कि 'तुम महारानी को पूछने वाले कौन हो, तुम्हें मतलब ?' तेजसिंह ने उठकर एक लात मारी और कहा, 'बताना है कि मतलब पूछता है !' अब तो उसने बेउज्र कहना शुरू कर दिया कि महारानी कई दिनों से गायब हैं, कहीं पता नहीं लगता, महल में गुल-गपाड़ा मचा हुआ है, इससे ज्यादा कुछ नहीं जानते।

तेजसिंह ने कुमार से कहा, 'अब पता ना लगाना कई रोज का काम हो गया। आप अपने लश्कर में जाइए, मैं ढूँढ़ने की फिक्र करता हूँ।' कुमार ने कहा, 'अब मैं लश्कर में न जाऊँगा।' तेजसिंह ने कहा, 'अगर आप ऐसा करेंगे तो भारी आफत होगी, शिवदत्त को यह खबर लगी तो फौरन लड़ाई शुरू कर देगा, महाराज जयसिंह यह हाल पाकर और भी घबड़ा जायेंगे, आपके पिता सुनते ही सूख जायेंगे।' कुमार ने कहा, 'चाहे जो हो, जब चन्द्रकान्ता ही नहीं है तो दुनिया में कुछ हो मुझे क्या परवाह !' तेजसिंह ने बहुत समझाया कि ऐसा न करना चाहिए, आप

धीरज को न छोड़िये नहीं तो हम लोगों का भी जी टूट जायेगा, फिर कुछ न कर सकेंगे। आखिर कुमार ने कहा, 'अच्छा कल भर हमको अपने साथ रहने दो, कल तक अगर पता न लगा तो हम लश्कर में चले जायेंगे और फौज लेकर चुनार पर चढ़ जायेंगे। हम लड़ाई शुरू कर देंगे, तुम चन्द्रकान्ता की खोज करना।' तेजसिंह ने कहा, 'अच्छा यही सही!' ये सब बातें इस तौर पर हुई थीं कि उस सिपाही को कुछ भी नहीं मालूम हुआ जिसको देवीसिंह पकड़ लाये थे।

तेजसिंह ने उस सिपाही को एक पेड़ के साथ कस के बांध दिया और देवीसिंह से कहा, 'अब तुम यहाँ कुमार के पास ठहरो मैं जाता हूँ और जो कुछ हाल है पता लगा लाता हूँ।' देवीसिंह ने कहा, 'अच्छा जाइए।' तेजसिंह ने देवीसिंह से कई बातें पूछीं और उस सिपाही का भेष बना किले की तरफ रवाना हुए।

[ ] जिस जंगल में कुमार और देवीसिंह बैठे थे और उस सिपाही को पेड़ से बांधा था वह जंगल बहुत ही घना था। वहाँ जल्दी किसी की पहुँच नहीं हो सकती थी। तेजसिंह के चले जाने पर कुमार और देवीसिंह एक साफ पत्थर की चट्टान पर बैठे बातें कर रहे थे। सवेरा हुआ ही चाहता था कि पूरब की तरफ से किसी का फेंका हुआ एक छोटा-सा पत्थर कुमार के पास आ गिरा। ये दोनों ताज्जुब से उस तरफ देखने लगे कि एक पत्थर और आया मगर किसी को लगा नहीं। देवीसिंह ने जोर से आवाज दी, 'कौन है जो छिपके पत्थर मारता है, सामने क्यों नहीं आता?' जवाब में आवाज आई, 'शेर की बोली बोलने वाले गीदड़ों को दूर ही से मारा जाता है।' यह आवाज सुनते ही कुमार को गुस्सा चढ़ आया, झट तलवार के कब्जे पर हाथ रख कर उठ खड़े हुए। देवीसिंह ने हाथ पकड़ कर कहा, 'आप क्यों गुस्सा करते हैं, मैं अभी उस नालायक को पकड़ लाता हूँ, वह है क्या चीज?' यह कह देवीसिंह उस तरफ गये जिधर से आवाज आई थी। कहीं उस आदमी का पता न लगा। आखिर लाचार होकर देवीसिंह उस जगह फिर आये जिस जगह कुमार को छोड़ गये थे। देखा तो कुमार नहीं। इधर-उधर देखा कहीं पता नहीं। उस सिपाही के पास आये जिसको पेड़ के साथ बाँध दिया था, देखें तो वह भी नहीं। जी उड़ गया, आँखों में आँसू भर आये, उसी चट्टान पर बैठ गए और सिर पर हाथ रखकर सोचने लगे—'अब क्या करें, किधर ढूंढ़ें, कहाँ जायें। अगर ढूंढ़ते-ढूंढ़ते कहीं दूर

निकल गये और इधर तेजसिंह आये और हमको न देखा तो उनकी क्या दशा होगी ?' इन सब बातों को सोच देवीसिंह और थोड़ी देर इधर-उधर देखा-भाली कर फिर उसी जगह चले आये और तेजसिंह की राह देखने लगे। बीच-बीच में इसी तरह कई दफा देवीसिंह ने उठकर खोज की मगर कुछ काम न निकला।

☐ तेजसिंह पहरे वाले सिपाही की सूरत में किले के दरवाजे पर पहुँचे। कई सिपाहियों ने जो सवेरा हो जाने के सबब जाग उठे थे तेजसिंह की तरफ देखकर कहा, 'जैरामसिंह, तुम कहाँ चले गये थे ? यहाँ पहरे में गड़बड़ पड़ गया। बद्रीनाथजी ऐयार पहरे की जाँच करने आये थे, तुम्हारे कहीं चले जाने का हाल सुनकर बहुत खफा हुए और तुम्हारा पता लगाने के लिए आप ही कहीं गए हैं, अभी तक नहीं आये। तुम्हारे सबब से हम लोगों पर भी खफगी हुई।' जैरामसिंह (तेजसिंह) ने कहा, 'मेरी तबीयत खराब हो गई थी, हाजत मालूम हुई इस सबब से मैदान चला गया, कई दस्त आये जिससे देर हो गई और फिर भी कुछ पेट में गड़बड़ मालूम पड़ता है। भाई, जान है तो जहान है, चाहे कोई रंज हो या खुश हो यह जरूरत तो रोकी नहीं जाती, मैं फिर जाता हूँ और अभी आता हूँ !' यह कह नकली जैरामसिंह तुरन्त वहाँ से चलता बना।

पहरे वालों से बातचीत करके तेजसिंह ने सुन लिया कि बद्रीनाथ आये थे और उनकी खोज में गये हैं, इससे वे होशियार हो गए। सोचा कि अगर हमारे यहाँ होते बद्रीनाथ लौट आवेंगे तो जरूर पहिचान जाएँगे, इससे यहाँ ठहरना मुनासिब नहीं। आखिर थोड़ी दूर जा एक भिखमंगे की सूरत बन सड़क के किनारे बैठ गये और बद्रीनाथ के लौट आने की राह देखने लगे। थोड़ी देर गुजरी थी कि दूर से बद्रीनाथ आते दिखाई पड़े, पीछे-पीछे पीठ पर गट्ठर लादे नाजिम था जिसके पीछे वह सिपाही भी था जिसकी सूरत बन तेजसिंह आये थे।

तेजसिंह इस ठाठ से बद्रीनाथ को आते देख चकरा गये। जब ये लोग गट्ठर लिए हुए किले के अन्दर चले गये तब उठकर उस तरफ का रास्ता लिया जहाँ कुमार और देवीसिंह को छोड़ आए थे। देवीसिंह उसी जगह पत्थर पर उदास बैठे कुछ सोच रहे थे कि तेजसिंह आ पहुँचे। देखते ही देवीसिंह दौड़कर पैरों पर गिर पड़े और गुस्से भरी आवाज में बोले, 'गुरुजी, कुमार तो दुश्मनों के हाथ पड़ गए।'

तेजसिंह पत्थर पर बैठ गये और बोले, 'खैर खुलासा हाल कहो क्या हुआ ?' देवीसिंह ने जो कुछ बीता था सब हाल कह सुनाया। तेजसिंह ने कहा, 'देखा आजकल हम लोगों का नसीब कैसा उल्टा हो रहा है, फिक्र चारों तरफ की ठहरी मगर करें तो क्या करें ? बेचारी चन्द्रकान्ता और चपला न मालूम किस आफत में फँस गईं और उनकी क्या दशा होगी। उसकी फिक्र तो थी ही मगर कुमार का फँसना तो गजब हो गया।' थोड़ी देर तक देवीसिंह और तेजसिंह बातचीत करते रहे, इसके बाद उठ कर दोनों ने एक तरफ का रास्ता लिया।

□ चुनार के किले के अन्दर महाराज शिवदत्त के खास महल में एक कोठरी के अन्दर जिसमें लोहे के छड़दार किवाड़ लगे हुए थे हाथों में हथकड़ी, पैरों में बेड़ी पड़ी हुई, दरवाजे के सहारे उदास मुख बीरेन्द्रसिंह बैठे हैं। पहरे पर कई औरतें कमर से छुरा बाँधे टहल रही हैं। कुमार धीरे-धीरे भुनभुना रहे हैं, 'हाय चन्द्रकान्ता का पता लगा भी तो किसी काम का नहीं। भला पहिले तो यह मालूम हो गया था कि शिवदत्त चुरा ले गया, मगर अब क्या कहा जाये ! हाँ चन्द्रकान्ता, तू कहाँ है ? मुझको बेड़ी और यह कैद कुछ तकलीफ नहीं देती जैसा तेरा लापता हो जाना खटक रहा है।'

थोड़ी देर बाद महाराज शिवदत्त अजब ठाठ से आते दिखाई पड़े जिसको देखते ही बीरेन्द्रसिंह चौंक पड़े। अजब हालत हो गई, एकटक देखने लगे। देखा कि महाराज शिवदत्त के दाहिनी तरफ चन्द्रकान्ता और बायीं तरफ चपला है, दोनों के हाथों में हाथ दिये धीरे-धीरे आकर गद्दी पर बैठ गए जो बीच में बिछी हुई थी। चन्द्रकान्ता और चपला भी दोनों तरफ साथ सटकर महाराज के पास बैठ गईं।

चन्द्रकान्ता और कुमार का साथ तो लड़कपन ही से था मगर आज चन्द्रकान्ता की खूबसूरती और नजाकत जितनी चढ़ी-बढ़ी थी इसके पहिले कुमार ने कभी नहीं देखी थी। सामने पानदान, इत्रदान वगैरह सब सामान ऐश का रक्खा हुआ था।

यह देख कुमार की आँखों में खून उतर आया, जी में सोचने लगे, 'यह क्या हो गया ! चन्द्रकान्ता इस तरह खुशी-खुशी शिवदत्त के बगल में बैठी हुई हाव-भाव कर रही है, यह क्या मामला है ? क्या मेरी मुहब्बत एकदम उसके दिल से जाती रही, साथ ही माँ-बाप की मुहब्बत भी बिलकुल

उड़ गई ? तिसमें मेरे सामने उसकी यह कैफियत है ! क्या वह यह नहीं जानती कि उसके सामने ही मैं इस कोठरी में कैदियों की तरह पड़ा हुआ हूँ ? जरूर जानती है, वह देखो मेरी तरफ तिरछी आँखों से देख मुँह बिचका रही है। साथ ही इसके चपला को क्या हो गया जो तेजसिंह पर जी दिये बैठी थी और हथेली पर जान रख इसी महाराज शिवदत्त को छका कर तेजसिंह को छुड़ा ले गई थी। उस वक्त महाराज शिवदत्त की मुहब्बत इसको न हुई और आज इस तरह अपनी मालकिन चन्द्रकान्ता के साथ बराबरी के दर्जे पर शिवदत्त के बगल में बैठी है।

इतने में इठला कर चन्द्रकान्ता ने महाराज शिवदत्त के गले में हाथ डाल दिया, अब तो बीरेन्द्रसिंह सह न सके। जोर से झटका दे हथकड़ी तोड़ डाली, उसी जोश में एक लात सींखचे वाले किवाड़ में भी मारी और पल्ला गिरा शिवदत्त के पास पहुँचे। उसके सामने जो तलवार रक्खी थी उसे उठा लिया और खींच के एक हाथ चन्द्रकान्ता पर ऐसा चलाया कि खट से सर अलग जा गिरा और धड़ तड़पने लगा, जब तक महाराज शिवदत्त संभलें तब तक चपला के भी दो टुकड़े कर दिये, मगर महाराज शिवदत्त पर वार न किया।

महाराज शिवदत्त संभल कर खड़े हुए, यकायकी इस तरह की ताकत और तेजी कुमार की देख सकते में हो गए, मुँह से आवाज तक न निकली, जवाँमर्दी हवा खाने चली गई, सामने खड़े होकर कुमार का मुँह देखने लगे।

कुँवर बीरेन्द्रसिंह खून भरी नंगी तलवार लिए खड़े ही थे कि तेजसिंह और देवीसिंह धम्म से सामने आ मौजूद हुए। तेजसिंह ने आवाज दी, 'वाह शाबाश, खूब दिल को संभाला।' यह कह झट से महाराज शिवदत्त के गले में कमन्द डाल झटका दिया। शिवदत्त की हालत पहिले ही से खराब हो रही थी, कमन्द से गला घुटते ही जमीन पर गिर पड़े। देवीसिंह ने झट गट्ठर बाँध पीठ पर लाद लिया। तेजसिंह ने कुमार की तरफ देखकर कहा, 'मेरे साथ चले आइये, अभी कोई दूसरी बात मत कीजिये, इस वक्त जो हालत आपकी है मैं खूब जानता हूँ !'

☐ कुमार का मिजाज बदल गया। वे बातें जो उनमें पहिले थीं, अब बिल्कुल न रहीं। माँ-बाप की फिक्र, विजयगढ़ का खयाल, लड़ाई की धुन, तेजसिंह की दोस्ती, चन्द्रकान्ता और चपला के मरते ही सब जाती रहीं।

किले से ये तीनों बाहर आए, आगे शिवदत्त की गठरी लिए देवीसिंह और उनके पीछे कुमार को बीच में लिए तेजसिंह चले जाते थे। कुँवर बीरेन्द्रसिंह को इसका कुछ भी खयाल न था कि वे कहाँ जा रहे हैं। दिन चढ़ते-चढ़ते ये लोग बहुत दूर एक घने जंगल में जा पहुँचे जहाँ तेजसिंह के कहने से देवीसिंह ने महाराज शिवदत्त की गठरी जमीन में रख दी और अपनी चादर से एक पत्थर खूब झाड़ कर कुमार को बैठने के लिए कहा, मगर वे खड़े ही रहे, सिवाय जमीन देखने के कुछ भी न बोले।

कुमार की ऐसी दशा देख कर तेजसिंह बहुत घबड़ाये। जी में सोचने लगे कि अब इनकी जिन्दगी कैसे रहेगी? अजब हालत हो रही है, चेहरे पर मुर्दनी छा रही है, तनोबदन की सुध नहीं, बल्कि पलकें नीचे को बिल्कुल नहीं गिरतीं, आँखों की पुतलियाँ जमीन देख रही हैं, जरा भी इधर-उधर नहीं हटतीं। यह क्या हो गया! क्या चन्द्रकान्ता के साथ ही इनका भी दम निकल गया! यह खड़े क्यों हैं! तेजसिंह ने कुमार का हाथ पकड़ बैठाने के लिए जोर किया, मगर घुटना बिल्कुल न मुड़ा, धम्म से जमीन पर गिर पड़े, सिर फूट गया खून निकलने लगा मगर पलकें उसी तरह खुली की खुली, पुतलियाँ ठहरी हुई, साँस रुक-रुक कर निकलने लगी।

अब तेजसिंह कुमार की जिन्दगी से बिल्कुल ही नाउम्मीद हो गये, रोकने से तबीयत न रुकी, जोर से पुकार-पुकार कर रोने लगे। तेजसिंह पुकार-पुकार कर कहने लगे कि—'हाय कुमार, क्या सचमुच अब तुमने दुनिया ही छोड़ दी! हाय, न मालूम वह कौन-सी बुरी सायत थी कि कुमारी चन्द्रकान्ता की मुहब्बत तुम्हारे दिल में पैदा हुई जिसका नतीजा ऐसा बुरा हुआ, अब मालूम हुआ कि तुम्हारी जिन्दगी इतनी ही थी!' तेजसिंह इस तरह की बातें कह कर रो रहे थे कि इतने में एक तरफ से आवाज आई—

'नहीं, कुमार की उम्र कम नहीं है, बहुत बड़ी है, इनको मारने वाला कोई पैदा नहीं हुआ। कुमारी चन्द्रकान्ता की मुहब्बत बुरी सायत में नहीं हुई बल्कि बहुत अच्छी सायत में हुई, इसका नतीजा बहुत अच्छा होगा। कुमारी से शादी तो होगी ही, साथ ही इसके चुनार की गद्दी भी कुँवर बीरेन्द्रसिंह को मिलेगी, बल्कि और भी कई राज्य इनके हाथ से फतह होंगे। बड़े तेजस्वी और इनसे भी ज्यादा नाम पैदा करने वाले दो वीर पुत्र चन्द्रकान्ता के गर्भ से पैदा होंगे। हुआ क्या है जो रो रहे हो!'

तेजसिंह और देवीसिंह का रोना एकदम बन्द हो गया, इधर-उधर देखने लगे। तेजसिंह सोचने लगे कि 'हैं, यह कौन है, ऐसी मुर्दे को जिलाने वाली आवाज किसके मुँह से निकली! 'क्या कहा! कुमार को मारने वाला कौन है! कुमार के दो वीर पुत्र होंगे! यह कैसी बात है! कुमार का तो यहाँ दम निकला जाता है। ढूंढ़ना चाहिये यह कौन है?' तेजसिंह और देवीसिंह इधर-उधर देखने लगे पर कहीं कुछ पता न चला। फिर आवाज आई, 'इधर देखो।' आवाज की सीध पर एक तरफ सिर उठा कर तेजसिंह ने देखा कि पेड़ से जगन्नाथ ज्योतिषी नीचे उतर रहे हैं।

जगन्नाथ ज्योतिषी उतर कर तेजसिंह के सामने आये और बोले, 'आप हैरान मत होइये, ये सब बातें जो ठीक होने वाली हैं मैंने ही कही हैं! इसके सोचने की भी जरूरत नहीं कि मैं महाराज शिवदत्त का तरफदार होकर आपके हित की बातें क्यों कहने लगा! इसका सबब भी थोड़ी देर में मालूम हो जाएगा और आप मुझको अपना सच्चा दोस्त समझने लगेंगे, पहिले कुमार की फिक्र कर लें तब आपसे बातचीत हो।'

इसके बाद जगन्नाथ ज्योतिषी ने तेजसिंह और देवीसिंह के देखते-देखते एक बूटी जिसकी तिकोनी पत्तियाँ और आसमानी रंग का फूल लगा हुआ था, डण्ठल का रंग बिल्कुल सफ़ेद और खुरदरा था, उसी जगह पास ही से ढूंढ़ कर तोड़ी और हाथ में खूब मल के दो-दो बूंदें उसके रस की कुमार की दोनों आँखों और कानों में टपका दीं, बाकी जो सीठी बची उसकी तालू पर रख अपनी चादर से एक टुकड़ा फाड़कर बाँध दिया और बैठ कर कुमार के आराम होने की राह देखने लगे।

आधी घड़ी भी नहीं बीतने पाई थी कि कुमार की आँखों का रंग बदल गया, पलकों ने गिर कर कौड़ियों को ढाँक लिया, धीरे-धीरे हाथ-पैर भी हिलने लगे, दो-तीन छींकें भी आईं जिसके साथ ही कुमार होश में आकर उठ बैठे। सामने ज्योतिषी के साथ तेजसिंह और देवीसिंह को बैठे देख कर पूछा, 'क्यों मुझको क्या हो गया था!' तेजसिंह ने सब हाल कहा। कुमार ने जगन्नाथ ज्योतिषी को दण्डवत किया और कहा, 'महाराज आपने मेरे ऊपर क्यों कृपा की, इसका हाल जल्द कहिये, मुझको कई तरह के शक हो रहे हैं।'

ज्योतिषी ने कहा, 'कुमार, यह ईश्वर की माया है कि आपके साथ रहने को मेरा जी चाहता है। महाराज शिवदत्त इस लायक नहीं हैं कि मैं उसके साथ रहकर अपनी जान दूँ। उसको आदमी की पहिचान नहीं है, वह गुणियों का आदर नहीं करता। आज मुझको ऐसा मौका मिला, क्योंकि

आज का दिन आप पर बड़े संकट का था, जो कि महाराज शिवदत्त के धोखे और चालाकी ने आपको दिखाया।'

महाराज शिवदत्त का यह कायदा है कि जब कोई भारी काम किया चाहता है तो पहिले मुझसे जरूर पूछता है लेकिन मैं चाहे राय दूँ या मना करूँ मगर करता है अपने ही मन की और धोखा भी खाता है। आज रात को जो चालाकी उसने आपसे की उसके लिए भी मैंने मना किया था मगर कुछ न माना, आखिर नतीजा यह निकला कि घसीटासिंह और भगवानदत्त ऐयार की जान गई, इसका खुलासा हाल मैं तब कहूँगा जब आप इस बात का वादा कर लें कि मुझको अपना साथी बनावेंगे।'

ज्योतिषीजी ने तेजसिंह के मन से शक मिटाने के लिए जनेऊ हाथ में लेकर कसम खाई, तेजसिंह ने उठ के उन्हें गले लगा लिया और बड़ी खुशी से अपने ऐयारों की पंगत में मिला लिया। कुमार ने अपने गले से कीमती माला निकाल ज्योतिषीजी को पहना दी। ज्योतिषीजी ने कहा, 'अब मुझसे सुनिए कि कुमार महल में क्यों कैद किए गए थे और जो रात को खून-खराबा हुआ उसका असल भेद क्या है?'

'जब आप लोग लश्कर से कुमारी की खोज में निकले थे तो रास्ते में बद्रीनाथ ऐयार ने आपको देख लिया था। आप लोगों के पहिले वे वहाँ पहुँचे और चन्द्रकान्ता को दूसरी जगह छिपाने की नीयत से उस खोह में उसको लेने गए मगर उनके पहुँचने के पहिले ही कुमारी वहाँ से गायब हो गई थी और वे खाली हाथ वापस आये, तब नाजिम को साथ ले आप लोगों की खोज में निकले और आपको इस जंगल में पाकर ऐयारी की। नाजिम ने ढेला फेंका था, देवीसिंह उसको पकड़ने गए, तब तक बद्रीनाथ जो पहिले ही से तेजसिंह बन कर आये थे न मालूम किस चालाकी से आपको बेहोश कर किले में ले गये और जिसमें आपकी तबीयत से चन्द्रकान्ता की मुहब्बत जाती रहे और आप उसकी खोज न करें तथा उसके लिए महाराज शिवदत्त से लड़ाई न ठानें। इसलिए भगवानदत्त और घसीटासिंह जो हम सभी में कम उम्र थे चन्द्रकान्ता और चपला बनाए गए जिनको आपने खतम किया, बाकी हाल तो आप जानते ही हैं।'

अब क्या करना चाहिए इस बात को सभी ने मिलकर सोचा और यह पक्का किया कि 1—महाराज शिवदत्त को तो उसी खोह में जिसमें ऐयार लोग पहिले कैद किए गये थे डाल देना चाहिए और दोहरा ताला लगा देना चाहिए क्योंकि पहले ताले का हाल बद्रीनाथ को मालूम हो गया है मगर

दूसरे ताले का हाल सिवाय तेजसिंह के अभी कोई नहीं जानता। 2—कुमार को विजयगढ़ चले जाना चाहिए क्योंकि जब तक महाराज शिवदत्त कैद हैं लड़ाई न होगी, मगर हिफाजत के लिए कुछ फौज सरहद पर जरूर रहनी चाहिए। 3—देवीसिंह कुमार के साथ रहें। 4—तेजसिंह और ज्योतिषीजी कुमारी की खोज में जायें।

कुछ और बातचीत करने के बाद सब कोई उठ खड़े हुए और वहाँ से चल पड़े।

☐ दोपहर के वक्त नाले के किनारे सुन्दर साफ चट्टान पर दो कमसिन औरतें बैठी हैं। दोनों की मैली-फटी साड़ी, दोनों के मुँह पर मिट्टी, खुले बाल, पैरों पर खूब धूल पड़ी हुई और चेहरे पर बदहवासी और परेशानी छाई हुई है। चारों तरफ भयानक जंगल, खूनी जानवरों की भयानक आवाजें आ रही हैं। जब कभी जोर से हवा चलती है तो पेड़ों की घन-घनाहट से जंगल और भी डरावना मालूम पड़ता है।

इन दोनों औरतों के सामने नाले के उस पार एक तेंदुआ पानी पीने के लिए उतरा, इन्होंने इस तेंदुए को देखा मगर वह खूनी जानवर इन दोनों को न देख सका, क्योंकि जहाँ वे दोनों बैठी थीं सामने ही एक मोटा जामुन का पेड़ था, वह तेंदुआ पानी पीकर तुरन्त ऊपर चढ़ गया और देखते-देखते गायब हो गया, तब इन दोनों में यों बातें होने लगीं—

एक, 'क्यों चपला, कुछ मालूम पड़ता है हम लोग किस जगह आ पहुँचे और यह कौन-सा जंगल है तथा विजयगढ़ की राह किधर है?'

चपला, 'कुमारी, कुछ समझ में नहीं आता, बल्कि अभी तक मुझको भागने की धुन में यह भी नहीं मालूम कि किस तरह चली आई, विजयगढ़ किधर है, चुनार कहाँ छोड़ा, और नौगढ़ का रास्ता कहाँ है! मेरे बटुए में मेवा है, लो इसको खा लो और पानी पी लो देखा जाएगा।'

कुमारी, 'इसको किसी और वक्त के वास्ते रहने दो?'

चपला और चन्द्रकान्ता दोनों वहाँ से उठीं। नाले के ऊपर चढ़ इधर-उधर घूमने लगीं। वे दोनों एक टूटे-फूटे उजाड़ मकान के पास पहुँचीं जिसके देखने से मालूम होता था कि यह मकान जरूर किसी बड़े राजा का बनाया हुआ होगा मगर अब टूट-फूट गया है। चपला ने कुमारी चन्द्रकान्ता से कहा, 'बहिन, तुम मकान के टूटे दरवाजे पर बैठो, मैं फल तोड़ लाऊँ तो इसी जगह बैठकर दोनों खायें।' कुमारी ने कहा, 'अच्छी बात है, मैं इसी

जगह बैठती हूँ, तुम कुछ फल तोड़ो लेकिन दूर मत जाना ! चपला ने कहा, 'नहीं मैं दूर न जाऊँगी इसी जगह तुम्हारी आँखों के सामने रहूँगी।' यह कह चपला फल तोड़ने चली गई।

☐ चपला खाने के लिये कुछ फल तोड़ने चली गई, उधर चन्द्रकान्ता अकेली बैठी-बैठी घबड़ा उठी। जी में सोचने लगी कि जब तक चपला फल तोड़ती है तब तक इस टूटे-फूटे मकान की सैर करे, क्योंकि यह मकान चाहे टूट कर खण्डहर हो रहा है मगर मालूम होता है किसी समय में अपनी सानी न रखता होगा।

चन्द्रकान्ता वहाँ से खण्डहर के अन्दर गई। फाटक इस टूटे-फूटे मकान का दुरुस्त और मजबूत था। यद्यपि उसमें किवाड़ न लगे थे मगर देखने वाला यही कहेगा कि पहिले इसमें फाटक जरूर लगा रहा होगा।

कुमारी ने अन्दर जाकर देखा कि बड़ा भारी चौखटा मकान है। बीच की इमारत तो टूटी-फूटी है मगर हाता चारों तरफ का दुरुस्त मालूम पड़ता है। और आगे बढ़ी, एक दालान में पहुँची जिसकी छत गिरी हुई थी मगर खम्भे खड़े थे। इधर-उधर पत्थर के ढेर थे जिन पर धीरे-धीरे पैर रखती और आगे बढ़ी। बीच में एक मैदान दीख पड़ा जिसको बड़े गौर से कुमारी देखने लगी। साफ मालूम होता था कि पहले यह बाग था क्योंकि अभी तक संगमरमर की क्यारियाँ बनी हुई थीं। छोटी नहरें जिनसे छिड़काव का काम निकलता होगा अभी तैयार थीं। बहुत-से फौवारे बेमरम्मत दिखाई पड़ते थे, मगर उन सभी पर मिट्टी की चादर पड़ी हुई थी। बीचों-बीच उस खंडहर के एक बड़ा भारी पत्थर का बगुला बना हुआ दिखाई दिया जिसको अच्छी तरह से देखने के लिए कुमारी उसके पास गई और उसकी सफाई और कारीगरी को देख उसके बनाने वाले की तारीफ करने लगी। वह बगुला सफेद संगमरमर का बना हुआ था और काले पत्थर के कमर बराबर ऊँचे तथा मोटे खम्भे पर बैठाया हुआ था। टाँगें उसकी दिखाई नहीं देती थीं, यही मालूम होता था कि पेट सटा कर इस पत्थर पर बैठा है। कम-से-कम पन्द्रह हाथ के घेरे में उसका पेट होगा। लम्बी चोंच, बाल और पर उसके ऐसी कारीगरी के साथ बनाये हुए थे कि बार-बार उसके बनाने वाले कारीगर की तारीफ मुँह से निकलती थी। जी में आया कि और पास जाकर बगुले को देखें। पास गई, मगर वहाँ पहुँचते ही उसने मुँह खोल दिया। चन्द्रकान्ता यह देख घबड़ा गई

कि यह क्या मामला है, कुछ डर भी मालूम हुआ, सामना छोड़ बगल में हो गई। अब उस बगुले ने पर भी फैला दिये।

कुमारी को चपला ने बहुत ढीठ कर दिया था। कभी-कभी जब जिक्र आ जाता तो चपला यही कहती थी कि दुनिया में भूत-प्रेत कोई चीज नहीं, जादू-मंत्र सब खेल कहानी हैं, जो कुछ है ऐयारी है। इस बात का कुमारी को भी पूरा यकीन हो चुका था। यही सबब था कि चन्द्रकान्ता इस बगुले के मुंह खोलने और पर फैलाने से नहीं डरी। जब बगुले को पैर फैलाते देखा तो कुमारी उसके पीछे हो गई, बगुले के पीछे की तरफ एक पत्थर जमीन में लगा था जिस पर कुमारी ने पैर रक्खा ही था कि बगुला एक दफे हिला और जल्दी से घूम अपनी चोंच से कुमारी को उठा कर निगल गया, तब घूम कर अपने ठिकाने हो गया। पर समेट लिए और मुँह बन्द कर लिया।

☐ थोड़ी देर में चपला फलों से झोली भरे हुए पहुँची, देखा तो चन्द्रकान्ता वहाँ नहीं है, इधर-उधर निगाह दौड़ाई, कहीं नहीं। इस टूटे मकान (खण्डहर) में तो नहीं गई है? यह सोच कर मकान के अन्दर चली। कुमारी तो बेधड़क उस खण्डहर में चली गई थी मगर चपला रुकती हुई चारों तरफ निगाह दौड़ती और एक-एक चीज तजवीज करती हुई चली।

सब जगहों को देखना छोड़ चपला उस बगुले के पास घबड़ाती हुई पहुँची। उसने मुँह खोल दिया। चपला को बड़ा ताज्जुब हुआ, पीछे हटी। बगुले ने मुँह बन्द कर लिया। सोचने लगी कि अब क्या करना चाहिये? यह तो कोई बड़ी भारी मालूम होती है। एक तरफ छोटी-सी कोठरी नजर आई जिसके अन्दर पहुँचने पर देखा एक कुआँ है। झाँकने से अंधेरा मालूम पड़ा।

इस कुएँ के अन्दर क्या है? यह कोठरी बनिस्बत और जगहों के साफ क्यों मालूम पड़ती है! कुआँ भी साफ दीख पड़ता है, क्योंकि जैसे अक्सर पुराने कुओं में पेड़ वगैरह उग जाते हैं इसमें नहीं हैं। कुछ-कुछ आवाज भी इसमें से आती है जो बिल्कुल समझ नहीं पड़ती।

इसका पता लगाने के लिये चपला ने अपने ऐयारी के बटुए में से काफूर निकाला और उसके टुकड़े जलाकर कुएँ में डाले। अन्दर तक पहुँच कर उन जलते हुए काफूर के टुकड़ों ने खूब रोशनी की। अब

साफ मालूम पड़ने लगा कि नीचे से कुआँ बहुत चौड़ा और साफ है, मगर पानी नहीं है बल्कि पानी की जगह एक साफ सुफेद विछावन मालूम पड़ता है जिसके ऊपर एक बूढ़ा आदमी बैठा है। उसकी लम्बी दाढ़ी लटकती हुई दिखाई पड़ती है, मगर गर्दन नीची होने के सबब चेहरा मालूम नहीं पड़ता। सामने एक चौकी रक्खी हुई है जिस पर रंग-बिरंग के फूल पड़े हैं। चपला यह तमाशा देखकर डर गई। फिर जी को सम्हाला और कुएँ पर बैठ गौर करने लगी मगर कुछ अक्ल ने गवाही न दी। वह काफूर के टुकड़े भी बुझ गये जो कुएँ के अन्दर जल रहे थे और फिर अँधेरा हो गया।

उस कोठरी में से एक दूसरे दालान में जाने का रास्ता था। इस राह से चपला दूसरे दालान में पहुँची।

एक चबूतरा संगमरमर का पुरसा भर ऊँचा देखा जिस पर चढ़ने के लिये खूबसूरत नौ सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। ऊपर एक आदमी चौकी पर लेटा हुआ हाथ में किताब लिये कुछ पढ़ता मालूम पड़ा, मगर ऊँचा होने से साफ दिखाई न दिया। 'इस चबूतरे पर चढ़ें या न चढ़ें ? चढ़ने से कोई आफत तो न आवेगी। भला सीढ़ी पर एक पैर रख कर देखूँ तो सही ? यह सोच कर चपला ने सीढ़ी पर एक पैर रक्खा। पैर रखते ही बड़े जोर से आवाज हुई और सन्दूक के पल्ले की तरह खुल कर सीढ़ी के ऊपर वाले पत्थर ने चपला के पैर को जोर से फेंक दिया जिसकी धमक और झटके से वह जमीन पर गिर पड़ी। सम्हल कर उठ खड़ी हुई, देखा तो वह सीढ़ी का पत्थर जो सन्दूक के पल्ले की तरह खुल गया था ज्यों का त्यों बन्द हो गया है। चपला ने दस सेर का पत्थर सीढ़ी पर रक्खा। जिस तरह पैर को उस सीढ़ी ने फेंका था उसी तरह इस पत्थर को भी भारी आवाज के साथ फेंक दिया।

चपला ने हर एक सीढ़ी पर पत्थर रखकर देखा, सभी में यही करामात पाई। इस चबूतरे के ऊपर क्या है इसको जरूर देखना चाहिए, यह सोच अब वह दूसरी तरकीब करने लगी। बहुत से ईंट पत्थर उस चबूतरे के पास जमा किया और उसके ऊपर चढ़कर देखा कि संगमरमर की एक चौकी पर एक आदमी दोनों हाथ में किताब लिये हुए पड़ा है, उम्र लगभग तीस वर्ष की होगी। खूब गौर करने से मालूम हुआ कि यह भी पत्थर का है। चपला ने एक छोटी-सी कंकड़ी उसके मुँह पर डाली, तो पत्थर का पुतला मगर काम आदमी का किया। चपला ने जो कंकड़ी उसके मुँह पर डाली थी उसको एक हाथ से हटा दिया और फिर उसी तरह वह हाथ

अपने ठिकाने ले गया। चपला ने तब एक कंकड़ उसके पैर पर रक्खा, उसने पैर हिला कर कंकड़ गिरा दिया। चपला थी तो बड़ी चालाक और निडर, मगर इस पत्थर के आदमी का तमाशा देख बहुत डरी और जल्द वहाँ से हट गई। अब दूसरी तरफ देखने लगी। बगल के एक और दालान में पहुँची, देखा कि बीचोंबीच दालान के एक तहखाना मालूम पड़ता है, नीचे उतरने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई हैं और ऊपर की तरफ दो पल्ले किवाड़ के हैं जो इस समय खुले हैं।

चपला खड़ी होकर सोचने लगी कि इसके अन्दर जाना चाहिए या नहीं! कहीं ऐसा न हो कि इसमें उतरने के बाद यह दरवाजा बन्द हो जाय तो इसी में रह जाऊँ, इससे मुनासिब है कि इसको भी आजमा लूँ। पहिले एक ढोंका इसके अन्दर डालूँ। लेकिन अगर आदमी के जाने से यह दरवाजा बन्द हो सकता है तो जरूर ढोंके के गिरते ही बन्द हो जायगा तब इसके अन्दर जाकर देखना मुश्किल होगा, अस्तु ऐसी कोई तरकीब की जाय जिसमें उसके जाने से किवाड़ बन्द न होने पावे, बल्कि हो सके तो पल्लों को तोड़ ही देना चाहिए।

चपला ने अपने कमर से कमन्द खोली और चौहरा करके एक सिरा उसका उस किवाड़ के पल्ले में खूब मजबूती के साथ बाँधा, दूसरा सिरा उस कमन्द का उसी दालान के एक खम्भे में जो किवाड़ के पास ही था बाँधा, इसके बाद एक ढोंका पत्थर का दूर से उस तहखाने में डाला। पत्थर पड़ते ही इस तरह की आवाज आने लगी जैसे किसी भाथी में से जोर से हवा निकलने से आवाज आती है, साथ ही इसके जल्दी से एक पल्ला बन्द हो गया, दूसरा पल्ला भी बन्द होने के लिए खिंचा मगर वह कमन्द से कसा हुआ था, उसको तोड़ न सका, खिंचा ही रह गया। चपला ने सोचा—'कोई हर्ज नहीं, मालूम हो गया कि यह कमन्द इस पल्ले को बन्द न होने देगी। अब बेखटके इसके अन्दर उतरो, देखो तो क्या होता है!' यह सोच उस तहखाने में उतरी।

☐ जब राजकुमारी चन्द्रकान्ता की कुछ खबर न मिली तो महारानी से हुक्म लेकर चम्पा घर से निकली। जंगल-जंगल, पहाड़-पहाड़ मारी-मारी फिरी।

जंगल में एक पेड़ के नीचे बैठी हुई चम्पा अनेक बातों को सोच रही थी कि सामने से चार आदमी सिपाहियाना पोशाक पहिने, ढाल तलवार

लगाये, एक-एक तेगा हाथ में लिये आते दिखाई दिये।

चम्पा को देखकर उन लोगों ने आपुस में कुछ बातें कीं जिसे दूर होने के सबब चम्पा बिल्कुल सुन न सकी मगर उन लोगों के चेहरे की तरफ गौर से देखने लगी। वे लोग कभी चम्पा की तरफ देखते, कभी आपस में बातें करके हँसते, कभी ऊँचे हो-होकर अपने पीछे की तरफ देखते, जिससे यह मालूम होता था कि ये लोग किसी की राह देख रहे हैं। थोड़ी देर बाद वे चारों चम्पा के चार तरफ हो गये और पेड़ों के नीचे छाया देखकर बैठ गये।

चम्पा का जी खटका और सोचने लगी कि ये लोग कौन हैं, चारों तरफ से मुझको घेर कर क्यों बैठ गये और इनका क्या इरादा है? अब यहाँ बैठना न चाहिये। यह सोच उठ खड़ी हुई और एक तरफ का रास्ता लिया, मगर उन चारों ने न जाने दिया। दौड़कर फिर घेर लिया और कहा, 'तुम जाती कहाँ हो? ठहरो हमारे मालिक दम-भर में आया ही चाहते हैं, उनके आने तक बैठो, वे आ जाएँ तब हम लोग उनके सामने ले चल के सिफारिश करेंगे और नौकर रखा देंगे, खुशी से तुम रहा करोगी। इस तरह से कहाँ तक जंगल-जंगल मारी फिरोगी!'

चम्पा, 'मुझे नौकरी की जरूरत नहीं जो मैं तुम्हारे मालिक के आने की राह देखूं, मैं नहीं ठहर सकती।'

एक, 'नहीं-नहीं तुम जल्दी न कहो, ठहरो, हमारे मालिक को देखोगी तो खुश हो जाओगी, ऐसा खूबसूरत जवान तुमने कभी न देखा होगा, बल्कि हम कोशिश करके तुम्हारी शादी उनसे करा देंगे।'

चम्पा, 'होश में आकर बातें करो नहीं तो दुरुस्त कर दूंगी। खाली औरत न समझना, तुम्हारे ऐसे दस को मैं कुछ नहीं समझती।'

चम्पा की ऐसी बातें सुनकर उन लोगों को बड़ा अचम्भा हुआ, एक का मुँह दूसरा देखने लगा। चम्पा फिर आगे बढ़ी। एक ने हाथ पकड़ लिया। बस फिर क्या था, चम्पा ने झट कमर से खंजर निकाल लिया और बड़ी फुर्ती के साथ दो को जख्मी करके भागी।

चम्पा भागी तो मगर उसकी किस्मत ने भागने न दिया। एक पत्थर से ठोकर खा बड़े जोर से गिरी, चोट भी ऐसी लगी कि उठ न सकी, तब तक ये दोनों भी वहाँ पहुँच गये। अभी इन लोगों ने कुछ कहा भी नहीं था कि सामने से एक काफिला सौदागरों का आ पहुँचा जिसमें लगभग दो सौ आदमियों के होंगे। उनके आगे-आगे एक बूढ़ा आदमी था जिसकी लम्बी सुफेद दाढ़ी, काला रंग, भूरी आँखें, उम्र लगभग अस्सी

वर्ष के होगी। उम्दे कपड़े पहिने, ढाल तलवार लगाये, बर्छी हाथ में लिये एक बेशकीमती मुश्की घोड़े पर सवार था। साथ में उसके एक लड़का जिसकी उम्र बीस वर्ष से ज्यादा न होगी, रेख तक न निकली थी, बड़े ठाठ के साथ एक नैपाली टाँगन पर सवार था, जिसकी खूबसूरती और पोशाक देखने से मालूम होता था कि कोई राजकुमार है। पीछे-पीछे उनके बहुत से आदमी घोड़ों पर सवार और कुछ पैदल भी थे, सबसे पीछे कई ऊँटों पर असबाब और उनका डेरा लदा हुआ तथा साथ में कई डोलियाँ थीं जिनके चारों तरफ बहुत से प्यादे तोड़ेदार बन्दूकें लिये चले आते थे। दोनों आदमियों ने जिन्होंने चम्पा का पीछा किया था, पुकार कर कहा, 'इस औरत ने हमारे दो सिपाहियों को जख्मी किया है···!' जब तक और कुछ कहें तब तक कई आदमियों ने चम्पा को घेर लिया खंजर छीन हथकड़ी बेड़ी डाल दी।

उस बूढ़े सवार ने जिसके बारे में हम कह सकते हैं कि शायद सभी का सरदार होगा, दो एक आदमियों की तरफ देखकर कहा, 'हम लोगों का डेरा इसी जंगल में पड़े। यहां आदमियों की आमदरफ्त कम मालूम होती है, क्योंकि कोई निशान पगडण्डी का जमीन पर दिखाई नहीं देता।'

पहर रात चली गई, सभी के वास्ते खाने को आया मगर उन दोनों के वास्ते नहीं जिन्होंने पहिले इन्कार किया था। आधी रात बीतने पर सन्नाटा हुआ, पैरों की आवाज डेरे के चारों तरफ मालूम होने लगी जिससे चम्पा ने समझा कि इस डेरे के चारों तरफ पहरा घूम रहा है। धीरे-धीरे चम्पा ने अपने बगल वाली खूबसूरत नाजुक औरत से बातें करना शुरू किया—

चम्पा, 'आप कौन हैं और इन लोगों के हाथ क्योंकर फँस गईं?'

औरत, 'मेरा नाम कलावती है, मैं महाराज शिवदत्त की रानी हूँ।'

चम्पा, 'हैं, आप चुनार की महारानी हैं! कुमारी चन्द्रकान्ता को भी जरूर जानती होंगी, मैं उन्हीं की सखी हूँ।' बात ही बात में रात बीत गई, दोनों में से किसी को नींद न आई। कुछ-कुछ दिन भी निकल आया।

कुछ औरतें मैदान गईं, मगर ये दोनों अर्थात् महारानी और चम्पा उसी तरह बैठी रहीं, किसी ने जिद्द न की। पहर दिन चढ़ आया था कि इस काफिले का बूढ़ा सरदार एक बूढ़ी औरत को लिए इस डेरे में आया जिसमें सब औरतें कैद थी।

बुड्ढी, 'इतनी हीं हैं या और भी?'

सरदार, 'बस इस वक्त तो इतनी ही हैं।'

बुड्ढी, 'देखिये तो सही मैं कितनी औरतें फँसा लाती हूँ। हाँ अब बताइए किस मेल की औरत लाने पर कितना मिलेगा?'

सरदार, 'देखो ये सब एक मेल में हैं, इस किस्म की अगर लाओगी तो दस रुपये मिलेंगे। (चम्पा की तरफ इशारा करके) अगर इस मेल की लाओगी तो पूरे पचास रुपये। (महारानी की तरफ बताकर) अगर ऐसी खूबसूरत होगी तो पूरे सौ रुपये मिलेंगे।'

दोनों उस डेरे से रवाना हुए। इन दोनों के जाने के बाद औरतों ने खूब गालियाँ दीं—'मुए को देखो, अभी और औरतों को फँसाने की फिक्र में लगा है! न मालूम यह बुड्ढी इसको कहाँ से मिल गई, बड़ी शैतान मालूम पड़ती है।' कहती है 'देखो मैं कितनी औरतें फँसा लाती हूँ।' हे परमेश्वर, इन लोगों पर भी तेरी कृपा बनी रहती है? न मालूम यह डाइन कितने घर चौपट करेगी!'

चम्पा ने उस बुढ़िया को खूब गौर करके देखा और आधे घण्टे तक कुछ सोचती रही, मगर महारानी को सिवाय रोने के और कोई धुन न थी। 'हाय, महाराज की लड़ाई में क्या दशा होगी, वे कैसे होंगे? मेरी याद करके कितने दुःखी हो रहे होंगे!' धीरे-धीरे यही कह के रो रही थीं। चम्पा उनको समझाने लगी।

'महारानी, सब्र करो, घबड़ाओ मत, मुझे पूरी उम्मीद हो गई, ईश्वर चाहेगा तो हम लोग बहुत जल्द छूट जाएँगे! क्या करूँ मैं हथकड़ी में पड़ी हूँ, किसी तरह यह खुल जाती तो इन लोगों को मजा चखाती, लाचार हूँ कि यह मजबूत बेड़ी सिवाय कटने के दूसरी तरह खुल नहीं सकती और इसका काटना यहाँ मुश्किल है।'

इस तरह रोते-कलपते आज का दिन भी बीता। शाम हो गई। बुड्ढा सरदार फिर उस डेरे में आ पहुँचा जिसमें औरतें कैद थीं, साथ में वही सवेरे वाली बुढ़िया आफत की पुड़िया एक जवान खूबसूरत औरत को लिए हुए थी।

यह नई औरत जो आज आई बड़ी खुश दिखाई देती थी। हाथ-पैर खुले थे। तुरन्त ही इसके वास्ते खाने को आया। इसने भी खूब लम्बे-चौड़े हाथ लगाये, बेखटके उड़ा गई। दूसरी औरतों को सुस्त और रोते देख हँसती और चुटकियाँ लेती थी। चम्पा ने जी में सोचा, 'यह तो बड़ी भारी बला है, इसको अपने कैद होने और फँसने की कोई फिक्र ही नहीं! मुझे तो कुछ खुटका मालूम होता है!'

कल की तरह आज की भी रात बीत गई। लौंडियों के साथ सुबह को सब औरतें पारी-पारी मैदान भेजी गईं। महारानी और चम्पा आज भी नहीं गईं। चम्पा ने महारानी से पूछा, 'आप जब से इन लोगों के हाथ फँसी हैं कुछ भोजन किया या नहीं!' उन्होंने जवाब दिया, 'महाराज के मिलने की उम्मीद में जान बचाने के लिए दूसरे-तीसरे कुछ खा लेती हूँ, क्या करूँ कुछ बस नहीं चलता।'

थोड़ी देर बाद दो आदमी इस डेरे में आये। महारानी और चम्पा से बोले, 'तुम दोनों बाहर चलो, आज हमारे सरदार का हुक्म है कि सब औरतें मैदान में पेड़ों के नीचे बैठाई जायें जिसमें मैदान की हवा लगे और तन्दुरुस्ती में फर्क न पड़ने पाए।' यह कह दोनों को बाहर ले गए। वे औरतें जो मैदान में गई थीं बाहर ही एक बहुत घने महुए के तले बैठी हुई थीं। ये दोनों भी उसी तरह जाकर बैठ गईं। चम्पा चारों तरफ निगाह दौड़ाकर देखने लगी।

दो पहर दिन चढ़ आया होगा। वही बुढ़िया जो कल एक औरत ले आई थी आज फिर एक जवान औरत कल से ज्यादे खूबसूरत लिए हुए पहुँची। उसे देखते ही बुड्ढे मियाँ ने बड़ी खातिर से अपने पास बैठाया और उस औरत को भी उसी जगह भेज दिया जहाँ सब औरतें बैठी हुई थीं। चम्पा ने आज इस औरत को भी बारीक निगाह से देखा। आखिर उससे न रहा गया, ऊपर की तरफ मुँह करके बोली, 'मी समगता।[1] वह औरत जो आज आई थी, चम्पा का मुँह देखने लगी। थोड़ी देर के बाद वह भी अपने पैर के अँगूठे की तरफ देखकर और हाथों से उसे मलती हुई बोली, 'चपकला छट में बापरोफस ?'[2] फिर दोनों में से कोई न बोली।

शाम हो गई। सब औरतें उस रावटी में पहुँच गईं।

रात बहुत चली गई, सन्नाटा हो गया रावटी के चारों तरफ पहरा फिरने लगा। रावटी में एक चिराग जल रहा है। सब औरतें सो गईं, सिर्फ चार जाग रही हैं, महारानी, चम्पा और वे दोनों जो नयी आई हैं। चम्पा ने उन दोनों की तरफ देखकर कहा, 'कड़ाक भी टेटी, नोसे पारो फेसती !'[3] एक ने जवाब दिया, 'तीमसे को ?'[4] फिर चम्पा ने कहा, 'रानी

1. हम पहिचान गए।
2. चुप रहोगी तो तुम्हारी भी जान बच जायेगी।
3. मेरी बेड़ी तोड़ दो नहीं तो गुल मचाकर गिरफ्तार करा दूँगी।
4. तुम्हारी क्या दशा होगी ?

में सेंगी।[1]

उन दोनों औरतों ने अपनी कमर से कोई तेज औजार निकाला और धीरे से चम्पा की हथकड़ी और बेड़ी काट दी। अब चम्पा लापरवाह हो गई, उसके होंठों पर मुस्कराहट मालूम होने लगी।

दो पहर रात बीत गई। एकाएक उस रावटी को चारों तरफ बहुत से आदमियों ने घेर लिया। शोरगुल की आवाज आने लगी, 'मारो, पकड़ो' की आवाज सुनाई देने लगी। बन्दूक की भी आवाज़ कान में पड़ी। अब सब औरतों को यकीन हो गया कि डाका पड़ा और लड़ाई हो रही है। खलबली पड़ गई। रावटी में जितनी औरतें थीं इधर-उधर दौड़ने लगीं। महारानी घबड़ा कर 'चम्पा-चम्पा' पुकारने लगीं, मगर पता नहीं, चम्पा दिखाई न पड़ी। वे दोनों औरतें जो नई आई थीं आकर कहने लगी, 'मालूम होता है चम्पा निकल गई, मगर आप मत घबड़ाइये, यह सब आप ही के नौकर हैं जिन्होंने डाका मारा है। मैं भी आप ही का ताबेदार हूँ, और न समझिये। मैं जाता हूँ, आपके वास्ते कहीं डोली तैयार होगी, लेकर आता हूँ।' यह कह दोनों ने रास्ता लिया।

जिस रावटी में औरतें थीं उसके तीन तरफ आदमियों की आवाज कम हो गई। सिर्फ चौथी तरफ जिधर और बहुत से डेरे थे। लड़ाई की आहट मालूम हो रही थी। दो आदमी जिनका मुंह कपड़े या नकाब से ढंका हुआ था डोली लिए हुए पहुँचे और महारानी को उस पर बैठा कर बाहर निकल गये। रात बीत गई, आसमान पर सफेदी दिखाई देने लगी। चम्पा और महारानी तो चली गई थीं मगर और सब औरतें उसी रावटी में बैठी हुई थीं। डर के मारे चेहरा जर्द हो रहा था, एक का मुँह एक देख रही थीं। इतने में पन्नालाल रामनारायण और चुन्नीलाल एक डोली लिए हुए उस रावटी के दरवाजे पर पहुँचे, फिर पूछा—'तुम लोगों में से दो औरतें दिखाई नहीं देतीं, वे कहाँ गईं?'

सब औरतें डरी हुई थीं, किसी के मुँह से आवाज न निकली। पन्नालाल ने फिर कहा, 'तुम लोग डरो मत, हम लोग डाकू नहीं हैं। बताओ वे दोनों औरतें कहाँ हैं!' अब उन औरतों का जी कुछ ठिकाने हुआ। एक ने कहा, 'दो नहीं बल्कि चार औरतें गायब हैं जिनमें दो औरतें तो वे हैं जो कल और परसों फँसकर आई थीं, वे दोनों तो एक औरत को यह कह कर चली गई कि आप डरिए मत, हम लोग आपके

1. रानी का साथ दूँगी!

तावेदार हैं, डोली लेकर आते हैं तो आपको ले चलते हैं। इसके बाद डोली आई जिस पर चढ़ के वह चली गई और चौथी तो सबसे पहिले ही निकल गई थी।'

पन्नालाल के तो होश उड़ गये, रामनारायण और चुन्नीलाल के मुँह की तरफ देखने लगे। रामनारायण ने कहा, 'ठीक है, हम दोनों महारानी को ढाढ़स देकर तुम्हारी खोज में डोली लेने चले गये, जफील बजा कर तुमसे मुलाकात की और डोली लेकर चले आ रहे हैं, मगर दूसरा कौन डोली लेकर आया जो महारानी को लेकर चला गया। इन लोगों का यह कहना भी ठीक है कि चम्पा पहिले ही से गायब है। जब हम लोग औरत बने हुए उस रावटी में थे और लड़ाई हो रही थी, महारानी ने डर के 'चम्पा-चम्पा' पुकारा, तभी उसका पता न था। मगर यह मामला क्या है कुछ समझ में नहीं आता! चलो बाहर चल कर इन बर्देफरोशों[1] की डोलियों को गिनें उतनी ही हैं या कम? इन औरतों को भी बाहर निकालो।'

सब औरतें उस डेरे के बाहर की गईं। उन्होंने देखा कि चारों तरफ खून-ही-खून दिखाई देता है, कहीं-कहीं लाश भी नजर आती है। काफिले का बुड्ढा सरदार और उसका खूबसूरत लड़का जंजीरों से जकड़े एक पेड़ के नीचे बैठे हुए हैं। दस आदमी नंगी तलवारें लिये उनकी निगाहबानी कर रहे हैं और सैकड़ों आदमी हाथ-पैर बँधे दूसरे पेड़ों के नीचे बैठाये हुए हैं। रावटियाँ और डेरे सब उजड़े पड़े हैं।

पन्नालाल, रामनारायण और चुन्नीलाल उस जगह गये जहाँ बहुत सी डोलियाँ रखी थीं। रामनारायण ने पन्नालाल से कहा, 'देखो यह सोलह डोलियाँ हैं, पहले हमने सत्रह गिनी थीं, इससे मालूम होता है कि इनमें की वह डोली थी जिसमें महारानी गई हैं। मगर उनको ले कौन गया! चुन्नीलाल जाओ तुम दीवान साहब को यहाँ बुला लाओ, उस तरफ बैठे हैं जहाँ फौज खड़ी है।'

दीवान साहब को लिए हुए चुन्नीलाल आये। पन्नालाल ने उनसे कहा, 'देखिये हम लोगों की चार दिन की मेहनत बिल्कुल खराब गई! विजयगढ़ से तीन मंजिल पर इन लोगों का डेरा था। इस बुड्ढे सरदार को हम लोगों ने औरतों की लालच देकर रोका कि कहीं आगे न चला

1. 'बर्देफरोश' आदमियों की सौदागिरी करते हैं, अर्थात् लौंडी गुलाम बेचते हैं।

जाये और आपको खबर दी। आप भी पूरे सामान से आये, इतना खून-खराबा हुआ, मगर महारानी और चम्पा हाथ न आईं। भला चम्पा तो बदमाशी करके निकल गई, उसने कहा कि हमारी बेड़ी काट दो नहीं तो हम सब भेद खोल देंगे कि मर्द हो, धोखा देने आये हो, पकड़े जाओगे, लाचार होकर उसकी बेड़ी काट दी और वह मौका पाकर निकल गई, मगर महारानी को कौन ले गया !'

दीवान साहब की अकल हैरान थी कि यह क्या हो गया। बोले, 'इन बदमाशों को बल्कि इनके बुड्ढे मियाँ सरदार को मार-पीट के पूछो, कहीं इन्हीं लोगों की बदमाशी तो नहीं है !'

पन्नालाल ने कहा, 'जब सरदार ही आपकी कैद में है तो मुझे यकीन नहीं आता कि उसके सबब से महारानी गायब हो गई हैं। आप इन बर्दे-फरोशों और फौज को लेकर जाइये और राज्य का काम देखिये, हम लोग फिर महारानी की टोह लेने जाते हैं, इसका तो बीड़ा ही उठाया है।'

दीवान साहब बर्देफरोश कैदियों को मय उनके माल असबाब के साथ ले चुनार की तरफ रवाना हुए। पन्नालाल, रामनारायण और चुन्नीलाल महारानी की खोज में चले, रास्ते में आपस में यों बातें करने लगे—

राम०, 'हम तीनों को महारानी की खोज में भेजने के बाद अहमद और नाजिम को साथ लेकर पण्डित बद्रीनाथ भी महाराज को कैद से छुड़ाने गए हैं, देखें वह क्या जस लगाकर आते हैं।'

पन्ना०, 'भला हम लोगों का मुँह भी तो हो कि चुनार जाकर उनका हाल सुनें और क्या जस लगा कर आते हैं इसको देखें। अगर महारानी न मिलीं तो कौन मुँह लेकर जाएँगे ?'

राम०, 'बस मालूम हो गया कि आज जो शख्स महारानी को इस फुर्ती से चुरा ले गया वह हम लोगों का ठीक उस्ताद है। अब तो इसी जंगल में खेती करो, लड़के वाले लेकर आ बसो, महारानी का मिलना मुश्किल है।'

थोड़ी दूर जाकर ये लोग आपस में मिलने का ठिकाना ठहरा कर अलग हो गये।

☐ एक बहुत बड़े नाले में जिसके चारों तरफ बहुत ही घना जंगल था पण्डित जगन्नाथ ज्योतिषी के साथ तेजसिंह बैठे हैं। बगल में एक साधारण-सी डोली रखी हुई है, पर्दा उठा हुआ है, एक औरत उसमें बैठी

तेजसिंह से बातें कर रही है। यह औरत चुनार के महाराज शिवदत्त की रानी कलावती कुंवर हैं। पीछे की तरफ एक हाथ डोली पर रखे चम्पा भी खड़ी है।

महारानी, 'मैं चुनार जाने में राजी नहीं हूँ, मुझको राज्य नहीं चाहिए, महाराज के पास रहना मेरे लिए स्वर्ग है। अगर वे कैद में हैं तो मेरे पैर में भी बेड़ी डाल दो मगर उन्हीं के चरणों में रखो।'

तेज०, 'नहीं मैं यह नहीं कहता कि जरूर आप भी उसी कैदखाने में जाइये जिसमें महाराज हैं। आपकी खुशी हो तो चुनार जाइये। नहीं तो महाराज के पास ले जायें क्योंकि सिवाय मेरे और किसी के जरिये आप महाराज के पास नहीं पहुँच सकतीं। और फिर महाराज क्या जाने कब तक कैद रहें।'

महारानी, 'तुम लोगों ने मेरे ऊपर बड़ी कृपा की, सचमुच मुझे महाराज से इतनी जल्दी मिलाने वाला और कोई नहीं जितनी जल्दी तुम मिला सकते हो। अभी मुझको उनके पास पहुँचाओ, देर मत करो, मैं तुम लोगों का बड़ा जस मानूँगी ?'

तेज०, 'तो इस तरह डोली में आप नहीं जा सकतीं, मैं बेहोश करके आपको ले जा सकता हूँ।'

महारानी, 'मुझको यह भी मंजूर है, किसी तरह वहाँ पहुँचाओ।'

तेज०, 'अच्छा तब लीजिये इस शीशी को सूँघिये।'

महारानी बेखटके शीशी सूँघ कर बेहोश हो गई। ज्योतिषीजी ने कहा, 'अब इनको ले जाइये उसी तहखाने में छोड़ आइए। जब तक आप न आवेंगे मैं इसी जंगल में रहूँगा। चम्पा को भी चाहिए कि विजयगढ़ जायें, हम लोग तो कुमारी चन्द्रकान्ता की खोज में घूम ही रहे हैं, ये क्यों दुःख उठाती हैं!'

तेजसिंह ने कहा, 'चम्पा, ज्योतिषीजी ठीक कहते हैं, तुम घर जाओ, कहीं ऐसा न हो कि फिर किसी आफत में फँस जाओ।'

चम्पा ने कहा, 'जब तक कुमारी का पता न लगेगा मैं विजयगढ़ कभी न जाऊँगी। अगर मैं इन बर्दफरोशों के हाथ फँसी तो अपनी ही चालाकी से छूट भी गई, आप लोगों को मेरे लिए कोई तकलीफ न करनी पड़ी।'

तेजसिंह ने कहा, 'तुम्हारा कहना ठीक है, हम यह नहीं कहते कि हम लोगों ने तुमको छुड़ाया। इन सब बातों को जाने दो, तुम यह बताओ कि घर न जाओगी तो क्या करोगी! कहाँ ढूंढ़ोगी! कहीं ऐसा न हो कि

हम लोग तो कुमारी को खोज कर विजयगढ़ ले जायें और तुम महीनों तक मारी-मारी फिरो।'

चम्पा ने कहा, 'मैं एकदम से ऐसी बेवकूफ नहीं, आप बेफिक्र रहें।'

तेजसिंह को लाचार होकर चम्पा को उसकी मर्जी पर छोड़ना पड़ा और ज्योतिषीजी को भी उसी जंगल में छोड़ महारानी की गठरी बाँध कैदखाने वाले खोह की तरफ रवाना हुए जिसमें महाराज शिवदत्त बन्द थे। चम्पा भी एक तरफ को रवाना हो गई।

□ तेजसिंह के जाने के बाद ज्योतिषीजी अकेले पड़ गए, सोचने लगे कि रमल के जरिए पता लगाना चाहिए कि चन्द्रकान्ता और चपला कहाँ हैं! बस्ता खोल पटिया निकाल रमल फेंक गिनने लगे। घड़ी भर तक खूब गौर किया। एकाएक ज्योतिषीजी के चेहरे पर खुशी झलकने लगी और होठों पर हँसी आई, झटपट रमल और पटिया बाँध उसी तहखाने की तरफ दौड़े जहाँ तेजसिंह महारानी को लिए जा रहे थे। ऐयार तो थे ही, दौड़ने में कसर न की, जहाँ तक बन पड़ा खूब तेजी से दौड़े।

तेजसिंह कदम-कदम झपटे हुए चले जा रहे थे। लगभग पाँच कोस के गए होंगे कि पीछे से आवाज आई, 'ठहरो-ठहरो।' फिर के देखा तो ज्योतिषी जगन्नाथजी बड़ी तेजी से चले आ रहे हैं, ठहर गये, जी में खुटका हुआ कि यह क्यों दौड़े आ रहे हैं!

जब पास पहुँचे तो इनके चेहरे पर कुछ हँसी देख तेजसिंह का जी ठिकाने हुआ। पूछा, 'क्यों क्या है जो आप दौड़े आये हैं?'

ज्योतिषी, 'हैं क्या, बस हम भी आपके साथ उसी तहखाने में चलेंगे।'

तेज, 'सो क्यों?'

ज्योतिषी, 'इसका हाल भी वहीं मालूम होगा यहाँ न कहेंगे।'

तेज, 'तो वहाँ दरवाजे पर पट्टी बाँधनी पड़ेगी क्योंकि पहिले वाले ताले का हाल जब से कुमार को धोखा देकर बद्रीनाथ ने मालूम कर लिया तब से एक और ताला हमने उसमें लगाया है जो पहिले ही से बना हुआ था मगर आसक्त से उसको काम में नहीं लाते थे क्योंकि खोलने और बन्द करने में जरा देर लगती है। हम यह निश्चय कर चुके हैं कि इस ताले का भेद किसी को न बतावेंगे।'

ज्योतिषी, 'मैं तो अपनी आँखों पर पट्टी न बँधाऊँगा और उस तहखाने में भी जरूर जाऊँगा। तुम झख मारोगे और ले चलोगे।'

तेज०, 'वाह क्या खूब ! भला कुछ हाल तो मालूम हो !'

ज्योतिषी, 'हाल क्या, कुमारी चन्द्रकान्ता को वहीं दिखा दूंगा !'

ज्योतिषीजी की बात पर तेजसिंह हँस पड़े और बोले, 'अच्छा भाई चलो क्या करें, आपका हुक्म मानना भी जरूरी है।'

दूसरे दिन शाम को ये लोग उस तहखाने के पास पहुँचे। ज्योतिषीजी के सामने ही तेजसिंह ताला खोलने लगे। पहिले उस शेर के मुँह में हाथ डाल के उसकी जुबान बाहर निकाली, इसके बाद दूसरा ताला खोलने लगे।

दरवाजे के दोनों तरफ दो पत्थर संगमरमर के दीवार के साथ जड़े हुए थे। दाहिनी तरफ के संगमरमर वाले पत्थर पर तेजसिंह ने जोर से लात मारी, साथ ही एक आवाज हुई और वह पत्थर दीवार के अन्दर घुस कर जमीन के साथ सट गया। छोटे से हाथ भर के चबूतरे पर एक साँप चक्कर मारे बैठा देखा जिसकी गर्दन पकड़ कर दो दफे पेंच की तरह घुमाया, दरवाजा खुल गया। महारानी की गठरी लिये हुए तेजसिंह और ज्योतिषीजी अन्दर गये, भीतर से दरवाजा बन्द कर लिया। भीतर दरवाजे के बाएँ तरफ दीवार में एक सूराख हाथ जाने लायक था, उसमें हाथ डाल के तेजसिंह ने कुछ किया जिसका हाल ज्योतिषीजी को मालूम न हो सका।

दरवाजा बन्द कर ये लोग आगे बढ़े। मैदान में जाकर महारानी की गठरी खोल उन्हें होश में लाये और कहा, 'हमारे साथ-साथ चली आइये आपको महाराज के पास पहुँचा दें।' महारानी इन लोगों के साथ-साथ आगे बढ़ी, तेजसिंह ने ज्योतिषीजी से पूछा, 'बताइये चन्द्रकान्ता कहाँ हैं ?' ज्योतिषीजी ने कहा, 'मैं पहिले कभी इसके अन्दर आया नहीं जो सब जगहें मेरी देखी हों, आप आगे चलिये महाराज शिवदत्त को ढूँढ़िये, चन्द्रकान्ता भी दिखाई दे जायेंगी।'

घूमते-फिरते महाराज शिवदत्त को ढूँढ़ते ये लोग उसी नाले के पास पहुँचे जिसका हाल पहिले भाग में लिख चुके हैं। एकाएक सभी की निगाह महाराज शिवदत्त पर पड़ी जो नाले के उस पार एक पत्थर के ढोंके पर खड़े ऊपर की तरफ मुँह किये कुछ देख रहे थे।

महारानी तो महाराज को देख दीवानी सी हो गईं, किसी से कुछ न पूछा कि इस नाले में कितना पानी है या उस पार कैसे जाना होगा, झट कूद पड़ीं। पानी थोड़ा ही था, पार हो गईं और दौड़ कर रोती हुई महाराज शिवदत्त के पैरों पर गिर पड़ीं। महाराज ने उठा कर गले से

लगा लिया, तब तक तेजसिंह और ज्योतिषीजी भी नाले के पार हो महाराज शिवदत्त के पास पहुँचे।

ज्योतिषीजी को देखते ही महाराज ने पूछा, 'क्यों जी, तुम यहाँ कैसे आये? क्या तुम भी तेजसिंह के हाथ फँस गये?' ज्योतिषीजी ने कहा, 'नहीं तेजसिंह के हाथ क्यों फँसेंगे, हाँ इन्होंने कृपा करके मुझे अपनी मण्डली में मिला लिया है, अब हम वीरेन्द्रसिंह की तरफ हैं आपसे कुछ वास्ता नहीं।'

ज्योतिषीजी की बात सुन कर महाराज को बड़ा गुस्सा आया, लाल-लाल आँखें कर उनकी तरफ देखने लगे। ज्योतिषीजी ने कहा, 'आप बेफ़ायदा गुस्सा करते हैं, इससे क्या होगा? जहाँ जी में आया तहाँ रहे। जो अपनी इज्जत करे उसी के साथ रहना ठीक है। आप खुद सोच लीजिये और याद कीजिये कि मुझको आपने कैसी-कैसी कड़ी बातें कही थीं। उस वक्त यह भी न सोचा कि ब्राह्मण है। अब क्यों मेरी तरफ लाल-लाल आँखें करके देखते हैं!'

ज्योतिषीजी की बातें सुन महाराज शिवदत्त ने सिर नीचा कर लिया और कुछ जवाब न दिया। इतने में एक बारीक आवाज आई—'तेजसिंह!'

तेजसिंह ने सिर उठा कर उधर देखा जिधर से आवाज आई थी, चन्द्रकान्ता नजर पड़ी जिसे देखते ही इनकी आँखों से आँसू निकल पड़े। हाय, क्या सूरत हो रही है, सिर के बाल खुले हैं, गुलाब सा मुँह कुम्हला गया है, बदन पर मैल चढ़ी हुई, कपड़े फटे हुए हैं, पहाड़ के ऊपर एक छोटी सी गुफा के बाहर खड़ी 'तेजसिंह' 'तेजसिंह' पुकार रही है।

तेजसिंह की आवाज कुमारी के कान तक बखूबी पहुँची मगर कुमारी की आवाज जो बहुत ही बारीक थी तेजसिंह के कानों तक पूरी-पूरी न आई। कुमारी ने कुछ जवाब दिया, साफ-साफ तो समझ में न आया, हां इतना समझ पड़ा—'किस्मत··· आई·· तरह··· निकालो!'

हाय-हाय, कुमारी से अच्छी तरह बात भी नहीं कर सकते! यह सोच तेजसिंह बहुत घबराए मगर इससे क्या हो सकता था। कुमारी ने कुछ और कहा जो बिल्कुल समझ में न आया, हाँ यह मालूम होता था कि कोई बोल रहा है। तेजसिंह ने फिर आवाज दी और कहा, 'आप घबराइये नहीं, कोई तरकीब निकालता हूँ जिससे आप नीचे उतर आवें। इसके जवाब में कुमारी मुँह से कुछ न बोली, उसी जगह एक जंगली पेड़ था जिसके पत्ते जरा बड़े और मोटे थे, एक पत्ता तोड़ लिया और एक छोटे

नोकीले पत्थर की नोक से उस पत्ते पर कुछ लिखा, अपनी धोती में से थोड़ा कपड़ा फाड़ उसमें वह पत्ता और एक छोटा-सा पत्थर बाँध इस अंदाज से फेंका कि नाले के किनारे कुछ जल में गिरा। तेजसिंह ने उसे ढूंढ़ कर निकाला और गिरह खोली, पत्ते पर गौर से निगाह डाली, लिखा था, 'तुम जाकर पहिले कुमार को यहाँ ले आओ।'

तेजसिंह ने ज्योतिषीजी को वह पत्ता दिखलाया और कहा, 'आप यहाँ ठहरिये मैं जाकर कुमार को बुला लाता हूँ, तब तक आप भी कोई तरकीब सोचिये जिसमें कुमारी नीचे उतर सकें।' ज्योतिषीजी ने कहा, 'अच्छी बात है तुम जाओ, मैं कोई तरकीब सोचता हूँ।'

इस कैफियत को महारानी ने भी बखूबी देखा मगर यह न जान सकीं कि कुमारी ने पत्ते पर क्या लिख कर फेंका और तेजसिंह कहाँ चले गये, तो भी महारानी को चन्द्रकान्ता की बेबसी पर रुलाई आ गई और उसी तरफ टकटकी लगा कर देखती रहीं। तेजसिंह वहाँ से चलकर फाटक खोल खोह के बाहर हुए और फिर दोहरा ताला लगा विजयगढ़ की तरफ रवाना हुए।

[ ] जब से कुमारी चन्द्रकान्ता विजयगढ़ से गायब हुई और महाराज शिवदत्त से लड़ाई लगी तब से महाराज जयसिंह और महल की औरतें तो उदास थीं ही, उनके सिवाय कुल विजयगढ़ की रिआया भी उदास थी, शहर में गम छाया हुआ था।

एक दिन रात को कुमार अपने कमरे में सोए थे, दरवाजा बन्द था, रात आधी से ज्यादा जा चुकी थी, चन्द्रकान्ता की जुदाई में पड़े-पड़े कुछ सोच रहे थे, नींद बिल्कुल नहीं आ रही थी, दरवाजे के बाहर किसी के बोलने की आहट मालूम पड़ी बल्कि किसी के मुँह से 'कुमारी' ऐसा सुनने में आया। झट पलंग पर से उठ दरवाजे के पास आये और किवाड़ के साथ कान लगा सुनने लगे, इतनी बातें सुनने में आईं—

'मैं सच कहता हूँ, तुम मानो चाहे न मानो। पहिले मुझे जरूर यकीन था कि कुमारी पर कुँवर वीरेन्द्रसिंह का प्रेम सच्चा है, मगर अब मालूम हो गया कि यह सिवाय विजयगढ़ का राज्य चाहने के कुमारी की मुहब्बत नहीं रखते, अगर सच्ची मुहब्बत होती तो जरूर खोज ।'

कुमार और भी घबड़ा उठे, सोचने लगे कि जब दरबानों और सिपाहियों को यह विश्वास है कि कुमार चन्द्रकान्ता के प्रेमी नहीं हैं तो जरूर

महाराज का भी यही ख्याल होगा, बल्कि महल में महारानी भी यही सोचती होंगी। अब विजयगढ़ में मेरा रहना ठीक नहीं है। इन्हीं सब बातों को सोचते सवेरा हो गया।

आज कुमार ने स्नान पूजा और भोजन से जल्दी छुट्टी कर ली। पहर दिन चढ़ा होगा, अपनी सवारी का घोड़ा मँगवाया और सवार हो किले के बाहर निकले। कई आदमी साथ हुए मगर कुमार के मना करने से रुक गये, लेकिन देवीसिंह ने साथ न छोड़ा, इन्होंने हजार मना किया पर एक न माना, साथ चले ही गये। कुमार ने इस नीयत से घोड़ा तेज किया जिससे देवीसिंह पीछे छूट जाये और इनका भी साथ न रहे, मगर देवीसिंह ऐयारी में कुछ कम न थे, दौड़ने की आदत भी ज्यादा थी, अस्तु घोड़े का संग न छोड़ा, इसके सिवाय पहाड़ी जंगल की ऊबड़-खाबड़ जमीन होने के सबब कुमार का घोड़ा भी उतना तेज नहीं जा सकता था जितना कि वे चाहते थे।

हाँफते-हाँफते देवीसिंह ने कहा, 'भला कुछ यह भी तो मालूम हो कि आपका इरादा क्या है, कहीं सनक तो नहीं गये?' कुमार घोड़े से उतर पड़े और बोले, 'अच्छा इस घोड़े को चरने के लिए छोड़ो फिर हमसे सुनो कि हमारा क्या इरादा है।' देवीसिंह ने जीनपोश कुमार के लिए बिछाकर घोड़े को खोल चरने के वास्ते छोड़ दिया और उनके पास बैठ कर पूछा, 'अब बताइये आप क्या सोचकर विजयगढ़ से बाहर निकले?' इसके जवाब में कुमार ने रात का बिल्कुल किस्सा कह सुनाया और कहा कि 'कुमारी का पता न लगेगा तो मैं विजयगढ़ या नौगढ़ न जाऊँगा।'

देवीसिंह ने कहा, 'यह सोचना बिल्कुल भूल है। हम लोगों से ज्यादा आप क्या पता लगायेंगे? तेजसिंह और ज्योतिषी खोजने गये ही हैं, मुझे भी हुक्म हो तो जाऊँ! आपके किये कुछ न होगा। अगर आपको बिना कुमारी का पता लगाये विजयगढ़ जाना पसन्द नहीं तो नौगढ़ चलिये वहाँ रहिये, जब पता लग जायेगा विजयगढ़ चले जाइयेगा। अब आप अपने घर के पास भी आ पहुँचे हैं।' कुमार ने कुछ सोच के कहा, 'यहां से मेरा घर बनिस्बत विजयगढ़ के दूर होगा कि नजदीक? मैं तो बहुत आगे बढ़ आया हूँ।'

देवीसिंह ने कहा, 'नहीं आप भूलते हैं, न मालूम किस धुन में आप घोड़ा फेंके चले आये, पूरब-पश्चिम का ध्यान तो रहा ही नहीं, मगर मैं खूब जानता हूँ कि यहाँ से नौगढ़ केवल दो कोस है और वह देखिये वह बड़ा-सा पीपल का पेड़ जो दिखाई देता है वह उस खोह के पास ही है

जहाँ महाराज शिवदत्त कैद हैं। (तेजसिंह को आते देख कर) हैं यह तेजसिंह कहाँ से चले आ रहे हैं? देखिये कुछ-न-कुछ पता जरूर लगा होगा!'

तेजसिंह दूर से आते दिखाई पड़े मगर कुमार से रहा न गया, खुद उनकी तरफ चले। तेजसिंह ने भी इन दोनों को देखा और कुमार को अपनी तरफ आते देख दौड़ कर उनके पास पहुँचे।

फिर आगे-आगे तेजसिंह और देवीसिंह, पीछे-पीछे कुमार रवाना हुए और थोड़ी ही देर में खोह के पास जा पहुँचे। तेजसिंह ने कहा, 'लीजिये अब आपके सामने ही ताला खोलता हूं क्या करूँ, मगर होशियार रहिएगा, कहीं ऐय्यार लोग आपको धोखा देकर इसका भी पता न लगा लें।' ताला खोला गया और तीनों आदमी अन्दर गए। जल्दी-जल्दी चल कर उस चश्मे के पास पहुँचे जहाँ ज्योतिषीजी बैठे हुए थे, उँगली के इशारे से बताकर तेजसिंह ने कहा, 'देखिये वह ऊपर चन्द्रकान्ता खड़ी हैं।'

कुमारी चन्द्रकान्ता ऊँची पहाड़ी पर थी, दूर से कुमार को आते देख मिलने के लिए बहुत घबराई। यह कैफियत कुमार की भी थी, रास्ते का ख्याल तो किया नहीं, ऊपर चढ़ने को तैयार हो गये, मगर क्या हो सकता था। तेजसिंह ने कहा, 'आप घबड़ाते क्यों हैं, ऊपर जाने के लिए रास्ता होता तो आपको यहाँ लाने की जरूरत ही क्या थी, कुमारी ही को न ले जाते?'

तेजसिंह ने ज्योतिषीजी की तरफ देख कर पूछा, 'क्यों आपने कोई तरकीब सोची?' ज्योतिषीजी ने जवाब दिया, 'अभी तक कोई तरकीब नहीं सूझी मगर मैं इतना जरूर कहूँगा कि बिना कोई भारी कार्रवाई किये कुमारी का ऊपर से उतरना मुश्किल है। जिस तरह से वे आई हैं उसी तरह बाहर होंगी, दूसरी तरकीब कभी पूरी नहीं हो सकती।'

तेजसिंह ने इस बात को पसन्द किया, कुमारी से पुकार कर कहा, 'आप घबराएँ नहीं। जिस तरह से पहिले आपने पत्ते पर लिख कर फेंका था उसी तरह अब फिर मुख्तसर में यह लिख कर फेंकिए कि आप किस राह से वहाँ पहुँची हैं।'

☐ चपला तहखाने में उतरी। नीचे एक लम्बी-चौड़ी कोठरी नजर आई जिसमें चौखट के सिवाय किवाड़ के पल्ले नहीं थे। पहिले चपला ने उसे खूब गौर करके देखा फिर अन्दर गई। दरवाजे के भीतर पैर रखते ही ऊपर वाले चौखटे के बीचोंबीच से लोहे का तख्ता बड़े जोर के साथ गिर

पड़ा। चपला ने चौंककर पीछे देखा तो दरवाजा बन्द पाया। सोचने लगी—'यह कोठरी है कि चूहेदानी?'

घूमते-घूमते चपला का पैर गड्ढे में जा पड़ा, साथ ही इसके कुछ आवाज हुई और दरवाजा खुल गया। कोठरी में चांदना भी पहुँच गया। यह वह दरवाजा नहीं था जो पहिले बन्द हुआ था बल्कि एक दूसरा ही दरवाजा था। चपला ने पास जाकर देखा, इसमें भी कहीं किवाड़ के पल्ले नहीं दिखाई पड़े। आखिर उस दरवाजे की राह से कोठरी के बाहर हो एक बाग में पहुँची। देखा कि छोटे-छोटे फूलों के पेड़ों में रंग-बिरंग के फूल खिले हुए हैं, एक तरफ से छोटी नहर के जरिये से पानी अन्दर पहुँचकर बाग में छिड़काव का काम कर रहा है मगर क्यारियाँ इसमें की कोई भी दुरुस्त नहीं हैं। सामने एक बारहदरी नजर आई। धीरे-धीरे घूमती वहाँ पहुँची।

सवेरा हुआ, चपला फिर बाग में घूमने लगी। उस दीवार के पास पहुँची जिसके नीचे से बाग में नहर आई थी। सोचने लगी, 'दीवार बहुत चौड़ी नहीं है, नहर का मुँह भी खुला है, इस राह से बाहर हो सकती हूँ, आदमी के जाने लायक रास्ता बखूबी है।' बहुत सोचने और विचारने के बाद चपला ने यही किया, कपड़े सहित नहर में उतर गई, दीवार से उस तरफ हो जाने के लिए गोता मारा। काम पूरा हो गया अर्थात् उस दीवार के बाहर हो गई। पानी से सिर निकालकर देखा तो नहर को बाग के भीतर की बनिस्बत चौड़ा पाया। पानी के बाहर निकली और देखा कि दूर सब तरफ ऊँचे-ऊँचे पहाड़ दिखाई देते हैं। जिनके बीचों-बीच से यह नहर आई है और दीवार के नीचे से होकर बाग के अन्दर गई है।

पहाड़ी के नीचे एक दालान था जो अन्दाज में दस गज लम्बा और गज भर चौड़ा होगा। गौर के साथ देखने से मालूम होता था कि पहाड़ काट के बनाया गया है। इसके बीचोंबीच में पत्थर का एक अजदहा था जिसका मुँह खुला हुआ था और आदमी उसके पेट में बखूबी जा सकता था। सामने एक लम्बा-चौड़ा संगमरमर का साफ चिकना पत्थर भी जमीन पर जमाया हुआ था।

अजदहे को देखने के लिए चपला उसके पास गई। संगमरमर के पत्थर पर पैर रक्खा ही था कि धीरे-धीरे अजदहे ने दम खींचना शुरू किया, और कुछ ही देर बाद यहाँ तक तेजी से दम खींचा कि चपला का पैर न जम सका, वह खिंचकर उसके पेट में चली गई, साथ ही बेहोश भी हो गई।

जब चपला होश में आई उसने अपने को एक कोठरी में पाया जो बहुत तंग सिर्फ दस-बारह आदमियों के बैठने लायक होगी। आखिर चपला ने अपने को सम्हाला और सीढ़ी के रास्ते छत पर चढ़ गई, जाते ही सीढ़ी का दरवाजा बन्द हो गया, नीचे उतरने की जगह न रही। इधर-उधर देखने लगी। चारों तरफ ऊँचे-ऊँचे पहाड़, सामने एक छोटी सी खोह नजर पड़ी जो बहुत अँधेरी न थी क्योंकि आगे की तरफ से उसमें रोशनी पहुँच रही थी।

चपला लाचार होकर उस खोह में घुसी। थोड़ी ही दूर जाकर एक छोटा-सा दालान मिला यहाँ पहुँचकर देखा कि कुमारी चन्द्रकान्ता बहुत से बड़े-बड़े पत्ते आगे, रक्खे हुए बैठी है और पत्ते पर पत्थर की नोक से कुछ लिख रही है। नीचे झाँककर देखा तो बहुत ही ढालवीं पहाड़ी, उतरने की जगह नहीं, उसके नीचे कुँवर बीरेन्द्रसिंह और ज्योतिषीजी खड़े ऊपर की तरफ देख रहे हैं।

कुमारी चन्द्रकान्ता के कान में चपला के पैरों की आहट पहुँची। फिर के देखा, पहिचानते ही उठ खड़ी हुई और बोली, 'वाह सखी, खूब पहुँची। देख सब कोई नीचे खड़े हैं। कोई ऐसी तरकीब नजर नहीं आती कि मैं उन तक पहुँचूँ! उन लोगों की आवाज मेरे कान तक पहुँचती है मगर मेरी कोई नहीं सुनता। तेजसिंह ने पूछा है कि तुम किस राह से यहाँ आई हो, उसी का जवाब इस पत्ते पर लिख रही हूँ, इसे नीचे फेंकूँगी।'

चपला बोली, 'कोई जरूरत पत्ते पर लिखने को नहीं है। मैं पुकार के कहे देती हूँ, मेरी आवाज वे लोग बखूबी सुनेंगे, पहिले यह बताओ तुम्हें बगुला निगल गया था या किसी दूसरी राह से आई हो?'

कुमारी ने कहा, 'हाँ मुझको वही बगुला निगल गया था जिसको तुमने उस खण्डहर में देखा होगा, शायद तुमको भी वही निगल गया हो!' चपला ने कहा, 'नहीं मैं दूसरी राह से आई हूँ, पहिले उस खण्डहर का पता इन लोगों को दे लूँ तब बातें करूँ, जिसमें ये लोग भी कोई बन्दोबस्त हम लोगों के छुड़ाने का करें। जहाँ तक मैं सोचती हूँ मालूम होता है कि हम लोग कई दिनों तक यहाँ फँसे रहेंगे, खैर जो होगा देखा जायेगा।'

☐ कुमारी के पास आते हुए चपला को नीचे से कुँवर बीरेन्द्रसिंह वगैरह सभी ने देखा। ऊपर से चपला पुकार कर कहने लगी, 'जिस खोह में हम लोगों को शिवदत्त ने कैद किया था उसके लगभग सात कोस

दक्षिण एक पुराने खण्डहर में एक बड़ा भारी पत्थर का करामाती बगुला है, वही कुमारी को निगल गया था। वह तिलिस्म किसी तरह टूटे तो हम लोगों की जान बचे, दूसरी कोई तरकीब हम लोगों के छूटने की नहीं हो सकती।'

चपला की बात बखूबी सभी ने सुनी, कुमार को महारज शिवदत्त पर बड़ा ही गुस्सा आया, सामने मौजूद ही थे, कहीं ढूंढ़ने जाना तो था ही नहीं, तलवार खींच मारने के लिए झपटे। महाराज शिवदत्त की रानी जो उन्हीं के पास बैठी सब तमाशा देखती और बातें सुनती थी, कुंवर बीरेन्द्रसिंह को तलवार खैंच करके महाराज शिवदत्त की तरफ झपटते देख दौड़कर कुमार के पैरों पर गिर पड़ी और बोली, 'पहिले मुझको मार डालिये, क्योंकि मैं विधवा होकर मुर्दों से बुरी हालत में नहीं रह सकती!' तेजसिंह ने कुमार का हाथ पकड़ लिया और बहुत कुछ समझा-बुझाकर ठण्डा किया।

तेजसिंह ने चपला को पुकार कर कहा, 'देखो, हम लोग उस खण्डहर की तरफ जाते हैं। क्या जाने कितने दिन उस तिलिस्म के तोड़ने में लगे। तुम राजकुरी को ढाढस देती रहना, किसी तरह की तकलीफ न होने पाये। क्या करें कोई ऐसी तरकीब नजर नहीं आती कि कपड़े या खाने-पीने की चीजें तुम तक पहुँचाई जायें।'

चपला ने ऊपर से जवाब दिया, 'कोई हर्ज नहीं, खाने की कुछ तकलीफ न होगी क्योंकि इस जगह बहुत से मेवों के पेड़ हैं, और पत्थरों में से छोटे-छोटे कई झरने पानी के जारी हैं। आप लोग बहुत होशियारी से काम कीजिएगा। इतना मुझे मालूम हो गया कि बिना कुमार के यह तिलिस्म नहीं टूटने का, मगर तुम लोग भी इनका साथ मत छोड़ना, बड़ी हिफाजत रखना!'

महाराज शिवदत्त और उनकी रानी को उसी तहखाने में छोड़ कुंवर बीरेन्द्रसिंह, तेजसिंह, देवीसिंह और ज्योतिषीजी चारों आदमी वहाँ से बाहर निकले। दोहरा ताला लगा दिया। इसके बाद हाल कहने के लिए कुमार ने देवीसिंह को नौगढ़ अपने माँ-बाप के पास भेज दिया और यह भी कह दिया कि नौगढ़ से होकर कल ही तुम लौट के विजयगढ़ आ जाना, हम लोग वहाँ चलते हैं तुम आओगे तब कहीं जायेंगे।' यह सुन देवीसिंह नौगढ़ की तरफ रवाना हुए।

सबेरे ही से कुंवर बीरेन्द्रसिंह विजयगढ़ से गायब थे, बिना किसी से कुछ कहे चल पड़े थे इसलिए महाराज जयसिंह बहुत ही उदास हो कई

जासूसों को चारों तरफ खोजने के लिए भेज चुके थे। शाम होते-होते ये लोग विजयगढ़ पहुँचे, महाराज से मिले। महाराज ने कहा, 'कुमार तुम इस तरह बिना कहे-सुने जहाँ जी में आता है वहाँ चले जाते हो, हम लोगों को इससे तकलीफ होती है, ऐसा न किया करो।'

इसका जवाब कुमार ने कुछ न दिया मगर तेजसिंह ने कहा, 'महाराज जरूरत ही ऐसी थी कि कुमार को बड़े सवेरे यहाँ से जाना पड़ा, उस वक्त आप आराम में थे, इसीलिए कुछ न कह सके।' इसके बाद तेजसिंह ने सब कुछ हाल पूरा कह सुनाया, आखीर में यह भी कहा कि अब हम लोग तिलिस्म तोड़ने जाते हैं।

इतना लम्बा-चौड़ा हाल सुनकर महाराज हैरान हो गये। बोले, 'तुम लोगों ने बड़ा ही काम किया। मैं भी तुम लोगों के साथ चलूँ तो ठीक हो।'

तेजसिंह ने कहा, 'आपके तकलीफ करने की कोई जरूरत नहीं है, थोड़ी फौज साथ जायगी वही बहुत है।' महाराज ने कहा, 'ठीक है, मेरे जाने की कोई जरूरत नहीं मगर इतना होगा कि चलकर उस तिलिस्म को मैं भी देख आऊँगा।' तेजसिंह ने कहा, 'जैसी मर्जी।' महाराज ने दीवान हरदयालसिंह को हुक्म दिया कि 'हमारी आधी फौज और कुमार की कुल फौज रात भर में तैयार हो रहे, कल यहाँ से चुनार की तरफ कूच होगा।'

बमूजिब हुक्म के सब इन्तजाम दीवान साहब ने कर दिया, दूसरे दिन नौगढ़ से लौटकर देवीसिंह भी आ गए। बड़ी तैयारी के साथ चुनार की तरफ तिलिस्म तोड़ने के लिये कूच हुआ। दीवान हरदयालसिंह विजयगढ़ में छोड़ दिये गये।

□ चार दिन रास्ते में लगे, पाँचवें दिन सरहद में फौज पहुँची। महाराज शिवदत्त के दीवान ने यह खबर सुनी तो घबरा उठा, क्योंकि महाराज शिवदत्त तो कैद हो ही चुके थे, लड़ने की ताकत किसे थी। बहुत सी नजर वगैरह लेकर महाराज जयसिंह से मिलने के लिए हाजिर हुआ। खबर पाकर महाराज ने कहला भेजा कि 'मिलने की कोई जरूरत नहीं, हम चुनार फतह करने नहीं आये हैं क्योंकि जिस दिन तुम्हारे महाराज हमारे हाथ फँसे उसी रोज चुनार फतह हो गया, हम दूसरे काम को आये हैं, तुम और कुछ मत सोचो।'

चार होकर दीवान साहब को वापस जाना पड़ा, मगर यह मालूम हो गया कि फलाने काम के लिये आये हैं। आज तक उस तिलिस्म का हाल किसी को भी मालूम न था, बल्कि किसी ने उस खण्डहर को देखा तक न था। आज यह मशहूर हो गया कि इस इलाके में कोई तिलिस्म है जिसको कुंअर बीरेन्द्रसिंह तोड़ेंगे। उस तिलिस्मी खण्डहर का पता लगाने के लिये बहुत से जासूस इधर-उधर भेजे गए। तेजसिंह और ज्योतिषीजी भी गये। आखिर उसका पता लग ही गया। दूसरे दिन मय फौज के सभी का डेरा उसी जंगल में जा लगा जहाँ वह तिलिस्मी खण्डहर था।

□ महाराज जयसिंह, कुँअर बीरेन्द्रसिंह, तेजसिंह, देवीसिंह और ज्योतिषीजी खण्डहर की सैर करने के लिये उसके अन्दर गये। जाते ही यकीन हो गया कि बेशक यह तिलिस्म है। हर एक तरफ वे लोग घुसे और एक-एक चीज को अच्छी तरह देखते भालते बीच वाले बगुले के पास पहुँचे। चपला की जुबानी यह तो सुन ही चुके थे कि वही बगुला कुमारी को निगल गया था, इसलिए तेजसिंह ने किसी को उसके पास जाने न दिया, खुद गये। चपला ने जिस तरह इस बगुले को आजमाया था उसी तरह तेजसिंह ने भी आजमाया।

कुएँ को भी बखूबी देखते हुए उस चबूतरे के पास आये जिस पर पत्थर का आदमी हाथ में किताब लिये सोया हुआ था। चपला की तरह तेजसिंह ने भी यहाँ धोखा खाया। चबूतरे के ऊपर चढ़ने वाली सीढ़ी पर पैर रखते ही उसके ऊपर का पत्थर आवाज देकर पल्ले की तरह खुला और तेजसिंह धम्म से जमीन पर गिर पड़े। इनके गिरने पर कुमार को हँसी आ गई, मगर देवीसिंह बड़े गुस्से में आये। कहने लगे, 'सब शैतानी इसी आदमी की है जो इस पर सोया है, मैं इसकी खबर लेता हूँ।' यह कह कर उछल के बड़े जोर से एक धौल उसके सर पर जमाई। धौल का लगाना था कि वह पत्थर का आदमी उठ बैठा मुँह खोल दिया, भाथी की तरह उसके मुँह से हवा निकलने लगी, थोड़ी ही देर में बड़ी भारी आवाज हुई और सारा मकान हिलने लगा मालूम होता था कि भूकम्प आया है, सभों की तबीयत घबड़ा गई। ज्योतिषीजी ने कहा, 'जल्दी इस मकान से बाहर भागो, ठहरने का मौका नहीं है!'

इस दालान से दूसरे दालान में होते हुए सबके सब भागे। भागने

के वक्त जमीन हिलने के सबब किसी का पैर सीधा नहीं पड़ता था। खण्डहर के बाहर ही दूर से खड़े होकर उसकी तरफ देखने लगे। पूरे मकान को हिलते देखा। दो घंटे तक यह कैफियत रही और तब तक खण्डहर की इमारत का हिलना बन्द न हुआ।

तेजसिंह ने ज्योतिषीजी से कहा, 'आप रमल और नजूम से पता लगाइये कि यह तिलिस्म किस तरह और किसके हाथ से टूटेगा?' ज्योतिषी जी ने कहा, 'आज दिन भर आप लोग सब्र कीजिए और जो कुछ सोचना हो सोचिये, रात को मैं सब हाल रमल से दरियाफ्त कर लूंगा, फिर कल जैसा मुनासिब होगा किया जायेगा। मगर यहाँ कई रोज लगेंगे, महाराज का रहना ठीक नहीं है, बेहतर है कि ये विजयगढ़ जायें।' इस राय को सभों ने पसन्द किया। कुमार ने महाराज से कहा, 'आप सिर्फ इस खण्डहर को देखने आये थे सो देख चुके अब जाइये। आपका यहाँ रहना मुनासिब नहीं।'

महाराज विजयगढ़ जाने पर राजी न थे मगर सभों के जिद्द करने से कबूल किया। कुमार की जितनी फौज थी उसको और अपनी जितनी फौज साथ आई थी उसमें से आधी फौज साथ ले विजयगढ़ की तरफ रवाना हुए।

[] रात भर जगन्नाथ ज्योतिषी रमल फेंकने और विचार करने में लगे रहे। कुँअर बीरेन्द्रसिंह, तेजसिंह और देवीसिंह भी रात भर पास ही बैठे रहे। सब बातों को देख-भाल कर ज्योतिषीजी ने कहा, 'रमल से मालूम होता है कि इस तिलिस्म के तोड़ने की तरकीब एक पत्थर पर खुदी है और वह पत्थर भी इसी खण्डहर में किसी जगह गड़ा हुआ है।'

सब कामों से छुट्टी पाकर दोपहर को सब लोग खण्डहर में घुसे। देखते भालते उसी चबूतरे के पास पहुँचे जिस पर पत्थर का वह आदमी सोया हुआ था जिसे देवीसिंह ने धौल जमाई थी। उस आदमी को फिर उसी जगह सोता पाया।

ज्योतिषीजी ने तेजसिंह से कहा, 'यह देखो ईंटों का ढेर लगा हुआ है, शायद इसे चपला ने इकट्ठा किया हो और इसके ऊपर चढ़कर इस आदमी को देखा हो। तुम भी इस पर चढ़ के खूब गौर कर देखो तो सही किताब में जो इसके हाथ में है क्या लिखा है?' तेजसिंह ने ऐसा ही किया और उस ईंट के ढेर पर चढ़कर देखा। उस किताब में लिखा

था—

8 पहल—5—अंक
6 हाथ—4—अंगुल
जमा पूंजी—०—जोड़ ठीक नाप तोड़।

तेजसिंह ने ज्योतिषीजी को समझाया कि इस पत्थर की किताब में ऐसा लिखा है, मगर इसका मतलब क्या है कुछ समझ में नहीं आता। ज्योतिषीजी ने कहा, 'मतलब भी मालूम हो जाएगा, तुम एक कागज पर इसकी नकल उतार लो।' तेजसिंह ने अपने बटुए में से कागज, कलम, दवात निकाल उस पत्थर की किताब में जो लिखा था उसकी नकल उतार ली।

ज्योतिषीजी ने कहा, 'अब घूमकर देखना चाहिए कि इस मकान में कहीं आठ पहल का कोई खंभा या चबूतरा किसी जगह पर है या नहीं।' सब कोई उस खण्डहर में घूम-घूम कर आठ पहल का खंभा या चबूतरा तलाश करने लगे। एक सिरा कमन्द का तहखाने के किवाड़ के साथ और दूसरा सिरा जिस खम्भे के साथ बँधा हुआ था, उस खम्भे को आठ पहल का पाया। उस खम्भे के ऊपर कोई छत न थी, ज्योतिषीजी ने कहा, इसकी लम्बाई हाथ से नापनी चाहिए।' तेजसिंह ने नापा, 6 हाथ सात अंगुल हुआ, देवीसिंह ने नापा, 6 हाथ 4 अंगुल हुआ, बाद इसके ज्योतिषी जी ने नापा 6 हाथ 10 अंगुल पाया, इसके बाद कुँअर वीरेन्द्रसिंह ने नापा, 6 हाथ 4 अंगुल हुआ।

ज्योतिपीजी ने खुश होकर कहा, 'बस यही खंभा है, इसी का पता इस किताब में लिखा है, इसी के नीचे 'जमा-पूँजी' यानी वह पत्थर जिसमें तिलिस्म तोड़ने की तरकीब लिखी हुई है गड़ा है। यह भी मालूम हो गया कि यह तिलिस्म कुमार के हाथ से टूटेगा, क्योंकि उस किताब में जिसकी नकल कर लाए हैं इसका नाप 6 हाथ 8 अंगुल लिखा है सो कुमार ही के हाथ से हुआ, इससे मालूम होता है कि यह तिलिस्म कुमार ही के हाथ से फतह भी होगा। अब कमन्द को खोल डालना चाहिए जो इस खम्भे और किवाड़ के पल्ले से बँधी हुई है।'

तेजसिंह ने कमन्द खोलकर अलग किया, ज्योतिषीजी ने तेजसिंह की तरफ देख के कहा, 'सब बात तो मिल गई, आठ पहल भी हुआ और नाप से 6 हाथ 4 अंगुल भी है, यह देखिये, इस तरफ 5 का अंक भी दिखाई देता है, बाकी रह गया 'ठीक नाप तोड़' सो कुमार के हाथ से इसका नाप भी ठीक हुआ, अब यही इसको तोड़ें!'

कुँअर बीरेन्द्रसिंह ने उसी जगह से एक बड़ा भारी पत्थर (चूने का ढोका) ले लिया जिसका मसाला सख्त और मजबूत था। इसी ढोके को ऊँचा करके जोर से उस खम्भे पर मारा जिससे वह खम्भा हिल उठा, दो तीन दफे में बिल्कुल कमजोर हो गया, तब कुमार ने बगल में दबा कर जोर किया और जमीन से निकाल डाला। खम्भा उखाड़ने पर उसके नीचे एक लोहे का संदूक निकला जिसमें ताला लगा हुआ था। बड़ी मुश्किल से इसका भी ताला तोड़ा। भीतर एक संदूक और निकला, इसी दर्जे-बदर्जे सात संदूक उसमें से निकले। सातवें संदूक में एक पत्थर निकला। जिस पर कुछ लिखा हुआ था, कुमार ने उसे निकाल लिया और पढ़ा, यह लिखा था—

'सम्हाल के काम करना, तिलिस्म तोड़ने में जल्दी मत करना, अगर तुम्हारा नाम बीरेन्द्रसिंह है तो यह दौलत तुम्हारे ही लिये है।'

'बगुले के मुँह की तरफ जमीन पर जो पत्थर संगमरमर का जड़ा है वह पत्थर नहीं मसाला जमाया हुआ है। उसको उखाड़ कर सिरके में खूब महीन पीसकर बगुले के सारे अंग पर लेप कर दो। वह भी मसाले का ही बना हुआ है, दो घंटे में बिलकुल गल कर बह जायगा। उसके नीचे जो कुछ तार, चर्खे, पहिये, पुर्जे हों सब तोड़ डालो। नीचे एक कोठरी मिलेगी जिसमें बगुले के बिगड़ जाने से बिलकुल उजाला हो गया होगा। उस कोठरी से एक रास्ता नीचे उस कुएँ में गया है जो पूरब वाले दालान में है। वहाँ भी मसाले से बना एक बुड्ढा आदमी हाथ में किताब लिये दिखाई देगा। उसके हाथ से किताब ले लो, मगर एकाएक मत छीनो नहीं तो धोखा खाओगे। पहिले उसका दाहिना बाजू पकड़ो, वह मुँह खोल देगा। उसका मुँह काफूर से खूब भर दो, थोड़ी ही देर में वह भी गल के बह जायगा, तब किताब ले लो। उसके सब पन्ने भोजपत्र के होंगे। जो कुछ उसमें लिखा हो वैसा करो। —विक्रम।'

यह खबर चारों तरफ मशहूर हो गई कि चुनारगढ़ के इलाके में कोई तिलिस्म है जिसमें कुमारी चन्द्रकान्ता और चपला फँस गई हैं, उनको छुड़ाने और तिलिस्म तोड़ने के लिए कुँअर बीरेन्द्रसिंह ने मय फौज के उस जगह डेरा डाला है।

बहुत से आदमी उस जगह इकट्ठे हुए जहाँ कुमार का लश्कर उतरा हुआ था मगर खौफ के मारे खण्डर के अन्दर कोई पैर नहीं रखता था सब बाहर से ही देखते थे।

कुमार के लश्कर वालों ने घूमते-फिरते कई नकाबपोश सवारों को

भी देखा जिनकी खबर उन लोगों ने कुमार तक पहुँचाई।

पंडित बद्रीनाथ अहमद और नाजिम को साथ लेकर महाराज शिवदत्त को छुड़ाने गये थे, तहखाने में शेर के मुँह से जुबान खींच किवाड़ खोलना चाहा मगर खुल न सका, क्योंकि यहाँ तेजसिंह ने दोहरा ताला लगा दिया था। जब कोई काम न निकला तब वहाँ से लौटकर विजयगढ़ गए, ऐयारी की फिक्र में थे कि यह खबर कुँवर बीरेन्द्रसिंह की इन्होंने भी सुनी। लौटकर इसी जगह पहुँचे। पन्नालाल, रामनारायण और चुन्नीलाल भी उसी ठिकाने पर जमा हुए और इन सभी की यह राय होने लगी कि किसी तरह तिलिस्म तोड़ने में बाधा डालना चाहिए। इसी फिक्र में ये लोग भेष बदलकर इधर-उधर तथा लश्कर में घूमने लगे।

[7] दूसरे दिन स्नान-पूजा से छुट्टी पाकर बीरेन्द्रसिंह, तेजसिंह, देवीसिंह और ज्योतिषीजी फिर उस खंडहर में घुसे, सिरका साथ में लेते गये। अन्दर जाकर सभी कार्य पत्थर पर लिखे अनुसार ही किया। बुड्ढे के गलने पर जो किताब मिली उस पर यह लिखा पाया—

'इन फूलों को भी उठा लो, तुम्हारे ऐयारों के काम आवेंगे। इस किताब को डेरे में जाकर पढ़ो, आज कोई काम मत करो।'

तेजसिंह ने बड़ी खुशी से उन फूलों को उठा लिया जो गिनती में छः थे। उस कुएँ से कोठरी में आकर ये ऊपर निकले और खंडहर के बाहर हो गये।

थोड़ा दिन बाकी था जब कुँअर बीरेन्द्रसिंह अपने डेरे में पहुँचे। यह राय ठहरी कि रात में इस किताब को पढ़ना चाहिए, मगर तेजसिंह को यह जल्दी थी कि किसी तरह फूलों के गुण मालूम हों। कुमार से कहा, 'इस वक्त इन फूलों के गुण पढ़ लीजिए। बाकी रात को पढ़ियेगा।' कुमार ने हँस के कहा, 'जब कुल तिलिस्म टूट लेगा तब फूलों के गुण पढ़े जायेंगे।' तेजसिंह ने बड़ी खुशामद की, आखिर लाचार होकर कुमार ने जिल्द खोली। उस वक्त सिवाय इन चारों आदमियों के उस खेमे में और कोई न था, सब बाहर कर दिए गये थे।

कुमार ने फूलों के गुण सबको पढ़कर सुनाये और फूल तेजसिंह को दे दिये। इन फूलों को बड़ी खुशी से तेजसिंह ने अपने बटुए में डाल लिया, देवीसिंह और ज्योतिषीजी माँगते ही रहे मगर देखने को भी न दिया।

☐ इन फूलों को पाकर तेजसिंह जितने खुश हुए शायद अपनी उम्र में आज तक कभी ऐसे खुश न हुए होंगे। एक तो पहले ही ऐयारी में बढ़े-चढ़े थे, आज इन फूलों ने इन्हें और बढ़ा दिया। अब कौन है जो इनका मुकाबला करे ? हाँ एक चीज की कसर रह गई, लोपाञ्जन या कोई गुटका इस तिलिस्म में से इनको ऐसा न मिला जिससे ये लोगों की नजर से छिप जाते, और अच्छा ही हुआ जो न मिला नहीं तो इनकी ऐयारी की तारीफ न होती क्योंकि जिस आदमी के पास कोई ऐसी चीज हो जिससे वह गायब हो जाये तो फिर ऐयारी सीखने की उसे जरूरत ही क्या रही ? गायब होकर जो चाहा कर डाला !

आज की रात इन चारों को जागते ही बीती। तिलिस्म की तारीफ, फूलों के गुण, तिलिस्मी किताब के पढ़ने, सवेरे फिर तिलिस्म में जाने आदि की बातचीत में रात बीत गई। सवेरा हुआ, जल्दी जल्दी स्नान पूजा से चारों ने छुट्टी पा ली और कुछ भोजन करके तिलिस्म में जाने को तैयार हुए।

कुमार ने तेजसिंह से कहा, 'हमारे पलंग पर से तिलिस्मी किताब उठा के तुम लेते चलो, वहाँ फिर एक दफे पढ़ के तब कोई काम करेंगे।' तेजसिंह
तिलिस्मी किताब लेने गये मगर किताब नजर न पड़ी, चारपाई के नीचे हर तरफ देखा, कहीं पता नहीं, आखिर कुमार से पूछा, 'किताब कहाँ है ? पलँग पर तो नहीं है !'

सुनते ही कुमार के होश उड़ गये, जी सन्न हो गया, दौड़े हुए पलंग के पास आये, खूब ढूँढ़ा, मगर कहीं किताब हो तब तो मिले। कुमार 'हाय' करके पलंग के ऊपर गिर पड़े, बिल्कुल हौसला टूट गया, कुमारी चन्द्रकान्ता के मिलने से नाउम्मीद हो गए, अब तिलिस्मी किताब कहाँ जिसमें तिलिस्म तोड़ने की तरकीब लिखी है। तेजसिंह, देवीसिंह और जगन्नाथ ज्योतिषी भी घबरा उठे। दो घड़ी तक किसी के मुँह से आवाज तक न निकली, इसके बाद तलाश होने लगी। लश्कर भर में खूब शोर मचा कि कुमार के डेरे से तिलिस्मी किताब गायब हो गई, पहरे वालों पर सख्ती होने लगी, चारों तरफ चोर की तलाश में लोग निकले।

तेजसिंह ने कुमार से कहा, 'आप जी छोटा मत कीजिए, मैं वादा करता हूँ कि चोर को जरूर पकड़ूँगा, आपके सुस्त हो जाने से सभी का जी टूट जायेगा, कोई काम करते न बन पड़ेगा !' बहुत समझाने पर कुमार पलंग से उठे, उसी वक्त एक चोबदार ने आकर अजीब खबर सुनाई। हाथ जोड़कर अर्ज किया कि 'तिलिस्म के फाटक पर पहरे के लिए जो लोग

मुस्तैद किये गये हैं उनमें से एक पहरे वाला हाजिर हुआ और कहता है कि तिलिस्म के अन्दर कई आदमियों की आहट मिली है, किसी को अन्दर जाने का हुक्म तो है ही नहीं जो ठीक मालूम करें, अब जैसा हुक्म हो किया जाय।'

इस खबर को सुनते ही तेजसिंह पता लगाने के लिए तिलिस्म में जाने को तैयार हुए और अन्दर गए।

देखा कि पत्थर वाला आदमी उठ के बैठा हुआ पंडित बद्रीनाथ ऐयार को दोनों हाथों से दबाये है और वे चिल्ला रहे हैं। पन्नालाल रामनारायण और चुन्नीलाल छुड़ाने की तरकीब कर रहे हैं मगर कोई काम नहीं निकलता। तिलिस्मी किताब के खो जाने का इन लोगों को बड़ा भारी गम था, मगर इस वक्त पंडित बद्रीनाथ ऐयार की यह दशा देख सभी को हँसी आ गई, एकदम खिलखिला के हँस पड़े। उन ऐयारों ने पीछे फिर कर देखा तो कुँअर बीरेन्द्रसिंह मय तीनों ऐयारों के खड़े हैं, साथ में फतहसिंह सेनापति हैं।

तेजसिंह ने ललकार कर कहा, 'वाह खूब, जैसी जिसकी करनी होती है, उसको वैसा ही फल मिलता है, इसमें कोई शक नहीं। बेचारे कुँअर बीरेन्द्रसिंह को बेकसूर तुम लोगों ने सताया, इसी की सजा तुम लोगों को मिली! परमेश्वर भी बड़ा इन्साफ करने वाला है, क्यों पन्नालाल, तुम लोग जान-बूझकर क्यों फँसते हो? तुम लोगों को तो किसी ने पकड़ा नहीं है, फिर बद्रीनाथ के पीछे क्यों जान देते हो? इनको इसी तरह छोड़ दो और तुम लोग हवा खाओ!'

पन्नालाल ने कहा, 'भला इनको ऐसी हालत में छोड़ के हम लोग कहीं जा सकते हैं? अब तो आपके जो दिल में आवे सो कीजिए हम लोग हाजिर हैं।' तेजसिंह ने पंडित बद्रीनाथ के पास जाकर कहा, 'पंडितजी परनाम! क्यों, मिजाज कैसा है? क्या आप तिलिस्म तोड़ने को आये थे? अपने राजा को तो पहिले छुड़ा लिए होते? खैर शायद तुमने यह सोचा कि हम ही तिलिस्म तोड़कर कुल खजाना ले लें और खुद चुनार के राजा बन जायें!'

इसका जवाब पन्नालाल ने कुछ न दिया। तेजसिंह ने कहा, 'सुनो जी, ऐयारों को ऐयार लोग खूब पहचानते हैं। अगर तुम्हारे आने-जाने के लिए कुमार हुक्म नहीं देते तो हम हुक्म देते हैं कि आया करो और जिस तरह बने बद्रीनाथ की हिफाजत करो। तुम लोगों ने हमारा बड़ा हर्ज किया, तिलिस्मी किताब चुरा ली और अब मुकरते हो। इस वक्त हमारे

अख्तियार में सब कोई हो, जिसके साथ जो चाहे करूँ, सीधी तरह से न दो तो डंडों के जोर से किताब ले लूँ मगर नहीं, छोड़ देता हूँ और खूब होशियार कर देता हूँ, किताब सम्हाल के रखना, मैं बिना लिए न छोड़ूँगा और तुम लोगों को गिरफ्तार भी न करूँगा।'

तेजसिंह की बात सुनकर पंडित बद्रीनाथ लाल हो गये और बोले, 'इस वक्त हमको बेबस देख के शेखी करते हो! यह हिम्मत तो तब जानें कि हमारे छूटने पर कह बता के कोई ऐयारी करो और जीत जाओ! क्या तुम ही एक दुनिया में ऐयार हो? हम भी जोर देकर कहते हैं कि हम ही ने तुम्हारी तिलिस्मी किताब चुराई है, मगर हम लोगों में से किसी को कैद किये या सताये बिना तुम नहीं पा सकते। यह शेखी तुम्हारी न चलेगी कि ऐयारों को गिरफ्तार भी न करो। बल्कि आने-जाने के लिए छुट्टी दे दो और किताब भी ले लो। ऐसा कर लो तो उसी दिन से हम लोग तुम्हारे हो जायें और महाराज शिवदत्त को छोड़कर कुमार की ताबेदारी करें। मैं बता देता हूँ कि न किताब दूँगा और यहाँ से छूट के भी निकल जाऊँगा।'

तेजसिंह ने कहा, 'मैं भी कसम खाकर कहता हूँ कि तुम लोगों को कैद किये बगैर किताब न ले लूँ तो फिर ऐयारी का नाम न लूँ और सिर मुड़ाके दूसरे देश में निकल जाऊँ!'

इसी बात पर तेजसिंह और बद्रीनाथ दोनों ने कसमें खाईं। बेचारे कुंअर बीरेन्द्रसिंह सभी का मुँह देखते थे, कुछ कहते बन न पड़ता था। तेजसिंह ने देवीसिंह और ज्योतिषीजी को अलग ले जाकर कान में कुछ कहा और वे दोनों उसी वक्त तिलिस्म के बाहर हो गये। फिर तेजसिंह बद्रीनाथ के पास जाकर बोले, 'हम लोग जाते हैं, पन्नालाल रामनारायण और चुन्नीलाल को जहाँ जी चाहे भेजो और अपने छुड़ाने की जो तरकीब सूझे करो। पहरे वालों को कह दिया जाता है, वे तुम्हारे साथियों को आते जाते न रोकेंगे।'

कुमार को लिए हुए तेजसिंह अपने डेरे में पहुँचे, देखा तो ज्योतिषी जी बैठे हैं। तेजसिंह ने पूछा, 'क्यों ज्योतिषीजी, देवीसिंह गये?'

ज्योतिषी, 'हाँ वह तो गए।'

तेज०, 'आपने सभी कुछ देखा कि नहीं?'

ज्योतिषीजी, 'हाँ पता लगा, पर आफत पर आफत नजर आती है।'

तेज०, 'वह क्या?'

ज्योतिषीजी, 'रमल से मालूम होता है कि उन लोगों के हाथ से भी

किताब निकल गई और अभी तक कहीं रखी नहीं गई, देखें देवीसिंह क्या करके आते हैं, हम भी जाते तो अच्छा होता।'

तेजसिंह वहाँ से चले गये, फतहसिंह को भी कुमार ने विदा किया, अब देखना चाहिए ये लोग क्या करते हैं और कौन जीतता है।

☐ तेजसिंह, देवीसिंह और ज्योतिषीजी के चले जाने पर कुमार बहुत देर तक सुस्त बैठे रहे। तरह-तरह के खयाल पैदा होते रहे, जरा खुटका हुआ और दरवाजे की तरफ देखने लगते कि शायद तेजसिंह या देवीसिंह आते हों, जब किसी को नहीं देखते तो फिर हाथ पर गाल रखकर सोच-विचार में पड़ जाते। पहर भर दिन बाकी रह गया पर तीनों ऐयारों में से कोई भी लौटकर न आया, कुमार की तबीयत और भी घबड़ाई, बैठा न गया, डेरे के बाहर निकले।

कुमार को डेरे के बाहर होते देख बहुत-से मुलाजिम सामने आ खड़े हुए। बगल ही में फतहसिंह सेनापति का डेरा था, सुनते ही कपड़े बदल हर्बों को लगाकर वह भी बाहर निकल आये और कुमार के पास आकर खड़े हो गये। कुमार ने फतहसिंह से कहा, 'चलो जरा घूम आवें, मगर हमारे साथ और कोई न आवे!' यह कह आगे बढ़े। फतहसिंह ने सभी को मना कर दिया, लाचार कोई साथ न हुआ। ये दोनों धीरे-धीरे टहलते हुए डेरे से बहुत दूर निकल गये, तब कुमार ने फतहसिंह का हाथ पकड़ लिया और कहा, 'सुनो फतहसिंह, तुम भी हमारे दोस्त हो, साथ ही पढ़े और बड़े हुए, तुमसे हमारी कोई बात छिपी नहीं रहती, तेजसिंह भी तुमको बहुत मानते हैं। आज हमारी तबीयत बहुत उदास हो गई, अब हमारा जीना मुश्किल समझो, क्योंकि आज तेजसिंह को न मालूम क्या सूझी कि बद्रीनाथ से जिद कर बैठे, हाथ में फँसे हुए चोर को छोड़ दिया, क्या जाने अब क्या होता है? किताब हाथ लगे या न लगे, तिलिस्म टूटे या न टूटे, चन्द्रकान्ता मिले या तिलिस्म ही तड़प-तड़प कर मर जाय।'

फतहसिंह ने कहा, 'आप कुछ सोच न कीजिये। तेजसिंह ऐसे बेवकूफ नहीं हैं, उन्होंने जिद किया सो अच्छा ही किया। सब ऐयार एकदम से आपकी तरफ हो जायेंगे। आज का भी बिल्कुल हाल मुझको मालूम है। इन्तजाम भी उन्होंने बहुत अच्छा किया है। मुझको भी एक काम सुपुर्द कर गए हैं। वह भी बहुत ठीक हो गया है, देखिये तो क्या होता है!'

बातचीत करते दोनों बहुत दूर निकल गये। यकायक इन लोगों की निगाहें कई औरतों पर पड़ीं, जो इनसे बहुत दूर न थीं। इन्होंने आपस में बातचीत करना बन्द कर दिया और पेड़ों की आड़ से औरतों को देखने लगे।

अन्दाज से बीस औरतें होंगी, अपने घोड़ों की बाग थामे धीरे-धीरे उसी तरफ आ रही थीं। एक औरत के हाथ में दो घोड़ों की बाग थी। यों तो सभी औरतें एक-से-एक खूबसूरत थीं मगर सभी के आगे जो आ रही थी बहुत ही खूबसूरत और नाजुक थी। उम्र करीब पन्द्रह वर्ष के होगी, पौशाक और जेवरों के देखने से यही मालूम होता था कि यह जरूर किसी राजा की लड़की है। सिर से पाँव तक जवाहिरात से लदी हुई, हर एक अंग उसके सुन्दर और सुडौल, गुलाब-सा चेहरा दूर से दिखाई दे रहा था। साथ वाली औरतें भी एक-से-एक खूबसूरत और बेशकीमती पोशाक पहिने हुए थीं।

कुँवर बीरेन्द्रसिंह एकटक उसी औरत की तरफ देखने लगे जो सभी के आगे थी। ऐसे तरद्दुद के हालत में भी कुमार के मुँह से निकल पड़ा, 'वाह क्या सुडौल हाथ-पैर हैं। बहुत-सी बातें कुमारी चन्द्रकान्ता की इसमें मिलती हैं, नजाकत और चाल भी उसी ढंग की है, हाथ में कोई किताब है जिससे मालूम होता है कि पढ़ी लिखी भी है।'

वे औरतें और पास आ गईं। अब कुमार को बखूबी देखने का मौका मिला। जिस जगह पेड़ों की आड़ में ये दोनों छिपे हुए थे। किसी की निगाह नहीं पड़ सकती थी। वह औरत जो सभी के आगे-आगे आ रही थी जिसको हम राजकुमारी कह सकते हैं, चलते-चलते अटक गई, उस किताब को खोलकर देखने लगी साथ ही इसके दोनों आँखों से आँसू गिरने लगे।

कुमार ने पहिचाना कि यह वही तिलिस्मी किताब है, क्योंकि इसकी जिल्द पर एक तरफ मोटे-मोटे सुनहरे हरफों में 'तिलिस्म' लिखा हुआ है। सोचने लगे—'इस किताब को तो ऐयार लोग चुरा ले गए थे, तेजसिंह इसकी खोज में गये हैं। इसके हाथ में यह किताब क्योंकर लगी? यह कौन है और किताब देखकर रोती क्यों है।'

भाग-3

□ धीरे-धीरे चलकर वनकन्या जब उन पेड़ों के पास पहुँची जिधर आड़ में कुँअर बीरेन्द्रसिंह और फतहसिंह छिपे खड़े थे तो ठहर गई और पीछे फिर के देखा। उसके साथ एक और जवान नाजुक तथा चंचल औरत अपने हाथ में एक तस्वीर लिए हुए चल रही थी जो वनकन्या को अपनी तरफ देखते देख आगे बढ़ आई। बनकन्या ने अपनी किताब उसके हाथ में दे दी और तस्वीर उससे ले ली।

तस्वीर की तरफ देख लम्बी साँस ली, साथ ही आँखें डबडबा आईं, बल्कि कई बूंद आँसुओं के भी गिर पड़े। इस बीच में कुमार की निगाह भी उसी तस्वीर पर जा पड़ी, एकटक देखते रहे और जब बनकन्या बहुत दूर निकल गई तब फतहसिंह से बातचीत करने लगे।

कुमार, 'क्यों फतहसिंह, यह कौन है कुछ जानते हो?'

फतहसिंह, 'मैं कुछ भी नहीं जानता मगर इतना कह सकता हूँ कि किसी राजा की लड़की है!'

कुमार, यह किताब जो इसके हाथ में है जरूर वही है जो मुझको तिलिस्म से मिली थी, जिसको शिवदत्त के ऐयारों ने चुराया था, जिसके लिए तेजसिंह और बद्रीनाथ में बदाबदी हुई, और जिसकी खोज में हमारे ऐयार गये हुए हैं।

फतहसिंह, 'मगर फिर वह किताब इसके हाथ कैसे लगी?'

कुमार, 'इसका तो ताज्जुब ही है मगर इससे भी ज्यादा ताज्जुब की एक बात और है, शायद तुमने खयाल नहीं किया।'

फतह०, 'नहीं, वह क्या है?'

कुमार, 'वह तस्वीर भी मेरी है जिसको बगल वाली औरत के हाथ से उसने लिया था।'

फतह०, 'यह तो आपने और भी आश्चर्य की बात सुनाई!'

कुमार, 'मैं तो अजब हैरानी में पड़ा हूँ, कुछ समझ में नहीं आता कि

क्या मामला है ! अच्छा चलो पीछे-पीछे, देखें ये सब जाती कहाँ हैं ।'

आगे-आगे कुमार तथा पीछे-पीछे तीनों ऐयार और फतहसिंह उस तरफ चले जिधर वे औरतें गई थीं, मगर तेजसिंह, देवीसिंह और ज्योतिषी जी हैरान थे।

तेजसिंह ने पूछा, 'आप कुछ खुलासा कहिए कि क्या मामला है ?' कुमार ने कहा, 'अब इस जगह कुछ न कहेंगे। लश्कर में चलो, फिर जो कुछ है सुन लेना ।'

सब कोई लश्कर में पहुँचे। कुमार ने कहा, 'पहिले तिलस्मी खण्डहर में चलो। देखें बद्रीनाथ की क्या कैफियत है।' यह कहकर खण्डहर की तरफ चले, ऐयार सबके-सब पीछे-पीछे रवाना हुए। खण्डहर के दरवाजे के अन्दर पैर रक्खा ही था कि सामने से पण्डित बद्रीनाथ, पन्नालाल वगैरह आते दिखाई पड़े।

कुमार, 'यह देखो वह लोग इधर ही चले आ रहे हैं ! मगर हैं ! यह बद्रीनाथ छूट कैसे गए।

तेजसिंह, 'बड़े ताज्जुब की बात है।'

देवीसिंह, 'कहीं किताब उन लोगों के हाथ तो नहीं लग गई ? अगर हुआ तो बड़ी मुश्किल होगी।'

फतह, 'इससे निश्चित रहो, वह किताब इनके हाथ अब तक नहीं लगी हाँ आगे मिल जाये तो मैं नहीं कह सकता, क्योंकि अभी थोड़ी ही देर हुई है वह दूसरे के हाथ में देखी जा चुकी है।'

इतने में बद्रीनाथ वगैरह पास आ गए। पन्नालाल ने पुकार के कहा, 'क्यों तेजसिंह, अब तो हार गए न हमसे ।'

तेज, 'यह बताओ तुम कैसे छूटे ?'

बद्री, 'बस ईश्वर ने छुड़ा दिया, जानबूझ के कोई तरकीब नहीं की गयी, पन्नालाल ने उसके सिर पर एक लकड़ी रक्खी, उस पत्थर के आदमी ने मुझको छोड़ लकड़ी पकड़ ली, बस मैं छूट गया, उसके हाथ में वह लकड़ी अभी तक मौजूद है !'

कुमार, अच्छा हुआ, दोनों की ही बात रह गयी।'

बद्री, 'कुमार, मेरा जी तो चाहता है कि आपके साथ रहूँ मगर क्या करूँ नमकहरामी नहीं कर सकता, कोई तो सबब होना चाहिए।'

ज्यो०, 'अच्छा हमारी तरफ नहीं होते नहीं सही, मगर ऐयारी तो बंद करो।'

तेज, 'वाह ज्योतिषीजी, आखिर वेदपाठी ही रहे। ऐयारी से क्या

डरना ? ये लोग जितना जी चाहे जोर लगा लें।'

पन्ना०, 'खैर देखा जाएगा, अब तो जाते हैं, जय माया की !''

तेज०, 'जय माया की !'

बद्रीनाथ वगैरह वहाँ से चले गए। फिर कुमार भी तिलिस्म में न गए और अपने डेरे में चले आए। रात को कुमार के डेरे में सब ऐयार और फतहसिंह इकट्ठे हुए। दरबानों को हुक्म दे दिया कि कोई अन्दर न आने पावे। तेजसिंह ने कुमार से पूछा, 'अब बताइए किताब किसके हाथ में देखी थी, वह कौन है और आपने किताब लेने की कोशिश क्यों न की ?'

कुमार ने जवाब दिया, 'यह तो मैं नहीं जानता कि वह कौन है लेकिन जो भी हो, अगर कुमारी चन्द्रकान्ता से बढ़ के नहीं है तो किसी तरह कम भी नहीं है। उसके हुस्न ने उससे किताब छीनने न दिया।'

तेज०, (ताज्जुब से) कुमारी चन्द्रकान्ता से और उस किताब से क्या सम्बन्ध। खुलासा कहिये तो कुछ मालूम हो।

ज्योतिषीजी ने कई दफे रमल फेंका मगर खुलासा हाल मालूम न हो सका, हाँ इतना कहा कि किसी राजा की लड़की है। आधी रात तक सब कोई बैठे रहे मगर कोई काम न हुआ, आखिर यह बात तय ठहरी कि जिस तरह बने उन औरतों को ढूँढ़ना चाहिए।

सब कोई अपने डेरे में आराम करने चले गये। रात भर कुमार को बनकन्या की याद ने सोने न दिया। कभी उसकी भोली-भाली सूरत याद करते, कभी उसकी आँखों से गिरे हुए आँसुओं के ध्यान में डूबे रहते। इसी तरह करवटें बदलते और लम्बी साँस लेते रात बीत गई बल्कि घंटा भर दिन चढ़ आया।

कुमार ने जल्दी स्नान से छुट्टी पाकर भोजन किया। तेजसिंह वगैरह इनके पहले ही सब कामों से निश्चिन्त हो चुके थे, उन लोगों ने भी भोजन कर लिया और उन औरतों को ढूंढ़ने के लिए जंगल में जाने को तैयार हुए। कुमार ने कहा हम भी चलेंगे। सभी ने समझाया कि आप चलकर क्या करेंगे, हम पता लगाते हैं, आपके चलने से हमारे काम में हर्ज होगा। कुमार ने कहा, 'कोई हर्ज न होगा, हम फतहसिंह को अपने साथ ले चलते हैं, तुम्हारा जहाँ जी चाहे घूमना, हम इनके साथ इधर-उधर फिरेंगे।' तेजसिंह ने फिर समझाया कि कहीं शिवदत्त के ऐयार लोग आपको धोखे में न फँसा लें, मगर कुमार ने एक न मानी। आखिर लाचार होकर कुमार और फतहसिंह को साथ ले जंगल की तरफ रवाना हुए।

थोड़ी दूर जंगल में जाकर उन दोनों को एक जगह बैठाकर तीनों ऐयार अलग-अलग उन औरतों की खोज में रवाना हुए। ऐयारों के चले जाने के बाद कुँवर बीरेन्द्रसिंह फतहसिंह से बातें करने लगे मगर सिवाय बनकन्या के कोई दूसरा जिक्र कुमार की जुबान पर न था।

☐ कुँअर बीरेन्द्रसिंह बैठे फतहसिंह से बातें कर रहे थे कि एक मालिन कहती जाती थी—'आज जंगली फूलों का गहना बनाने में देरी हो गई, जरूर कुमारी खफा होंगी, देखें क्या दुर्दशा होती है।'

इस बात को दोनों ने सुना। कुमार ने फतहसिंह से कहा, 'मालूम होता है उन्हीं की मालिन है. इसको बुला के पूछो तो सही।' फतहसिंह ने आवाज दी, उसने चौंककर पीछे देखा, फतहसिंह ने हाथ के इशारे से फिर बुलाया, वह, डरती-काँपती उनके पास आ गई। फतहसिंह ने पूछा, 'तू कौन है और फूलों के गहने किसके वास्ते ले जा रही है?'

उसने जवाब दिया, 'मैं मालिन हूँ, यह नहीं कह सकती कि किसके यहाँ रहती हूँ और ये फूलों के गहने किसके वास्ते लिये जाती हूँ। आप मुझको छोड़ दें, मैं बहुत गरीब हूँ, मेरे मारने से कुछ हाथ न लगेगा, हाथ जोड़ती हूँ, मेरी जान मत मारिए।'

ऐसी-ऐसी बातें कह मालिन रोने और गिड़गिड़ाने लगी। फूलों की डलिया आगे रक्खी हुई थी जिनकी तेज खुशबू फैल रही थी। इतने में एक नकावपोश वहाँ आ पहुँचा और कुमार की तरफ मुँह करके बोला, 'आप इसके फेर में न पड़ें, वह ऐयार है, अगर थोड़ी देर और फूलों की खुशबू दिमाग में चढ़ेगी तो आप बेहोश हो जायेंगे।'

उस नकाबपोश ने इतना कहा ही था कि वह मालिन उठकर भागने लगी, मगर फतहसिंह ने झट पकड़ लिया। सवार उसी वक्त चला गया। कुमार ने फतहसिंह से कहा, 'मालूम नहीं सवार कौन है और मेरे साथ यह नेकी करने की उसको क्या जरूरत थी?' फतहसिंह ने जवाब दिया, 'इसका हाल मालूम होना मुश्किल है क्योंकि वह खुद अपने को छिपा रहा है, खैर जो हो यहाँ ठहरना मुनासिब नहीं, देखिये अगर यह सवार न आता तो हम लोग फँस ही चुके थे।'

कुमार ने कहा, 'तुम्हारा यह कहना बहुत ठीक है, खैर अब चलो और इसको अपने साथ लेते चलो, वहाँ चलकर पूछ लेंगे कि यह कौन है।' जब कुमार अपने खेमे में फतहसिंह और उस ऐयार को लिए हुए पहुँचे तो

बोले, 'अब इससे पूछो इसका नाम क्या है ?' फतहसिंह ने जवाब दिया, 'भला यह ठीक-ठीक अपना नाम क्यों बतावेगा, देखिये मैं अभी मालूम किये लेता हूँ।'

फतहसिंह ने गरम पानी मँगवाकर उस ऐयार का मुँह धुलाया, अब साफ पहिचाने गये कि यह पंडित बद्रीनाथ हैं। कुमार ने पूछा, 'क्यों अब तुम्हारे साथ क्या किया जाय ?' बद्रीनाथ ने जवाब दिया, जो मुनासिब हो कीजिये।'

कुमार ने फतहसिंह से कहा, 'इनकी तुम हिफाजत करो, जब तेजसिंह आवेंगे तो वही इनका फैसला करेंगे !' यह सुन फतहसिंह, बद्रीनाथ को ले अपने खेमे में चले गये। कुछ रात जाते तेजसिंह, देवीसिंह और ज्योतिषी जी लौटकर आये और कुमार के खेमे में गये। उन्होंने पूछा, 'कहो कुछ पता लगा ?'

तेज०, 'कुछ पता न लगा, दिन भर परेशान हुए मगर कोई काम न चला।'

कुमार, (ऊँची साँस लेकर) 'फिर अब क्या किया जायेगा ?'

तेज०, 'किया क्या जायेगा, आजकल में पता लगेगा ही।'

कुमार, 'हमने भी एक ऐयार को गिरफ्तार किया है।'

तेज०, 'हैं किसको ! वह कहाँ है ?'

कुमार, 'फतहसिंह के पहरे में, उसको बुला के देखो न है !'

देवीसिंह को भेजकर फतहसिंह को मय ऐयार के बुलवाया। जब बद्रीनाथ की सूरत देखी तो खुश हो गये और बोले—'क्यों, अब क्या इरादा है ?'

बद्री०, इरादा जो पहिले था वही अब भी है।'

तेजसिंह ने फतहसिंह से कहा, 'इनके ऊपर बहुत सख्त पहरा मुकर्रर कीजिए। अब रात हो गई है, कल इनको बड़े घर पहुँचाया जायेगा।'

फतहसिंह ने अपने मातहत सिपाहियों को बुलवाकर बद्रीनाथ को उनके सुपुर्द किया। इतने ही में चोबदार ने आकर एक चिट्ठी उनके हाथ में दी और कहा कि 'एक नकाबपोश सवार बाहर हाजिर है जिसने यह चिट्ठी कुमार को देने के लिए दी है !' तेजसिंह ने लिफाफे को देखा, यह लिखा हुआ था—

'कुँवर वीरेन्द्रसिंहजी के चरण कमलों में—'

तेजसिंह ने चिट्ठी कुमार के हाथ में दिया, उन्होंने खोलकर पढ़ा—

'सुख सम्पत्ति सब त्याग्यो जिनके हेतु।
वे निरमोही ऐसे, सुधिहुँ न लेत॥
राज छोड़े बन जोगी भसम रमाय।
विरह अनल की धूनी तापत हाय॥
—कोई वियोगिनी।'

पढ़ते ही आँखें डबडबा आईं, बँधे गले से अटक कर बोले, 'उसको अन्दर बुलाओ जो चिट्ठी लाया है।' हुक्म पाते ही चोबदार उस सवार को लेने बाहर गया मगर वापस आकर बोला—'वह सवार तो कहीं चला गया!'

कुमार ने कहा, 'इस चिट्ठी ने तो इश्क की आग में घी का काम किया। उसका ख्याल और भी बढ़ गया घट कैसे सकता है! खैर अब जाओ तुम लोग भी आराम करो, कल जो कुछ होगा देखा जायेगा।'

कल रात से आज की रात कुमार को और भी भारी गुजरी। बार-बार उस चिट्ठी को पढ़ते रहे। सवेरा होते ही उठे, स्नान-पूजा कर जंगल में जाने के लिए तेजसिंह को बुलाया, वे भी आये। आज फिर तेजसिंह ने मना किया मगर कुमार ने न माना, तब तेजसिंह ने उन तिलिस्मी फूलों में से गुलाब का फूल पानी में घिसकर कुमार और फतहसिंह को पिलाया और कहा कि 'अब जहाँ जी चाहे घूमिये, कोई बेहोश करके आपको नहीं ले जा सकता, हाँ जबर्दस्ती पकड़ ले तो मैं नहीं कह सकता। कुमार ने कहा, 'ऐसा कौन है जो मुझको जबर्दस्ती पकड़ ले।'

पाँचों आदमी जंगल में गये, कुछ दूर पर कुमार और फतहसिंह को छोड़ तीनों ऐयार अलग हो गये। कुँवर बीरेन्द्रसिंह फतहसिंह के साथ इधर-उधर घूमने लगे। घूमते-घूमते कुमार बहुत दूर निकल गये, देखा कि दो नकाबपोश सवार सामने से आ रहे हैं। जब कुमार से थोड़ी दूर रह गये तो एक सवार घोड़े पर से उतर पड़ा और जमीन पर कुछ रख के फिर सवार हो गया। कुमार उसकी तरफ बढ़े, जब पास पहुँचे तो वे दोनों सवार यह कहके चले गये कि 'इस किताब और चिट्ठी को ले लीजिए।'

कुमार ने पास जाकर देखा तो वही तिलिस्मी किताब नजर पड़ी। उसके ऊपर एक चिट्ठी और बगल में कलम दवात और कागज भी मौजूद पाया। कुमार ने खुशी-खुशी उस किताब को उठा लिया और फतहसिंह

की तरफ देख के बोले, 'यह किताब देकर दोनों सवार चले क्यों गये सो कुछ समझ में नहीं आता, मगर बोली से मालूम होता है कि वह सवार औरत है जिसने मुझे किताब उठा लेने के लिए कहा। देखें चिट्ठी में क्या लिखा है!' यह कह चिट्ठी खोल पढ़ने लगे—

'मेरा जी तुमसे अटका है और जिसको तुम चाहते हो वह बेचारी तिलिस्म में फँसी है। अगर उसको किसी तरह की तकलीफ होगी तो तुम्हारा जी दुःखी होगा। तुम्हारी खुशी से मुझको भी खुशी है यह समझ कर किताब तुम्हारे हवाले करती हूँ। खुशी से तिलिस्म तोड़ो और चन्द्रकान्ता को छुड़ाओ, मगर मुझको भूल न जाना, तुम्हें उसी की कसम जिसको ज्यादा चाहते हो। इस चिट्ठी का जवाब लिखकर उसी जगह रख देना जहाँ से किताब उठाओगे।

चिट्ठी पढ़कर कुमार ने तुरन्त जवाब लिखा—

'इस तिलिस्मी किताब को हाथ में लिये मैंने जिस वक्त तुमको देखा उसी वक्त से तुम्हारे से मिलने को जी तरस रहा है। मैं उस दिन अपने को बड़ा भाग्यवान मानूँगा जिस दिन मेरी आँखें दोनों प्रेमियों को देख के ठंडी होंगी, मगर तुमको तो मेरी सूरत से नफरत है।

तुम्हारा वीरेन्द्र।'

जवाब लिखकर कुमार ने उसी जगह पर रख दिया। वे दोनों सवार दूर खड़े दिखाई दिये, कुमार देर तक खड़े राह देखते रहे मगर वे नजदीक न आये, जब कुमार कुछ दूर हट गये तब उनमें से एक ने आकर चिट्ठी का जवाब उठा लिया और देखते-देखते नजरों की ओट हो गया। कुमार भी फतहसिंह के साथ लश्कर में आये।

कुमार ने कहा, 'देखो तुम्हारे किये कुछ न हुआ मगर मैंने कैसी ऐयारी की कि खोई हुई चीज को ढूँढ़ निकाला, देखो यह तिलिस्मी किताब।' यह कह कुमार ने किताब तेजसिंह के आगे रख दी!

तेजसिंह ने कहा, 'आप जो कुछ ऐयारी करेंगे वह तो मालूम ही है, मगर यह बताइए कि किताब कैसे हाथ लगी? जो बात होती है ताज्जुब की!'

कुमार ने बिल्कुल हाल किताब पाने का कह सुनाया।

आज की रात फिर उसी तरह कटी, सवेरे मामूली कामों से छुट्टी पाकर कुँअर वीरेन्द्रसिंह, तेजसिंह, और, ज्योतिषीजी तिलिस्म में घुसे, तिलिस्मी किताब साथ थी। जैसे-जैसे उसमें लिखा हुआ था, उसी तरह ये लोग तिलिस्म तोड़ने लगे।

तिलिस्मी किताब में पहले ही यह लिखा हुआ था कि तिलिस्म तोड़ने वाले को चाहिए कि जब पहर दिन बाकी रहे तिलिस्म से बाहर हो जाय और उसके बाद कोई काम तिलिस्म तोड़ने का न करे।'

☐ तिलिस्मी खण्डहर में घुसकर पहिले वे लोग उस दालान में गये जहाँ पत्थर के चबूतरे पर पत्थर ही का आदमी सोया हुआ था। कुमार ने इसी जगह से तिलिस्म तोड़ने में हाथ लगाया।

जिस चबूतरे पर पत्थर का आदमी सोया था उसके सिरहाने की तरफ पाँच हाथ हटकर कुमार ने अपने हाथ से जमीन खोदी। गज भर खोदने के बाद एक सफेद पत्थर की चट्टान दिखी जिसमें उठाने के लिए लोहे की मजबूत कड़ी लगी हुई भी दिखाई पड़ी। कड़ी में हाथ डाल के पत्थर उठाकर बाहर किया। तहखाना मालूम हुआ जिसमें उतरने के लिए सीढ़ियाँ बनी थीं।

तेजसिंह ने मशाल जला ली, उसी की रोशनी में सब कोई नीचे उतरे। खूब खुलासा कोठरी देखी, कहीं गर्द या कूड़े का नाम-निशान नहीं, बीच में संगमरमर की खूबसूरत पुतली एक हाथ में काँटी दूसरे हाथ में हथौड़ी लिए खड़ी थी।

कुमार ने उसके हाथ से हथौड़ी काँटी लेकर उसी के बाएँ कान में काँटी डाल हथौड़े से ठोक दी, साथ ही उस पुतली के होठ हिलने लगे और उसमें से बाजे की सी आवाज आने लगी, मालूम होता था मानो वह पुतली गा रही है।

थोड़ी देर तक यही कैफियत रही, यकायक पुतली के बाएँ-दाहिने दो अंग के दो टुकड़े हो गये और उसके पेट में से आठ अंगुल का छोटा-सा गुलाब का पेड़ जिसमें कई फूल भी लगे हुए थे और डाल में एक ताली लटक रही थी, निकला।

बमूजिब लिखे तिलिस्मी किताब के कुमार ने उस ताली में एक रस्सी बाँधी जो पुतली के पेट से निकली थी। रस्सी हाथ में थाम ताली को जमीन में घसीटते हुए कुमार बाग में घूमने लगे। एक फौहारे के पास ताली जमीन में चिपक गई। उसी जगह ये लोग भी ठहर गये। कुमार के कहे मुताबिक सभी ने उस जमीन को खोदना शुरू किया, दो-तीन हाथ खोदा था कि ज्योतिषीजी ने कहा, 'अब पहर भर दिन बाकी रह गया, तिलिस्म से बाहर होना चाहिए।'

कुमार ने ताली उठा ली और चारों आदमी कोठरी की राह से होते हुए ऊपर चढ़ के उस दालान में पहुँचे जहाँ चबूतरे पर पत्थर का आदमी सोया था, उसके सिरहाने की तरफ जमीन खोदकर जो पत्थर की चट्टान निकाली थी उसी को उलट कर तहखाने के मुँह पर ढांक दिया। उसके दोनों तरफ उठाने के लिए कड़ी लगी हुई थी और उल्टी तरफ पर ताला भी बना हुआ था। उसी ताली से जो पुतली के पेट से निकली थी यह ताला बन्द भी कर दिया।

चारों आदमी खण्डहर से निकल कुमार के खेमे में आये। थोड़ी देर आराम कर लेने के बाद तेजसिंह, देवीसिंह और ज्योतिषीजी कुमार से कहके बनकन्या की टोह में जंगल की तरफ रवाना हुए। इस समय दिन दो घण्टे बाकी होगा।

ये तीनों ऐयार थोड़ी ही दूर गये होंगे कि एक नकाबपोश जाता हुआ दिखा, देवीसिंह वगैरह पेड़ों की आड़ दिए उसी के पीछे-पीछे रवाना हुए। वह सवार कुछ पच्छिम हटता हुआ सीधे चुनार की तरफ जा रहा था। कई दफे रास्ते में रुका, पीछे फिर कर देखा और फिर आगे बढ़ा।

उस नकाबपोश के पीछे-पीछे चलते हुए ये तीनों ऐयार पहर रात बीते गंगा किनारे पहुँचे। दूर से जल में दो रोशनियाँ दिखाई पड़ीं, मालूम होता था जैसे दो चन्द्रमा गंगाजी में उतर आए हैं। सफेद रोशनी जल पर फैल रही थी। जब पास पहुँचे देखा कि एक सजी हुई नाव पर कई खूबसूरत औरतें बैठी हैं, बीच में ऊँची गद्दी पर एक कमसिन नाजुक औरत जिसका रोआब देखने वालों पर छा रहा है बैठी है। चाँद-सा चेहरा दूर से चमक रहा है। दोनों तरफ दो माहताब जल रहे हैं।

नकाबपोश ने किनारे पर पहुँचकर जोर से सीटी बजाई, साथ ही उस नाव में से भी इसी तरह सीटी की आवाज आई जैसे किसी ने जवाब दिया हो। उन कई औरतों में से जो उस नाव पर बैठी थीं दो औरतें खड़ी हुई तथा नीचे उतर एक डोंगी जो उस नाव के साथ बँधी हुई थी खोलकर किनारे ला नकाबपोश को उस पर चढ़ा ले गईं।

अब ये तीनों ऐयार आपस में बातें करने लगे···

तेज०, 'मैं जहाँ तक ख्याल करता हूँ यह उन्हीं लोगों की मंडली है जिन्हें कुमार ने देखा था।'

देवी०, 'इसमें तो कोई शक नहीं है।'

ज्यो०, 'तो तैर के चलते क्यों नहीं? तुम तो जल से ऐसा डरते हो जैसे कोई बुड्ढा आफियूनी डरता हो।'

देवी, 'फिर तुम्हारे साथ आने से क्या फायदा हुआ ? तुम्हारी तो बड़ी तारीफ सुनते थे कि ज्योतिषीजी ऐसे हैं; वैसे हैं, पहिया हैं, चर्खे हैं, मगर कुछ नहीं, अदनी-सी मंडली का पता नहीं लगा सकते।'

ज्यो०, 'मैं क्या खाक बताऊँ ? वे लोग तो मुझसे भी ज्यादे उस्ताद मालूम होती हैं ! सभी ने अपने नाम ही बदल दिए हैं, असल नाम का पता लगाना चाहते हैं तो अजीब-अजीब नामों का पता लगता है। किसी का नाम वियोगिनी किसी का नाम योगिनी, किसी का भूतनी, किसी का डाकिनी, भला बताइये क्या मैं मान लूं कि इन लोगों के यही नाम हैं ?'

तेज०, 'तो इन लोगों ने अपना नाम क्यों बदल दिया ?'

ज्यो०, 'हम लोगों को उल्लू बनाने के लिए।'

ये तीनों ऐयार तैर कर नाव के पास जाने लगे। बटुआ ऐयारी का कमर में बाँध कपड़ा-लत्ता किनारे रख जल में उतर गये। मगर दो ही चार हाथ गये होंगे कि पीछे से सीटी की आवाज आई, साथ ही नाव पर जो मशाल जल रहे थे बुझ गये, जैसे किसी ने उन्हें जल्दी से जल में फेंक दिया हो। अब बिल्कुल अंधेरा हो गया, नाव नजरों से छिप गई। देवीसिंह ने कहा, 'लीजिए, चलिए तैर के !'

ज्योतिषी, 'इस नालायक को यह क्या सूझी कि हम लोग जब पानी में उतर चुके तब सीटी बजाई, पहिले ही बजाता तो हम लोग क्यों भीगते।'

ये तीनों ऐयार लौटकर किनारे आये, पहिरने के वास्ते अपना कपड़ा खोजते हैं तो मिलता नहीं।

देवी०, 'ज्योतिषीजी पालागी, लीजिए कपड़े भी गायब हो गये ! हाय इस वक्त अगर इन लोगों में से किसी को पाऊँ तो कच्चा ही चबा जाऊँ।'

तेजसिंह, 'उन लोगों की तारीफ करेंगे, खूब ऐयारी की।'

देवी०, 'हाँ-हाँ, खूब तारीफ कीजिए जिसमें उन लोगों में से अगर कोई सुनता हो तो अब भी आप पर रहम करे और आगे न सतावे !'

ज्योतिषी, 'अब क्या सताना बाकी रह गया ! कपड़े तक तो उतरवा लिए।'

तेज०, 'चलिए अब लश्कर में चलें, इस वक्त और कुछ न बन पड़ेगा।'

आधी रात जा चुकी होगी जब ये लोग ऐयारी के सताये बदन से नंगे धड़ंगे काँपते कलपते लश्कर की तरफ रवाना हुए।

☐ तेजसिंह, देवीसिंह और ज्योतिषीजी के जाने के बाद कुँवर बीरेन्द्रसिंह

इन लोगों के वापस आने के इन्तजार में रात-भर जागते रह गये। तेजसिंह की राय हुई कि इसी तरह नंग-धड़ंग कुमार के पास चलना चाहिए, आखिर तीनों उसी तरह उनके खेमे में गए।

कुँअर बीरेन्द्रसिंह जाग रहे थे, शमादान जल रहा था, इन तीनों ऐयारों की विचित्र सूरत देख कर हैरान हो गये। पूछा, 'यह क्या हाल है?' तेजसिंह ने कहा, 'अभी तो सूरत देख लीजिए। बाकी हाल जरा दम ले के कहेंगे।'

तीनों ऐयारों ने अपने कपड़े मँगवाकर पहिने, इतने में सवेरा हो गया। कुमार ने तेजसिंह से पूछा, 'अब बताओ तुम लोग किस बला में फँस गए?'

'तेज०, 'जिनके ऊपर जान दिए बैठे हैं, जिनकी खोज में हम लोग मारे-मारे फिरते हैं, इसमें तो कोई शक नहीं कि उनका भी प्रेम आपके ऊपर बहुत है, मगर न मालूम इतनी छिपी क्यों फिरती है। उनके साथ भी एक से एक बढ़ के ऐयार हैं, अगर ऐसा जानते तो होशियारी से जाते।'

तेजसिंह ने सब हाल कहा, कुमार सुनकर हँसने लगे और ज्योतिषी जी से बोले, 'आपके रमल को भी उन लोगों ने धोखा दिया।'

ज्यो०, 'कुछ न पूछिए, सब-की-सब आफत हैं।'

कुमार, 'उन लोगों का खुलासा हाल नहीं मालूम हुआ तो भला इतना ही विचार लेते कि शिवदत्त के ऐयारों की कुछ ऐयारी तो नहीं है?'

ज्यो०, 'नहीं, शिवदत्त के ऐयारों से और इन लोगों से कोई वास्ता नहीं।'

तेज०, 'तिलिस्म तोड़ने का काम कैसे चलेगा?'

कुमार, 'एक रोज काम बन्द रहेगा तो क्या होगा?'

तेज०, 'मैं कहता हूँ कि चन्द्रकान्ता की मुहब्बत आपको कम हो गई है।'

कुमार, 'कभी नहीं, चन्द्रकान्ता से बढ़कर मैं दुनिया में किसी को नहीं चाहता मगर न मालूम क्या सबब है कि बनकन्या का हाल मालूम करने के लिए भी बेचैन रहता हैं।'

तेज०, (हँसकर) 'पहिले तो पण्डित बद्रीनाथ ऐयार को ले जाकर उस खोह में कैद करना है फिर दूसरा काम देखेंगे।'

तेजसिंह की राय पक्की ठहरी, वे स्नान पूजा से छुट्टी पाकर तैयार हुए, खाने की चीजों में बेहोशी की दवा मिलाकर बद्रीनाथ को खिलाई

और जब वे बेहोश हो गये तब तेजसिंह गट्ठर बांधकर पीठ पर लाद खोह की तरफ रवाना हुए। कुमार ने देवीसिंह और ज्योतिषीजी को बनकन्या की टोह में भेजा।

तेजसिंह, पण्डित बद्रीनाथ की गठरी लिए शाम होते-होते तहखाने में पहुँचे। शेर के मुंह में हाथ डाल जुबान खैंची और तब दूसरा ताला खोला मगर दरवाजा न खुला। अब तो तेजसिंह के होश उड़ गए, फिर कोशिश की, लेकिन किवाड़ न खुला। बैठ के सोचने लगे, मगर कुछ समझ में न आया। आखिर लाचार हो बद्रीनाथ की गठरी लादे वापिस हुए।

☐ देवीसिंह और ज्योतिषी बनकण्या की टोह में निकलकर थोड़ी ही दूर गए होंगे कि एक नकाबपोश सवार मिला जिसने पुकार के कहा—

'देवीसिंह कहाँ जाते हो ? तुम्हारी चालाकी हम लोगों से न लगेगी, अभी कल आप लोगों की खातिर की गई है और जल में गोते देकर कपड़े सब छीन लिए गए, अब क्या गिरफ्तार ही होना चाहते हो ?

देवी, 'अगर इस इलाके में रहोगे तो बिना पता लगाए न छोड़ेंगे।'

नकाब, 'रहेंगे नहीं तो जायेंगे कहाँ ? रोज मिलेंगे मगर पता न लगने देंगे।'

बात करते-करते देवीसिंह ने चालाकी से कूदकर सवार के मुँह पर से नकाब खींच ली। देखा कि तमाम चेहरे पर रोली मली हुई है, कुछ पहिचान न सके।

सवार ने फुर्ती के साथ देवीसिंह की पगड़ी उतार ली और एक चिट्ठी उनके सामने फेंक घोड़ा तेज कर निकल गया। देवीसिंह ने शर्मिन्दगी के साथ चिट्ठी उठा कर देखा। लिफाफे पर लिखा हुआ था—'कुँअर बीरेन्द्रसिंह'।

ज्योतिषीजी ने देवीसिंह से कहा, 'न मालूम ये लोग कहाँ के रहने वाले हैं ! मुझे तो मालूम होता है कि इस मंडली में जितने हैं सब ऐयार ही हैं।'

दोनों आदमी लौटकर लश्कर में आये और कुँअर बीरेन्द्रसिंह के डेरे में पहुँच कर सब हाल कहके चिट्ठी हाथ में दे दी। कुमार ने पढ़ा, यह लिखा हुआ था—

'चाहे जो हो, पर मैं आपके सामने तब तक नहीं हो सकती जब तक आप नीचे लिखी बातों का लिखकर इकरार न कर लें।

(1) चन्द्रकान्ता से और मुझसे एक ही दिन एक ही सायत में शादी हो।

(2) चन्द्रकान्ता से रुतबे में मैं किसी तरह कम न समझी जाऊँ क्योंकि मैं हर तरह पर दर्जे में उसके बराबर हूँ।

अगर इन दोनों बातों का इकरार आप न करेंगे तो कल ही अपने घर का रास्ता लूँगी। सिवाय इसके यह भी कहे देती हूँ कि बिना मेरी मदद के चाहे आप हजार बरस भी कोशिश करें मगर चन्द्रकान्ता को नहीं पा सकते।

देवीसिंह और ज्योतिषीजी को भी कुमार ने वह चिट्ठी दिखाई। वे लोग भी हैरान थे कि बनकन्या ने यह क्या लिखा और इसका जवाब क्या देना चाहिए।

दिन और रात-भर कुमार इसी सोच में रहे कि इस चिट्ठी का क्या जवाब दिया जाय। दूसरे दिन सुबह होते-होते तेजसिंह भी पण्डित बद्रीनाथ ऐयार की गठरी पीठ पर लादे हुए आ पहुँचे।

कुमार ने पूछा, 'वापस क्यों आ गए?'

तेज०, 'तहखाने का दरवाजा नहीं खुलता।'

ज्यो०, 'एक बात जरूर है, या तो कोई नया आदमी पहुँचा जिसने दरवाजा खोलने की कल को बिगाड़ दिया, या फिर महाराज शिवदत्त ने भीतर कोई चालाकी की।'

तेज०, 'भला शिवदत्त अन्दर से बन्द करके अपने को और बला में क्यों फँसावेगा? इसमें तो उसका हर्ज ही है कुछ फायदा नहीं।'

कुमार, 'कहीं बनकन्या ने तो कोई तरकीब नहीं की।'

देवी०, 'मुझे भी कुछ उन्हीं का बखेड़ा मालूम होता है।'

तेज०, 'अगर बनकन्या को हमारे साथ कुछ फसाद करना होता तो तिलिस्मी किताब क्यों वापस देती?'

ज्यो०, 'यह भी तुम्हारा कहना ठीक है।'

तेज०, (कुमार से) 'भला वह चिट्ठी तो दीजिए जिसमें बनकन्या ने यह लिखा है कि बिना हमारी मदद के चन्द्रकान्ता से मुलाकात नहीं हो सकती।'

कुमार ने यह चिट्ठी तेजसिंह के हाथ में दे दी, पढ़कर तेजसिंह बड़े सोच में पड़ गये कि यह क्या बात है, कुछ अक्ल काम नहीं करती। कुमार ने कहा, 'तुम लोग यह जानते ही हो कि बनकन्या की मुहब्बत मेरे दिल में कैसा असर कर गई है, बिना देखे एक घड़ी चैन नहीं पड़ता, तो फिर उसके

लिखे बमूजिब एकारारनामा लिख देने में क्या हर्ज है, जब खुश होगी तो उससे जरूर ही कुछ-न-कुछ भेद मिलेगा।'

तेज०, 'जो मुनासिब समझिए कीजिए, चन्द्रकान्ता बेचारी तो कुछ न बोलेगी। मगर महाराज जयसिंह यह कब मंजूर करेंगे कि एक ही मंड़वे में दोनों की साथ-साथ शादी हो! क्या जाने वह कौन, कहाँ की रहने वाली और किसकी लड़की है?'

कुमार, 'उसकी चिट्ठी में तो यह भी लिखा है कि मैं किसी तरह रुतबे में कुमारी से कम नहीं हूँ।'

ये बातें हो ही रही थीं कि चोबदार ने आकर अर्ज किया, 'एक सिपाही बाहर आया है जो हाजिर होकर कुछ कहना चाहता हैं। कुमार ने कहा, 'उसे ले आओ।' चोबदार उस सिपाही को अन्दर ले आया। उसने झुककर कुमार को सलाम किया।

सभी को उसकी सूरत देखकर हँसी आयी मगर हँसी को रोक तेजसिंह ने पूछा, 'तुम कौन हो और कहाँ से आये?' उस बाँके जवान ने कहा, 'मैं देवता हूँ, दैत्यों की मडली से आ रहा हूँ, कुमार से उस चिट्ठी का जवाब चाहता हूँ जो कल एक सवार ने देवीसिंह और जगन्नाथ, ज्योतिषी को दी थी।'

तेज०, 'भला तुमने ज्योतिषीजी और देवीसिंह का नाम कैसे जाना?'

बाँका, 'ज्योतिषीजी को तो मैं तब से जानता हूँ जब से वे इस दुनिया में नहीं आये थे, और देवीसिंह तो हमारे चेले ही हैं।'

देवी०, 'क्यों बे शैतान, हम कब से तेरे चेले हुए? बेअदबी करता है?'

बाँका, 'बेअदबी तो आप करते हैं कि उस्ताद को बे-बे करके बुलाते हैं, कुछ इज्जत नहीं करते!'

देवीसिंह और कुछ कहना ही चाहते थे कि तेजसिंह ने रोक दिया और कहा, 'चुप रहो, मालूम होता है यह कोई ऐयार या मसखरा है, तुम खुद ऐयार होकर जरा दिल्लगी में रंज हो जाते हो!'

तेजसिंह उस शैतान की सूरत को गौर से देखने लगे। वह बोला, 'आप मेरी सूरत क्या देखते हैं, मैं ऐयार नहीं हूँ, अपनी सूरत मैंने रंगी नहीं है, गरम पानी मँगाइये धोकर दिखा दूँ। मैं आज से काला नहीं हूं, लगभग चार सौ वर्षों से मेरा यही रंग हो रहा है।'

तेजसिंह हँस पड़े और बोले, 'जो हो अच्छे हो, मुझे और जाँचने की कोई जरूरत नहीं, अगर दुश्मन का आदमी होता तो ऐसा करते मगर तुमसे

क्या ? ऐयार हो तो मसखरे हो तो, इसमें कोई शक नहीं कि दोस्त के आदमी हो ?'

यह सुन उसने झुककर सलाम किया और कुमार की तरफ देखकर कहा, 'मुझको जवाब मिल जाये क्योंकि बड़ी दूर जाना है।' कुमार ने उसी चिट्ठी की पीठ पर यह लिख दिया, 'मुझको सब कुछ दिलोजान से मंजूर है !' बाद इसके अपनी अंगूठी से मोहर कर उस बाँके जवान के हवाले किया, चिट्ठी लेकर खेमे के बाहर हो गया।

☐ कुमार ने दरबार बर्खास्त किया स्नान पूजा से छुट्टी पाकर खेमे में बैठे, ऐयार लोग और फतहसिंह भी हाजिर हुए। अभी किसी किस्म की बातचीत नहीं हुई थी कि चोबदार ने आकर अर्ज किया, 'एक बुड्ढी औरत हाजिर हुई है कुछ कहना चाहती है।'

कुमार ने कहा, 'उसे जल्दी अन्दर लाओ।' चोबदार ने उस बुड्ढी को हाजिर किया, देखते ही तेजसिंह के मुँह से निकला, 'क्या पिशाचों और डाकिनियों का दड़वा खुल पड़ा है ?'

उस बुड्ढी ने भी यह बात सुन ली, लाल-लाल आँखें कर तेजसिंह की तरफ देखने लगी और बोली, 'बस अब कुछ न कहूँगी जाती हूँ, मेरा क्या बिगड़ेगा जो कुछ नुकसान होगा कुमार का होगा।' यह कह खेमे के बाहर चली गई। कुमार का इशारा पाकर चोबदार समझा-बुझाकर उसे पुनः ले आया।

तेजसिंह ने पूछा, 'क्यों क्या चाहती है।'

बुड्ढी, 'जरा दम ले लूँ तो कहूँ, फिर तुमसे क्यों कहने लगी, जो कुछ है खास कुमार ही से कहूँगी।'

कुमार, 'अच्छा मुझ ही से कह, क्या कहती है ?'

बुड्ढी, 'तुमसे तो कहूँगी ही, तुम्हारे बड़े मतलब की बात है।'

उस बुड्ढी की बात सुन कर सब दंग हो गए और सोचने लगे कि यह कौन सा काम कर आई है कि आसमान पर चढ़ी जाती है। आखिर कुमार ने कसम खाई कि 'चाहे तू कुछ कहे मगर हम या हमारा कोई आदमी तुझे कुछ न कहेगा।' तब वह फिर बोली, 'मैं उस बनकन्या का पूरा पता आपको दे सकती हूँ और एक तरकीब ऐसी बता सकती हूँ कि आप घड़ी भर में बिल्कुल तिलिस्म तोड़कर कुमारी चन्द्रकान्ता से जा मिलें।'

बुड्ढी की बात सुनकर सब खुश हो गये। कुमार ने कहा, 'अगर ऐसा ही है तो जल्द बता दो कि वह बनकन्या कौन है और घड़ी भर में तिलिस्म कैसे टूटेगा।'

कुमार, 'अच्छा क्या इनाम लेगी पहिले यह तो सुन लूं।'

बुड्ढी, 'बस और कुछ नहीं केवल इतना ही कि आप मुझसे शादी कर लें, बनकन्या और चन्द्रकान्ता से तो चाहे जब शादी हो मगर मुझसे आज ही हो जाये क्योंकि मैं बहुत दिनों से तुम्हारे इश्क में फँसी हुई हूँ, बल्कि तुम्हारे मिलने की तरकीबें सोचते-सोचते बुड्ढी हो चली। आज मौका मिला कि तुम मेरे हाथ फँस गए, बस अब देर मत करो नहीं तो मेरी जवानी निकल जायेगी, फिर पछताओगे।'

बुड्ढी की बातें सुन मारे गुस्से के कुमार का चेहरा लाल हो गया और उनके ऐयार लोग भी दाँत पीसने लगे मगर क्या करें लाचार थे, अगर कुमार कसम न खा चुके होते तो ये लोग उस बुड्ढी की पूरी दुर्गति कर देते।

तेजसिंह ने ज्योतिषीजी से पूछा, 'आप बताइए यह कोई ऐयार है या सचमुच जैसी दिखाई देती है वैसी ही है? अगर कुमार कसम न खाए होते तो हम लोग किसी तरकीब से मालूम कर ही लेते।'

बुड्ढी ने कहा, 'अगर मेरी बात न मानोगे तो पछताओगे, तुम्हारा सब काम बिगाड़ दूंगी, देखो उस तहखाने में मैंने कैसा ताला लगा दिया कि तुमसे खुल न सका, आखिर बद्रीनाथ की गठरी लेकर वापस आए, अब जाकर महाराज शिवदत्त को छुड़ा देती हूँ फिर और फसाद करूँगी!'

यह कहती हुई गुस्से के मारे लाल-लाल आँखें लिए खेमे के बाहर निकल गई, तेजसिंह के इशारे से देवीसिंह भी उसके पीछे-पीछे चले गए।

कुमार, 'क्यों तेजसिंह, यह चुड़ैल तो अजब आफत मालूम पड़ती है, कहती है कि तहखाने में मैंने ही ताला लगा दिया था।'

तेज०, 'इसकी सचाई-झुठाई तो शिवदत्त के छूटने ही से मालूम हो जायेगी, अगर सच्ची निकली तो बिना जान से मारे न छोड़ूंगा।'

कुमार, 'आजकल तुम लोगों की ऐयारी में उल्ली लग गई है, कुछ बनकन्या का पता लगाया कुछ अब डाकिनी की खबर लगाओगे!'

कुमार की यह बात तेजसिंह और ज्योतिषीजी को तीर के समान लगी मगर कुछ बोले नहीं, सिर्फ उठके खेमे के बाहर चले गए। दिन बीत गया और शाम हुई।

कुमार ने फतहसिंह को बुलाया, जब वे आये तो पूछा, 'तेजसिंह कहाँ है ?' उन्होंने जवाब दिया, 'कुछ मालूम नहीं, अभी-अभी ज्योतिषीजी को साथ लेकर कहीं गए हैं ?'

देवीसिंह उस बुड्ढी के पीछे रवाना हुए जब तक दिन बाकी रहा बुड्ढी चलती गई। उन्होंने भी पीछा न छोड़ा। कुछ रात गये तक वह चुड़ैल एक छोटे से पहाड़ के दर्रे में पहुँची जिसके दोनों तरफ ऊँची-ऊँची पहाड़ियाँ थीं। थोड़ी दूर इस दर्रे के अन्दर जा वह एक खोह में घुस गई जिसका मुँह बहुत छोटा सिर्फ एक आदमी के जाने लायक था।

देवीसिंह ने समझा शायद यही इसका घर होगा, यह सोच एक पेड़ के नीचे बैठ गये। रात भर उसी तरह बैठे रह गये मगर फिर वह बुढ़िया उस खोह में से बाहर न निकली, सवेरा होते ही देवीसिंह भी उसी खोह में घुसे।

उस खोह के अन्दर बिल्कुल अन्धकार था, देवीसिंह टटोलते हुए चले जा रहे थे। अगल-बगल जब हाथ फैलाते तो दीवार मालूम पड़ती जिससे जाना जाता कि यह खोह एक सुरंग के तौर पर है, इसमें कोई कोठरी या रहने की जगह नहीं है। लगभग दो मील गए होंगे कि सामने की तरफ चमकती हुई रोशनी नजर आई। जैसे-जैसे आगे जाते थे रोशनी बड़ी मालूम होती थी, जब पास पहुँचे तो सुरंग के बाहर निकलने का दरवाजा देखा।

देवीसिंह बाहर हुए, अपने को एक छोटी-सी नदी के किनारे पाया इधर-उधर निगाह दौड़ाकर देखा तो चारों तरफ घना जंगल, कुछ मालूम न पड़ा कि कहाँ चले आए और लश्कर में जाने की कौन राह है। दिन भी पहर भर से ज्यादे जा चुका था, सोचने लगे कि उस बुड्ढी ने खूब छकाया।

देवीसिंह मारे गुस्से के दाँत पीसने लगे मगर कर ही क्या सकते थे ? बुड्ढी तो मिली नहीं कि कसर निकालते, आखिर लाचार हो उसी सुरंग की राह से वापस हुए और शाम होते-होते लश्कर में पहुँचे।

कुमार के खेमे में गये, देखा कि कई आदमी बैठे हैं और बीरेन्द्रसिंह फतहसिंह से बातें कर रहे हैं। देवीसिंह को देख सब कोई खेमे के बाहर चले गए, सिर्फ फतहसिंह रह गये। कुमार ने पूछा, 'क्यों उस बुड्ढी की क्या खबर लाए ?'

देवी०, 'बुड्ढी ने तो बेहिसाब धोखा दिया।'

इतने में तेजसिंह और ज्योतिषीजी वहाँ आ पहुँचे। इस वक्त उनके चेहरे पर खुशी और मुस्कुराहट झलक रही थी जिससे सब समझे कि जरूर कोई काम कर आए हैं। कुमार ने पूछा, 'क्यों क्या खबर है?'

तेज०, 'अच्छी खबर है।'

देवी०, 'भला उस्ताद हमें भी बताओगे या नहीं!'

तेज०, 'क्या तुमने उस्ताद कहकर पुकारा इससे तुमको बता दें!'

देवी०, 'झख मारोगे और बताओगे!'

तेज०, (हँसकर), 'तुम कौन सा जस लगा आए पहिले यह तो कहो!'

देवी०, 'मैं तो आपकी शागिर्दी में बट्टा लगा आया!'

ये बातें हो हो रही थीं कि चोबदार ने आकर हाथ जोड़ अर्ज किया कि महाराज शिवदत्त के दीवान आये हैं।' सुनकर कुमार ने तेजसिंह की तरफ देखा फिर कहा, 'अच्छा आने दो, उनके साथ वाले बाहर ही रहें।'

महाराज शिवदत्त के दीवान खेमे में हाजिर हुए और सलाम करके बहुत सा जवाहिर नजर दिया। कुमार ने हाथ से छू दिया। दीवान ने अर्ज किया, 'यह नजर महाराज शिवदत्त की तरफ से ले आया हूँ ईश्वर की दया और आपकी कृपा से महाराज कैद से छूट गए हैं। आते ही दरबार को हुक्म दिया कि आज से हमने कुँवर बीरेन्द्रसिंह की तावेदारी कबूल की, हमारे जितने मुलाजिम या ऐयार हैं वे भी आज से ही कुमार को अपना मालिक समझें, बाद इसके मुझको यह नजर और अपने हाथ की लिखी चिट्ठी देकर हजूर में भेजा है, इस नजर को कबूल किया जाये!'

कुमार ने नजर कबूल कर तेजसिंह के हवाले की और दीवान साहब को बैठने का इशारा किया, वे चिट्ठी देकर बैठ गये।

कुछ रात जा चुकी थी, कुमार ने उसी वक्त दरबार आम किया, जब अच्छी तरह दरबार भर गया तब तेजसिंह को हुक्म दिया कि चिट्ठी जोर से पढ़ो। तेजसिंह ने पढ़ना शुरू किया। लम्बे-चौड़े सिरनामे के बाद यह लिखा था—

'मैं किसी ऐसे सबब से उस तहखाने की कैद से छूटा जो आप ही की कृपा से छूटना कहला सकता है। आप जरूर इस बात को सोचेंगे कि आपकी दया से कैसे छूटा, आपने तो कैद ही किया था, तो ऐसा सोचना न चाहिए। किसी सबब से मैं अपने छूटने का खुलासा हाल नहीं कह सकता और न हाजिर ही हो सकता हूँ। मगर जब मौका होगा और आपको मेरे

छूटने का हाल मालूम होगा यकीन हो जाएगा कि मैंने झूठ नहीं कहा था। अब मैं उम्मीद करता हूँ कि आप मेरे बिल्कुल कसूरों को माफ करके यह नजर कबूल करेंगे। आज से हमारा कोई ऐयार या मुलाजिम आपसे ऐयारी या दगा न करेगा और आप भी इस बात का ख्याल रखें।

आपका

—शिवदत्त।'

इस चिट्ठी को सुनकर सब खुश हो गये। कुमार ने हुक्म दिया कि पण्डित बद्रीनाथ जो हमारे यहाँ कैद हैं लाये जावें। जब वे आये कुमार के इशारे से उनके हाथ-पैर खोल दिए गये। उन्हें भारी खिलअत पहिराकर दीवान साहब के हवाले किया और हुक्म दिया कि आप दो रोज यहाँ रह कर तब चुनार जायें फतहसिंह को उनकी मेहमानी के लिए हुक्म देकर दरबार बर्खास्त किया।

☐ जब दरबार बर्खास्त हुआ आधी रात जा चुकी थी। फतहसिंह दीवान साहब को लेकर अपने खेमे में गये। थोड़ी देर बाद कुमार के खेमे में तेजसिंह, देवीसिंह और ज्योतिषीजी फिर इकट्ठे हुए। उस वक्त सिवाय इन चार आदमियों के और कोई यहाँ न था।

कुमार, 'क्यों तेजसिंह, बुढ़िया की बात तो ठीक निकली!'

तेज०, 'जी हाँ, मगर महाराज शिवदत्त की चिट्ठी से तो कुछ और ही बात पाई जाती है।'

देवीसिंह, 'उसके लिखने का कौन ठिकाना, कहीं वह धोखा न देता हो।'

ज्यो०, 'इस वक्त बहुत सोच-विचार कर काम करने का मौका है। चाहे शिवदत्त कैसी ही सफाई दिखाये मगर दुश्मन का विश्वास कभी न करना चाहिए।'

कुमार, 'खैर जो कुछ होगा देखा जायेगा, अब कल से तिलिस्म तोड़ने में जरूर हाथ लगाना चाहिए।'

तेज०, 'हाँ कल जरूर तिलिस्म की कार्रवाई शुरू हो।'

कुमार, 'अच्छा, अब तुम लोग भी जाओ।'

तीनों ऐयार कुमार से विदा हो अपने-अपने डेरे में गए। दूसरे दिन कुँवर बीरेन्द्रसिंह तीनों ऐयारों को साथ ले तिलिस्म में गए, तिलिस्मी किताब और ताली भी साथ ले ली। दालान में पहुँचकर तहखाने का

ताला खोल पत्थर की चट्टान निकाल कर अलग किया और नीचे उतर कर कोठरी में होते हुए बाग में पहुँचे जहाँ थोड़ी-सी जमीन खोदकर छोड़ आये थे।

उसी जमीन को ये लोग मिलकर फिर खोदने लगे। आठ-नौ हाथ जमीन खोदने के बाद एक सन्दूक मालूम पड़ा जिसके ऊपर का पल्ला बन्द था और ताले का मुँह एक छोटे से ताँबे के पत्थर से ढँका हुआ था जिसमें अन्दर मिट्टी न जाने पावे।

कुमार ने चाहा कि सन्दूक को बाहर निकाल लें मगर न हो सका, ज्यों-ज्यों चारों तरफ से मिट्टी हटाते थे नीचे से सन्दूक चौड़ा निकला आता था। कोशिश करने पर भी इसका पता न लग सका कि वह जमीन में कितने नीचे तक गड़ा हुआ है। आखिर लाचार होकर कुमार ने तिलिस्मी किताब खोली और पढ़ने लगे। यह लिखा हुआ था—

ताली में रस्सी बाँधकर जब बाग में उसे घसीटते फिरोगे तो एक जगह वह ताली जमीन से चिपक जाएगी। यहाँ की थोड़ी मिट्टी हटाकर ताली उठा लेना, इसके बाद उस जमीन को खोदना जब तक कि एक सन्दूक का मुंह न दिखाई पड़े। जब सन्दूक के ऊपर का हिस्सा निकल आवे खोदना बन्द कर देना क्योंकि असल में वह सन्दूक नहीं दरवाजा है। बाग के बीचों-बीच जो फौवारा है उसके पूरब तरफ ठीक सात हाथ हटकर जमीन खोदना, एक हाँड़ी निकलेगी उसी में उसकी ताली है, उसे लाकर उस तहखाने का ताला खोलना, सीढ़ियाँ दिखलाई पड़ेंगी, उसी रास्ते में नीचे उतरना।

थोड़ी ही दूर जाकर एक चमकती कोठरी मिलेगी जिसमें की कुल चीजें दिखाई पड़ती होंगी। तमाम कोठरी में नीचे से ऊपर तक तार लगे होंगे। बहुत खोज करने की कोई जरूरत नहीं, तलवार से जल्दी-जल्दी उन तारों को काटकर बाहर निकल आना।'

सभी ने मुंह पर कपड़े लपेटे और अन्दर घुसकर चमकती हुई कोठरी में पहुँचे। जहाँ तक हो सका जल्दी-जल्दी उन तारों को काटकर तहखाने के बाहर निकल आये।

मुँह पर कपड़ा तो लपेटे हुए थे तिस पर भी थोड़ा-बहुत धुआँ दिमाग में चढ़ ही गया जिससे सभी की तबीयत घबड़ा गई। तहखाने के बाहर निकलकर दो घण्टे तक चारों आदमी बेसुध पड़े रहे, जब होश-हवाश ठिकाने हुए तब तेजसिंह ने ज्योतिषीजी से पूछा, 'अब कितना दिन बाकी है।' उन्होंने जवाब दिया, 'अभी चार घण्टे बाकी हैं।'

कुमार ने कहा, 'अब कोई काम करने का वक्त नहीं रहा। एक घंटे में क्या हो सकता है ?' ज्योतिषीजी की भी यही राय ठहरी। आखिर चारों आदमी बाग के बाहर रवाना हुए और कोठरी तथा तहखाने के रास्ते होकर खण्डहर के दालान में आये। पहिले की तरह चट्टान को तहखाने के मुँह पर रख ताला बन्द कर दिया और खण्डहर के बाहर होकर अपने खेमे में चले आये।

थोड़ी देर आराम करने के बाद कुमार के जी में आया कि जरा जंगल में इधर-उधर घूमकर हवा खानी चाहिये ! तेजसिंह से कहा, वह भी इस बात पर मुस्तैद हो गये, आखिर तीनों ऐयारों को साथ लेकर लश्कर के बाहर हुए। कुमार घोड़े पर और तीनों ऐयार पैदल थे।

कुमार धीरे-धीरे जा रहे थे। कोस-भर के करीब गये होंगे कि मोटे से साखू के पेड़ में कुछ लिखा हुआ एक कागज चिपका नजर पड़ा। तेजसिंह ने कहा, 'देखो यह कैसा कागज चिपका है और क्या लिखा है ?' यह सुन कर देवीसिंह ने उस पेड़ के पास जाकर पढ़ा, यह लिखा हुआ था—

'क्यों, अब तुमको मालूम हुआ कि मैं कैसी आफत हूँ ! कहती थी कि मुझसे शादी कर लो तो एक घण्टे में तिलिस्म तोड़ कर चन्द्रकान्ता से मिलने की तरकीब बता दूँ। किन्तु तुमने न माना, आखिर मैंने भी गुस्से में आकर महाराज शिवदत्त को छुड़ा दिया। अब क्या इरादा है ? शादी करोगे या नहीं ? अगर मंजूर हो तो जवाब लिख कर इसी पेड़ से चिपका दो, मैं तुरन्त तुम्हारे पास चली आऊँगी और अगर नामंजूर हो तो साफ जवाब दे दो। अबकी दफे मैं चन्द्रकान्ता और चपला को जान से मारकर कलेजा ठण्डा करूँगी। मुझे तिलिस्म में जाते कितनी देर लगती है, दिन में तेरह दफे जाऊँ और आऊँ। अपनी भलाई और मेरी जवानी की तरफ ख्याल करो। मेरे सामने तुम्हारे ऐयारों की ऐयारी कुछ न चलेगी। उस दिन देवीसिंह ने मेरा पीछा किया था मगर क्या कर सके ? मानो, जिद्द मत करो, मेरे ही कहने से शिवदत्त तुम्हारा दोस्त बना है, अब भी समझ जाओ !

तुम्हारी—सूरजमुखी।'

इसे पढ़ देवीसिंह ने हाथ के इशारे से सभी को अपने पास बुलाया और कहा, 'आप लोग भी इसे पढ़ लीजिए।'

सभी उदास होकर अपने लश्कर में लौट आए और तीनों ऐयारों के साथ अपने खेमे में चले गये।

थोड़ी देर उसी सूरजमुखी की बातचीत होती रही। पहर रात गई होगी जब तेजसिंह ने कुमार से कहा, 'हम लोग इस वक्त बालादवी को जाते हैं, शायद कोई नई बात नजर पड़ जाए।' कहकर तेजसिंह, देवीसिंह और ज्योतिषीजी कुमार से विदा हो गश्त लगाने चले गए। कुमार भी कुछ भोजन करके पलंग पर जा लेटे। नींद काहे को आती थी, पड़े-पड़े कुमारी चन्द्रकान्ता की बेबसी, बनकन्या की चाह और बुड्ढी चुड़ैल की शैतानी को सोचते आधी रात से भी ज्यादा गुजर गई। इतने में खेमे के अन्दर किसी के आने की आहट मिली, दरवाजे की तरफ देखा तो तेजसिंह नजर पड़े। बोले, 'कहो तेजसिंह, कोई नई खबर लाये क्या?'

तेज०, 'हाँ एक बढ़िया चीज हाथ लगी है।'

कुँअर बीरेन्द्रसिंह, तेजसिंह के पीछे-पीछे खेमे के बाहर हुए। देखा कि कुछ दूर पर रोशनी हो रही है और बहुत से आदमी इकट्ठे हैं। पूछा, 'यह भीड़ कैसी है?' तेजसिंह ने कहा, 'चलिए देखिए, बड़ी खुशी की बात है!'

कुमार के पास पहुँचते ही भीड़ हटा दी गई। कई मशाल जल रहे थे जिनकी रोशनी में कुमार ने देखा कि क्रूरसिंह की खून से भरी हुई लाश पड़ी है, कलेजे में एक खंजर घुसा हुआ अभी तक मौजूद है। कुमार ने तेजसिंह से कहा, 'क्यों तेजसिंह, आखिर तुमने इसको मार ही डाला।'

तेज०, 'बालादवी करते (गश्त लगाते) हम लोग इस तिलिस्मी खण्डहर के पिछवाड़े चले गये। दूर से देखा कि तीन-चार आदमी खड़े हैं। जब तक हम लोग पास जायँ वे सब लोग भाग गये। देखा तो क्रूरसिंह की लाश पड़ी थी। तब देवीसिंह को भेज यहाँ से डोली और कहार मँगवाये और इस लाश को ज्यों-का-त्यों उठवा लाये, अभी मरा नहीं है, बदन गर्म है, मगर बचेगा नहीं।'

कुमार, 'बड़े ताज्जुब की बात है! इसे किसने मारा? अच्छा वह खंजर तो निकालो जो इसके कलेजे में घुसा है।'

तेजसिंह ने खंजर निकाला और पानी से धोकर कुमार के पास लाये। मशाल की रोशनी में उसके कब्जे पर निगाह की तो कुछ खुदा हुआ मालूम पड़ा। खूब गौर करके देखा तो बारीक हरफों में 'चपला' नाम खुदा हुआ था। तेजसिंह ने ताज्जुब से कहा, 'देखिये इस पर तो चपला का नाम खुदा है और इस खंजर को मैं बखूबी पहिचानता भी हूँ, यह बराबर चपला की कमर में बँधा रहता था मगर फिर यहाँ कैसे आया? क्या चपला ने इसे मारा है?'

देवी०, 'चपला बेचारी तो खोह में कुमारी चन्द्रकान्ता के पास बैठी होगी जहाँ चिराग भी न जलता होगा।'

कुमार, 'तो वहाँ से इस खंजर को कौन लाया?'

तेज०, 'इसके सिवाय यह भी सोचना चाहिए कि क्रूरसिंह यहाँ क्यों आया? वह तो महाराज शिवदत्त के साथ था और उसका दीवान खुद ही आया हुआ है जो कहता है कि महाराज अब आपसे दुश्मनी नहीं करेंगे।'

कुमार, 'किसी को भेजकर महाराज शिवदत्त के दीवान को बुलवाओ।'

तेजसिंह ने देवीसिंह को कहा कि तुम ही जाकर बुला लाओ। देवीसिंह गये, उन्हें नींद से उठाकर कुमार का सन्देशा दिया, वे बेचारे भी घबड़ाये हुए जल्दी-जल्दी कुमार के पास आये। फतहसिंह भी उसी जगह पहुँचे। दीवान साहब क्रूरसिंह की लाश को देखते ही बोले, 'बस यह बदमाश तो अपनी सजा को पहुँच चुका, मगर इसके साथी अहमद और नाजिम बाकी हैं, उनकी भी यही गति होती तो कलेजा ठण्डा होता!' कुमार ने पूछा, 'क्या यह आपके यहाँ अब नहीं है!' दीवान साहब ने जवाब दिया, 'नहीं, जिस रोज महाराज तहखाने से छूटकर आये और हुक्म दिया कि हमारे यहाँ का कोई भी आदमी कुमार के साथ दुश्मनी का ख्याल न रक्खे उसी वक्त क्रूरसिंह अपने बाल-बच्चों तथा नाजिम और अहमद को साथ लेकर चुनार से भाग गया, पीछे महाराज ने खोज भी कराई मगर कुछ पता न लगा।'

देखते-देखते क्रूरसिंह ने तीन-चार दफे हिचकी ली और दम तोड़ दिया। कुमार ने तेजसिंह से कहा, 'अब यह मर गया, इसको ठिकाने पहुँचाओ और खंजर को तुम अपने पास रक्खो, सुबह देखा जायेगा।' तेजसिंह ने क्रूरसिंह की लाश को उठवा दिया और सब अपने खेमे में गये।

☐ सुबह को कुमार ने स्नान-पूजा से छुट्टी पाकर तिलिस्म तोड़ने का इरादा किया और तीनों ऐयारों को साथ ले तिलिस्म में घुसे। कल की तरह तहखाने और कोठरियों में से होते हुए उसी बाग में पहुँचे। स्याह पत्थर के दालान में बैठ गये और तिलिस्मी किताब खोलकर पढ़ने लगे, यह लिखा हुआ था--

'जब तुम तहखाने में उतर धुएँ से जो उसके अन्दर भरा होगा दिमाग को बचाकर तारों को काट डालोगे तब उसके थोड़ी देर बाद कुल धुआँ जाता रहेगा। स्याह पत्थर की बारहदरी में संगमरमर के सिंहासन पर चौखूटे सुर्ख पत्थर पर कुछ लिखा हुआ तुमने देखा होगा, उसके छूने से न केवल आदमी के बदन में सनसनाहट पैदा होती है बल्कि उसे छूने वाला थोड़ी देर में बेहोश होकर गिर पड़ता है, मगर ये कुल बातें उन तारों के काटने से जाती रहेंगी क्योंकि अन्दर-ही-अन्दर यह तहखाना उस बारहदरी के नीचे तक चला गया है और उसी सिंहासन से उन तारों का लगाव है जो नीचे मसालों और दवाइयों में घुसे हुए हैं। दूसरे दिन फिर धुएँ वाले तहखाने में जाना, धुआँ बिल्कुल न पाओगे, मशाल जला लेना और बेखौफ जाकर देखना कि कितनी दौलत तुम्हारे वास्ते वहाँ रक्खी हुई है। बाहर निकाल लो और जहाँ मुनासिब समझो रक्खो। जब तक बिल्कुल दौलत तहखाने में से निकल न जाय तब तक दूसरा काम तिलिस्म का मत करो। स्याह बारहदरी में संगमरमर के सिंहासन पर जो चौखूटा सुर्ख पत्थर रक्खा हैं उसको भी ले आओ। असल में वह एक छोटा सा सन्दूक है जिसके भीतर नायाब चीजें हैं। उसकी ताली इसी तिलिस्म में तुमको मिलेगी।'

कुमार ने इन सब बातों को फिर दोहरा के पढ़ा, इसके बाद उस धुएँ वाले तहखाने में जाने को तैयार हुए। तेजसिंह, देवीसिंह और ज्योतिषीजी तीनों ने मशालें बाल लीं और कुमार के साथ उस तहखाने में उतरे। अन्दर उसी कोठरी में गये जिसमें बहुत-सी तारें काटी थीं। इस वक्त रोशनी में मालूम हुआ कि सब तारें कटी हुई इधर-उधर फैल रही हैं। कोठरी खूब लम्बी-चौड़ी है। सैकड़ों लोहे और चाँदी के बड़े-बड़े सन्दूक चारों तरफ पड़े हैं। एक तरफ दीवार में खूँटी के साथ तालियों का गुच्छा भी लटक रहा है।

कुमार ने उस ताली के गुच्छे को उतार लिया। मालूम हुआ कि इन्हीं सन्दूकों की यह तालियाँ हैं। एक सन्दूक को खोलकर देखा तो हीरे के जड़ाऊ जनाने जेवरों से भरा पाया, तुरन्त बन्द कर दिया और दूसरे सन्दूक को खोला, कीमती हीरों से जड़ी नायाब कब्जों की तलवारें और खंजर नजर आये। कुमार ने उसे भी बन्द कर दिया और बहुत खुश होकर तेजसिंह से कहा—

'बेशक इस कोठरी में बड़ा भारी खजाना है। अब इसको यहाँ खोलकर देखने की कोई जरूरत नहीं, सन्दूकों को कोई बाहर निकलवाओ,

एक-एक कर देखते और नौगढ़ भिजवाते जाएँगे। जहाँ तक जल्दी हो इन सभी को उठवाना चाहिए।'

तेजसिंह ने जवाब दिया, 'चाहे कितनी भी जल्दी की जाय मगर दस रोज से कम में इन सन्दूकों का यहाँ से निकलना मुश्किल है। अगर आप एक-एक को देखकर नौगढ़ भेजने लगेंगे तो बहुत दिन लग जाएँगे और तिलिस्म तोड़ने का काम अटका रहेगा, इससे मेरी समझ में यही बेहतर है कि इन सन्दूकों को बिना देखे ज्यों-का-त्यों नौगढ़ भेज दिया जाय। जब सब कामों से छुट्टी मिलेगी तब खोलकर देख लिया जायगा। ऐसा करने से किसी को मालूम भी न होगा कि इनमें क्या निकला और दुश्मनों की आँख भी न पड़ेगी। न मालूम कितनी दौलत इनमें भरी हुई है जिसकी हिफाजत के लिए इतना बड़ा तिलिस्म बनाया गया!'

इस राय को कुमार ने पसन्द किया और देवीसिंह और ज्योतिषीजी ने भी कहा कि ऐसा ही होना चाहिए। चारों आदमी उस तहखाने के बाहर हुए और उसी मामूली रास्ते से खण्डहर के दालान में आकर पत्थर की चट्टान से ऊपर वाले तहखाने का मुँह ढाँप तिलिस्मी ताले से बन्द कर खण्डहर से बाहर हो अपने खेमे में चले आये।

आज ये लोग बहुत जल्दी तिलिस्म के बाहर हुए। अभी कुल दो पहर दिन चढ़ा था। कुमार ने तिलिस्म की और खजाने की तालियों का गुच्छा तेजसिंह के हवाले किया और कहा कि 'अब तुम उन सन्दूकों को निकलवा कर नौगढ़ भिजवाने का इन्तजाम करो।'

☐ तेजसिंह को तिलिस्म में से खजाने के सन्दूकों को निकलवा कर नौगढ़ भिजवाने में कई दिन लग गए क्योंकि उसके साथ पहरे वगैरह का बहुत कुछ इन्तजाम करना पड़ा। रोज तिलिस्म में जाते और पहर दिन जब बाकी रहता तिलिस्म से बाहर निकल आया करते। जब तक कुल असबाब नौगढ़ रवाना नहीं कर दिया गया तब तक तिलिस्म तोड़ने की कार्रवाई बन्द रही।

एक रात कुमार अपने पलंग पर सोये हुए थे। आधी रात जा चुकी थी, कुमारी चन्द्रकान्ता और वनकन्या की याद में अच्छी तरह नींद नहीं आ रही थी, कभी जागते, कभी सोते जाते। आखिर एक गहरी नींद ने अपना असर यहाँ तक जमाया कि सुबह क्या बल्कि दो घड़ी दिन चढ़े तक आँख खुलने न दी।

जब कुमार की नींद खुली तो अपने को उस खेमे में न पाया जिसमें सोए थे अथवा जो तिलिस्म के पास जंगल में था, बल्कि उसकी जगह एक बहुत सजे हुए कमरे को देखा जिसकी छत में कई बेशकीमती झाड़ और शीशे लटक रहे थे। ताज्जुब में पड़ इधर-उधर देखने लगे। मालूम हुआ कि यह एक बहुत भारी दीवानखाना है जिसमें तीन तरफ संगमरमर की दीवार और चौथी तरफ बड़े-बड़े खूबसूरत दरवाजे हैं जो इस समय बन्द हैं। दीवारों पर कई दीवारगीरें लगी हुई हैं जिनमें दिन निकल आने पर भी अभी तक मोमबत्तियाँ जल रही हैं उनके ऊपर चारों तरफ बड़ी-बड़ी खूबसूरत और हसीन औरतों की तस्वीरें लटक रही थीं। लम्बी दीवार के बीचोंबीच में एक तस्वीर आदमी के कद के बराबर सोने के चौखटे में जड़ी दीवार के साथ लगी हुई थी।

कुमार की निगाह तमाम तस्वीरों पर से दौड़ती हुई उस बड़ी तस्वीर पर आकर अटक गई।

कुमार झट से उठ बैठे और उस तस्वीर के पास जाकर खड़े हो गए। दीवानखाने के दरवाजे बन्द थे मगर हर एक दरवाजे के ऊपर छोटे-छोटे मोखे (सूराख) बने हुए थे जिनमें शीशे की टट्टियाँ लगी हुई थीं, उन्हीं में से सीधी रोशनी ठीक उस लम्बी-चौड़ी तस्वीर पर पड़ रही थी जिसे देखने के लिए कुमार पलंग पर से उतरकर उसके पास गए थे। असल में वह तस्वीर कुमारी चन्द्रकान्ता की थी।

कुमार उस तस्वीर के पास जाकर खड़े हो गये और फिर उसी तरह बोलने लगे जैसे किसी दूसरे को जो पास खड़ा हो सुना रहे हैं।

'अहा, क्या अच्छी और साफ तस्वीर बनी हुई है। इसमें ठीक उतना ही बड़ा कद है, वैसी ही बड़ी-बड़ी आँखें हैं जिनमें काजल की लकीरें कैसी साफ मालूम हो रही हैं। देखो एक बगल चपला और दूसरी तरफ चम्पा क्या मजे में अपनी ठुड्डियों पर उँगली रक्खे खड़ी हैं!'

'हाय, चन्द्रकान्ता कहाँ होगी!' इतना कह एक लम्बी साँस ले एकटक उस तस्वीर की तरफ देखने लगे।

ऊपर की तरफ कहीं से पायजेब की छन्न से आवाज आई जिसे सुनते ही कुमार चौंक पड़े। ऊपर की तरफ कई छोटी-छोटी खिड़कियाँ थीं जो सब-की-सब बन्द थीं। तब यह आवाज कहाँ से आई! इस घर में कौन औरत है! इतनी देर तक तो कुमार अपने पूरे होशहवास में न थे मगर अब चौंके और सोचने लगे—

'हैं, इस जगह मैं कैसे आ गया? कौन मुझे उठा लाया? उसने मेरे

साथ बड़ी नेकी की जो प्यारी चन्द्रकान्ता की तस्वीर मुझे दिखला दी, मगर कहीं ऐसा न हो कि मैं यह सब बातें स्वप्न में देखता होऊँ? जरूर यह स्वप्न है, चलो फिर उसी पलंग पर सो रहें।'

यह सोच कुमार फिर उसी पलंग पर आकर लेट गये, आँखें बन्द कर लीं, मगर नींद कहाँ आती है! इतने में फिर पायजेब की आवाज ने कुमार को चौंका दिया। अबकी दफा उठते ही सीधे दरवाजे की तरफ गये और सातों दरवाजों को धक्का दिया, सब खुल गये। एक छोटा-सा हरा-भरा बाग दिखाई पड़ा।

कुमार इस बात पर गौर कर रहे थे कि वे कहाँ आ पहुँचे, उन्हें कौन लाया, इस जगह का नाम क्या है, तथा वह बाग और कमरा किसका है? इतने में ही उस पेड़ की तरफ निगाह जा पड़ी जिसके नीचे पूजा का सामान सजाया हुआ था। एक कागज चिपका हुआ नजर पड़ा। उसके पास गये, देखा कुछ लिखा हुआ है। पढ़ा, यह लिखा था—

'कुँवर वीरेन्द्रसिंह, यह सब सामान तुम्हारे ही वास्ते है। इसी बावली में नहाओ और इन चीजों को बरतो, क्योंकि आज के दिन तुम हमारे मेहमान हो।'

कुमार और भी सोच में पड़ गये और घूमते हुए बाग के उत्तरी तरफ पहुँचे जहाँ एक और कमरा नजर पड़ा जो पूरब की तरफ वाले कमरे के साथ सटा हुआ था।

कुमार ने चाहा कि उस कमरे की भी सैर करें मगर न हो सका क्योंकि उसके सब दरवाजे बन्द थे, अस्तु आगे बढ़े और जंगली फूलों, वेलों और खूबसूरत क्यारियों को देखते हुए बाग के दक्षिण तरफ पहुँचे।

फिर उसी कमरे की तरफ आये जिसमें सोते से आँख खुली थी और कुमारी चन्द्रकान्ता की तस्वीर देखी थी मगर उस कमरे के कुल किवाड़ बन्द पाये, खोलने की कोशिश की मगर खुल न सके। बाहर दालान में खूब कड़ी धूप फैली हुई थी। धूप के मारे तबीयत घबरा उठी, यही जी चाहता था कि कहीं ठंडी जगह मिले तो आराम किया जाये। आखिर उस जगह से हट कुमार घूमते हुए उस दूसरी तरफ वाले कमरे को देखने चले जिसके किवाड़ पहर भर पहिले बन्द पाये थे। वे अब खुले हुए दिखलाई पड़े, अन्दर गये।

भीतर से यह कमरा बहुत साफ संगमरमर के फर्श का था, मालूम होता था कि अभी कोई धोकर इसे साफ कर गया है। बीच में एक कश्मीरी गलीचा बिछा हुआ था। उसके आगे कई तरह की भोजन की

चीजें चाँदी और सोने के बरतनों में सजाई हुई रक्खी थीं। आसन पर एक चिट्ठी भी पड़ी हुई थी जिसे कुमार ने उठाकर पढ़ा, यह लिखा हुआ था—

'आप किसी तरह घबराएँ नहीं, यह मकान आपके एक दोस्त का है जहाँ हर तरह से आपकी खातिर की जायेगी। इस वक्त आप भोजन करके बगल की कोठरी में जहाँ आपके लिए पलंग बिछा है कुछ देर आराम करें।'

इसे पढ़कर कुमार जी में सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए? भूख जोर की लगी है पर बिना मालिक के इन चीजों के खाने को जी नहीं चाहता और कुछ पता भी नहीं लगता कि इस मकान का मालिक कौन है जो छिप-छिपकर हमारी खातिरदारी की चीजें तैयार कर रहा है पर मालूम नहीं होता कि कौन किधर से आता है, कहाँ खाने को बनता है, मालिक-मकान या उसके नौकर-चाकर किस जगह रहते हैं या किस राह से आते-जाते हैं? उन लोगों को जब इसी तरह छिपे रहना मंजूर था तो मुझे यहाँ लाने की जरूरत क्या थी?

उसी आसन पर बैठे हुए बड़ी देर तक कुमार तरह-तरह की बातें सोचते रहे, यहाँ तक कि भूख ने उन्हें बेताब कर दिया। आखिर कब तक भूखे रहते? लाचार भोजन की तरफ हाथ बढ़ाया, मगर फिर कुछ सोचकर रुक गये और हाथ खींच लिया।

भोजन करने के लिए तैयार होकर फिर कुमार के रुक जाने से बड़े जोर के साथ हँसने की आवाज आई जिसे सुनकर कुमार और भी हैरान हुए। इधर-उधर देखने लगे मगर कुछ पता न लगा, ऊपर की तरफ कई खिड़कियाँ दिखाई पड़ीं मगर कोई आदमी नजर न आया।

कुमार ऊपर वाली खिड़कियों की तरफ गौर से देख ही रहे थे कि एक आवाज आई—

'आप भोजन करने में देर न कीजिए, कोई खतरे की जगह नहीं है।'

भूख के मारे कुमार विकल हो रहे थे, लाचार होकर खाने लगे। सब चीजें एक से एक स्वादिष्ट बनी हुई थीं। अच्छी तरह से भोजन करने के बाद कुमार उठे, एक तरफ हाथ धोने के लिये लोटे में जल रक्खा हुआ था। अपने हाथ से लोटा उठा हाथ धोया और बगल वाली कोठरी की तरफ चले। जैसा कि पुरजे में लिखा हुआ था उसी के मुताबिक सोने के लिए उस कोठरी में निहायत खूबसूरत पलंग बिछा हुआ पाया।

दो घण्टे रात बीते तक कुमार सोए रहे। इसके बाद बीन की और

उसके साथ ही किसी के गाने की आवाज कान में पड़ी, झट आँखें खोल इधर-उधर देखने लगे। मालूम हुआ कि यह वह कमरा नहीं है जिसमें भोजन करके सोए थे, बल्कि इस वक्त अपने को एक निहायत और खूबसूरत सजी हुई बारहदरी में पाया जिसके बाहर से बीन और गाने की आवाज आ रही थी।

कुमार पलंग पर से उठकर बाहर आकर देखने लगे। रात बिल्कुल अँधेरी थी मगर रोशनी खूब हो रही थी जिससे मालूम पड़ा कि यह बाग भी वह नहीं है जिसमें दिन को स्नान और भोजन किया था।

इस वक्त यह नहीं मालूम होता था कि बाग कितना बड़ा है क्योंकि इसके दूसरे तरफ की दीवार बिल्कुल ही नजर नहीं आ रही थी। बड़े-बड़े दरख्त भी इस बाग में बहुत थे। रोशनी खूब हो रही थी। कई औरतें जो कमसिन और खूबसूरत थीं, टहलती और कभी-कभी गाती या बजाती हुई नजर पड़ीं जिनका तमाशा दूर से खड़े होकर कुमार देखने लगे। वे सब आपस में हँसती और ठिठोली करती हुई एक रविश से दूसरी और दूसरी से तीसरी पर घूम रही थीं। कुमार का दिल न माना और धीरे-धीरे उनके पास जाकर खड़े हो गए।

वे सब कुमार को देखकर रुक गईं और आपस में कुछ बातें करने लगीं, जिसे कुमार बिल्कुल नहीं समझ सकते थे, मगर उनके हाव-भाव से मालूम होता था कि वे कुमार को देखकर ताज्जुब कर रही हैं। इतने में एक औरत आगे बढ़कर कुमार के पास आई और उनसे बोली, 'आप कौन हैं और बिना हुक्म इस बाग में क्यों चले आए!'

कुमार ने उसे नजदीक से देखा तो निहायत हसीन और चंचल पाया। जवाब दिया, 'मैं नहीं जानता कि यह बाग किसका है, अगर हो सके तो बताओ कि यहाँ का मालिक कौन है?'

औरत, 'हमने जो कुछ पूछा, पहिले उसका जवाब दे लो, फिर हमसे जो पूछोगे सो बता देंगे।'

कुमार, 'मुझे कुछ भी मालूम नहीं कि मैं यहाँ क्योंकर आ गया!'

औरत, 'क्या खूब! कैसे सीधे-साधे आदमी हैं! (दूसरी औरत की तरफ देखकर) बहिन, जरा इधर आना, देखो कैसे भोले-भाले चोर इस बाग में आ गये हैं जो अपने आने का सबब भी नहीं जानते!'

उस औरत के आवाज देने पर सभी ने आकर कुमार को घेर लिया और पूछना शुरू किया, 'सच बताओ तुम कौन हो और यहाँ क्यों आये?'

दूसरी औरत, 'इनकी कमर में तो हाथ डालो, देखो कुछ चुराया तो

नहीं है।'

तीसरी, 'जरूर कुछ-न-कुछ चुराया होगा।'

चौथी, 'अपनी सूरत इन्होंने कैसी बना रक्खी है, मालूम होता है किसी राजा ही के लड़के हैं।'

पहली, 'भला यह तो बताइए कि ये कपड़े आपने कहाँ से चुराये?'

इन सभी की बातें सुनकर कुमार बड़े हैरान हुए। जी में सोचने लगे कि अजब आफत में आ फँसे, कुछ समझ में नहीं आता, जरूर इन्हीं लोगों की बदमाशी से मैं यहाँ तक पहुँचा और यही लोग अब मुझे चोर बनाती हैं। यों ही कुछ देर तक सोचते रहे, इसके बाद फिर बातचीत होने लगी।

कुमार, 'मालूम होता है कि तुम्हीं लोगों ने मुझे यहाँ लाकर रक्खा है।'

एक औरत, 'हम लोगों को क्या गरज थी जो आपको यहाँ लाते या आप ही खुश होकर हमें क्या दे देंगे जिसकी उम्मीद से हम लोग ऐसा करते। अब यह कहने से क्या होता है, जरूर चोरी की नीयत से ही आप आये हैं।'

कुमार, 'मुझको यह भी मालूम नहीं कि यहाँ आने या यहाँ से जाने का रास्ता कौन है। अगर यह भी बतला दो तो मैं यहाँ से चला जाऊँ।'

दूसरी, 'वाह, बेचारे क्या अनजान बनते हैं। यहाँ तक आए भी और रास्ता भी नहीं मालूम।'

तीसरी, 'बहिन, तुम नहीं समझतीं, यह चालाकी से भागना चाहते हैं।'

चौथी, 'अब इनको गिरफ्तार करके ले चलना चाहिए।'

कुमार, 'भला मुझे कहाँ ले चलोगी?'

एक औरत, 'अपने मालिक के सामने।'

कुमार, 'तुम्हारे मालिक का क्या नाम है?'

तीसरी, 'हम लोग अपने मालिक राजकुमारी की तस्वीरें अपने गले में लटकाए रहती हैं जिससे मालूम हो कि हम सब फलाने की लौंडी हैं।'

कुमार, 'तो क्या यहाँ कई राजकुमारियाँ हैं जो लौंडियों की पहिचान में गड़बड़ी हो जाने का डर है?

पहिली, 'नहीं, यहाँ सिर्फ दो राजकुमारियाँ हैं और दोनों के यहाँ यही चाल है, कोई अपने मालिक का नाम नहीं ले सकता। जब पहिचान की जरूरत होती है तो गले की तस्वीर दिखा दी जाती है।'

कुमार, 'भला मुझे भी वह तस्वीर दिखाओगी?'

'हाँ-हाँ, लो देख लो!' कहकर एक ने अपने गले की छोटी-सी तस्वीर जो धुकधुकी की तरह लटक रही थी निकालकर कुमार को दिखाई जिसे देखते ही उनके होश उड़ गये। 'हैं यह तस्वीर तो कुमारी चन्द्रकान्ता की है! तो क्या ये सब उन्हीं की लौंडी हैं। नहीं-नहीं, कुमारी चन्द्रकान्ता यहाँ भला कैसे आवेगी! उनका राज्य तो विजयगढ़ है। अच्छा पूछें तो यह मकान किस शहर में है?'

कुमार, 'भला यह तो बताओ इस शहर का क्या नाम है जिसमें हम इस वक्त हैं।'

एक, 'इस शहर का नाम चित्रनगर है क्योंकि सभी के गले में कुमारी की तस्वीर लटकी रहती हैं।'

कुमार, 'और इस शहर का यह नाम कब से पड़ा।'

एक, 'हजारों बरस से यही नाम है और इसी ढंग की तस्वीर कई पुश्त से हम लोगों के गले में है। पहिले मेरी परदादी को सरकार से मिली थी, होते-होते अब मेरे गले में आ गई।'

कुमार, 'तुम लोगों की बातों ने मुझे पागल बना दिया। ऐसी बातें करती हो जो कभी मुमकिन ही नहीं, अक्ल में नहीं आ सकतीं। अच्छा उस दरबार में मुझे भी ले जा सकती हो जो राजकुमारी के सामने लगता है।'

औरत, 'इसमें कहने की कौन-सी बात है! आखिर आपको गिरफ्तार करके उसी दरबार में तो चलना है, आप खुद ही देख लीजियेगा।'

कुमार, 'जब तुम लोगों का मालिक कोई भी नहीं या अगर है भी तो एक तस्वीर, तब हमने उसका क्या बिगाड़ा? क्यों हमें बाँध के ले चलोगी?'

औरत, 'हमारी राजकुमारी सभी की नजरों से छिपकर अपने राज्य-भर में घूमा करती और अपने मकान और बगीचों की सैर किया करती हैं।'

तीसरी, 'भला इनका और इनके बाप का नाम-धाम भी पूछ लो कि इसी तरह राजा का लड़का समझ लोगी। (कुमार की तरफ देखकर) क्यों जी, आप किसके लड़के हैं और आपका क्या नाम है?'

कुमार, 'मैं नौगढ़ के महाराज सुरेन्द्रसिंह का लड़का वीरेन्द्रसिंह हूँ।'

इनका नाम सुनते ही वे खुश होकर आपस में कहने लगीं, 'वाह इनको तो जरूर पकड़ के ले चलना चाहिए, बहुत-कुछ इनाम मिलेगा, क्योंकि

इन्हीं को गिरफ्तार करने के लिए सरकार की तरफ से मुनादी की गई थी।'

इन सभी की ये बातें सुन कुमार की तो अक्ल चकरा गई। कभी ताज्जुब, कभी सोच, कभी घबराहट से इनकी अजब हालत हो गई। आखिर उन औरतों की तरफ देखकर बोले, 'फसाद क्यों करती हो, हम तो आप ही तुम लोगों के साथ चलने को तैयार हैं, चलो देखें तुम्हारी राजकुमारी का दरबार कैसा है !'

एक, 'जब आप खुद ही चलने को तैयार हैं तब हम लोगों को ज्यादा बखेड़े की क्या जरूरत है, चलिए।'

वे सब कुमार को लिए बाग के एक कोने में गईं जहाँ दूसरी तरफ निकल जाने के लिए छोटा-सा दरवाजा नजर पड़ा, जिसमें शीशे की सिर्फ एक सफेद हाँडी जल रही थी। वे सब कुमार को लिए इसी दरवाजे में घुसीं। थोड़ी दूर जाकर दूसरा बाग जो बहुत सजा था नजर पड़ा जिसमें हद से ज्यादा रोशनी हो रही थी और कई चोबदार हाथों में सोने-चाँदी के आसे लिए हुए इधर-उधर टहल रहे थे। उनके अलावा और भी बहुत-से आदमी घूमते दिखाई पड़े।

उन औरतों से किसी ने कुछ बातचीत व रोकटोक न की। ये सब कुमार को लिए हुए बराबर धड़धड़ाती हुई एक बड़े भारी दीवानखाने में पहुँची जहाँ की सजावट और कैफियत देखकर कुमार के होश जाते रहे।

सबसे पहिले कुमार की निगाह उस बड़ी तस्वीर के ऊपर पड़ी जो ठीक सामने सोने के जड़ाऊ सिंहासन पर रखी हुई थी। मालूम होता था कि सिंहासन पर कुमारी चन्द्रकान्ता सिर पर मुकुट धरे बैठी हैं, ऊपर छत्र लगा हुआ है, और सिंहासन के दोनों तरफ दो जिन्दा शेर बैठे हुए हैं।

तस्वीर के पीछे से आवाज आई, 'ये कौन हैं ?'

उन औरतों में से एक ने जवाब दिया, 'ये सरकारी बाग में घूमते हुए पकड़े गये हैं और पूछने से मालूम हुआ कि इनका नाम बीरेन्द्रसिंह है, विक्रमी तिलिस्म इन्होंने ही तोड़ा है।' फिर आवाज आई, 'अगर यह सच है तो इनके बारे में बहुत कुछ विचार करना पड़ेगा, इस वक्त ले जाकर हिफाजत से रक्खो, फिर हुक्म पाकर दरबार में हाजिर करना।'

उन लौंडियों ने कुमार को एक अच्छे कमरे में ले जाकर रक्खा जो हर तरह से सजा हुआ था मगर कुमार अपने खयाल में डूबे हुए थे।

एक लौंडी सामने खड़ी थी उसने हाथ जोड़कर पूछा, 'क्या हुक्म होता

है ?' जिसके जवाब में कुमार ने हाथ के इशारे से पानी माँगा। सोने के कटोरे में पानी भर के लौंडी ने कुमार के हाथ में दिया, पीते ही एकदम उनके दिमाग तक ठंडक पहुँच गई, साथ ही आँखों में झपकी आने लगी और धीरे-धीरे बिल्कुल बेहोश होकर उसी गद्दी पर लेट गए।

[] कुँवर बीरेन्द्रसिंह के गायब होने से उनके लश्कर में खलबली पड़ गई। तेजसिंह और देवीसिंह ने घबड़ाकर चारों तरफ खोज की मगर कुछ पता न लगा। दिन भर बीत जाने पर ज्योतिषीजी ने तेजसिंह से कहा, 'मुझे रमल से जान पड़ता है कि कुमार को कई औरतें बेहोशी की दवा सुँघा बेहोश करके उठा ले गई हैं और नौगढ़ के इलाके में अपने मकान के अन्दर कैद कर रक्खा है, इससे ज्यादा कुछ मालूम नहीं होता।'

बहुत देर तक सोच-विचार करते रहने के बाद तेजसिंह कुमार की खोज में जाने के लिए तैयार हुए। ये तीनों नौगढ़ की तरफ रवाना हुए। जाते वक्त महाराज शिवदत्त के दीवान को चुनार विदा करते गये। तिलिस्मी किताब फतहसिंह सिपहसालार के सुपुर्द कर दी जो कुँवर बीरेन्द्रसिंह के गायब हो जाने के बाद उनके पलंग पर पड़ी हुई पाई थी।

सवेरा होने पर तीनों एक घने जंगल में रुके और अपनी-अपनी सूरतें बदलकर फिर रवाना हुए। दिन-भर चलकर भूखे-प्यासे शाम को नौगढ़ की सरहद पर पहुँचे। इन लोगों ने आपस में यह राय ठहराई कि किसी से मुलाकात न करें बल्कि जाहिर भी न होकर छिपे-ही-छिपे कुमार की खोज करें।

सूरत बदले हुए राजा सुरेन्द्रसिंह के दरबार में गये और एक कोने में खड़े हो बातचीत सुनने लगे।

उसी वक्त कई जासूस दरबार में पहुँचे जिनकी सूरत से घबराहट और परेशानी साफ मालूम होती थी। तेजसिंह के बाप दीवान जीतसिंह ने उन जासूसों से पूछा, 'क्या बात है जो तुम लोग इस तरह घबड़ाये हुए आये हो ?'

एक जासूस ने कुछ आगे बढ़ के जवाब दिया, 'लश्कर से कुमार की खबर लाया हूँ।'

जीत०, 'क्या हाल हैं, जल्द कहो।'

जासूस, 'रात को खेमे में सोये हुए थे उसी हालत में कुछ औरतें उन्हें उठा ले गईं। मालूम नहीं कहाँ कैद कर रक्खा है।'

जीत०, (घबड़ाकर) 'यह कैसे मालूम हुआ कि उन्हें कई औरतें ले गईं ?'

जासूस, 'उनके गायब हो जाने के बाद ऐयारों ने बहुत तलाश किया। जब कुछ पता न लगा तो ज्योतिषी जगन्नाथजी ने रमल से पता लगा के कहा कि कई औरतें उन्हें ले गई हैं और इस नौगढ़ के इलाके में ही कहीं कैद कर रक्खा है।'

जीत०, (ताज्जुब से) 'इसी नौगढ़ के इलाके में ! यहाँ तो हम लोगों का कोई दुश्मन नहीं है।'

जासूस, 'कुमार की खोज में तेजसिंह कहीं गये हैं, देवीसिंह और ज्योतिषीजी भी उनके साथ हैं। मगर उन लोगों के जाते ही हमारे लश्कर पर आफत आई ?'

जीत०,(चौंककर), 'हमारे लश्कर पर क्या आफत आई ?'

जासूस, 'मौका पाकर महाराज शिवदत्त ने हमला कर दिया।'

पहर-भर तक तो फतहसिंह सिपहसालार खूब जूझे, आखिर शिवदत्त के हाथ से जख्मी होकर गिरफ्तार हो गए। उनके गिरफ्तार होते ही बेसिर की फौज छितिर-बितिर हो गई।

अभी तक सुरेन्द्रसिंह चुपचाप बैठे इन बातों को सुन रहे थे। फतहसिंह के गिरफ्तार हो जाने और लश्कर के भाग जाने का हाल सुन आँखें लाल हो गईं, दीवान जीतसिंह की तरफ देखकर बोले, 'हमारे यहाँ इस वक्त फौज तो है नहीं, थोड़े-बहुत सिपाही जो कुछ हैं उनको लेकर इसी वक्त कूच करूँगा। ऐसे नामर्द को मारना कोई बड़ी बात नहीं है।'

ये सब बातें हो ही रही थीं कि दो जासूस और दरबार में हाजिर हुए। पूछने से उन्होंने कहा, 'कुमार के गायब होने, ऐयारों के उनकी खोज में जाने, फतहसिंह के गिरफ्तार हो जाने और फौज के भाग जाने की खबर सुनकर महाराज जयसिंह अपनी कुल फौज लेकर चुनार पर चढ़ गए हैं। बाद इसके सुनने में आया कि फतहसिंह भी छूटकर तिलिस्म के पास आ गए और कुमार की फौज फिर इकट्ठा हो रही है।'

इस खबर को सुनकर राजा सुरेन्द्रसिंह ने दीवान जीतसिंह की तरफ देखा।

जीत०, 'जो कुछ भी हो महाराज जयसिंह ने चढ़ाई कर ही दी, हम पहुँचकर चुनार का बखेड़ा ही तय कर दें, यह रोज-रोज की खटपट अच्छी नहीं।'

राजा, 'तुम्हारा कहना ठीक है, ऐसा ही किया जाय। क्या करें हमने

सोचा था कि लड़के ही के हाथ से चुनार फतह हो जिससे उसका हौसला बढ़े ।'

इन सब बातों और खबरों को सुन तीनों ऐयार वहाँ से रवाना हो गए और एकान्त में जाकर आपस में सलाह करने लगे ।

तेज०, 'अब क्या करना चाहिए ?'

देवी०, 'चाहे जो भी हो पहिले तो कुमार को खोजना चाहिए ।'

तेज०, 'मैं कहता हूँ कि तुम लश्कर की तरफ जाओ हम दोनों कुमार की खोज करते हैं ।'

ज्यो०, 'मेरी बात मानो तो पहिले एक दफे उस तहखाने (खोह) में चलो जिसमें महाराज शिवदत्त को कैद किया गया था ।'

तीनों ऐयार तहखाने की तरफ रवाना हुए ।

[_] कुँवर बीरेन्द्रसिंह धीरे-धीरे बेहोश होकर उस गद्दी पर लेट गए । जब आँख खुली अपने को एक पत्थर की चट्टान पर सोए पाया । घबराकर इधर-उधर देखने लगे । चारों तरफ ऊँची-ऊँची पहाड़ियाँ, बीच में बहता चश्मा, किनारे-किनारे जामुन के दरख्तों की बहार, देखने से मालूम हो गया कि यह वही तहखाना है जिसमें ऐयार लोग कैद किये जाते थे ।

कुँवर बीरेन्द्रसिंह दौड़े हुए उस पहाड़ी के नीचे गये जिससे ऊपर वाले दालान में कुमारी चन्द्रकान्ता और चपला को छोड़ तिलिस्म तोड़ने खोह के बाहर गये थे । इस वक्त भी कुमारी को उस दिन की तरह वही मैली और फटी साड़ी पहिने उसी तौर से चेहरे और बदन पर मैल चढ़ी और बालों की लट बाँधे बैठे हुए देखा ।

सामने से तेजसिंह आते दिखाई पड़े जिनके कुछ दूर पीछे देवीसिंह और पण्डित जगन्नाथ ज्योतिषी भी थे । कुमार उनकी तरफ बढ़े । तेजसिंह सामने से कुमार को अपनी तरफ आते देख दौड़े और उनके पास जाकर पैरों पर गिर पड़े । उन्होंने उठाकर गले से लगा लिया । देवीसिंह से भी मिले और ज्योतिषी को दण्डवत् किया । अब ये चारों एक पेड़ के नीचे पत्थर पर बैठकर बातचीत करने लगे ।

कुमार, 'देखो तेजसिंह, वह सामने कुमारी चन्द्रकान्ता उसी दिन की तरह उदास और फटे कपड़े पहिने बैठी है और बगल में उनकी सखी चपला बैठी अपने आँचल से उनका मुँह पोंछ रही है ।'

तेज०, 'आपसे कुछ बातचीत भी हुई ?'

कुमार, 'नहीं कुछ नहीं, अभी मैं यही सोच रहा था कि उनके सामने जाऊँ या नहीं।'

तेज०, 'कितने दिन से आप यह सोच रहे हैं ?'

कुमार, 'अभी मुझको इस घाटी में आये दो घड़ी भी नहीं हुई।'

तेज०, (ताज्जुब से) 'क्या आप अभी इस खोह में आये हैं ? इतने दिनों तक कहाँ रहे ? आपको लश्कर से आये तो कई कई दिन हुए ! इस वक्त आपको यकायक यहाँ देख के मैंने सोचा कि कुमारी के इश्क में चुप-चाप लश्कर से निकलकर इस जगह आ बैठे हैं।'

फिर चारों आदमी शिवदत्त की तरफ चले। पहिले उस पहाड़ी के नीचे गये जिसके ऊपर छोटे दालान में कुमारी चन्द्रकान्ता और चपला बैठी थीं। कुमारी की निगाह दूसरी तरफ थी, चपला ने इन लोगों को देखा, वह उठ खड़ी हुई और आवाज देकर कुमार के राजी-खुशी का हाल पूछने लगी जिसका जवाब खुद कुमार ने देकर कुमारी चन्द्रकान्ता के मिजाज का हाल पूछा। चपला ने कहा, 'इनकी हालत तो देखनें ही से मालूम होती होगी, कहने की जरूरत ही नहीं।'

कुमारी अभी तक सिर नीचा किये बैठी थी। चपला की बातचीत की आवाज सुन चौंककर उसने सिर उठाया। कुमार को देखते ही हाथ जोड़ कर खड़ी हो गई और आँखों से आँसू बहाने लगी।

कुँवर बीरेन्द्रसिंह ने कहा, 'कुमारी तुम थोड़े दिन और सब्र करो। तिलिस्म टूट गया, थोड़ा काम बाकी है। कई सबबों से मुझे यहाँ आना पड़ा, अब मैं फिर उसी तिलिस्म की तरफ जाऊँगा !'

चपला, 'कुमारी कहती हैं कि मेरा दिल यह कह रहा है कि इन दिनों या तो मेरी मुहब्बत आपके दिल से कम हो गई है या फिर मेरी जगह किसी और ने दखल कर ली। मुद्दत से इस जगह तकलीफ उठा रही हूँ जिसका ख्याल मुझे कुछ भी न था मगर कई दिनों से यह नया खयाल जी में पैदा होकर मुझे बेहद सता रहा है।'

'कुमारी को समझा दो कि कुमार की तरफ से किसी तरह का अन्देशा न करें, तुम्हारे इतना ही कहने से कुमार की हालत खराब हो गई।'

चपला, 'आप लोग आज यहाँ किसलिये आये ?'

तेज०, 'महाराज शिवदत्त को देखने आए हैं, वहाँ खबर लगी थी कि ये छूटकर चुनार पहुँच गये।'

चपला, 'किसी ऐयार ने सूरत बदली होगी, इन दोनों को तो मैं बराबर यहीं देखती रहती हूँ।'

तेज०, 'जरा मैं उससे बातचीत कर लूँ।'

तेजसिंह और चपला की बातचीत महाराज शिवदत्त कान लगाकर सुन रहे थे। अब ये कुमार के पास आए, कुछ कहना चाहते थे कि ऊपर चन्द्रकान्ता और चपला की तरफ देखकर चुप हो रहे।

तेज०, 'शिवदत्त, हाँ क्या कहने को थे, कहो रुक क्यों गए?'

शिव०, 'अब न कहूँगा।'

तेज०, 'क्यों?'

शिव०, 'शायद न कहने से जान बच जाय!'

तेज०, 'अगर कहोगे तो तुम्हारी जान कौन लेगा?'

शिव०, 'जब इतना ही बता दूँ तो बाकी क्या रहा?'

तेज०, 'न बताओगे तो मैं तुम्हें कब छोड़ूँगा।'

शिव०, 'जो चाहो करो मगर मैं कुछ न बताऊँगा।'

इतना सुनते ही तेजसिंह ने कमर से खंजर निकाल लिया, साथ ही चपला ने ऊपर से आवाज दी, 'हाँ-हाँ, ऐसा मत करना! तेजसिंह ने हाथ रोककर चपला की तरफ देखा।

चपला, 'आजकल ये पागल हो गए हैं, मैं देखा करती हूँ कि कभी-कभी चिल्लाया और इधर-उधर दौड़ा करते हैं। बिल्कुल हालत पागलों की-सी पाई जाती है, इनकी बातों का खयाल मत करो।'

शिव०, 'उल्टे मुझी को पागल बनाती है।'

तेज०, (शिवदत्त से) 'क्या कहा, फिर तो कहो?'

शिवदत्त, 'कुछ नहीं, तुम चपला से बात करो, मैं तो आजकल पागल हो गया हूँ।'

देवी०, 'वाह, क्या पागल बने हैं!'

शिवदत्त, 'चपला का कहना बहुत सही है, मेरे पागल होने में कोई शक नहीं।'

कुमार, 'ज्योतिषीजी जरा इन नई गढ़न्त के पागल को देखना!'

ज्योतिषी, (हँसकर) 'जब आकाशवाणी ही हो चुकी कि ये पागल हैं तो अब क्या बाकी रहा?'

कुमार, 'दिल में कई तरह के खुटके पैदा होते हैं।'

तेज०, 'इसमें जरूर कोई भारी भेद है। न मालूम वह कब खुलेगा, लाचारी यह है कि हम कुछ कर नहीं सकते।'

देवी०, 'हमारी उस्तादिन इस भेद को जानती हैं। मगर उनसे भी इसे खोलना मंजूर नहीं है।'

कुमार, 'यह बिल्कुल ठीक है।'

देवीसिंह की बात पर तेजसिंह हँसकर चुप हो रहे। महाराज शिवदत्त भी वहाँ से उठकर अपने ठिकाने जा बैठे। तेजसिंह ने कुमार से कहा, 'अब हम लोगों को लश्कर में चलना चाहिए। सुनते हैं कि हम लोगों के पीछे महाराज शिवदत्त ने लश्कर पर धावा मारा जिससे बहुत कुछ खराबी हुई। मालूम नहीं पड़ता वह कौन शिवदत्त था, मगर फिर सुनने में आया कि शिवदत्त भी गायब हो गया। अब यहाँ आकर फिर शिवदत्त को देख रहे हैं!'

कुमार, 'इसमें तो कोई शक नहीं कि ये सब बातें बहुत ही ताज्जुब की हैं, खैर तुमने किसकी जुबानी सुना है साफ कहो।'

तेजसिंह ने अपने तीनों आदमियों का कुमार की खोज में लश्कर से बाहर निकलना, नौगढ़ राज्य में राजा सुरेन्द्रसिंह के दरबार में भेष बदले हुए पहुँचकर दो जासूसों की जुबानी लश्कर का हाल सुनना, महाराज जयसिंह और सुरेन्द्रसिंह का चुनार पर चढ़ाई करना इत्यादि सब हाल कहा जिसे सुन कुमार परेशान हो गए, खोह के बाहर चलने को तैयार हुए। कुमारी चन्द्रकान्ता से फिर कुछ बातें कर और धीरज दे आँखों से आँसू बहाते कुँअर बीरेन्द्रसिंह उस खोह के बाहर हुए।

शाम हो चुकी थी जब ये चारों खोह के बाहर आये। तेजसिंह ने देवीसिंह से कहा कि हम लोग यहाँ बैठते हैं तुम नौगढ़ जाकर सरकारी अस्तबल में से एक उम्दा घोड़ा खोल लाओ जिस पर कुमार को सवार कराके तिलिस्म की तरफ ले चलें, मगर देखो किसी को मालूम न हो कि देवीसिंह घोड़ा ले गए हैं।'

देवी० 'जब किसी को मालूम हो ही गया तो मेरे जाने से फायदा क्या?'

तेज०, 'कितनी देर में आओगे?'

देवी०, 'यह कोई भारी बात तो है नहीं जो देर लगेगी, पहर-भर के अन्दर आ जाऊँगा।'

यह कह देवीसिंह नौगढ़ की तरफ रवाना हुए, उनके जाने के बाद ये तीनों आदमी घने पेड़ों के नीचे बैठकर बातें करने लगे।

कुमार, 'क्यों ज्योतिषीजी, शिवदत्त का भेद कुछ न खुलेगा?'

ज्यो०, 'इसमें तो कोई शक नहीं कि वह असल में शिवदत्त ही था जिसने कैद से छूटकर अपने दीवान के हाथ आपके पास तोहफा भेजकर सुलह के लिए कहलाया था, और विचार से मालूम होता है कि यह भी

असली शिवदत्त ही है जिसे आप इस वक्त खोह में छोड़ आए हैं, मगर बीच का हाल कुछ मालूम नहीं होता कि क्या हुआ।'

इसी तरह की बात करते इनको पहर-भर से ज्यादा गुजर गया। देवीसिंह घोड़ा लेकर आ पहुँचे जिस पर कुमार सवार हो तिलिस्म की तरफ रवाना हुए, साथ-साथ तीनों ऐयार पैदल बातें करते जाने लगे।

☐ कुमार के गायब हो जाने के बाद तेजसिंह, देवीसिंह और ज्योतिषीजी उनकी खोज में निकले हैं, इस खबर को सुनकर महाराज शिवदत्त के जी में फिर बेईमानी पैदा हुई। एकान्त में अपने ऐयारों और दीवानों को बुला कर उसने कहा, 'इस वक्त कुमार लश्कर से गायब हैं और उनके ऐयार लोग भी उन्हें ढूँढ़ने गए हैं, मौका अच्छा है। मेरे जी में आता है कि चढ़ाई करके कुमार के लश्कर को खत्म कर दूं और उस खजाने को भी लूट लूँ जो तिलिस्म में से उनको मिला है।'

इस बात को सुन दीवान तथा बद्रीनाथ, पन्नालाल, रामनारायण और चुन्नीलाल ने बहुत कुछ समझाया कि आपको ऐसा न करना चाहिए क्योंकि आप कुमार से सुलह कर चुके हैं, अगर इस लश्कर को आप जीत भी लेंगे तो क्या हो जाएगा, फिर दुश्मनी पैदा होने में ठीक नहीं है, ऐसी बहुत-सी बातें करके इन लोगों ने समझाया मगर शिवदत्त ने एक न मानी। इन्हीं ऐयारों में नाजिम और अहमद भी थे जो शिवदत्त की राय में शरीक थे और उसे हमला करने के लिए उकसाते थे।

आखिर महाराज शिवदत्त ने कुँअर बीरेन्द्रसिंह के लश्कर पर हमला किया और खुद मैदान में आ फतहसिंह सिपहसालार को मुकाबिले के लिए ललकारा। वह भी जवांमर्द था, तुरन्त मैदान में निकल आया और पहर-भर तक खूब लड़ा, लेकिन आखिर शिवदत्त के हाथ से जख्मी होकर गिरफ्तार हो गया।

सेनापति के गिरफ्तार होते ही फौज बेदिल होकर भाग गई। सिर्फ खेमा वगैरह महाराज शिवदत्त के हाथ लगा, तिलिस्मी खजाना उसके हाथ कुछ भी न लगा क्योंकि तेजसिंह ने बन्दोबस्त करके उसे पहिले ही नौगढ़ भिजवा दिया था, हाँ तिलिस्मी किताब उसके कब्जे में जरूर पड़ गई जिसे पाकर वह बहुत खुश हुआ और बोला, 'अब इस तिलिस्म को मैं खुद तोड़ कुमारी चन्द्रकान्ता को उस खोह से निकालकर ब्याहूँगा।'

फतहसिंह को कैद में भेजकर शिवदत्त ने जलसा किया। नाच की

महफिल से उठकर अपने खास दीवानखाने में आकर पलंग पर सो रहा। उसी रोज वह पलंग पर से गायब हुआ, मालूम नहीं कौन कहाँ ले गया, सिर्फ वह पुर्जा पलंग पर मिला जिसका हाल ऊपर लिख चुके हैं। उसके गायब होने पर फतहसिंह सिपहसालार भी कैद से छूट गया, उसकी आँख सुनसान जंगल में खुली। यह कुछ मालूम न हुआ कि उसको कैद से किसने छुड़ाया बल्कि उसके उन जख्मों पर जो शिवदत्त के हाथ से लगे थे पट्टी भी बाँधी गई थी जिससे बहुत आराम मालूम होता था।

फतहसिंह फिर तिलिस्म के पास आए जहाँ उनके लश्कर के कई आदमी मिले बल्कि धीरे-धीरे वह सब फौज इकट्ठी हो गई जो भाग गई थी। इसके बाद ही यह खबर लगी कि महाराज शिवदत्त को भी कोई गिरफ्तार कर ले गया।

अकेले फतहसिंह ने सिर्फ थोड़े ही बहादुरों पर भरोसा कर चुनार पर चढ़ाई कर दी। दो कोस गया होगा कि लश्कर लिए हुए महाराज जयसिंह के पहुँचने की खबर मिली। चुनार का जाना छोड़ जयसिंह के इस्तकबाल (अगुवानी) को गया और उनका भी इरादा अपने ही सा सुन उनके साथ चुनार की तरफ बढ़ा।

जयसिंह की फौज ने पहुँचकर चुनार का किला घेर लिया। शिवदत्त की फौज ने किले के अन्दर घुसकर दरवाजा बन्द कर लिया, फसीलों पर तोपें चढ़ा दीं और कुछ रसद का सामान कर फसीलों और बुर्जों पर लड़ाई करने लगे।

□ चुनार के पास दो पहाड़ियों के बीच के एक नाले के किनारे शाम के वक्त पंडित बद्रीनाथ, रामनारायण, पन्नालाल, नाजिम और अहमद बैठे आपस में बातें कर रहे हैं।

नाजिम, 'क्या कहें हमारा मालिक तो बहिश्त में चला गया, तकलीफ उठाने को हम रह गये।'

अहमद, 'अभी तक इसका पता नहीं लगा कि उन्हें किसने मारा।'

बद्रीनाथ, 'उन्हें उनके पापों ने मारा और तुम दोनों की भी बहुत जल्द वही दशा होगी। कहने के लिए तुम लोग ऐयार कहलाते हो मगर बेईमान और हरामखोर पूरे दर्जे के हो इसमें कोई शक नहीं।'

नाजिम, 'क्या हम लोग बेईमान हैं ?'

बद्री०, 'अ[illegible], इसमें भी कुछ कहना है ? जब तुम अपने मालिक

महाराज जयसिंह के न हुए तो किसके होंगे ? आप भी गारत हुए, क्रूरसिंह की भी जान ली और हमारे राजा को भी चौपट बल्कि कैद कराया। यही जी में आता है कि खाली जूतियाँ मार-मारकर तुम दोनों की जान ले लूं।'

अहमद, 'जुबान सम्हालकर बात करो नहीं तो कान पकड़ के उखाड़ लूंगा।'

अहमद का इतना कहना था कि मारे गुस्से के बद्रीनाथ कांप उठे उसी जगह से पत्थर का टुकड़ा उठाकर इस जोर से अहमद के सर में मारा कि वह तुरन्त जमीन सूंघकर दोजख (नर्क) की तरफ रवाना हो गया। उसकी यह कैफियत देख नाजिम भागा मगर बद्रीनाथ तो पहिले ही से उन दोनों की जान का प्यासा हो रहा था, कब जाने देता ! बड़ा-सा पत्थर छागे[1] में रखकर मारा जिसकी चोट से वह भी जमीन पर गिर पड़ा और पन्नालाल वगैरह ने पहुँचकर मारे लातों के भरता करके उसे भी अहमद के साथ क्रूर की ताबेदारी को रवाना कर दिया। इन दोनों के मरने के बाद फिर चारों ऐयार उसी जगह आ बैठे और आपस में बातें करने लगे।

बद्री०, 'नाजिम और अहमद ये ही दोनों हमारे राजा पर क्रूर ग्रह थे, सो निकल गये। अबकी दफे जरूर दोनों राजों में सुलह कराऊँगा तब बीरेन्द्रसिंह की ताबेदारी नसीब होगी। वाह, क्या जवाँमर्द और होनहार कुमार है ?'

पन्ना, 'अब रात भी बहुत हो गई, चलो कोई ऐयारी करके महाराज जयसिंह को गिरफ्तार करें और गुप्त राह से किले में ले जाकर कैद करें।'

बद्री०, 'हम लोग चल के पहिले उनके रसोइये को फाँसें। मैं उसकी शक्ल बनाकर रसोई बनाऊँ और तुम लोग रसोई के खिदमतगारों को फाँस कर उनकी शक्ल बन, हमारे साथ काम करो। मैं खाने की चीजों में बेहोशी की दवा मिलाकर महाराज और बाद में उन लोगों को भी खिलाऊँगा जो उनके पहरे पर होंगे, बस फिर हो गया।'

1. छागा—एक किस्म का छीका (ढलवांस) होता है। छीके में चारों तरफ डोरी रहती है मगर छागे में दो ही तरफ। एक तरफ की डोरी कलाई में पहिर लेते हैं और दूसरी डोरी चुटकी में थामकर बीच में से घुमाकर निशाना मारते हैं।

पन्ना०, 'अच्छी बात है, तुम रसोइया बनो क्योंकि ब्राह्मण हो, तुम्हारे हाथ का महाराज जयसिंह खायेंगे तो उनका धर्म भी न जायगा, इसका भी ख्याल जरूर होना चाहिए, मगर एक बात का ध्यान रहे कि चीजों में तेज बेहोशी की दवा न पड़ने पाये।

राम०, 'वस यह राय पक्की हो गई, अब यहाँ से उठो।'

☐ राजा सुरेन्द्रसिंह भी नौगढ़ से रवाना हो दौड़ा-दौड़ बिना मुकाम किये दो रोज में चुनार के पास पहुँचे। शाम के वक्त महाराज जयसिंह को खबर लगी। फतहसिंह सेनापति को जो उनके लश्कर के साथ थे इस्तकबाल के लिए रवाना किया।

फतहसिंह की जुबानी राजा सुरेन्द्रसिंह ने सब हाल सुना। सुबह होते-होते इनका लश्कर भी चुनार पहुँचा और जयसिंह के लश्कर के साथ मिल कर पड़ाव डाला गया। राजा सुरेन्द्रसिंह ने फतहसिंह को महाराज जयसिंह के पास भेजा कि जाकर मुलाकात के लिए बातचीत करें!

फतहसिंह राजा सुरेन्द्रसिंह के खेमे से निकलकर कुछ ही दूर गये होंगे कि सामने से महाराज जयसिंह के दीवान हरदयालसिंह सरदारों को साथ लिये परेशान और बदहवास आते दिखाई पड़े जिन्हें देख यह अटक गये, कलेजा धक्-धक् करने लगा। जब वे लोग पास आ गये तो पूछा, 'क्या हाल है जो आप लोग इस तरह घबराये हुए आ रहे हैं?'

एक सरदार, 'कुछ मत पूछो, बड़ी आफत आ पड़ी!'

फतह०, (घबड़ाकर) 'सो क्या?'

दूसरा सरदार, 'राजा साहब के पास चलो वहीं सब कुछ कहेंगे।'

इन सभी को लिए हुए फतहसिंह राजा सुरेन्द्रसिंह के खेमे में आए। कायदे के माफिक सलाम किया, बैठने के लिए हुक्म पाकर बैठ गये।

राजा सुरेन्द्रसिंह को भी इन लोगों के बदहवास आने से खुटका हुआ। हाल पूछने पर हरदयालसिंह ने कहा, 'आज बहुत सवेरे किले के अन्दर से तोप की आवाज आई जिसे सुन खबर करने के लिए मैं महाराज के खेमे में आ गया। दरवाजे पर पहरे वालों को बेहोश पड़े हुए देखकर ताज्जुब मालूम हुआ मगर मैं बराबर खेमे के अन्दर चला गया। अन्दर जाकर देखा तो महाराज का पलंग खाली पाया। देखते ही जी सन्न हो गया, पहरे वालों को देखकर कविराजजी ने कहा कि इन लोगों को बेहोशी की दवा दी गई है। तुरन्त ही कई जासूस महाराज को पता

लगाने के लिए इधर-उधर भेजे गये मगर अभी तक कुछ भी खबर न मिली।'

जीतसिंह ने कहा, 'अगर खाली महाराज गायब हुए होते तो मैं कहता कि कोई ऐयार किसी दूसरी तरकीब से ले गया, मगर जब कई आदमी अभी तक बेहोश पड़े हैं तो विश्वास होता है कि खास महाराज के खाने-पीने की चीजों में बेहोशी की दवा दी गई है।'

सब आदमी विदा कर दिये गए। राजा सुरेन्द्रसिंह, जीतसिंह और दीवान हरदयालसिंह रह गये।

राजा सुरेन्द्रसिंह, '(दीवान जीतसिंह की तरफ देखकर) महाराज को छुड़ाने की कोई फिक्र होनी चाहिए।'

जीतसिंह, 'क्या फिक्र की जाये, कोई ऐयार भी यहाँ नहीं है जिससे कुछ काम लिया जाए, तेजसिंह और देवीसिंह कुमार की खोज में गये हुए हैं, अभी तक उनका भी कुछ पता नहीं!'

राजा, 'तुम ही कुछ तरकीब करो।'

जीत०, 'भला मैं क्या कर सकता हूँ। मुद्दत हुई ऐयारी छोड़ दी। जिस दिन तेजसिंह को इस फन में होशियार करके सरकार के नजर किया उसी दिन सरकार ने ऐयार करने से तावेदार को छुट्टी दे दी, अब फिर यह काम लिया जाता है! तावेदार को यकीन था कि अब जिन्दगी-भर ऐयारी करने की नौबत न आयेगी, इसी ख्याल से अपने पास ऐयारी का बटुआ तक भी नहीं रखता।'

राजा, 'तुम्हारा कहना ठीक है मगर इस वक्त दब जाना या ऐयारी से इनकार करना मुनासिब नहीं, मुझे यकीन है कि चाहे तुम ऐयारी का बटुआ न भी रखते हो मगर उसका कुछ-न-कुछ सामान जरूर अपने साथ लाये होंगे।'

जीत०, (मुस्कराकर) 'जब सरकार के साथ हैं और इस फन को जानते हैं तो सामान क्यों न रखेंगे, तिस पर सफर में!'

राजा, 'तब फिर क्या सोचते हो, इस वक्त अपनी पुरानी कारीगरी याद करो और महाराज जयसिंह को छुड़ाओ।'

जीत०, 'जो हुक्म!' (हरदयालसिंह की तरफ देखकर) 'आप एक काम कीजिए, इन बातों को जो इस वक्त हुई हैं छिपाए रहिये और फतहसिंह को लेकर शाम होने के बाद लड़ाई छेड़ दीजिए। चाहे जो हो मगर आज रात भर लड़ाई बन्द न होने पावे यह काम आपके जिम्मे रहा।'

हरदयाल०, 'बहुत अच्छा, ऐसा ही होगा।'

दीवान जीतसिंह का एक बहुत पुराना बुड्ढा खिदमतगार था जिसको ये बहुत मानते थे। इनका ऐयारी का सामान इसी के सुपुर्द रहा करता था। नौगढ़ से रवाना होती दफे अपना ऐयारी का असबाब दुरुस्त करके चलने का इन्तजाम इसी बुड्ढे के सुपुर्द किया था। इनको ऐयारी छोड़े मुद्दत हो चुकी थी मगर अब उन्होंने अपना सब सामान दुरुस्त करके साथ ले लेना ही मुनासिब समझा था। उसी बुड्ढे खिदमतगार से ऐयारी का सन्दूक मँगवाया और सामान दुरुस्त करके बटुए में भरने लगे। पहर दिन बाकी रहे तक सब सामान दुरुस्त कर एक जमींदार की सूरत बना अपने खेमे के बाहर निकल गए।

जीतसिंह लश्कर से निकलकर किले के दक्खिन की एक पहाड़ी की तरफ रवाना हुए और थोड़ी दूर जाने के बाद सुनसान मैदान में जाकर एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गये। बटुए में से कलम दवात और कागज निकाला और कुछ लिखने लगे जिसका मतलब यह था—

'तुम लोगों की चालाकी कुछ काम न आई और आखिर मैं किले के अन्दर घुस ही आया। देखो क्या ही आफत मचाता हूँ।'

इस तरह के बहुत से पुरजे लिखकर और थोड़ी सी गोंद तैयार कर बटुए में रख ली और किले की तरफ रवाना हुए। पहुँचते-पहुँचते शाम हो गई, अस्तु किले के इधर-उधर घूमने लगे। जब खूब अंधेरा हो गया, मौका पाकर एक दीवार पर जो नीची और टूटी हुई थी कमन्द लगाकर चढ़ गये। अन्दर सन्नाटा पाकर उतरे और घूमने लगे।

किले के बाहर दीवान हरदयाल और फतहसिंह ने दिल खोलकर लड़ाई मचा रखी थी। जीतसिंह को घूमने का बहुत-कुछ मौका मिला।

उन पुर्जों को जिन्हें पहिले से लिखकर बटुए में रख छोड़ा था इधर-उधर दीवारों और दरवाजों पर चिपकाना शुरू किया।

☐ फतहसिंह सेनापति की बहादुरी ने किले वालों के छक्के छुड़ा दिये। यही मालूम होता था कि अगर इसी तरह रात भर लड़ाई होती रही तो सवेरे तक किला हाथ से जाता रहेगा और फाटक टूट जायेगा। तरद्दुद में पड़े बद्रीनाथ वगैरह ऐयार इधर-उधर घबराये घूम रहे थे कि इतने में एक चोबदार ने आकर शोर-गुल मचाना शुरू किया जिससे बद्रीनाथ और भी घबरा गए। चोबदार बिल्कुल जख्मी हो रहा था और उसके चेहरे पर इतने जख्म लगे हुए थे कि खून निकलने से उसका पहिचानना मुश्किल

हो रहा था।

बद्री०, (घबराकर) 'यह क्या, तुमको किसने जख्मी किया?'

चोबदार, 'आप लोग तो इधर के ख्याल में ऐसा भूले हैं कि और बातों की कोई सुध ही नहीं। पिछवाड़े की तरफ से कुंवर बीरेन्द्रसिंह के कई आदमी घुस आये हैं और किले में चारों तरफ घूम-घूमकर न मालूम क्या कर रहे हैं। मैंने एक का मुकाबला भी किया मगर वह बहुत ही चालाक और फुर्तीला था, मुझे इतना जख्मी किया कि दो घण्टे तक बदहवास जमीन पर पड़ा रहा, मुश्किल से यहाँ तक खबर देने आया हूँ। आती दफा रास्ते में उसे फिर दीवारों पर कागज चिपकाते देखा मगर खौफ के मारे कुछ न बोला।

पन्ना०, 'यह बुरी खबर सुनने में आई।'

बद्री०, 'वे लोग कै आदमी हैं, तुमने देखा है?'

चोब०, 'कई आदमी मालूम होते हैं मगर मुझे एक ही से वास्ता पड़ा था।'

बद्री०, 'तुम उसे पहिचान सकते हो?'

चोब०, 'हाँ जरूर पहिचान लूँगा क्योंकि मैंने रोशनी में उसकी सूरत बखूबी देखी है।'

बद्री०, 'मैं उन लोगों को ढूंढ़ने चलता हूँ, तुम भी साथ चल सकते हो?'

'पहिले उसी जगह चलना चाहिए जहाँ महाराज जयसिंह कैद हैं।' सभी की यही राय हुई सब सीधे उसी जगह पहुँचे। देखा तो महाराज जयसिंह कोठरी में हथकड़ी-बेड़ी पहिने लेटे हैं। चोबदार ने खूब गौर से उस कोठरी और दरवाजे को देखकर कहा, 'नहीं वे लोग यहाँ तक नहीं पहुँचे, चलिए दूसरी तरफ ढूंढ़ें।' चारों तरफ सब ढूंढ़ने लगे। घूमते-घूमते दीवारों और दरवाजों पर सटे हुई कई पुर्जे दिखाई पड़े जिसे पढ़ते ही इन ऐयारों के होश जाते रहे, खड़े हो सोच ही रहे थे कि चोबदार चिल्ला उठा और एक कोठरी की तरफ इशारा करके बोला, 'देखो-देखो, अभी एक आदमी उस कोठरी में घुसा है, जरूर वही है जिसने मुझे जख्मी किया था।' यह कह उस कोठरी की तरफ दौड़ा मगर दरवाजे पर रुक गया, तब तक ऐयार लोग भी पहुँच गये।

बद्री०, '(चोबदार से) चलो, अन्दर चलो।'

चोब०, 'पहिले तुम लोग हाथों में खंजर या तलवार ले लो, क्योंकि वह जरूर वार करेगा।'

बद्री०, 'हम होशियार हैं, तुम अन्दर चलो, तुम्हारे हाथ में मशाल है।'

चोब०, 'नहीं बाबा, मैं अन्दर नहीं जाऊँगा, एक दफे किसी तरह जान बची, अब कौन सी कम्बख्ती सवार है कि जान-बूझकर भाड़ में जाऊँ।'

बद्रीनाथ, 'वाह रे डरपोक ! इसी जीवट पर महाराजों के यहाँ नौकरी करता है ? ला मेरे हाथ में मशाल दे, मत जा अन्दर !'

इतना कह चोबदार मशाल और कुप्पी बद्रीनाथ के हाथ में देकर अलग हो गया। चारों ऐयार कोठरी के अन्दर घुसे। थोड़ी दूर गये होंगे कि बाहर से चोबदार ने किवाड़ बन्द करके जंजीर चढ़ा दी, तब अपने कमर से पथरी निकाल आग झाड़कर बत्ती जलाई और चौखट के नीचे जो एक छोटी सी बारूद की चुपड़ी हुई पतीली निकली हुई थी उसमें आग लगा दी। वह रस्सी जलकर सुरसुराती हुई अन्दर घुस गई।

पाठक समझ गये होंगे कि यह चोबदार साहब कौन थे। ये ऐयारों के सिरताज जीतसिंह थे। चोबदार बन ऐयारों को खौफ दिलाकर अपने साथ ले आये और घुमाते-फिराते वह जगह देख ली जहाँ महाराज जयसिंह कैद थे, फिर धोखा देकर इन ऐयारों को उस कोठरी में बन्द कर दिया जिसे पहिले ही से अपने ढंग का बना रखा था।

पतीली में आग लगा और दरवाजे को उसी तरह बन्द छोड़ उस जगह गये जहाँ महाराज जयसिंह कैद थे। वहाँ बिल्कुल सन्नाटा था, दरवाजा खोलकर कहा, 'जल्दी यहाँ से चलिए।'

जिधर से जीतसिंह कमन्द लगाकर किले में आये थे उसी राह से महाराज जयसिंह को नीचे उतारा और तब कहा, 'आप नीचे ठहरिये, मैंने ऐयारों को भी बेहोश किया है, एक-एक करके कमन्द से बाँधकर उन लोगों को लटकाता जाता हूँ आप खोलते जाइए। अन्त में मैं भी उतरकर आपके साथ लश्कर में चलूँगा।' महाराज जयसिंह ने खुश होकर इसे मंजूर किया।

जीतसिंह ने लौटकर उस कोठरी से महाराज को लश्कर में पहुँचाया, फिर कई कहारों को साथ ले उस जगह जा ऐयारों को उठवा लाए, हथकड़ी बेड़ी डालकर खेमे में कैद कर पहरा मुकर्रर कर दिया।

महाराज जयसिंह और सुरेन्द्रसिंह गले मिले, जीतसिंह की बहुत कुछ तारीफ करके दोनों राजाओं ने कई इलाके उनको दिये, जिनकी सनद भी उसी वक्त मुहर करके उनके हवाले की गई।

रात बीत गई, पूरब की तरफ से धीरे-धीरे सुफेदी निकलने लगी और लड़ाई बन्द कर दी गई।

☐ तेजसिंह वगैरह ऐयारों के साथ कुमार खोह से निकलकर तिलिस्म की तरफ रवाना हुए। एक नकाबपोश दूर से दिखाई पड़ा जो कुमार की तरफ ही आ रहा था। जब इनके करीब पहुँचा, घोड़े से उतर जमीन पर कुछ रख दूर जा खड़ा हुआ। कुमार ने वहाँ जाकर देखा तो तिलिस्मी किताब नजर पड़ी और चिट्ठी पाई जिसे देख वे बहुत खुश होकर तेजसिंह से बोले—

'तेजसिंह, क्या करें यह वनकन्या मेरे ऊपर बराबर अपने अहसान के बोझ डाल रही है। इसमें कोई शक नहीं कि यह उसी का आदमी है जो तिलिस्मी किताब मेरे रास्ते में रख दूर जा खड़ा हुआ है! हाय, इसके इश्क ने भी मुझे निकम्मा कर दिया है! देखें इस चिट्ठी में क्या लिखा है।'

यह कहकर कुमार ने चिट्ठी पढ़ी—

'किसी तरह वह तिलिस्मी किताब मेरे हाथ लग गई जो तुम्हें देती हूँ। अब जल्दी तिलिस्म तोड़कर कुमारी चन्द्रकान्ता को छुड़ाओ, वह बेचारी बड़ी तकलीफ में पड़ गई होगी। चुनार में लड़ाई हो रही है, तुम भी वहीं जाओ और अपनी जवांमर्दी दिखाकर फतह अपने नाम लिखवाओ।

तुम्हारी दासी
—वियोगिनी !'

देवी०, 'मेरी राय है कि आप लोग यहीं ठहरें, मैं चुनार जाकर पहिले सब हाल दरियाफ्त कर आता हूँ!'

कुमार, 'ठीक है, अब चुनार सिर्फ पाँच कोस होगा, तुम वहाँ की खबर ले आओ तब चलें क्योंकि कोई बहादुरी का काम करके हम लोगों का जाहिर होना ज्यादा मुनासिब होगा।'

देवीसिंह चुनार की तरफ रवाना हुए। कुमार को रास्ते में एक दिन और अटकना पड़ा, दूसरे दिन देवीसिंह लौटकर कुमार के पास आए और चुनार की लड़ाई का हाल, महाराज जयसिंह के गिरफ्तार होने की खबर, और जीतसिंह की ऐयारी की तारीफ करके बोले—'लड़ाई अभी हो रही है, हमारी फौज कई दफे चढ़कर किले के दरवाजे तक पहुँची मगर वहाँ अटककर दरवाजा नहीं तोड़ सकी, किले की तोपों की मार ने हमारा

नुकसान किया।'

इन खबरों को सुनकर कुमार ने तेजसिंह से कहा, 'अगर हम लोग किसी तरह किले के अन्दर पहुँचकर फाटक खोल सकते तो बड़ी बहादुरी का काम होता।'

तेज०, 'इसमें तो कोई शक नहीं कि यह बड़ी दिलावरी का काम है, या तो किले का फाटक ही खोल देंगे, या फिर जान से हाथ धोएंगे।'

कुमार, 'हम लोगों के वास्ते लड़ाई से बढ़कर मरने के लिए और कौन सा मौका है? या तो चुनार फतह करेंगे, या वैकुण्ठ की ऊँची गद्दी दखल करेंगे। दोनों हाथ में लड्डू हैं।'

तेज०, 'शाबास, इससे बढ़कर और क्या बहादुरी होगी, तो चलिए हम लोग भेष बदलकर किले में घुस जायें। मगर यह काम दिन में नहीं हो सकता।'

कुमार, 'क्या हर्ज है, रात ही को सही। रात भर किले के अन्दर छिपे रहेंगे, सुबह जब लड़ाई खूब रंग पे आवेगी उसी वक्त फाटक पर टूट पड़ेंगे। सब ऊपर फसीलों पर चढ़े होंगे, फाटक पर सौ-पचास आदमियों में घुसकर दरवाजा खोल देना कोई बात नहीं है।'

इसके बाद कुमार घोड़े पर सवार हो ऐयारों को साथ ले चुनार की तरफ रवाना हुए। शाम होते ये लोग चुनार पहुँचे और रात को मौका पा कमन्द लगा किले के अन्दर घुस गए।

☐ दिन अनुमान पहर-भर के आ गया होगा कि फतहसिंह की फौज लड़ती हुई फिर किले के दरवाजे तक आ पहुँची। शिवदत्त की फौज बुर्जियों पर से गोलों की बौछार मारकर इन लोगों को भगाना ही चाहती थी कि यकायक किले का दरवाजा खुल गया और जर्द[1] रंग की चार झंडियाँ दिखाई पड़ीं जिसे देख राजा सुरेन्द्रसिंह अपनी फौज के साथ धड़धड़ाकर फाटक के अन्दर घुस गये और इसके बाद धीरे-धीरे कुल फौज किले में दाखिल हुई। शिवदत्त का सब्ज झण्डा गिराकर अपना जर्द झण्डा खड़ा कर दिया और हाथ से चोब उठाकर जोर से तीन चोट डंके पर लगाईं जो उसी झण्डे के नीचे रक्खा हुआ था। 'कूम धूम फतह' की आवाज निकली जिसके साथ ही किले वालों का जी टूट गया और कुंवर बीरेन्द्रसिंह की मुहब्बत

1. बीरेन्द्रसिंह के लश्कर का जर्द निशान था।

दिल में असर कर गई।

अपने हाथ से कुमार ने फाटक पर चालीस आदमियों के सर काटे थे। मगर ऐयारों के सहित वे भी बहुत जख्मी हो गए थे। राजा सुरेन्द्रसिंह किले के अन्दर घुसे ही थे कि कुमार तेजसिंह और देवीसिंह झण्डियाँ लिए चरणों पर गिर पड़े, ज्योतिषीजी ने आशीर्वाद दिया। इससे ज्यादा न ठहर सके, जख्मों के दर्द से चारों बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े और बदन से खून निकलने लगा।

जीतसिंह ने पहुँचकर चारों के जख्मों पर पट्टी बाँधी, चेहरा धुलने से ये चारों पहिचाने गए। थोड़ी देर में सब होश में आये। राजा सुरेन्द्रसिंह अपने प्यारे लड़के को देर तक छाती से लगाए रहे और तीनों ऐयारों पर भी बहुत मेहरबानी की। महाराज जयसिंह कुमार की दिलावरी पर मोहित हो तारीफ करने लगे, कुमार ने उनके पैरों को भी हाथ लगाया और खुशी-खुशी दूसरे लोगों से मिले।

चुनार का किला फतह हो गया। महाराज जयसिंह और सुरेन्द्रसिंह दोनों ने मिलकर उसी रोज कुमार को राजगद्दी पर बैठाकर तिलक दे दिया। जश्न शुरू हुआ और मुहताजों को खैरात बँटने लगी। सात रोज तक जश्न रहा। महाराज शिवदत्त की कुल फौज ने दिलोजान से कुमार की तावेदारी कबूल की।

कई दिन बाद महाराज जयसिंह और राजा सुरेन्द्रसिंह कुंवर वीरेन्द्रसिंह को तिलिस्म तोड़ने की ताकीद करके खुशी-खुशी विजयगढ़ और नौगढ़ रवाना हुए। उनके जाने के बाद कुंवर बीरेन्द्रसिंह अपने ऐयारों और कुछ फौज को साथ ले तिलिस्म की तरफ रवाना हुए।

☐ तिलिस्म के दरवाजे पर कुँवर बीरेन्द्रसिंह का डेरा खड़ा हो गया। खजाना पहिले ही निकाल चुके थे, अब कुल दो टुकड़े तिलिस्म के टूटने को बाकी थे, एक तो वह चबूतरा जिस पर पत्थर का आदमी सोया था, दूसरे अजदहे वाले दरवाजे को तोड़कर वहाँ पहुँचना जहाँ कुमारी चन्द्रकान्ता और चपला थीं। तिलिस्मी किताब कुमार के हाथ लग ही चुकी थी; उसके कई पन्ने बाकी रह गये थे, आज उसे बिल्कुल पढ़ गये कुमारी चन्द्रकान्ता के पास पहुँचने तक जो-जो काम इनको करने थे सब ध्यान में चढ़ा लिए, मगर उस चबूतरे के तोड़ने की तरकीब किताब में न देखी जिस पर पत्थर का आदमी सोया हुआ था, उसके बारे में इतना लिखा था कि 'वह चबूतरा एक

दूसरे तिलिस्म का दरवाजा है जो इस तिलिस्म से कहीं बढ़-चढ़ के है और माल खजाने की तो इन्तहा नहीं कि उसमें कितना रक्खा हुआ है। वहां की एक-एक चीज ऐसे ताज्जुब की है कि जिसके देखने से बड़े-बड़े दिमाग वालों की अक्ल चकरा जाये। उसके तोड़ने की तरकीब दूसरी ही है, ताली भी उसकी उसी आदमी के कब्जे में है जो उस पर सोया हुआ है।'

कुमार ने ज्योतिषीजी की तरफ देखकर कहा, 'क्यों ज्योतिषीजी, क्या यह चबूतरे वाला तिलिस्म मेरे हाथ से न टूटेगा ?'

ज्योतिषी, 'देखा जायेगा, पहिले आप चन्द्रकान्ता को छुड़ाइए।'

कुमार, 'अच्छा चलिए, यह काम तो आज ही खतम हो जायेगा।'

तीनों ऐयारों को साथ लेकर कुँवर वीरेन्द्रसिंह उस तिलिस्म में घुसे। जो कुछ उस तिलिस्मी किताब में लिखा हुआ था खूब खयाल कर लिया और उसी तरह काम करने लगे।

खण्डहर के अन्दर जाकर उस मामूली दरवाजे को खोला जो उस पत्थर वाले चबूतरे के सिरहाने की तरफ था। नीचे उतरकर कोठरी में से होते हुए उसी बाग में पहुँचे जहां खजाने और बारहदरी के सिंहासन का वह पत्थर हाथ लगा था जिसको छूकर चपला बेहोश हो गई थी और जिसके बारे में तिलिस्मी किताब में लिखा हुआ था कि 'वह एक डिब्बा है और उसके अन्दर एक नायाब चीज रक्खी है।'

चारों आदमी नहर के रास्ते गोता मारकर उसी तरह बाग के उस पार हुए जिस तरह चपला उसके बाहर गई थी और उसी तरह पहाड़ी के नीचे वाली नहर के किनारे-किनारे चलते हुए उस छोटे से दालान में पहुँचे जिसमें वह अजदहा था जिसके मुँह में चपला घुसी थी।

बगल में एक खिड़की थी जिसका दरवाजा बन्द था। सामने ताली रक्खी हुई थी जिससे ताला खोलकर चारों आदमी उसके अन्दर गए। यहां से वे लोग छत पर चढ़ गए जहां से गली की तरह एक खोह दिखाई पड़ी।

किताब से पहिले ही से मालूम हो चुका था कि यही खोह की सी गली उस दालान में जाने के लिए राह है जहां चपला और चन्द्रकान्ता बेबस पड़ी हैं।

अब कुमारी चन्द्रकान्ता से मुलाकात होगी इस खयाल से कुमार का जी धड़कने लगा, चाव्ला की मुहब्बत ने तेजसिंह के पैर हिला दिये। खुशी-खुशी ये लोग आगे बढ़े। कुमार सोचते जाते थे कि 'आज जैसे निराले में कुमारी चन्द्रकान्ता से मुलाकात होगी। मैं अपने हाथों से उसके बाल

सुलझाऊँगा, अपने चादर से उसके बदन की गर्द झाड़ूँगा। उसको मुझसे बड़ी मुहब्बत है, देखते ही खुश हो जायेगी, कपड़े का कुछ खयाल न करेगी। हाँ खूब याद पड़ा, मैं अपनी चादर अपनी कमर में लपेट लूँगा और अपनी धोती उसे पहिनाऊँगा, इस वक्त का काम चल जायेगा। (चौंककर) यह क्या, सामने से कई आदमियों के पैर की चाप सुनाई पड़ती है! शायद मेरा आना मालूम करके चन्द्रकान्ता और चपला आगे से मिलने को चली आ रही हैं। नहीं-नहीं उनको क्या मालूम कि मैं यहाँ आ पहुँचा।'

ऐसी-ऐसी बातें सोचते धीरे-धीरे कुमार बढ़ रहे थे कि इतने में ही आगे दो भेड़ियों के लड़ने की आवाज आई जिसे सुनते ही कुमार के पैर दो-दो मन के हो गए। तेजसिंह की तरफ देखकर कुछ कहना चाहते थे मगर मुँह से आवाज न निकली। चलते-चलते उस दालान में पहुँचे जहाँ नीचे खोह के अन्दर से कुमारी और चपला को बैठे देखा था।

पूरी उम्मीद थी कि कुमारी चन्द्रकान्ता और चपला को यहाँ देखेंगे, मगर वे कहीं नजर न आईं, हाँ जमीन पर पड़ी दो लाशें जरूर दिखाई दीं जिनमें मांस बहुत कम था, सिर से पैर तक नुची हड्डी दिखाई देती थी, चेहरे किसी के भी दुरुस्त न थे।

इस वक्त कुमार की कैसी दशा थी वे जानते होंगे। पागलों की सी सूरत हो गई, चिल्लाकर रोने और बकने लगे—'हाय चन्द्रकान्ता, तुझे कौन ले गया! नहीं ले नहीं बल्कि मार गया! जरूर उन्हीं भेड़ियों ने तुझे मुझसे जुदा किया। आज नौगढ़ और विजयगढ़ और चुनारगढ़ तीनों राज्य ठिकाने लग गए। मैं तो तुम्हारे पास आता ही हूँ, मेरे साथ ही और कई आदमी आवेंगे जो तुम्हारी खिदमत के लिए बहुत होंगे। हाय, इस सत्यानाशी तिलिस्म ने, इस दुष्ट शिवदत्त ने, इन भेड़ियों ने आज बड़े-बड़े दिलावरों को खाक में मिला दिया। बस हो गया, दुनिया इतनी ही बड़ी थी, अब खत्म हो गई। हाँ, हाँ दौड़ी क्यों जाती हो! लो मैं भी आया!'

इतना कह और पहाड़ी के नीचे की तरफ देख कुमार कूद के अपनी जान देना ही चाहते और तीनों ऐयार सन्न खड़े देख ही रहे थे कि यकायक भारी आवाज के साथ दालान के एक तरफ की दीवार फट गई और उसमें से एक वृद्ध महापुरुष ने निकलकर कुमार का हाथ पकड़ लिया।

कुमार ने फिरकर देखा। लगभग अस्सी वर्ष की उम्र, लम्बी-लम्बी सफेद रुई की तरह दाढ़ी नाभी तक आई हुई, सिर की लम्बी जटा जमीन तक लटकती हुई, तमाम बदन में भस्म लगाये, लाल और बड़ी-बड़ी आंखें निकाले, दाहिने हाथ में त्रिशूल उठाए, बायें हाथ से कुमार को थामे, गुस्से

से बदन कँपाने तामसी रूप शिवजी की तरह दिखाई पड़े जिन्होंने कड़क के आवाज दी और कहा, 'खबरदार जो किसी को विधवा करेगा !'

यह आवाज इस जोर की थी कि सारा मकान दहल उठा, तीनों ऐयारों के कलेजे कांप उठे। कुँवर वीरेन्द्रसिंह का बिगड़ा हुआ दिमाग फिर ठिकाने आ गया। देर तक उन्हें सिर से पैर तक देखकर कुमार ने कहा—

'मालूम हुआ, मैं समझ गया कि आप साक्षात शिवजी या कोई योगी हैं, मेरी भलाई के लिए आए हैं। वाह-वाह, खूब किया जो आ गए।'

वृद्ध योगी ने फिर कड़ककर कहा, 'क्या मैं झूठा हूँ ? क्या तू क्षत्री है ? क्षत्रियों के यही धर्म होते हैं ? क्या वे अपनी प्रतिज्ञा को भूल जाते हैं ? क्या तूने किसी से विवाह की प्रतिज्ञा नहीं की ? ले देख पढ़ किसका लिखा हुआ है ?'

यह कह अपनी जटा के नीचे से एक चिट्ठी निकालकर कुमार के हाथ में दे दी। पढ़ते ही कुमार चौंक उठे। 'हैं, यह तो मेरा ही लिखा है ! क्या लिखा है ? 'मुझे सब कुछ मंजूर है !' इसके दूसरी तरफ क्या लिखा है ? हां अब मालूम हुआ, यह तो उस वनकन्या की चिट्ठी है, इसी में उसने अपने साथ ब्याह करने के लिए मुझे लिखा था, उसी के जवाब में मैंने उसकी बात कबूल की थी। मगर यह चिट्ठी इनके हाथ कैसे लगी ? वनकन्या से इनसे क्या वास्ता ?'

कुछ ठहरकर कुमार ने पूछा, 'क्या इस वनकन्या को आप जानते हैं ?' इसके जवाब में फिर कड़क के वृद्ध योगी बोले, 'अभी तक जानने को कहता है ! क्या उसे तेरे सामने कर दूं ?'

इतना कहकर एक लात जमीन पर मारी, जमीन फट गई और उसमें से वनकन्या ने निकलकर कुमार का पांव पकड़ लिया।

भाग-4

□ वनकन्या को यकायक जमीन से निकल पैर पकड़ते देख कुँवर वीरेन्द्रसिंह एकदम घबरा उठे। कुमार ने योगी से कहा, 'मैं इस वनकन्या को जानता हूँ। इसने हमारे साथ बड़ा भारी उपकार किया है और मैं इससे बहुत कुछ वादा भी कर चुका हूँ, लेकिन मेरा वह वादा बिना कुमारी चन्द्रकान्ता के मिले पूरा नहीं हो सकता। देखिये इसी चिट्ठी में जो आपने दी है क्या शर्त है? खुद इन्होंने लिखा है कि 'मुझसे और कुमारी चन्द्रकान्ता से एक ही दिन शादी हो, और इस बात को मैंने मंजूर किया था, पर जब कुमारी चन्द्रकान्ता ही इस दुनिया से चली गयी तब मैं किसी से ब्याह नहीं कर सकता, इकरार दोनों से एक साथ ही शादी करने का है।'

योगी, 'क्यों री, तू मुझे झूठा बनाना चाहती है?'

वनकन्या, 'नहीं महाराज, मैं आपको कैसे झूठा बना सकती हूँ? आप इनसे पूछें कि इन्होंने कैसे मालूम किया कि चन्द्रकान्ता मर गई?'

योगी, 'यह क्या कहती है? तुमने कैसे जाना कि कुमारी मर गई?'

कुमार, (कुछ चौकन्ने होकर) 'क्या कुमारी जीती है?'

योगी, (तेजसिंह की तरफ देखकर) 'क्या तुम्हारी अक्ल भी चरने चली गई? इन दोनों लाशों को देखकर इतना भी न पहिचान सके कि ये मर्दों की लाशें हैं या औरतों की? इनकी लम्बाई और बनावट पर भी कुछ खयाल न किया।'

तेज०, (घबड़ाकर तथा दोनों लाशों की तरफ गौर से देख और शरमाकर) 'मुझसे बड़ी भूल हुई कि मैंने इन दोनों लाशों पर गौर नहीं किया, कुमार के साथ मैं भी घबरा गया। हकीकत में दोनों लाशें मर्दों की हैं औरतों की नहीं।'

योगी, 'ऐयारों से ऐसी भूल का होना कितने शर्म की बात है! इस ज़रा-सी भूल में कुमार की जान जा चुकी थी!' (उंगली से इशारा करके)

'देखो उस तरफ उन दोनों पहाड़ियों के बीच में ! इतना कहना बहुत है, क्योंकि तुम इस तहखाने का हाल जानते हो, अपने गुरू से सुन चुके हो।'

☐ आखिर कुँवर वीरेन्द्रसिंह ने तेजसिंह से कहा, 'मुझे अभी तक यह न मालूम हुआ कि योगीजी ने उंगली के इशारे से तुम्हें क्या दिखलाया और इतनी देर तक तुम्हारा ध्यान कहाँ अटका रहा, और अब वे दोनों कहाँ गायब हो गये।

तेज०, 'क्या बतावें कि वे दोनों कहाँ चले गये, कुछ खुलासा हाल उनसे न मिल सका, अब बहुत तरद्दुद करना पड़ेगा।'

वीरेन्द्र०, 'आखिर तुम उस तरफ क्या देखने लगे थे ?'

तेज०, 'हम क्या देखते थे इस हाल के कहने में बड़ी देर लगेगी और अब यहाँ उन मुर्दों की बदबू में रुका नहीं जाता। इन्हें इसी जगह छोड़ इस तिलिस्म के बाहर चलिये, वहाँ जो कुछ हाल है कहूँगा। मगर यहाँ से चलने के पहिले उसे देख लीजिये जिसे इतनी देर तक मैं ताज्जुब से देख रहा था। वह दोनों पहाड़ियों के बीच में जो दरवाजा खुला नजर आ रहा है सो पहिले बन्द था, यही ताज्जुब की बात थी। अब चलिये, मगर हम लोगों को कल फिर यहाँ लौटना पड़ेगा। यह तिलिस्म ऐसे राह पर बना हुआ है कि अन्दर यहाँ तक आने में लगभग पाँच कोस का फासला मालूम पड़ता है और बाहर की राह से अगर इस तहखाने तक आवें तो पन्द्रह कोस चलना पड़ेगा।'

कुमार, 'खैर यहाँ से चलो, मगर इस हाल को खुलासा सुने बिना तबीयत घबड़ा रही है।'

जिस तरह चारों आदमी तिलिस्म की राह से यहां तक पहुँचे थे उसी तरह तिलिस्म के बाहर हुए। आज इन लोगों को बाहर आने तक आधी रात बीत गयी। तेजसिंह ने कुमार से कहा, 'इस वक्त आप सो रहें, कल आपसे जो कुछ कहना है कहूँगा।'

☐ यह तो मालूम हुआ कि कुमारी चन्द्रकान्ता जीती है, मगर कहां है और उस खोह में से क्योंकर निकल गयी, बनकन्या कौन है, योगीजी कहाँ से आये, तेजसिंह को उन्होंने क्या दिखाया इत्यादि बातों को सोचते और खयाल दौड़ाते कुमार ने सुबह कर दी। एक घड़ी भी नींद न आयी। अभी

सवेरा नहीं हुआ था कि पलंग से उतर जल्दी के मारे खुद तेजसिंह के डेरे में गये। वे अभी तक सोये थे, उन्हें जगाया।

तेजसिंह ने उठकर कुमार को सलाम किया। जी में तो समझ ही गया था कि यही बात पूछने के लिए कुमार बेताब हैं और इसी से इन्होंने आकर मुझे इतनी जल्दी उठाया है मगर फिर भी पूछा, 'कहिये क्या है जो इतने सवेरे आप उठे हैं?'

कुमार, 'रात भर नींद नहीं आयी, अब जो कुछ कहना हो जल्दी कहो।'

तेज०, 'अच्छा आप बैठ जाइये, मैं कहता हूँ।'

कुमार बैठ गये और देवीसिंह तथा ज्योतिषीजी को भी उसी जगह बुलवा भेजा। जब वे आ गये, तेजसिंह ने कहना शुरू किया, 'यह तो मुझे अभी तक मालूम नहीं हुआ कि कुमारी चन्द्रकान्ता को कौन ले गया या वह योगी कौन थे और वनकन्या की मदद क्यों करने लगे, मगर उन्होंने जो कुछ मुझे दिखाया वह इतने ताज्जुब की बात थी कि मैं उसे देखने में ही इतना डूबा कि योगीजी से कुछ पूछ न सका और वे भी बिना कुछ खुलासा हाल कहे चलते बने। उस दिन पहिले-पहिल जब आपको खोह में ले गया तब वहाँ का हाल जो मैंने अपने गुरुजी से सुना था सो आपसे कहा था, याद है?'

कुमार, 'तुमने यही कहा था कि उसमें बड़ा भारी खजाना है, मगर उस पर एक छोटा-सा तिलिस्म बँधा हुआ है जो बहुत सहज में टूट सकेगा, क्योंकि उसके तोड़ने की तरकीब तुम्हारे उस्ताद तुम्हें कुछ बता गये हैं।'

तेज०, 'हाँ ठीक है, मैंने यही कहा था। उस खोह में मैंने आपको एक दरवाजा दो पहाड़ियों के बीच में दिखाया था, जिसे योगी ने मुझे इशारे से बताया था। उस दरवाजे को खुला देख मुझे मालूम हो गया कि उस तिलिस्म को किसी ने तोड़ डाला और वहाँ का खजाना ले लिया, उसी वक्त मुझे यह खयाल आया कि योगी ने उस दरवाजे की तरफ इसलिए इशारा किया कि जिसने तिलिस्म तोड़कर वह खजाना लिया है वही कुमारी चन्द्रकान्ता को भी ले गया। इस सोच और तरद्दुद में डूबा हुआ मैं एकटक उस दरवाजे की तरफ देखता रह गया और योगी महाराज चलते बने।

कुमार, 'जब बद्रीनाथ को कैद करने उस खोह में गये थे और दरवाजा न खुलने पर वापस आए, उस वक्त भी शायद दरवाजे को भीतर से उसी

ने बन्द कर लिया हो जिसने तिलिस्म को तोड़ा है। वह उसके अन्दर रहा होगा।

तेज०, 'आपका खयाल ठीक है, जरूर यही बात है, इसमें कोई शक नहीं। बल्कि उसी ने शिवदत्त को भी छुड़ाया होगा।'

कुमार, 'हो सकता है, मगर जब छूटने पर शिवदत्त ने बेईमानी पर कमर बाँधी और पीछे मेरे लश्कर पर धावा मारा तो क्या उसी ने फिर शिवदत्त को गिरफ्तार करके उस खोह में डाल दिया? और क्या वह पुर्जा भी उसी का लिखा था जो शिवदत्त के गायब होने के बाद उसके पलंग पर मिला था?'

कुमार, 'मामला तो बहुत ही पेचीदा मालूम पड़ता है, मगर तुम भी कुछ गलती कर गये।'

तेज०, 'मैंने क्या गलती की?'

कुमार, 'कल योगी ने दीवार से निकलकर मुझे कूदने से रोका, इसके बाद जमीन पर लात मारी और वहाँ की जमीन फट गई और वनकन्या निकल आई, तो योगी कोई देवता तो थे ही नहीं कि लात मार के जमीन फाड़ डालते। जरूर वहाँ पर जमीन के अन्दर कोई तरकीब है। तुम्हें भी मुनासिब था कि उस तरह लात मार के देखते कि जमीन फटती है या नहीं!'

आज फिर कुमार और तीनों ऐयार उस तिलिस्म में गए। मामूली राह से घूमते हुए उसी दालान में पहुँचे जहाँ योगी निकले थे। जाकर देखा तो वे दोनों सड़ी और जानवरों की खाई हुई लाशें वहाँ न थीं, जमीन धोई-धाई साफ मालूम पड़ती थी। थोड़ी देर तक ताज्जुब में भरे ये लोग खड़े रहे, इसके बाद तेजसिंह ने गौर करके उसी जगह जोर से लात मारी जहाँ योगी ने लात मारी थी।

फौरन उसी जगह से जमीन फट गई और नीचे उतरने के लिए छोटी-छोटी सीढ़ियाँ नज़र पड़ीं! खुशी-खुशी ये चारों आदमी नीचे उतरे। वहाँ एक अँधेरी कोठरी में घूम-घूमकर इन लोगों को कोई दूसरा दरवाजा खोजना पड़ा मगर पता न लगा। लाचार होकर फिर बाहर निकल आए, लेकिन वह फटी हुई जमीन फिर न जुड़ी उसी तरह खुली रह गयी। तेजसिंह ने कहा, 'मालूम होता है कि भीतर से बन्द करने की कोई तरकीब इसमें है जो हम लोगों को मालूम नहीं। खैर जो भी हो काम कुछ न निकला, अब बिना बाहर की राह इस खोह में आए कोई मतलब सिद्ध न होगा।'

चारों आदमी तिलिस्म के बाहर हुए। तेजसिंह ने ताला बन्द कर दिया।

एक रोज टिक कर कुँवर वीरेन्द्रसिंह ने फतेहसिंह सेनापति को नायब मुकर्रर करके चुनार भेज देने के बाद नौगढ़ की तरफ कूच किया और वहाँ पहुँच कर अपने पिता से मुलाकात की। राजा सुरेन्द्रसिंह के इशारे पर जीतसिंह ने रात को एकान्त में तिलिस्म का हाल कुँवर वीरेन्द्र-सिंह से पूछा। उसके जवाब में जो कुछ ठीक-ठीक हाल था कुमार ने उनसे कहा।

जीतसिंह ने उसी जगह तेजसिंह को बुलवा कर कहा, 'तुम दोनों ऐयार कुमार को साथ लेकर खोह में जाओ और उस छोटे तिलिस्म को कुमार के हाथ से फतह करवाओ जिसका हाल तुम्हारे उस्ताद ने तुमसे कहा था।

कुँवर वीरेन्द्रसिंह ने तीनों ऐयारों और थोड़े-से आदमियों को साथ ले खोह की तरफ कूच किया। सुबह होते-होते ये लोग वहाँ पहुँचे। सिपाहियों को कुछ दूर छोड़ चारों आदमी खोह का दरवाजा खोल कर अन्दर गये।

सवेरा हो गया था, तेजसिंह ने महाराज शिवदत्त और उनकी रानी को खोह के बाहर लाकर सिपाहियों के सुपुर्द किया और महाराज शिवदत्त को पैदल और उनकी रानी को डोली पर चढ़ा कर जल्दी नौगढ़ पहुँचाने के लिए ताकीद करके फिर खोह के अन्दर पहुँचे।

□ राजा सुरेन्द्रसिंह के सिपाहियों ने महाराज शिवदत्त और उनकी रानी को नौगढ़ पहुँचाया। जीतसिंह की राय से उन दोनों को रहने के लिये सुन्दर मकान दिया गया। उनकी हथकड़ी-बेड़ी खोल दी गयी, मगर हिफाजत के लिए मकान के चारों तरफ सख्त पहरा मुकर्रर कर दिया गया।

दूसरे दिन राजा सुरेन्द्रसिंह और जीतसिंह आपस में कुछ राय करके पंडित बद्रीनाथ, पन्नालाल, रामनारायण और चुन्नीलाल इन चारों कैदी ऐयारों को साथ ले उस मकान में गये जिसमें महाराज शिवदत्त और उनकी महारानी को रक्खा था।

राजा सुरेन्द्रसिंह के आने की खबर सुनकर महाराज शिवदत्त अपनी रानी को साथ लेकर दरवाजे तक इस्तकबाल (आगवानी) के लिये आये

और मकान में जाकर आदर के साथ बैठाया। इसके बाद खुद दोनों आदमी सामने बैठे। हथकड़ी और बेड़ी पहिरे ऐयार भी एक तरफ बैठाये गये। महाराज शिवदत्त ने पूछा, 'इस वक्त आपने किसलिये तकलीफ की ?'

राजा सुरेन्द्रसिंह ने इसके जवाब में कहा, 'आज तक आपके जी में जो कुछ आया किया, क्रूरसिंह के बहकाने से हम लोगों को तकलीफ देने के लिए बहुत कुछ उपाय किया, धोखा दिया, लड़ाई ठानी, मगर अभी तक परमेश्वर ने हम लोगों की रक्षा की।'

शिवदत्त, 'जो कुछ मैं चाहता हूँ आप सुन लीजिये। मेरे आगे कोई लड़का नहीं है जिसकी मुझे फिक्र हो, हाँ चुनार के किले में मेरे रिश्तेदारों की कई बेवायें हैं जिनकी परवरिश मेरे ही सबब से होती थी, उनके लिए आप कोई ऐसा बन्दोबस्त कर दें जिससे उन बेचारियों की जिन्दगी आराम से गुजरे। हमको अब आप कैद से छुट्टी दीजिये। अपनी स्त्री को साथ ले जंगल में चला जाऊँगा, किसी जगह बैठ कर ईश्वर का नाम लूँगा।'

सुरेन्द्र०, 'अभी आपकी उम्र इस लायक नहीं कि आप तपस्या करें।'

शिव०, 'जो हो, अगर आप बहादुर हैं तो मुझे छोड़ दीजिये।'

सुरेन्द्र०, 'आपकी कसम का तो मुझे कोई भरोसा नहीं, मगर आप जो यह कहते हैं कि अगर बहादुर हैं तो मुझे छोड़ दें तो मैं छोड़ देता हूँ, जहाँ जी चाहे जाइये और जो कुछ आपको खर्च के लिए चाहिये ले लीजिए।'

शिव०, 'मुझे खर्च की कोई जरूरत नहीं बल्कि रानी के बदन पर जो कुछ जेवर हैं वह भी उतार के दिये जाता हूँ।'

यह कहकर रानी की तरफ देखा, उस बेचारी ने फौरन अपने बदन के सब गहने उतार दिये।

शिव०, 'अब यहाँ न रहूँगा, मुझे छुट्टी दे दीजिए। इस मकान के चारों तरफ से पहरा हटा लीजिए।'

सुरेन्द्र०, 'अच्छा जैसी तुम्हारी मर्जी।'

महाराज शिवदत्त के चारों ऐयार चुपचाप बैठे सब बातें सुन रहे थे। बात खत्म होने पर दोनों राजाओं के चुप हो जाने के बाद महाराज शिवदत्त की तरफ देखकर पंडित बद्रीनाथ ने कहा, 'आप तो अब तपस्या करने जाते हैं, हम लोगों के लिए क्या हुक्म होता है ?'

शिव०, 'जो तुम लोगों के जी में आवे करो, जहाँ चाहो जाओ, हमने अपनी तरफ से तुम लोगों को छुट्टी दे दी, बल्कि अच्छी बात हो कि तुम

लोग कुँवर बीरेन्द्रसिंह के साथ रहना पसन्द करो, क्योंकि ऐसा बहादुर और धार्मिक राजा तुम लोगों को न मिलेगा।'

जीतसिंह ने कहा, 'अभी एक दफे आप लोग चारों ऐयार मेरे सामने आइये फिर वहाँ जाकर खड़े होइये—पहिले अपनी मामूली रस्म तो अदा कर लीजिए।'

मुस्कराते हुए पंडित बद्रीनाथ, पन्नालाल, रामनारायण और चुन्नीलाल जीतसिंह के सामने आये और बिना कहे जनेऊ और ऐयारी का बटुआ हाथ में लेकर कसम खाकर बोले—'आज से मैं राजा सुरेन्द्रसिंह और उनके खानदान का नौकर हुआ। ईमानदारी और मेहनत से अपना काम किया करूँगा। तेजसिंह, देवीसिंह और ज्योतिषीजी को अपना भाई समझूंगा। बस अब तो रस्म पूरी हो गई ?'

'बस और कुछ बाकी नहीं !' इतना कहकर जीतसिंह ने चारों को गले से लगा लिया, फिर ये चारों ऐयार सुरेन्द्रसिंह के पीछे जा खड़े हुए।

राजा सुरेन्द्रसिंह ने महाराज शिवदत्त से कहा, 'अच्छा अब मैं बिदा होता हूँ। पहरा अभी उठाता जाता हूँ, रात को जब जी चाहे चले जाना, मगर आओ गले तो मिल लें।'

जीतसिंह, बद्रीनाथ, पन्नालाल, रामनारायण और चुन्नीलाल को साथ लिए राजा सुरेन्द्रसिंह अपने दीवानखाने में जाकर बैठे। घण्टों तक महाराज शिवदत्त के बारे में अफसोस भरी बातचीत होती रही। मौका पाकर जीतसिंह ने अर्ज किया, 'अब तो हमारे दरबार में और चार ऐयार हो गए हैं जिसकी बहुत ही खुशी है। अगर तावेदार को पन्द्रह दिन की छुट्टी मिल जाती तो अच्छी बात थी यहाँ मैं दूर बिरादरी में कुछ काम है, जाना जरूरी है।'

सुरेन्द्र, 'अच्छा जाओ, लेकिन जहाँ तक हो सके जल्दी आना।'

राजा सुरेन्द्रसिंह से बिदा हो जीतसिंह अपने घर गये और बद्रीनाथ वगैरह चारों ऐयारों को भी कुछ समझाने-बुझाने के लिए साथ लेते गये।

☐ कुँवर बीरेन्द्रसिंह तीनों ऐयारों के साथ खोह के अन्दर घूमने लगे। तेजसिंह ने इधर-उधर के कई निशानों को देखकर कुमार से कहा, 'बेशक यहाँ का छोटा तिलिस्म तोड़ कोई खजाना ले गया। जरूर कुमारी चन्द्रकान्ता को भी उसी ने कैद किया होगा। मैंने अपने उस्ताद की जुबानी सुना था कि इस खोह में कई इमारतें और बाग देखने बल्कि रहने लायक

हैं।

कुमार से तेजसिंह ने कहा था कि 'इस छोटे तिलिस्म के तोड़ने और खजाना पाने की तरकीब किसी धातु के पत्र पर खुदी हुई यहीं जमीन में गड़ी है—मगर इस वक्त यहाँ खोदने से उसका कुछ पता न लगा, हाँ एक चिट्ठी उसमें से जरूर मिली जिसको कुमार ने निकाल कर पढ़ा। यह लिखा था—

'अब क्या खोदते हो! मतलब की कोई चीज नहीं है, जो था सो निकल गया, तिलिस्म टूट गया। अब हाथ मल के पछताओ!'

तेज०, 'देखिए यह सबूत तिलिस्म टूटने का मिल गया!'

कुमार, 'जब तिलिस्म टूट चुका तो उसके दरवाजे भी खुले होंगे।'

'हाँ जरूर खुले होंगे' कहकर तेजसिंह पहाड़ियों पर फिराते कुमार को एक गुफा के पास ले गए। जिसमें सिर्फ एक आदमी के जाने लायक राह थी।

चारों आदमी अन्दर गये, छोटा-सा बाग देखा जो चारों तरफ से साफ, कहीं तिनके तक का नाम-निशान नहीं, मालूम होता था।

बाग में घूमने और इधर-उधर देखने से मालूम हुआ कि ये लोग पहाड़ी के ऊपर चले गये हैं। जब फौवारे के पास पहुँचे तो एक बात ताज्जुब की दिखाई पड़ी। उस जगह जमीन पर जनाने हाथ का एक जोड़ा कंगन नजर पड़ा, जिसे देखते ही कुमार ने पहिचान लिया कि कुमारी चन्द्रकान्ता के हाथ का है। झट उठा लिया, आँखों से आँसू की बूँदें टपकने लगीं, तेजसिंह ने पूछा—'यह कंगन यहाँ क्योंकर पहुँचा? इसके बारे में क्या खयाल किया जाय?' तेजसिंह कुछ जवाब दिया ही चाहते थे कि उनकी निगाह एक कागज पर जा पड़ी जो उसी जगह चिट्ठी की तरह मोड़ा हुआ पड़ा था। जल्दी से उठा लिया और खोलकर पढ़ा, यह लिखा था—

'बड़ी ही होशियारी से जाना, ऐयार लोग पीछा करेंगे, ऐसा न हो कि पता लग जाय नहीं तो तुम्हारा और कुमार दोनों ही का बड़ा भारी नुकसान होगा। अगर मौका मिला तो कल आऊँगा वहीं।'

तेजसिंह ने वह चिट्ठी कुमार के हाथ में दे दी, वे भी पढ़कर हैरान हो गए, बोले, 'इसमें जो कुछ लिखा है उस पर गौर करने से तो मालूम होता है कि हमारे वनकन्या के मामले में ही कुछ है, मगर किसने लिखा यह पता नहीं लगता।'

फिर ये लोग घूमने लगे, बाग के कोने में इन लोगों को छोटी-छोटी

चार खिड़कियाँ नजर आई जो एक के साथ एक बराबर सटी बनी हुई थीं। पहिले चारों आदमी बाईं तरफ वाली खिड़की में घुसे। थोड़ी दूर जाकर एक दरवाजा मिला जिसके आगे जाने की बिल्कुल राह न थी क्योंकि नीचे बेढब खतरनाक पहाड़ी दिखाई देती थी।

इधर-उधर देखने और खूब गौर करने से मालूम हुआ कि यह वही दरवाजा है जिसको इशारे से उस योगी ने तेजसिंह को दिखाया था। इस जगह से वह दालान बहुत साफ दिखाई देता था जिसमें कुमारी चन्द्रकान्ता और चपला बहुत दिनों तक बेबस पड़ी थीं।

चारों आदमी लौट आये और तीसरी खिड़की में घुसे। एक बाग में पहुँचते ही देखा कि वनकन्या कई साथियों को लिए घूम रही है, लेकिन कुँवर वीरेन्द्रसिंह वगैरह को देखते ही तेजी के साथ बाग के एक कोने में जाकर गायब हो गई।

चारों आदमियों ने उसका पीछा किया और घूम-घूमकर तलाश भी किया मगर कहीं कुछ भी पता न लगा।

कुमार, 'चन्द्रकान्ता की मुहब्बत में हमारी दुर्गति हो गई, जिस पर भी अब तक कोई उम्मीद नहीं मालूम पड़ती।'

तेज०, 'कुमारी सही-सलामत हैं और आपको मिलेंगी इसमें कोई शक नहीं। जितनी मेहनत से जो चीज मिलती है उसके साथ उतनी ही खुशी में जिन्दगी बीतती है।'

कुमार, 'तुमने चपला के लिए कौन-सी तकलीफ उठाई?'

तेज०, 'तो चपला ही ने मेरे लिए कौन-सा दुख भोगा? जो कुछ किया कुमारी चन्द्रकान्ता के लिये।'

ज्योतिषी, 'क्यों तेजसिंह, क्या यह चपला तुम्हारी ही जाति की है?'

तेज०, 'इसका हाल तो कुछ मालूम नहीं कि यह कौन जात है लेकिन जब मुहब्बत हो गई तो फिर चाहे कोई जात हो।'

ज्योतिषी, 'लेकिन क्या उसका कोई वली वारिस भी नहीं है? अगर तुम्हारी जाति की न हुई तो उसके माँ-बाप कब कबूल करेंगे?'

तेज०, 'अगर कुछ ऐसा-वैसा हुआ तो उसको मार डालूँगा और अपनी भी जान दे दूँगा!'

कुमार, 'कुछ इनाम दो तो हम चपला का हाल तुम्हें बता दें।'

तेज०, 'इनाम में हम चपला को आपके हवाले कर देंगे।'

कुमार, 'याद रखना, चपला फिर हमारी हो जाएगी।'

तेज०, 'जी हाँ, जी हाँ आपकी हो जाएगी।'

कुमार, 'चपला हमारी ही जाति की है। इसका बाप बड़ा भारी जमींदार और पूरा ऐयार था। इसको सात दिन का छोड़ कर इसकी माँ मर गयी। इसके बाप ने इसे पाला और ऐयारी सिखाई, अभी कुछ ही वर्ष गुजरे हैं कि इसका बाप भी मर गया। महाराज जयसिंह उसको बहुत मानते थे, उसने इनके बहुत बड़े-बड़े काम किये थे। मरने के वक्त अपनी बिल्कुल जमा-पूंजी और चपला को महाराज के सुपुर्द कर गया, क्योंकि उसका कोई वारिस नहीं था। महाराज जयसिंह इसको अपनी लड़की की तरह मानते हैं और महारानी भी इसे बहुत चाहती हैं। कुमारी चन्द्रकान्ता का और इसका लड़कपन ही से साथ होने के सबब दोनों में बड़ी मुहब्बत है।

तमाम रात बातचीत में गुजर गई, किसी को नींद न आई। सवेरे ही उठ कर जरूरी कामों से छुट्टी पा उसी चश्मे में नहा कर संध्या पूजा की और कुछ मेवा खा जिस राह से उस बाग में गये थे उसी राह से लौट आये और चौथी खिड़की के अन्दर क्या है यह देखने के लिए उसमें घुसे। उसमें भी जाकर एक हरा-भरा बाग देखा जिसे देखते ही कुमार चौंक पड़े।

☐ तेजसिंह ने कुँवर बीरेन्द्रसिंह से पूछा, 'आप इस बाग को देखकर चौंके क्यों? इसमें कौन-सी अद्भुत चीज आपको नजर पड़ी?'

कुमार, 'मैं इस बाग को पहिचान गया।'

तेज०, (ताज्जुब से) 'आपने इसे कब देखा था?'

कुमार, 'यह वही बाग है जिसमें मैं लश्कर से लाया गया था। इसी में मेरी आँखें खुली थीं तो कुमारी चन्द्रकान्ता की तस्वीर देखी थी और इसी बाग में खाना भी मिला था जिसे खाते ही मैं बेहोश होकर दूसरे बाग में पहुँचाया गया था। वह देखो सामने वह छोटा-सा तालाब है जिसमें मैंने स्नान किया था, दोनों तरफ दो जामुन के पेड़ कैसे ऊँचे दिखाए दे रहे हैं।'

तेज०, 'हम लोग भी इस बाग की सैर कर लेते तो बेहतर था।'

कुमार, 'चलो घूमो, मैं खयाल करता हूँ कि उस कमरे का दरवाजा भी खुला होगा जिसमें कुमारी चन्द्रकान्ता की तस्वीर देखी थी।'

चारों आदमी उस बाग में खुशी-खुशी ऐयारों के साथ घूमने लगे। आज इस बाग की कोई कोठरी, कोई कमरा, कोई दरवाजा बन्द नहीं है,

जगहों को देखते अपने ऐयारों को दिखाते और मौके-मौके पर यह भी कहते जाते हैं—'इस जगह हम बैठे थे—इस जगह भोजन किया था। इस जगह सो गये थे कि दूसरे बाग में पहुँचे।'

घूमते-घूमते एक दरवाजा इन लोगों को मिला जिसे खोल ये लोग दूसरे बाग में पहुँचे। कुमार ने कहा, 'बेशक यह वही बाग है जिसमें दूसरी दफे मेरी आँख खुली थीं या जहाँ कई औरतों ने मुझे गिरफ्तार कर लिया था।' इतना कह कुमार आगे हुए और उसके पीछे-पीछे चारों ऐयार भी तीसरे बाग की तरफ बढ़े।

□ एक दिन महाराज जयसिंह दरबार में बैठे थे। दीवान हरदयालसिंह जरूरी अर्जियाँ पढ़कर सुनाते और हुक्म लेते जाते थे। इतने में एक जासूस हाथ में एक छोटा सा लिखा हुआ कागज लेकर हाजिर हुआ।

इशारा पाकर चोबदार ने उसे पेश किया। दीवान हरदयालसिंह ने उससे पूछा, 'यह कैसा कागज लाया है और क्या कहता है?'

जासूस ने अर्ज किया, 'इस तरह के लिखे हुए कागज शहर में बहुत जगह चिपके हुए दिखाई दे रहे हैं। एक कागज उखाड़ कर दरबार में ले आया हूँ। बाजार में इन कागजों को पढ़-पढ़ कर लोग बहुत घबड़ा रहे हैं।'

जासूस के हाथ से कागज लेकर दीवान हरदयालसिंह ने पढ़ा और महाराज को सुनाया। यह लिखा हुआ था—

'नौगढ़ और विजयगढ़ के राजा आजकल बड़े जोर में आये होंगे। दोनों को इस बात की बड़ी शेखी होगी कि हम चुनार फतह करके निश्चित हो गये, अब हमारा कोई दुश्मन नहीं रहा। इसी तरह वीरेन्द्रसिंह भी फूले न समाते होंगे, आजकल मजे में खोह की हवा खा रहे हैं। मगर यह किसी को मालूम नहीं कि उन लोगों का बड़ा भारी दुश्मन मैं अभी तक जीता हूँ। आज से मैं अपना काम शुरू करूँगा। नौगढ़ और विजयगढ़ के राजाओं, सरदारों और बड़े-बड़े सेठ-साहूकारों को चुन-चुन कर मारूँगा, दोनों राज्य मिट्टी में मिला दूँगा और फिर भी गिरफ्तार न होऊँगा। यह न समझना कि हमारे यहाँ बड़े-बड़े ऐयार हैं, मैं ऐसे-ऐसे ऐयारों को कुछ भी नहीं समझता। मैं भी एक बड़ा भारी ऐयार हूँ लेकिन मैं किसी को गिरफ्तार न करूँगा, बस जान से मार डालना मेरा काम होगा। अब अपनी-अपनी जान की हिफाजत चाहो तो भागते जाओ। खबरदार!

खबरदार !! खबरदार !!!

ऐयारों का गुरुघंटाल—जालिम खाँ'

इस कागज को सुन महाराज जयसिंह घबड़ा उठे। हरदयालसिंह के भी होश जाते रहे और दरबार में जितने आदमी थे सभी काँप उठे।

थोड़ी देर बाद महाराज ने दरबार बर्खास्त किया। दीवान हरदयाल सिंह भी सलाम करके घर जाना चाहते थे, मगर महाराज का इशारा पाकर रुक गये।

दीवान को साथ ले महाराज जयसिंह दीवानखाने में गये और एकान्त में बैठ कर उसी जालिम खाँ के बारे में सोचने लगे। कुछ देर तक सोच-विचार कर हरदयालसिंह ने कहा, 'हमारे यहाँ कोई ऐयार नहीं है जिसका होना बहुत जरूरी है।' महाराज जयसिंह ने कहा, 'तुम इसी वक्त एक चिट्ठी यहाँ के हालचाल की राजा सुरेन्द्रसिंह को लिखो। वह विज्ञापन भी उसी के साथ भेज दो जो जासूस लाया था।'

महाराज के हुक्म के मुताबिक हरदयालसिंह ने चिट्ठी लिख कर तैयार की और एक जासूस को देकर उसे पोशीदा तौर पर नौगढ़ की तरफ रवाना किया।

दूसरे दिन दरबार में फिर एक जासूस ने कल की तरह एक और कागज लाकर पेश किया और कहा, 'आज तमाम शहर में इसी तरह के कागज चिपके दिखाई देते हैं।' दीवान हरदयालसिंह ने जासूस के हाथ से वह कागज ले लिया और पढ़कर महाराज को सुनाया, यह लिखा था—

'वाह वाह वाह ! आपके किये कुछ न बन पड़ा तो नौगढ़ से मदद माँगने लगे ! यह नहीं जानते कि नौगढ़ में भी मैंने उपद्रव मचा रक्खा है। क्या आपका जासूस मुझसे छिपकर कहीं जा सकता था ? मैंने उसे खतम कर दिया। किसी को भेजिये उसकी लाश उठा लाये। शहर के बाहर कोस भर पर उसकी लाश मिलेगी।

वही—जालिम खां'

महाराज के हुक्म से कई आदमी शहर के बाहर उस जासूस की लाश उठा लाने के लिए भेजे गये, जब तक उसकी लाश दरबार के बाहर लाई जाये एक धूम-सी मच गई। हजारों आदमियों की भीड़ लग गई। जासूस के सिर का पता न था और जो चिट्ठी वह ले गया था, वह उसके बाजू से बँधी हुई थी।

जाहिर में महाराज ने सभी को ढाढ़स दिया मगर तबीयत में अपनी जान का भी खौफ मालूम हुआ। दीवान ने कहा, 'शहर में मुनादी करा

दी जाये कि जो कोई इस जालिम खाँ को गिरफ्तार करेगा, उसे सरकार से दस हजार रुपया इनाम मिलेगा, और यहाँ के कुल हाल-चाल की चिट्ठी पाँच सवारों के साथ नौगढ़ रवाना की जाये।

यह हुक्म देकर महाराज ने दरबार बर्खास्त किया। पाँचों सवार जो चिट्ठी लेकर नौगढ़ रवाना हुए डर के मारे काँप रहे थे।

दूसरे दिन सवेरे ही फिर इश्तिहार लिये एक पहरे वाला दरबार में हाजिर हुआ। हरदयालसिंह ने इश्तिहार लेकर देखा, यह लिखा था—

'इन पाँचों सवारों की क्या मजाल थी जो मेरे हाथ से बचकर निकल जाते। आज तो इन्हीं पर गुजरी, कल से तुम्हारे महल में खेल मचाऊँगा। ले अब खूब सम्हल कर रहना। तुमने यह मुनादी कराई है कि जालिम खाँ को गिरफ्तार करने वाला दस हजार इनाम पावेगा। मैं भी कहे देता हूँ कि जो कोई मुझे गिरफ्तार करेगा, उसे बीस हजार इनाम दूँगा!!

वही—जालिम खाँ'

महाराज ने कई आदमी उन सवारों की लाशों को लाने के लिये रवाना किये। वहाँ जाते उन लोगों की जान काँपती थी मगर हाकिम का हुक्म था, क्या करते, लाचार, जाना पड़ता था।

पाँचों आदमियों की लाशें आयीं। उन सभी के सिर कटे हुए न थे, मालूम होता था फाँसी लगाकर जान ली गई है क्योंकि गर्दन में रस्सी के दाग थे।

इस कैफियत को देखकर महाराज हैरान हो चुपचाप बैठे थे। कुछ अक्ल काम नहीं करती थी। इतने में सामने से पण्डित बद्रीनाथ आते दिखाई दिये।

महाराज को यह खबर पहिले ही लग चुकी थी कि राजा शिवदत्त अपनी रानी को लेकर तपस्या करने के लिए जंगल की तरफ चले गये और पण्डित बद्रीनाथ, पन्नालाल वगैरह ऐयार राजा सुरेन्द्रसिंह के साथ हो गये हैं।

ऐसे वक्त में पण्डित बद्रीनाथ का पहुँचना महाराज के वास्ते ऐसा हुआ जैसे मरते हुए पर अमृत का बरसना। देखते ही खुश हो गये, प्रणाम करके बैठने का इशारा किया। बद्रीनाथ आशीर्वाद देकर बैठ गए।

जय०, 'आज आप बड़े मौके पर पहुँचे!'

बद्री०, 'जी हाँ, अब आप कोई चिन्ता न करें?'

अब महाराज जयसिंह के चेहरे पर कुछ खुशी दिखाई देने लगी। दीवान हरदयालसिंह को हुक्म दिया कि 'पण्डित बद्रीनाथ को आप अपने

मकान में उतारिये और इनके आराम की कुल चीजों का बन्दोबस्त कर दीजिये जिससे किसी बात की तकलीफ न हो, मैं भी अब उठता हूँ।'

जो कुछ दिन बाकी था पण्डित बद्रीनाथ ने जालिम खाँ के गिरफ्तार करने की तरकीब सोचने में गुजारा। शाम के वक्त दीवान हरदयालसिंह को साथ ले महाराज जयसिंह से मिलने गये। मालूम हुआ कि महाराज बाग की सैर कर रहे हैं, वे दोनों बाग में गये।

उस समय वहाँ महाराज के पास बहुत-से आदमी थे, पंडित बद्रीनाथ के आते ही वे लोग विदा कर दिये गये, सिर्फ बद्रीनाथ और हरदयालसिंह महाराज के पास रह गए।

पहिले कुछ देर तक चुनार के राजा शिवदत्तसिंह के बारे में बातचीत होती रही, इसके बाद महाराज ने पूछा कि 'नौगढ़ में जालिम खाँ की खबर कैसे पहुँची ?'

बद्री०, 'नौगढ़ में भी उसने इसी तरह के इश्तिहार चिपकाए हैं, जिनके पढ़ने से मालूम हुआ कि विजयगढ़ में उपद्रव मचावेगा, इसीलिए हमारे महाराज ने मुझे यहां भेजा है।

महा०, 'इस दुष्ट जालिम खाँ ने वहां तो किसी की जान न ली ?'

बद्री०, 'नहीं, वहाँ अभी उसका दांव नहीं लगा, ऐयार लोग भी बड़ी मुस्तैदी से उसकी गिरफ्तारी की फिक्र में लगे हुए हैं।'

महा०, 'यहाँ तो उसने कई खून किये।'

बद्री, 'शहर में आते ही मुझे खबर लग चुकी है।'

महा०, 'अच्छा जो चाहो करो, तुम्हारे आ जाने से बहुत कुछ ढाढ़स हो गई नहीं तो बड़ी ही फिक्र लगी हुई थी।'

बद्री०, 'अब मैं रुखसत होऊँगा, बहुत कुछ काम करना है।'

कुछ रात जा चुकी थी जब महाराज से विदा हो बद्रीनाथ जालिम खाँ की टोह में रवाना हुए।

☐ बद्रीनाथ जालिम खां की फिक्र में रवाना हुए। वह क्या करेंगे या कैसे जालिम खाँ को गिरफ्तार करेंगे इसका हाल किसी को मालूम नहीं।

दूसरे ही दिन फिर इश्तिहार शहर में हर चौमुहानी और सड़कों पर चिपका हुआ लोगों के नजर पड़ा, जिसमें का एक कागज जासूस ने लाकर दरबार में महाराज के सामने पेश किया और दीवान हरदयालसिंह ने पढ़कर सुनाया—यह लिखा हुआ था—

'महाराज जयसिंह,

होशियार रहना, पण्डित बद्रीनाथ की ऐयारी के भरोसे मत भूलना, वह कल का छोकरा क्या कर सकता है? पहिले तो जालिम खाँ तुम्हारा दुश्मन था, अब मैं भी पहुँच गया हूँ। पन्द्रह दिन के अन्दर इस शहर को उजाड़कर रख दूँगा और आज के चौथे दिन बद्रीनाथ का सिर लेकर बारह बजे रात को तुम्हारे महल में पहुँचूँगा। होशियार! उस वक्त भी जिसका जी चाहे मुझे गिरफ्तार कर ले।'

आफत खाँ खूनी'

जल्दी से दरबार बर्खास्त किया, दीवान हरदयालसिंह को साथ ले दीवानखाने में चले गये और इस नए आफत खाँ खूनी के बारे में बातचीत करने लगे।

महाराज, 'अब क्या किया जाये? एक ने आफत मचा ही रखी थी अब दूसरे इस आफत खाँ ने आकर और भी जान सुखा दी। अगर ये दोनों गिरफ्तार न हुए तो हमारे राज्य करने पर लानत है।'

हरदयालसिंह, 'बद्रीनाथ के आने से कुछ उम्मीद हो गई थी कि जालिम खाँ को गिरफ्तार करेंगे, मगर अब तो उनकी जान भी बचती नजर नहीं आती।'

महाराज, 'खैर आज शाम को हमारे कुल जासूसों को लेकर बाग में आओ, या तो कुछ काम ही निकालेंगे या सारे जासूस तोप के सामने रख कर उड़ा दिये जायेंगे।'

दीवान हरदयालसिंह महाराज से विदा हो अपने मकान पर गए, मगर हैरान थे कि क्या करें, क्योंकि महाराज को बेतरह क्रोध चढ़ आया था।

☐ कुँअर बीरेन्द्रसिंह तीसरे बाग की तरफ रवाना हुए जिसमें राजकुमारी चन्द्रकान्ता की दरबारी तस्वीर देखी थी और जहाँ कई औरतें कैदियों की तरह इन्हें गिरफ्तार करके ले गई थीं।

उसमें जाने का रास्ता इनको मालूम था। जब कुमार उस दरवाजे के पास पहुँचे जिसमें से होकर ये लोग उस बाग में पहुँचते तो वहाँ एक कमसिन औरत नजर पड़ी जो इन्हीं की तरफ आ रही थी। देखने में खूब-सूरत और पोशाक भी उसकी बेशकीमती थी। हाथ में एक चिट्ठी लिए कुमार के पास आकर खड़ी हो गई, चिट्ठी कुमार के हाथ में दे दी।

उन्होंने ताज्जुब में आकर खुद उसे पढ़ा, लिखा हुआ था—

'कई दिनों से आप हमारे इलाके में आए हैं, इसलिए आपकी मेहमानी हमको लाजिम है। आज सब सामान दुरुस्त किया है। इस लौंडी के साथ आइए और झोंपड़ी को पवित्र कीजिये। इसका अहसान जन्म-भर न भूलूंगा।

सिद्धनाथ योगी।'

कुमार ने चिट्ठी तेजसिंह के हाथ में दे दी, उन्होंने पढ़कर कहा, 'साधु हैं, योगी हैं, इसी से इस चिट्ठी में कुछ हुकूमत झलकती है।' देवीसिंह और ज्योतिषीजी ने भी चिट्ठी को पढ़ा।

कुमार, 'इस चिट्ठी के भेजने वाले अगर वे ही योगी हैं जिन्होंने मुझे कूदने से बचाया था तो बड़ी खुशी की बात है, जरूर वहाँ वनकन्या से भी मुलाकात होगी। मगर तुम रुक क्यों गए? उसी बाग में चलकर सन्ध्या कर लेते! मैं तो उसी वक्त कहने को था मगर यह समझकर चुप ही रहा कि शायद इसमें भी तुम्हारा कोई मतलब हो।

तेज०, 'जरूर ऐसा ही है।'

देवी०, 'क्यों उस्ताद, इसमें क्या मतलब है?'

तेज०, 'देखो मालूम ही हुआ जाता है!'

कुमार, 'तो कहते क्यों नहीं, आखिर कब बतलाओगे?'

तेज०, 'हमने यह सोचा कि कहीं योगीजी हम लोगों से धोखा न करें कि खाने-पीने में बेहोशी की दवा मिलाकर खिला दें, जब हम लोग बेहोश हो जाएँ तो उठवाकर खोह के बाहर रखवा दें और यहाँ आने का रास्ता बन्द करा दें, ऐसा होगा तो कुल मेहनत ही बर्बाद हो जाएगी। देखिए आप भी इसी बाग में बेहोश किये गए थे, जब कैदी बनकर आये थे और प्यास लगने पर एक कटोरा पानी पीया था, उसी वक्त बेहोश हो गए और खोह ले जाकर रख दिये गये थे।'

देवी०, 'तो फिर इसकी तरकीब क्या सोची?'

तेज०, (हँसकर) 'तरकीब क्या, बस वही तिलिस्मी गुलाब का फूल घिसकर सभी को पिलाऊँगा और आप भी पीऊँगा, फिर सात दिन तक बेहोश करने वाला कौन है?'

कुमार, 'हाँ ठीक है, पर वह वैद्य भी कैसा चतुर होगा जिसने दवाइयों से ऐसे काम के नायाब फूल बनाए।'

इतने में वही औरत सामने से आती दिखाई पड़ी, उसके पीछे तीन लौंडिया आसन, पंचपात्र, जल इत्यादि हाथों में लिए आ रही थीं।

उस बाग में एक पेड़ के नीचे कई पत्थर बैठने लायक रक्खे हुए थे। औरतों ने उन पत्थरों पर सामान दुरुस्त कर दिया, इसके बाद तेजसिंह ने उन लोगों से कहा, 'अब थोड़ी देर के वास्ते तुम लोग अपने बाग में चली जाओ क्योंकि औरतों के सामने हम लोग संध्या नहीं करते।'

'आप ही लोगों की खिदमत करते जनम बीत गया, ऐसी बातें क्यों करते हैं, सीधी तरह से क्यों नहीं कहते कि हट जाओ! लो मैं जाती हूँ!' कहती हुई वह औरत लौंडियों को साथ ले चली गई। उसकी बात पर ये लोग हँस पड़े और बोले, 'जरूर ऐयारों के संग रहने वाली है!'

सन्ध्या करने के बाद तेजसिंह ने तिलिस्मी गुलाब का फूल पानी में घिसकर सभी को पिलाया तथा आप भी पीया और तब राह देखने लगे कि फिर वह औरत आये तो उसके साथ हम लोग चलें।

थोड़ी देर बाद वही औरत फिर आई और उसने इन लोगों को चलने के लिये कहा। ये लोग भी तैयार थे, उठ खड़े हुए और उसके पीछे रवाना होकर तीसरे बाग में पहुँचे। ऐयारों ने अभी तक इस बाग को नहीं देखा था मगर कुँअर वीरेन्द्रसिंह इसे खूब पहिचानते थे।

शाम हो गई थी बल्कि कुछ अँधेरा भी हो चुका था। वह औरत इन लोगों को लिए उस कमरे की तरफ चली जहां कुमार ने तस्वीर का दरबार देखा था। रास्ते में कुमार सोचते जाते थे, 'चाहे जो हो आज सब भेद मालूम किए बिना योगी का पिण्ड न छोड़ूंगा।'

दीवानखाने में पहुँचे। आज वहां तस्वीर का दरबार न था बल्कि उन्हीं योगी का दरबार था जिन्होंने पहाड़ी से कूदते हुए कुमार को बचाया था। लम्बा-चौड़ा फर्श बिछा हुआ था और उसके ऊपर एक मृगछाला बिछाए योगीजी बैठे हुए थे, बाईं तरफ कुछ पीछे हटकर वनकन्या बैठी थी और सामने की तरफ चार-पाँच लौंडियां हाथ जोड़े खड़ी थीं।

कुमार को आते देख योगीजी उठ खड़े हुए, दरवाजे तक आकर उनका हाथ पकड़ अपनी गद्दी के पास ले गए और बगल में दाहिनी ओर मृगछाला पर बैठाया।

योगी, 'आप और अपाकी मण्डली के लोग कुशल-मंगल से तो हैं?'

कुमार, 'आपकी दया से हर तरह से प्रसन्न हैं।'

रात पहर भर से ज्यादा जा चुकी थी, चन्द्रमा अपनी पूर्ण किरणों से उदय हो रहे थे। ठंडी हवा चल रही थी जिसमें सुगन्धित फूलों की मीठी महक उड़ रही थी। योगी ने मुस्कराकर कुमार से कहा—

'अब जो कुछ पूछना हो पूछिए, मैं सब बातों का जवाब दूंगा और जो

काम आपके अटके हैं उनको भी करा दूँगा।'

कुँअर बीरेन्द्रसिंह के जी में बहुत-सी बातें भरी हुई थीं, हैरान थे कि पहिले क्या पूछूँ। आखिर सम्हलकर बैठे और योगी से पूछने लगे।

□ जो कुछ दिन बाकी था दीवान हरदयालसिंह ने जासूसों को इकट्ठा करने और समझाने-बुझाने में बिताया। शाम को जासूसों को साथ ले हुक्म के मुताबिक महाराज जयसिंह के पास बाग में हाजिर हुए।

खुद महाराज जयसिंह ने जासूसों से पूछा, 'तुम लोग जालिम खां का पता क्यों नहीं लगा सकते?' इसके जवाब में उन्होंने अर्ज किया, 'महाराज, हम लोगों से जहाँ तक बनता है कोशिश करते हैं, उम्मीद है कि पता लग जायेगा।'

महाराज ने कहा, 'आफत खाँ एक नया शैतान पैदा हुआ है! इसने अपने इश्तिहार में अपने मिलने का पता भी लिखा है, फिर क्यों नहीं तुम लोग उसी ठिकाने मिलकर उसे गिरफ्तार करते हो?' जासूसों ने जवाब दिया, 'महाराज आफत खाँ ने अपने मिलने का ठिकाना 'टेटी-चोटी' लिखा है, अब हम लोग क्या जानें 'टेटी-चोटी' कहाँ है, कौन-सा मुहल्ला है या किस जगह को उसने इस नाम से लिखा है, इसका क्या अर्थ है तथा हम लोग कहाँ जाएँ?'

अब महाराज को अपने जीने की उम्मीद कम रह गई, खौफ के मारे रात भर हाथ में तलवार लिये जागा करते, क्योंकि थोड़ा-बहुत जो कुछ भरोसा था अपनी बहादुरी का ही था।

दूसरे दिन एक इश्तिहार फिर शहर में चिपका हुआ पाया गया जिसे पहरे वालों ने लाकर दिया। दीवान हरदयालसिंह ने पढ़कर सुनाया, यह लिखा था—

'देखना, खूब सम्हले रहना! बद्रीनाथ को गिरफ्तार कर चुका हूँ। अपने पहिले वादे के बमूजिब कल बारह बजे रात को उसका सिर लेकर तुम्हारे महल में हम लोग कई आदमी पहुँचेंगे। देखें कैसे गिरफ्तार करते हो!

आफत खाँ।'

[ ] विजयगढ़ के पास भयानक जंगल में नाले के किनारे एक पत्थर की चट्टान पर चार आदमी सिपाहियाना पोशाक पहिरे बैठे हैं। उनके पास ही दूसरी चट्टान पर दो आदमी बैठे आपस में धीरे-धीरे बातें कर रहे हैं। चाँदनी खूब छिटकी हुई है जिसमें इन लोगों की सूरत और पोशाक साफ दिखाई पड़ती है। इन दोनों आदमियों में से जो दूसरे पत्थर पर बैठे हुए हैं एक की उम्र लगभग चालीस वर्ष की होगी। काला रंग, लम्बा कद, काली दाढ़ी, सिर्फ जांघिया और चुस्त कुर्त्ता पहिने हुए, तीर कमान और ढाल तलवार आगे रखे, एक घुटना जमीन के साथ लगाए बैठा है। बड़ी-बड़ी काली और कड़ी मूँछें ऊपर को चढ़ी हुई हैं, भूरी और खूँखार आँखें चमक रही हैं, चेहरे से बदमाशी और लुटेरापन झलक रहा है। इसका नाम जालिमखाँ है।

दूसरा शख्स जो वीरासन में बैठा है उसका नाम आफतखाँ है।

जालिम, 'तुम्हारे मिल जाने से बड़ा सहारा हो गया।'

आफत, 'इसी तरह मुझको तुम्हारे मिलने से ! देखो यह गड़ाँसा, (हाथ में लेकर) इसी से हजारों आदमियों की जानें जायेंगी। यह जहर से बुझाया हुआ है, जिसे जरा भी इसका जख्म लग जाए फिर उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं।'

जालिम०, 'बहुत हैरान होने पर तुमसे मुलाकात हुई !'

आफत०, 'मुझे तुमसे जरूर मिलना था, इसलिए इश्तिहार चिपका दिये क्योंकि तुम लोगों का कोई ठिकाना तो था नहीं जहाँ खोजता, लेकिन मुझे यकीन था कि तुम ऐयारी जरूर जानते होंगे, इसलिए ऐयारी बोली में अपना ठिकाना लिख दिया कि जिससे दूसरे की समझ में न आवे कि कहाँ बुलाया है !'

जालिम०, 'ऐसे ही कुछ थोड़ी-सी ऐयारी सीखी थी, मगर तुम इस फन में उस्ताद मालूम होते हो, तभी तो बद्रीनाथ को झट गिरफ्तार कर लिया !'

आफत०, 'उस्ताद तो मैं कुछ भी नहीं, मगर हाँ बद्रीनाथ ऐसे छोकरे के लिए बहुत हूँ।'

जालिम०, 'जो चाहो कहो मगर मैंने तुमको अपना उस्ताद मान लिया, जरा बद्रीनाथ की सूरत तो दिखा दो।'

आफत०, 'हाँ-हाँ देखो, धड़ तो उसका गाड़ दिया मगर सर गठरी में बँधा है, लेकिन हाथ मत लगाना क्योंकि इसको मसाले में तर किया है जिससे कल तक सड़ न जाए।'

जालिम०, 'मगर उस्ताद, तुम एक बात बड़ी बेढब कहते हो कि कल बारह बजे रात को महल में चलना होगा।'

आफत०, 'सुनो मैं बताता हूँ। मेरी नीयत यह है कि जहाँ तक हो सके जल्दी से उन लोगों को मार-पीट सब मामला खतम कर दूं। उस वक्त वहाँ जितने आदमी मौजूद होंगे सभी को बस तुम मुर्दा ही समझ लो, बिना हाथ-पैर हिलाये सभी का काम तमाम करूँ तो सही।'

जालिम०, 'भला उस्ताद यह कैसे हो सकता है!'

आफत०, (बटुए में से एक गोला निकालकर और दिखाकर) 'देखो इस किस्म के बहुत-से गोले मैने बना रखे हैं जो एक-एक तुम लोगों के हाथ में दे दूंगा। बस वहाँ पहुँचते ही तुम लोग इन गोलों को उन लोगों के हजूम (भीड़) में फेंक देना जो हम लोगों को गिरफ्तार करने के लिए मौजूद होंगे। गिरते ही ये गोले भारी आवाज देकर फूट जायेंगे और इनमें से बहुत-सा धूँआ निकलेगा जिसमें वे लोग छिप जायेंगे और नाक के अन्दर जहाँ गया कि उन लोगों की जान गई, ऐसा जहरीला यह धुआँ होगा।'

आफतखाँ की बात सुनकर सबके-सब खुशी के मारे उछल पड़े। जालिमखाँ ने कहा, 'भला उस्ताद एक गोला यहाँ पटक के दिखाओ, हम लोग भी देख लें तो दिल मजबूत हो जाएगा।'

'हाँ देखो।' यह कह के आफतखाँ ने वह गोला जमीन पर पटक दिया, साथ ही एक आवाज देकर गोला फट गया और बहुत-सा जहरीला धुआँ फैला जिसको देखते ही आफतखाँ जालिमखाँ और उनके साथी लोग जल्दी से हट गये तिस पर भी उन लोगों की आँखें सूज गईं और सर घूमने लगा। यह देखकर आफतखाँ ने अपने बटुए में से मरहम की एक डिबिया निकाली और सभी की आँखों में वह मरहम लगाया तथा हाथ में मलकर सुंघाया जिससे उन लोगों की तबीयत कुछ ठिकाने हुई और वे आफतखाँ की तारीफ करने लगे।

जालिम०, 'अब क्या करना चाहिए?'

आफत०, 'इस वक्त तो कुछ नहीं, मगर कल बारह बजे रात को महल में चलने के लिए तैयार रहना चाहिए!'

जालिम०, 'इसके कहने की कोई जरूरत नहीं, अब तो हम और तुम साथ ही हैं, जब जो कहोगे करेंगे।'

आफत०, 'अच्छा तो आज यहाँ से टलकर किसी दूसरी जगह आराम करना मुनासिब है। कल देखो खुदा क्या करता है। मैं तो कसम खा चुका

हूँ कि महल में जाकर बिना सभी का काम तमाम किए एक दाना मुंह में नहीं डालूंगा।'

इसके बाद सब वहाँ से उठकर एक तरफ को रवाना हो गये।

□ वह दिन आ गया जब बारह बजे रात को बद्रीनाथ का सिर लेकर आफतखाँ महल में पहुँचेगा। आज शहर भर में खलबली मची हुई थी। शाम ही से महाराज जयसिंह खुद सब तरह का इन्तजाम कर रहे थे। बड़े-बड़े बहादुर और फुर्तीले जवाँमर्द महल के अन्दर इकट्ठा किये जा रहे थे। सभी में जोश फैलता जाता था। महाराज खुद हाथ में तलवार लिये इधर से उधर टहलते और लोगों की बहादुरी की तारीफ करके कहते थे कि सिवाय अपने जान-पहिचान के किसी गैर को किसी वक्त कहीं देखो गिरफ्तार कर लो, और बहादुर लोग आपस में डींग हाँक रहे थे कि यों पकड़ूंगा यों काटूंगा! महल के बाहर पहरे का इन्तजाम कम कर दिया गया क्योंकि महाराज को पूरा भरोसा था कि महल में आते ही आफतखाँ को गिरफ्तार कर लेंगे और जब बाहर पहरा कम रहेगा तो वह बखूबी महल में चला आयेगा नहीं तो दो-चार पहरे वालों को मारकर भाग जायेगा। महल के अन्दर रोशनी भी खूब कर दी गयी, तमाम मकान दिन की तरह चमक रहा था।

आधी रात बीती ही चाहती थी कि पूरब की छत से छः आदमी धमा-धम कूदकर धड़धड़ाते हुए उस भीड़ के बीच में आकर खड़े हो गये, जहाँ बहुत-से बहादुर बैठे और खड़े थे। सबके आगे वही आफतखाँ बद्रीनाथ का सर हाथ में लटकाये हुए था।

□ खोह वाले तिलिस्म के अन्दर बाग में कुँवर बीरेन्द्रसिंह और योगी से बातचीत होने लगी जिसे वनकन्या और इनके ऐयार बखूबी सुन रहे थे।

कुमार, 'पहिले यह कहिये चन्द्रकान्ता जीती है या मर गई ?'

योगी, 'राम-राम, चन्द्रकान्ता को कोई मार सकता है ?'

कुमार, 'क्या उससे और मुझसे फिर मुलाकात होगी ?'

योगी, 'जरूर होगी।'

कुमार, 'कब ?'

योगी, '(वनकन्या की तरफ इशारा करके) जब यह चाहेगी।'

कुमार, 'अच्छा यह बताइये कि यह वनकन्या कौन हैं?'

योगी, 'यह एक राजा की लड़की है।'

कुमार, 'मुझ पर इसने बहुत उपकार किये, इसका क्या सबब है?'

योगी, 'इसका यही सबब है कि कुमारी चन्द्रकान्ता से और इससे बहुत प्रेम है।

कुमार, 'अगर ऐसा है तो मुझसे शादी क्यों करना चाहती हैं?'

योगी, 'तुम्हारे साथ शादी करने की इसको कोई जरूरत नहीं है और न यह तुमको चाहती ही है। केवल चन्द्रकान्ता की जिद से लाचार है, क्योंकि उसको यही मंजूर है।'

योगी की आखिरी बात सुनकर कुमार मन में बहुत खुश हुए और फिर योगी से बोले—

कुमार, 'जब चन्द्रकान्ता से और इनसे इतनी मुहब्बत है तो यह उसे मेरे सामने क्यों नहीं लातीं?'

योगी, '(वनकन्या की तरफ इशारा करके) इस लड़की ने तुम्हारी बहुत कुछ मदद की है और तुमने तथा तुम्हारे ऐयारों ने इसे देखा भी है। इसका हाल और कौन-कौन जानता है और तुम्हारे ऐयारों के सिवाय इसे और किस-किसने देखा है?'

कुमार, 'मेरे और फतहसिंह के सिवाय इन्हें आज तक किसी ने नहीं देखा। हाँ, आज ऐयार लोग इनको जरूर देख रहे हैं।'

वनकन्या, 'एक दफे ये (तेजसिंह की तरफ बताकर) मुझसे मिल गए हैं, मगर शायद वह हाल इन्होंने आपसे न कहा हो, क्योंकि मैंने कसम दे दी थी।'

यह सुनकर कुमार ने तेजसिंह की तरफ देखा। उन्होंने कहा, 'जी हाँ, यह उस वक्त की बात है जब आपने मुझसे कहा था कि आजकल तुम लोगों की ऐयारी में उल्ली लग गई है। तब मैंने कोशिश करके इनसे मुलाकात की और कहा कि अपना पूरा हाल मुझसे जब तक न कहेंगी मैं न मानूंगा और आपका पीछा न छोड़ूँगा।' तब इन्होंने कहा कि एक दिन वह आवेगा कि चन्द्रकान्ता और मैं कुमार की कहलाऊँगी मगर इस वक्त तुम मेरा पीछा मत करो नहीं तो तुम्हीं लोगों के काम का हर्ज होगा।'

योगी, '(कुमार से) अच्छा तो इस लड़की को सिवाय तुम्हारे तथा ऐयार लोगों के और किसी ने नहीं देखा, मगर तुम्हारे लश्कर वाले जानते

होंगे कि आजकल कोई नई औरत आई है जो कुमार की मदद कर रही है।'

कुनार, 'नहीं यह हाल भी किसी को मालूम नहीं, क्योंकि सिवाय ऐयारों के मैं और किसी से इनका हाल कहता ही न था।'

योगी, 'अच्छा यह बताओ कि तुम्हारी जुबानी राजा सुरेन्द्रसिंह और जयसिंह ने भी कुछ इसका हाल सुना है?'

कुमार, 'उन्होंने तो नहीं सुना हाँ तेजसिंह के पिता जीतसिंह से मैंने सब हाल जरूर कह दिया था, शायद उन्होंने मेरे पिता से कहा हो।'

योगी, 'नहीं जीतसिंह यह सब हाल तुम्हारे पिता से कभी न कहेंगे। मगर अब तुम इस बात का खूब ख्याल रखो कि वनकन्या ने जो-जो काम तुम्हारे साथ किए हैं उनका हाल किसी को न मालूम हो।'

कुमार, 'हाँ यह तो ठीक है। अच्छा इनके माँ-बाप कौन हैं और कहाँ रहते हैं?'

योगी, 'इसका हाल तब मालूम होगा जब राजा सुरेन्द्रसिंह और महाराज जयसिंह यहाँ आवेंगे चन्द्रकान्ता उनके हवाले कर दी जायेगी।

कुमार, 'तो आप मुझे हुक्म दीजिए कि मैं इसी वक्त उन लोगों को लाने के लिए यहाँ से चला जाऊँ।'

योगी, 'यहाँ से जाने का भला यह कौन वक्त है? क्या शहर का मामला है? रात-भर ठहर जाओ, सुबह को जाना, रात भी अब थोड़ी ही रह गई है, कुछ आराम कर लो।

थोड़ी-सी रात बाकी थी, वह भी उन लोगों को बातचीत करते बीत गई। अभी सूरज नहीं निकला था कि योगीजी अकेले फिर कुमार के पास आ मौजूद हुए और बोले, मैं रात को एक बात कहना भूल गया था जो इस वक्त समझाए देता हूँ। जब राजा जयसिंह इस खोह में आने के लिए तैयार हो जाएँ बल्कि तुम्हारे पिता और जयसिंह दोनों मिलकर इस खोह के दरवाजे तक आ जाएँ, तब पहिले तुम उन लोगों को बाहर ही छोड़कर अपने ऐयारों के साथ यहां आकर हमसे मिल जाना, इसके बाद उन लोगों को यहाँ लाना, और इस वक्त स्नान-पूजा से छुट्टी पाकर तब यहाँ से जाओ।' कुमार ने ऐसा ही किया, मगर योगी की आखिरी बात से इनको और भी ताज्जुब हुआ कि हमें पहिले क्यों बुलाया?

कुछ खाने का सामान हो गया। कुमार और उनके ऐयारों को खिला-पिलाकर योगी ने विदा कर दिया।

थोड़ा दिन बाकी था जब देवीसिंह घोड़ा लेकर कुमार के पास पहुँचे, जिस पर सवार होकर कुँवर बीरेन्द्रसिंह अपने ऐयारों के साथ नौगढ़ की तरफ रवाना हुए।

नौगढ़ पहुँचकर अपने पिता से मुलाकात की और महल में जाकर अपनी माता से मिले। अपना कुल हाल किसी से नहीं कहा, हाँ पन्नालाल वगैरह की जुबानी इतना हाल इनको मिला कि कोई जालिमखाँ इन लोगों का दुश्मन पैदा हुआ है जिसने विजयगढ़ में कई खून किये हैं और एक आफतखाँ दूसरा शख्स पैदा हुआ है जिसने इश्तिहार दिया है कि बद्रीनाथ का सिर लेकर महल में पहुँचूंगा देखूं मुझे कौन गिरफ्तार करता है।

इन सब खबरों को सुनकर कुंवर बीरेन्द्रसिंह, तेजसिंह, देवीसिंह और ज्योतिषीजी बहुत घबराये और सोचने लगे कि जिस तरह हो विजयगढ़ पहुँचना चाहिए।

इसके बाद यह भी मालूम हुआ कि जीतसिंह पन्द्रह दिनों की छुट्टी लेकर कहीं गये हैं। इस खबर ने तेजसिंह को परेशान कर दिया। वह इस सोच में पड़ गये कि उनके पिता कहाँ गये, क्योंकि उनकी बिरादरी में कहीं कुछ काम न था जहाँ जाते, तब इस बहाने से छुट्टी लेकर क्यों गये?

दूसरे दिन राजा सुरेन्द्रसिंह के पूछने पर तेजसिंह ने इतना कहा कि 'हम लोग कुमारी चन्द्रकान्ता को खोजने के लिए खोह में गये थे, वहाँ एक योगी से मुलाकात हुई जिसने कहा कि अगर महाराज सुरेन्द्रसिंह और महाराज जयसिंह को लेकर यहाँ आओ तो मैं चन्द्रकान्ता को बुलाकर उसके बाप के हवाले कर दूं। इसी सबब से हम लोग आपको और महाराज जयसिंह को लेने आये हैं।'

राजा सुरेन्द्रसिंह ने खुश होकर कहा, 'हम तो अभी चलने को तैयार हैं मगर महाराज जयसिंह तो ऐसी आफत में फँस गये हैं कि कुछ कह नहीं सकते। पण्डित बद्रीनाथ यहाँ से गये हैं, देखें क्या होता है। तुमने तो वहाँ का हाल सुना ही होगा!'

तेज०, 'मैं सब हाल सुन चुका हूं, हम लोगों को वहाँ पहुँचकर मदद करना मुनासिब है।'

सुरेन्द्रसिंह, 'मैं खुद यह कहने को था। कुमार की क्या राय है, वे जायेंगे या नहीं?'

तेज०, 'आप खुद जानते हैं कि कुमार काल से भी डरने वाले नहीं,

वह जालिमखाँ क्या चीज है !'

राजा, 'ठीक है, मगर किसी वीर पुरुष का मुकाबला करना हम लोगों का धर्म है और चोर तथा डाकुओं या ऐयारों का मुकाबला करना तुम लोगों का काम है, क्या जाने वह छिपकर कहीं कुमार ही पर घात कर बैठे !'

राजा सुरेन्द्रसिंह की मर्जी कुमार को इस वक्त विजयगढ़ जाने देने की नहीं समझकर और राजा से बहुत जिद्द करना भी बुरा ख्याल करके तेजसिंह चुप हो रहे, अकेले ही विजयगढ़ जाने के लिए महाराज से हुक्म लिया और उनके खास हाथ की लिखी हुई चिट्ठी का खलीता लेकर विजयगढ़ की तरफ रवाना हुए।

विजयगढ़ पहुँचकर महल में आधी रात को ठीक उस वक्त पहुँचे जब बद्रीनाथ का सर हाथ में लिए आफतखां खड़ा था।

तेजसिंह को अभी तक किसी ने नहीं देखा था, इस वक्त इन्होंने ललकार कर कहा, 'पकड़ो इन नालायकों को, अब देखते क्या हो ?' इतना कहकर आप भी कमन्द फैलाकर उन लोगों की तरफ फेंका।

अब तेजसिंह को सभी ने देखा, आफतखाँ ने भी इनकी तरफ देखा और कहा, 'तेज०, मेमचे बद्री।" इतना सुनते ही तेजसिंह ने आफतखां का हाथ पकड़कर इनको सभी से अलग कर लिया और हाथ-पैर खोल गले से लगा लिया। तेजसिंह ने घुड़ककर कहा—'चुप रहो, कुछ खबर भी है कि यह कौन है ? बद्रीनाथ का मारना क्या खेल हो गया है ?'

आफतखाँ का हाथ भी तेजसिंह ने छोड़ दिया और साथ-साथ लिए हुए महाराज जयसिंह की तरफ चले। जालिम खां और उसके साथियों के गिरफ्तार हो जाने पर भी लोग कांप रहे थे, महाराज भी दूर से सब तमाशा देख रहे थे। तेजसिंह ने पुकार कर कहा, 'घबराइये नहीं, हम दोनों आपके दुश्मन नहीं हैं। ये जो हमारे साथ हैं और जिन्हें आप कुछ और समझे हुए हैं, वास्तव में पण्डित बद्रीनाथ हैं।' यह कहकर आफतखाँ की दाढ़ी हाथ से पकड़कर झटक दी जिससे बद्रीनाथ कुछ पहिचाने गए।

अब महाराज जयसिंह का जी ठिकाने हुआ। पूछा, 'बद्रीनाथ उनके साथ क्यों थे ?'

बद्री०, 'महाराज, अगर मैं उनका साथी न बनता तो उन लोगों को यहाँ तक लाकर गिरफ्तार कौन करवाता ?'

अब तो धूम मच गई कि जालिमखाँ को बद्रीनाथ ऐयार ने गिरफ्तार कराया।

महाराज के हुक्म से सब आदमी महल के बाहर कर दिए गए, सिर्फ थोड़े-से मामूली उमरा लोग रह गए और महल के अन्दर ही कोठरी में हाथ-पैर जकड़कर जालिमखां और उसके साथी बन्द कर दिए गए।

इसके बाद बद्रीनाथ ने जालिमखाँ से मिलने का और गेंद का तमाशा दिखला के धोखे का गेंद उन लोगों के हवाले कर भुलावा दे महल में ले आने का पूरा-पूरा हाल कहा, जिसको सुनकर महाराज बहुत ही खुश हुए और इनाम में बहुत-सी जागीर बद्रीनाथ को देना चाहा, मगर उन्होंने उसको लेने से बिल्कुल इन्कार किया और कहा कि बिना मालिक की आज्ञा के मैं आपसे कुछ नहीं ले सकता, उनकी तरफ से मैं जिस काम पर मुकर्रर किया गया था जहाँ तक हो सका उसे पूरा कर दिया।

बात-ही-बात में सवेरा हो गया, तेजसिंह और बद्रीनाथ महाराज से विदा हो हरदयालसिंह के घर आये।

☐ सुबह को खुशी-खुशी महाराज ने दरबार किया। तेजसिंह और बद्रीनाथ भी बड़ी इज्जत से बैठाये गये। महाराज के हुक्म से जालिमखाँ और उनके चारों साथी दरबार में लाए गए जो हथकड़ी बेड़ी से जकड़े हुए थे। हुक्म पा तेजसिंह जालिमखाँ से पूछने लगे—

तेजसिंह, 'क्यों जी, तुम्हारा नाम ठीक-ठाक जालिमखाँ है या और कुछ?'

जालिम०, 'इसका जवाब मैं पीछे दूंगा, पहिले यह बताइये कि आप लोगों के यहाँ ऐयारों को मार डालने का कायदा है या नहीं?'

तेज०, 'हमारे यहाँ क्या हिन्दुस्तान-भर में कोई हिन्दू राजा ऐयार को कभी जान से न मारेगा। हाँ वह ऐयार जो अपने कायदे के बाहर काम करेगा जरूर मारा जायेगा।'

जालिम०, 'तो क्या हम लोग मारे जायेंगे?'

तेज०, 'यह खुशी महाराज की, मगर क्या तुम लोग ऐयार हो जो ऐसी बातें पूछते हो?'

जालिम०, 'हाँ हम लोग ऐयार हैं।'

तेज०, 'राम राम, क्यों ऐयारी का नाम बदनाम करते हो! तुम लोग तो पूरे डाकू हो, ऐयारी से तुम लोगों का क्या वास्ता?'

जालिम, 'उस्ताद, तुमने बड़ा धोखा दिया।'

बद्री०, 'तुम्हारे मानने से होता ही क्या है, आज नहीं तो कल तुम

लोगों के सिर धड़ से अलग दिखलाई देंगे।'

जालिम०, 'अफसोस कुछ कर न पाए।'

तेजसिंह ने सोचा कि इस बकवास से कोई मतलब न निकलेगा, हजार सिर पटकेंगे पर जालिमखाँ अपना ठीक-ठाक हाल कभी न कहेगा, इससे बेहतर है कि कोई तरकीब की जाय, अस्तु कुछ सोचकर महाराज से अर्ज किया, 'इन लोगों को कैदखाने में भेजा जाय फिर जैसा होगा देखा जाएगा और इनमें से वह एक आदमी (हाथ से इशारा करके) इसी जगह रक्खा जाय।' महाराज के हुक्म से ऐसा ही किया गया।

तेजसिंह के कहे मुताबिक उन डाकुओं में से एक को उसी जगह छोड़ बाकी सभी को कैदखाने की तरफ रवाना किया गया।

हकीकत में वह बहुत डरपोक था। अपने को उसी जगह रहते और साथियों को दूसरी जगह जाते देख घबरा उठा। उसके चेहरे से उस वक्त और भी बदहवासी बरसने लगी जब तेजसिंह ने एक चोबदार को हुक्म दिया कि 'अँगीठी में कोयला भरकर तथा दो-तीन लोहे की सीखचें जल्द ले आओ, जिनके पीछे लकड़ी की मूठ लगी हो।'

दरबार में जितने थे सब हैरान थे कि तेजसिंह ने लोहे की सलाख और अँगीठी क्यों मँगाई।

चार-पाँच लोहे के सींखचे और कोयले से भरी हुई अँगीठी लाई गई। तेजसिंह ने एक आदमी से कहा, 'आग सुलगाओ और इन लोहे की सींखचों को उसमें गरम करो।' अब उस डाकू से न रहा गया, उसने डरते हुए पूछा, 'क्यों तेजसिंह, इन सींखचों को तपाकर क्या करोगे?'

तेज०, 'इनको लाल करके दो तुम्हारी दोनों आँखों में दोनों कानों में और एक सलाख मुँह खोलकर पेट के अन्दर पहुँचाया जायेगा।'

डाकू, 'आप लोग तो रहमदिल कहलाते हैं, फिर इस तरह तकलीफ देकर किसी को मारना क्या आप लोगों की रहमदिली में बट्टा न लगावेगा?'

तेज०, 'अगर अपने साथियों का हाल ठीक-ठीक कह दो तो अभी छोड़ दिए जाओगे।'

डाकू, 'मैं ठीक-ठीक हाल कह दूंगा।'

उस डाकू ने अपने साथियों का हाल कहने के लिए मुस्तैद होकर मुंह खोला ही था कि दरबारी भीड़ में से एक जवान आदमी म्यान से तलवार खींचकर उस डाकू की तरफ झपटा और इस जोर से एक हाथ तलवार का लगाया कि उस डाकू का सिर धड़ से अलग होकर दूर जा गिरा। तब

उसी खून भरी तलवार को घुमाता और लोगों को जख्मी करता वह बाहर निकल गया।

उस घबराहट में किसी ने भी उसे पकड़ने का हौसला न किया, मगर बद्रीनाथ कब रुकने वाले थे, साथ ही वह भी उसके पीछे दौड़े।

बद्रीनाथ के जाने के बाद सैकड़ों आदमी उस तरफ दौड़े, लेकिन तेजसिंह ने उसका पीछा न किया। वे उठकर सीधे उस कैदखाने की तरफ दौड़े गए जिसमें जालिमखाँ वगैरह कैद किए गए थे। उनको इस बात का शक हुआ कि कहीं ऐसा न हो कि उन लोगों को किसी ने ऐयारी करके छुड़ा दिया हो। मगर नहीं वे लोग उसी तरह कैद थे। तेजसिंह ने कुछ और पहरे का इन्तजाम कर दिया और फिर तुरन्त लौटकर दरबार में चले आये।

आज महाराज जयसिंह मामूली वक्त से ज्यादा देर तक दरबार में बैठे रहे। तेजसिंह ने कहा भी—'आज दरबार में महाराज को बहुत देर हुई?' जिसका जवाब महाराज ने यह दिया कि 'जब तक बद्रीनाथ लौट कर नहीं आते या उनका कुछ हाल मालूम न हो ले हम इसी तरह बैठे रहेंगे।'

☐ दो घण्टे बाद दरबार के बाहर से शोरगुल की आवाज आने लगी। सभी का ख्याल उसी तरफ गया। एक चोबदार ने आकर अर्ज किया कि पंडित बद्रीनाथ उस खूनी को पकड़े लिए आ रहे हैं।

उसी खूनी को कमन्द से बाँधे, साथ लिए हुए पंडित बद्रीनाथ आ पहुँचे।

महा०, 'बद्रीनाथ, कुछ यह भी मालूम हुआ कि यह कौन है?'

बद्री०, 'कुछ नहीं बताता कि कौन है, और न बताएगा!'

पानी मँगवाकर उसका चेहरा धुलवाया गया, अब तो उसकी दूसरी ही सूरत निकल आई।

भीड़ लगी थी, सभी में खलबली पड़ गई, मालूम होता था कि इसे सब कोई पहिचानते हैं। महाराज चौंक पड़े और तेजसिंह की तरफ देख कर बोले, 'बस-बस मालूम हो गया, यह तो नाजिम का साला है, मैं खयाल करता हूँ कि जालिमखाँ वगैरह जो कैद हैं, वे भी नाजिम और अहमद के रिश्तेदार ही होंगे। उन लोगों को फिर यहाँ लाना चाहिए।'

महाराज के हुक्म से जालिमखाँ वगैरह भी दरबार में लाए गए।

बद्री०, (जालिमखाँ की तरफ देखकर) 'अब तो तुम लोग पहिचाने गये कि नाजिम और अहमद के रिश्तेदार हो, तुम्हारे साथी ने बता दिया।'

जालिमखाँ इसका कुछ जवाब देना ही चाहता था कि वह खूनी (जिसे बद्रीनाथ अभी गिरफ्तार करके लाए थे) बोल उठा, 'जालिमखाँ, तुम बद्रीनाथ के फेर में मत पड़ना। यह झूठे हैं, तुम्हारे साथी को हमने कुछ कहने का मौका नहीं दिया, वह बड़ा ही डरपोक था, मैंने उसे दोजख में पहुँचा दिया। हम लोगों की जान चाहे जिस दुर्दशा में जाय मगर अपने मुंह से अपना कुछ हाल कभी न कहना चाहिए।'

जालिम, (जोर से) 'ऐसा ही होगा।'

इन दोनों की बातचीत से महाराज को बड़ा ही क्रोध आया। आँखें लाल हो गईं, बदन काँपने लगा। तेजसिंह और बद्रीनाथ की तरफ देखकर बोले, 'बस हमको इन लोगों का हाल मालूम करने की कोई जरूरत नहीं चाहे जो हो, अभी इसी वक्त, इसी जगह मेरे सामने इन लोगों का सिर धड़ से अलग कर दिया जाए।'

हुक्म की देर थी, तमाम शहर इन डाकुओं के खून का प्यासा हो रहा था। उछल-उछल के लोगों ने अपने-अपने हाथों की सफाई दिखाई। सभी की लाशें उठाकर फेंक दी गई। महाराज उठ खड़े हुए। तेजसिंह ने हाथ जोड़कर अर्ज किया।

महाराज, 'मुझे अब तक यह कहने का मौका नहीं मिला कि यहां किस काम के लिए आया था और न अभी बात करने का वक्त है।'

महा०, 'अगर कोई जरूरी बात हो तो मेरे साथ महल में चलो!

तेज०, 'बात तो बहुत जरूरी है मगर इस समय कहने को जी नहीं चाहता क्योंकि महाराज को अभी तक गुस्सा चढ़ा हुआ है और मेरी भी तबीयत खराब हो रही है, मगर इस वक्त इतना कह देना मुनासिब समझता हूँ कि जिस बात के सुनने से आपको बेहद खुशी होगी मैं वह बात कहूँगा।'

तेजसिंह की आखिरी बात ने महाराज का गुस्सा एकदम ठण्डा कर दिया और उसके चेहरे पर खुशी झलकने लगी।

तेजसिंह और बद्रीनाथ को साथ लिए हुए महाराज अपने खास कमरे में गए और कुछ देर बैठने के बाद तेजसिंह के आने का कारण पूछा।

सब हाल खुलासा कहने के बाद तेजसिंह ने कहा—'अब आप और महाराज सुरेन्द्रसिंह खोह में चले और सिद्धनाथ योगी की कृपा से कुमारी को साथ लेकर खुशी-खुशी लौट आवें।

अभी घण्टे भर पहिले वह महल और ही हालत में था और अब सभी के चेहरे पर हँसी दिखाई देने लगी। होते-होते यह बात हजारों घरों में फैल गयी कि महाराज कुमारी चन्द्रकान्ता को लाने के लिए जाते हैं।

यह निश्चय हो गया कि आज थोड़ी-सी रात रहते महाराज जयसिंह नौगढ़ की तरफ कूच करेंगे।

☐ पाठक, अब वह समय आ गया कि आप भी चन्द्रकान्ता और कुँवर बीरेन्द्रसिंह को खुश होते देख खुश हों।

कुँवर बीरेन्द्रसिंह और महाराज जयसिंह वगैरह तो आज वहाँ तक पहुँचते नहीं मगर आप इसी वक्त हमारे साथ उस तहखाने (खोह) में बल्कि उस बाग में पहुँचिए जिसमें कुमार ने चन्द्रकान्ता की तस्वीर का दरबार देखा था और जिसमें सिद्धनाथ योगी और वनकन्या से मुलाकात हुई थी।

आप उसी बाग में पहुँच गये। देखिए अस्त होते हुए सूर्य भगवान अपनी सुन्दर लाल किरणों से मनोहर बाग के ऊँचे ऊँचे पेड़ों के ऊपरी हिस्सों को चमका रहे हैं।

उसके बगल की तरफ खयाल कीजिए, चमेली का फूला हुआ तख्त क्या ही रंग जमा रहा है और कैसे घने पेड़ हैं कि हवा को भी उसके अन्दर जाने का रास्ता मिलना मुश्किल है।

अब तो हमारी निगाह इधर-उधर और खूबसूरत क्यारियों, फूलों और छूटते हुए फौवारों का मजा नहीं लेती, क्योंकि उन तीन औरतों के पास जाकर छटक गयी हैं, जो मेंहदी के पत्ते तोड़-तोड़कर अपनी झोलियों में बटोर रही हैं! यहाँ निगाह भी अदब करती है, क्योंकि उन तीनों औरतों में से एक तो हमारे उपन्यास की ताज वनकन्या है और बाकी दोनों उसकी प्यारी सखियाँ हैं।

वनकन्या, 'ओफ, थकावट मालूम होती है।'

सखी, 'घूमने में क्या कम आया है!!'

सखी, (दूसरी सखी से) 'क्या तू भी थक गई है?'

सखी, 'आखिर कुमार के ऐयार हम लोगों का पता लगा ही नहीं सके।'

सखी, 'मालूम नहीं इस ताबीज (यन्त्र) में कौन-सी ऐसी चीज है जो रमल को चलने नहीं देती!'

वनकन्या, 'मैंने यही बात एक दफा सिद्धनाथ बाबाजी से पूछी थी जिसके जवाब में वे बहुत कुछ बक गये। मुझे सब तो याद नहीं कि क्या कह गये, हाँ इतना याद है कि रमल जिस धातु से बनाई जाती है और रमल के साथी ग्रह राशि, नक्षत्र, तारे वगैरह के असर पड़ने वाली जितनी धातुएँ हैं, उन सभी को एक साथ मिलाकर यह यन्त्र बनाया गया है, इसलिए जिसके पास यह रहेगा उसके बारे में कोई नजूमी या ज्योतिषी रमल के जरिए से कुछ नहीं देख सकेगा।'

सखी, 'बेशक इसमें बहुत कुछ असर है, देखिए मैं सूरजमुखी बनकर गई थी, तब भी ज्योतिषी रमल से न बता सके कि यह ऐयार है।'

वनकन्या, 'कुमार तो खूब ही छके होंगे ?'

सखी, 'कुछ न पूछिये, वे बहुत ही घबड़ाए कि यह शैतान कहाँ से आई और क्या शर्त करा के अब क्या चाहती है !

वनकन्या, 'चाहे वे लोग कितने ही तेज हों मगर हमारे सिद्धनाथ को नहीं पा सकते। हाँ, उन लोगों में तेजसिंह बड़ा चालाक है !'

☐ अपनी जगह पर दीवान हरदयालसिंह को छोड़ तेजसिंह और बद्रीनाथ को साथ लेकर महाराज जयसिंह विजयगढ़ से नौगढ़ की तरफ रवाना हुए। साथ में सिर्फ पाँच सौ आदमियों का झमेला था। एक दिन रास्ते में लगा, दूसरे दिन नौगढ़ के करीब पहुँचकर डेरा डाला।

राजा सुरेन्द्रसिंह को महाराज जयसिंह के पहुँचने की खबर मिली। उसी वक्त अपने मुसाहबों और सरदारों को साथ ले इस्तकबाल के लिए गए और अपने साथ शहर ले आए।

महाराज जयसिंह के लिए पहिले से ही मकान सजा रखा था; उसी में उनका डेरा दिलवाया और ज्याफत के लिए कहा, मगर महाराज जयसिंह ने ज्याफत से इन्कार किया और कहा कि 'कई वजहों से मैं ज्याफत मंजूर नहीं कर सकता, आप मेहरबानी करके इसके लिए जिद्द न करें बल्कि इसका सबब भी न पूछें कि ज्याफत से क्यों इनकार करता हूँ।'

राजा सुरेन्द्रसिंह इसका सबब समझ गये और जी में बहुत खुश हुए।

रात के वक्त कुँवर बीरेन्द्रसिंह और बाकी के ऐयार लोग भी महाराज जयसिंह से मिले। कुमार को बड़ी खुशी के साथ महाराज ने गले लगाया और अपने पास बैठाकर तिलिस्म का हाल पूछते रहे। कुमार ने

बड़ी खूबसूरती के साथ तिलिस्म का हाल बयान किया।

रात को ही राय पक्की हो गई थी कि सवेरे सूरज निकलने के पहिले तिलिस्मी खोह में सिद्धनाथ बाबा से मिलने के लिए रवाना होंगे। उसी मुताबिक दूसरे दिन तारों की रोशनी रहते ही महाराज जयसिंह राजा सुरेन्द्रसिंह, कुँवर बीरेन्द्रसिंह, तेजसिंह, देवीसिंह, पण्डित बद्रीनाथ, पन्नालाल, रामनारायण और चुन्नीलाल वगैरह हजार आदमी की भीड़भाड़ लेकर तिलिस्मी तहखाने की तरफ रवाना हुए। तहखाना बहुत दूर न था, सूरज निकलते तक उस खोह (तहखाने) के पास जा पहुँचे।

कुँवर बीरेन्द्रसिंह अकेले सिर्फ तेजसिंह को साथ लेकर खोह में गये। खोह का दरवाजा खोल कई कोठरियों, मकान और बागों में घूमते हुए दोनों आदमी उस बाग में पहुँचे जिसमें सिद्धनाथ रहते थे या जिसमें कुमारी चन्द्रकान्ता की तस्वीर को कुमार ने देखा था।

बाग के अन्दर पैर रखते ही सिद्धनाथ योगीनाथ से मुलाकात हुई जो दरवाजे के पास पहिले ही से खड़े कुछ सोच रहे थे। कुँवर बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह को आते देख उनकी तरफ बढ़े और पुकार के बोले, 'आप लोग आ गये ?'

पहिले दोनों ने दूर से प्रणाम किया और पास पहुँचकर उनकी बात का जवाब दिया—

कुमार, 'आपके हुक्म के मुताबिक महाराज जयसिंह और अपने पिता को खोह के बाहर छोड़कर आपसे मिलने आया हूँ।'

सिद्धनाथ, 'बहुत अच्छा किया जो उन लोगों को ले आये, आज कुमारी चन्द्रकान्ता से आप लोग जरूर मिलेंगे।'

तेज०, 'आपकी कृपा है तो ऐसा ही होगा।'

सिद्धनाथ, 'कहो और तो सब कुशल हैं ? विजयगढ़ और नौगढ़ में किसी तरह का उत्पात तो नहीं हुआ ?'

तेज०, (ताज्जुब से उनकी तरफ देखकर) हाँ उत्पात तो हुआ था, कोई जालिमखाँ नामी दोनों राजाओं का दुश्मन पैदा हुआ था।'

सिद्धनाथ, 'हाँ यह तो मालूम है, बेशक पण्डित बद्रीनाथ अपने फन में बड़ा उस्ताद है, अच्छी चालाकी से उसे गिरफ्तार किया। खूब हुआ जो वे लोग मारे गये, अब उनके संगी-साथियों का दोनों राजाओं से दुश्मनी करने का हौसला न पड़ेगा।

कुमार, 'अब हुक्म हो तो बाहर जाकर अपने पिता और महाराजा जयसिंह को ले आऊँ!'

सिद्धनाथ, 'हाँ मगर पहिले यह तो सुन लो कि हमने तुमको उन लोगों से पहिले क्यों बुलाया। कायदे की बात है कि जिस चीज को जो बहुत चाहता है अगर वह खो गई हो और बहुत मेहनत करने या बहुत हैरान होने पर यकायक ताज्जुब के साथ मिल जाय तो उसका चाहने वाला उस पर इस तरह टूटता है जैसा अपने शिकार पर भूखा बाज। यह हम जानते हैं कि चन्द्रकान्ता से और तुमसे बहुत ज्यादा मुहब्बत है, अगर यकायक दोनों राजाओं के सामने तुम उसे देखोगे या वह तुम्हें देखेगी तो ताज्जुब नहीं कि उन लोगों के सामने तुमसे या कुमारी चन्द्रकान्ता से किसी तरह की बेअदबी हो जाय या जोश में आकर तुम उसके पास हो जा खड़े हो तो भी मुनासिब न होगा।'

कुमार और तेजसिंह योगी के पीछे-पीछे चल दिए।

थोड़ी दूर कमरे की तरफ गए होंगे कि एक लौंडी फूल तोड़ती हुई नजर पड़ी जिसे बुलाकर सिद्धनाथ ने कहा, 'तू अभी कुमारी चन्द्रकान्ता के पास जा और कह कि कुँवर बीरेन्द्रसिंह तुमसे मुलाकात करने आ रहे हैं, तुम अपनी सखियों के साथ अपने कमरे में जाकर बैठो।'

यह सुनते ही, वह लौंडी दौड़ती हुई एक तरफ चली गई और सिद्धनाथ कुमार तथा तेजसिंह को साथ ले बाग में इधर-उधर घूमने लगे। कुँवर बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह दोनों अपनी-अपनी फिक्र में लग गए।

घूम-फिरकर इन दोनों को साथ लिए हुए सिद्धनाथ योगी उस कमरे के पास पहुँचे जिसमें कुमारी चन्द्रकान्ता की तस्वीर का दरबार देखा था। वहाँ पर सिद्धनाथ ने कुमार की तरफ देखकर कहा—

'जाओ, इस कमरे में कुमारी चन्द्रकान्ता और उसकी सखियों से मुलाकात करो, मैं तब तक दूसरा काम करता हूँ।

☐ कुँवर बीरेन्द्रसिंह उस कमरे के अन्दर घुसे। दूर से कुमारी चन्द्रकान्ता को चपला और चम्पा के साथ खड़े दरवाजे की तरफ टकटकी लगाये देखा।

देखते ही कुँवर बीरेन्द्रसिंह कुमारी की तरफ झपटे और चन्द्रकान्ता कुमार की तरफ। अभी एक-दूसरे से कुछ दूर ही थे कि दोनों जमीन पर गिरकर बेहोश हो गये।

तेजसिंह और चपला की भी आपस में टकटकी बंध गई। बेचारी चम्पा कुँवर बीरेन्द्रसिंह और कुमारी चन्द्रकान्ता की यह दशा देख दौड़ी

हुई दूसरे कमरे में गई और हाथ में बेदमुश्क के अर्क से भरी हुई सुराही और दूसरे हाथ में सूखी चिकनी मिट्टी का ढेला लेकर दौड़ी हुई आई।

दोनों के मुँह पर अर्क का छींटा दिया और थोड़ा-सा अर्क उस मिट्टी के ढेले पर डाल हलका लखलखा बनाकर दोनों को सुँघाया।

कुछ देर बाद तेजसिंह और चपला की भी टकटकी टूटी और ये भी कुमार और चन्द्रकान्ता की हालत देख उनको होश में लाने की फिक्र करने लगे।

कुँवर बीरेन्द्रसिंह और चन्द्रकान्ता दोनों होश में आये, दोनों एक-दूसरे की तरफ देखने लगे, मुँह से बात किसी के नहीं निकलती थी। क्या पूछें, कौन-सी शिकायत करें, किस जगह से बात उठावें, दोनों के दिल में यही सोच था। पेट से बात निकलती थी मगर गले में जाकर रुक जाती थी, बातों की भरावट से गला फूलता था, दोनों की आँखें डबडबा आई थीं बल्कि आँसू की बूंदें बाहर गिरने लगीं।

घण्टों बीत गये, देखा-देखी में ऐसे लीन हुए कि दोनों को तनोबदन की सुध न रही। कहाँ हैं, क्या कर रहे हैं, सामने कौन है, इसका ख्याल तक किसी को नहीं।

आखिरी कुमारी का हाथ पकड़ चम्पा बोली—

'कुमारी, तुम तो कहती थीं कि कुमार जिस रोज मिलेंगे उनसे पूछूंगी कि वनकन्या किसका नाम रक्खा था? वह कौन औरत है? अब किसके साथ शादी करने का इरादा है? क्या ये सब बातें भूल गईं, अब इनसे न कहोगी?'

चम्पा की बात ने दोनों को चौंका दिया, दोनों की चार आँखें जो मिल-जुलकर एक हो रही थीं हिल-डोल कर नीचे की तरफ हो गईं और सिर नीचा किए दोनों कुछ बोलने लगे।

वे दोनों पहरों आमने-सामने बैठे रहते तो शायद कहीं जुबान खुलती मगर यहाँ दो घण्टे बाद सिद्धनाथ योगी ने दोनों को फिर अलग कर दिया। लौंडी ने बाहर से आकर कहा, 'कुमार आपको सिद्धनाथ बाबाजी ने बहुत जल्द बुलाया है, चलिए, देर मत कीजिए।'

कुमार की मजाल न थी कि सिद्धनाथ योगी की बात टालते। उसी वक्त चलने को तैयार हो गए। दोनों के दिल-की-दिल ही में रह गई।

कुमारी चन्द्रकान्ता को उसी तरह छोड़ कुमार उठ खड़े हुए, कुमारी को कुछ कहना ही चाहते थे तब तक दूसरी लौंडी ने पहुँचकर जल्दी मचा दी। आखिर कुँवर बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह उस कमरे के बाहर आये।

सिद्धनाथ बाबा ने कुमार को अपने पास बुलाकर कहा—

'कुमार, हमने तुमको यह नहीं कहा था कि दिन भर चन्द्रकान्ता के पास बैठे रहो। दोपहर हुआ चाहती है, जिन लोगों को खोह के बाहर छोड़ आए हो वे बेचारे तुम्हारी राह देखते होंगे। जाओ, उन लोगों को यहां ले आओ। मगर मेरी तरफ से दोनों राजाओं को कह देना कि इस खोह के अन्दर उन्हीं लोगों को अपने साथ लायें जो कुमारी चन्द्रकान्ता को देख सकें या जिनके सामने वह हो सके।

कुमार, 'बहुत अच्छा।'

बाबा : 'जाओ अब देर न करो।'

दोनों आदमी सिद्धनाथ बाबा से विदा हो उसी मामूली राह से घूमते खोह के बाहर आए।

दिन दोपहर से कुछ ज्यादा जा चुका था। उस वक्त तक कुमार ने स्नान-पूजा कुछ नहीं की थी।

लश्कर में जाकर कुमार राजा सुरेन्द्रसिंह और महाराज जयसिंह से मिले और सिद्धनाथ योगी का सन्देशा दिया। दोनों ने पूछा कि बाबाजी ने तुमको सबसे पहिले क्यों बुलाया था? इसके जवाब में जो कुछ मुनासिब समझा, कहकर दोनों अपने-अपने डेरे में आये और स्नान-पूजा करके भोजन किया।

राजा सुरेन्द्रसिंह तथा महाराज जयसिंह एकान्त में बैठकर इस बात की सलाह करने लगे कि हम लोग अपने साथ किस-किसको खोह के अन्दर ले चलें।

सुरेन्द्र०, 'योगीजी ने कहला भेजा है कि उन्हीं लोगों को अपने साथ खोह में जाओ, जिनके सामने कुमारी हो सके।'

जयसिंह, 'हम आप कुमार और तेजसिंह तो जरूर ही चलेंगे। बाकी जिस-जिसको आप चाहें लें!'

सुरेन्द्र०, 'बहुत आदमियों को साथ ले चलने की कोई जरूरत नहीं, हाँ ऐयारों को जरूर ले चलना चाहिए क्योंकि इन लोगों से किसी किस्म का पर्दा रह नहीं सकता, बल्कि ऐयारों से पर्दा रखना ही मुनासिब नहीं।'

जयसिंह, 'आपका कहना बहुत ठीक है, इन ऐयारों के सिवाय और कोई इस लायक नहीं जिसे अपने साथ खोह में ले चलें।'

कुमारी को देखने के लिए महाराज जयसिंह बहुत घबरा रहे थे, मगर इस वक्त तेजसिंह की राय उनको कबूल करनी पड़ी और दूसरे दिन सुबह को खोह में चलने की ठहरी।

☐ बहुत सवेरे महाराज जयसिंह, राजा सुरेन्द्रसिंह और कुमार अपने कुल ऐयारों को साथ ले खोह के दरवाजे पर आये। तेजसिंह ने दोनों ताले खोले जिन्हें देख महाराज जयसिंह और सुरेन्द्रसिंह बहुत हैरान हुए। खोह के अन्दर जाकर तो इन लोगों की और ही कैफियत हो गयी, ताज्जुब-भरी निगाहों से चारों तरफ देखते और तारीफ करते थे।

घुमाते-फिराते कई ताज्जुब की चीजों को दिखाते और कुछ हाल समझाते, सभी को साथ लिए हुए तेजसिंह उस बाग के दरवाजे पर पहुँचे जिसमें सिद्धनाथ रहते थे। इन लोगों के पहुँचने के पहिले से सिद्धनाथ अगवानी के लिए द्वार पर मौजूद थे।

तेजसिंह ने महाराज जयसिंह और सुरेन्द्रसिंह को उँगली के इशारे से बताकर कहा, 'देखिए सिद्धनाथ बाबा दरवाजे पर खड़े हैं।'

दोनों राजा चाहते थे कि जल्दी से पास पहुँचकर बाबाजी को दण्डवत करें। मगर इसके पहले ही बाबाजी ने पुकार कर कहा, 'खबरदार, मुझे कोई दण्डवत न करना नहीं तो पछताओगे और मुलाकात भी न होगी।'

इरादा करते रह गये, किसी की मजाल न हुई कि दण्डवत करता। महाराज जयसिंह और राजा सुरेन्द्रसिंह हैरान थे कि बाबाजी ने दण्डवत करने से क्यों रोका। पास पहुँचकर हाथ मिलाना चाहा, मगर बाबाजी ने इसे मंजूर न करके कहा, 'महाराज, मैं इस लायक नहीं, आपका दर्जा मुझसे बहुत बड़ा है।'

सुरेन्द्र०, 'साधुओं से बढ़कर किसी का दर्जा नहीं हो सकता।'

बाबाजी। (हँसकर) अच्छा आइये इस बाग में चलिए।

महाराज जयसिंह, राजा सुरेन्द्रसिंह, कुँअर बीरेन्द्रसिंह और उनके ऐयारों को साथ लिए हुए घूमते बाबाजी उसी दीवानखाने में पहुँचे जिसमें कुमारी का दरबार कुमार ने देखा था बल्कि ऐसा क्यों नहीं कहते कि अभी कल ही जिस कमरे में कुमार खास कुमारी चन्द्रकान्ता से मिले थे।

जिस तरह की सजावट आज इस दीवानखाने की है, इसके पहिले कुमार ने नहीं देखी थी। बीच में एक कीमती गद्दी बिछी हुई थी, बाबाजी ने उस पर राजा सुरेन्द्रसिंह, महाराज जयसिंह और कुँअर बीरेन्द्रसिंह को बैठाकर उनके दोनों तरफ दर्जे ऐयारों को बैठाया और आप भी उन्हीं लोगों के सामने एक मृगछाला पर बैठ गए।

बाबा, 'शायद किसी वजह से अगर आज कुमारी को देख न सके तो कल जरूर आप लोग उससे मिलेंगे। इस वक्त आप लोग स्नान-पूजा से

छुट्टी पाकर कुछ भोजन कर लें, तब हमारे आपके बीच बातचीत होगी।'

बाबाजी ने एक लौंडी को बुलाकर कहा कि 'हमारे मेहमान लोगों के नहाने का सामान उस बाग में दुरुस्त करो जिसमें बावली है।'

बाबाजी सभी के लिए उस बाग में गए जिसमें बावली थी। उसी में सभी ने स्नान किया और उत्तर तरफ वाले दालान में भोजन करने के बाद उस कमरे में बैठे जिसमें कुँअर बीरेन्द्रसिंह की आँख खुली थी। आज भी वह कमरा वैसा ही सजा हुआ है जैसा पहिले दिन कुमार ने देखा था। हाँ, इतना फर्क है कि आज कुमारी चन्द्रकान्ता की तस्वीर उसमें नहीं है।

जब सब लोग निश्चित होकर बैठे तब राजा सुरेन्द्रसिंह ने सिद्धनाथ योगी से पूछा—

'यह खूबसूरत पहाड़ी जिसमें छोटे-छोटे कई बाग हैं हमारे ही इलाके में है, मगर आज तक कभी इसे देखने की नौबत नहीं पहुँची। क्या इस बाग से ऊपर-ही-ऊपर कोई और रास्ता भी बाहर जाने का है?'

बाबा, 'इसकी राह गुप्त होने के सबब से यहाँ कोई आ या जा नहीं सकता था, हाँ, जिसे इस छोटे से तिलिस्म की कुछ खबर है वह शायद आ सके। एक रास्ता तो इसका वही है जिससे आप आये हैं, दूसरी राह बाहर जाने की इस बाग में से है, लेकिन वह उससे भी ज्यादा छिपी हुई है।'

सुरेन्द्र०, 'आप कब से इस पहाड़ी में रह बहे हैं?'

बाबाजी, 'मैं बहुत थोड़े दिनों से इस खोह में आया हूँ सो भी अपनी खुशी से नहीं आया, मालिक के काम से आया हूँ।'

जयसिंह, (सुरेन्द्रसिंह की तरफ इशारा करके) 'महाराज की जुबानी मालूम होता है कि यह दिलचस्प पहाड़ी चाहे इनके राज्य में हो मगर इन्हें इसकी खबर नहीं और यह जगह भी ऐसी नहीं मालूम होती जिसका कोई मालिक न हो, आप यहाँ के रहने वाले नहीं हैं। तो इस दिलचस्प पहाड़ी और सुन्दर-सुन्दर मकानों और बागीचों का मालिक कौन है?'

महाराज जयसिंह की बात का जवाब अभी सिद्धनाथ बाबा ने नहीं दिया था कि सामने से वनकन्या आती दिखाई पड़ी। दोनों बगल उसके दो सखियाँ और पीछे-पीछे दस-पन्द्रह लौंडियों की भीड़ थी।

बाबा, 'वनकन्या इस जगह की मालिक है।'

सिद्धनाथ बाबा की बात सुनकर दोनों महाराज और ऐयार लोग ताज्जुब से वनकन्या की तरफ देखने लगे। इस वक्त कुंअर बीरेन्द्रसिंह

और तेजसिंह भी हैरान हो वनकन्या की तरफ देख रहे थे। सिद्धनाथ की जुबानी यह सुनकर कि इस जगह की मालिक यही है, कुमार और तेजसिंह को पिछली बातें याद आ गईं। कुंअर बीरेन्द्रसिंह सिर नीचा कर सोचने लगे कि बेशक कुमारी चन्द्रकान्ता इसी वनकन्या की कैद में है।

नीचे मुँह किये इसी किस्म की बातें सोचते-सोचते कुमार को गुस्सा चढ़ आया और उन्होंने वनकन्या की तरफ देखा।

कुमार के दिल में चन्द्रकान्ता की मुहब्बत चाहे कितनी ही ज्यादा हो मगर वनकन्या की मुहब्बत भी कम न थी। हाँ इतना फर्क जरूर था कि जिस वक्त कुमारी चन्द्रकान्ता की याद में मग्न होते थे उस वक्त वनकन्या का ख्याल भी जी में नहीं आता था।

कुमार क्या सभी के दिल में एकदम यह बात पैदा हुई कि इस बाग और पहाड़ी की मालिक अगर यह है तो इसी ने कुमारी को भी कैद कर रखा होगा। आखिर महाराज जयसिंह से न रहा गया, सिद्धनाथ की तरफ देखकर पूछा—

'बेचारी चन्द्रकान्ता इस खोह में फँसकर इन्हीं की कैद में पड़ी होगी?'

बाबा, 'नहीं जिस वक्त चन्द्रकान्ता इस खोह में फँसी थी उस वक्त यहाँ का मालिक कोई न था, इसके बाद यह पहाड़ी बाग और मकान इनको मिला है!'

महाराज जयसिंह और सुरेन्द्रसिंह से न रहा गया, सिद्धनाथ की तरफ देखकर और गिड़गिड़ाकर बोले, 'आप कृपा करके पेचीदी और बहुत से मानी पैदा करने वाली बातों को छोड़ दीजिए और साफ कहिए कि यह लड़की जो सामने खड़ी है कौन है, यह पहाड़ी इसे किसने दी और चन्द्रकान्ता कहाँ है?'

महाराज जयसिंह और सुरेन्द्रसिंह की बात सुनकर बाबाजी मुस्कराने लगे। और वनकन्या की तरफ देख इशारे से उसे अपने पास बुलाया। वनकन्या अपनी अगल-बगल वाली दोनों सखियों को जिनमें से एक की पोशाक सुर्ख और दूसरी की सब्ज थी साथ लिए हुए सिद्धनाथ के पास आई। बाबाजी ने उसके चेहरे पर से एक झिल्ली जैसी कोई चीज जो तमाम चेहरे के साथ चिपकी हुई थी खींच ली और हाथ पकड़कर महाराज जयसिंह के पैर पर डाल दिया और कहा, 'लीजिए यही आपकी चन्द्रकान्ता है!'

चेहरे पर से झिल्ली उतर जाने से सभी ने कुमारी चन्द्रकान्ता को

पहिचान लिया, महाराज जयसिंह पैर से उसका सिर उठाकर देर तक अपनी छाती से लगाये रहे और खुशी से गद्गद् हो गए।

सिद्धनाथ योगी ने उसको दोनों सखियों के मुँह पर से भी झिल्ली उतार ली। लाल पोशाक वाली चपला और सब्ज पोशाक वाली चम्पा साफ पहिचानी हुईं।

मारे खुशी के सभी का चेहरा चमक उठा, आज की-सी खुशी कभी किसी ने नहीं पाई थी। महाराज जयसिंह के इशारे से कुमारी चन्द्रकान्ता ने राजा सुरेन्द्रसिंह के पैर पर सिर रखा।

महाराज जयसिंह की तरफ देखकर सिद्धनाथ बाबा बोले, 'आप कुमारी को हुक्म दीजिए कि अपनी सखियों के साथ घूमे-फिरे या दूसरे कमरे में चली जाय और आप लोग इस पहाड़ी और कुमारी का विचित्र हाल मुझसे सुनें।'

जयसिंह, 'बहुत दिनों के बाद इसकी सूरत देखी है, अब कैसे अपने से अलग करूँ, कहीं ऐसा न हो कि फिर कोई आफत आए और इसका देखना मुश्किल हो जाय।'

बाबा, 'नहीं-नहीं, अब यह आपसे अलग नहीं हो सकती।'

जयसिंह, 'खैर जो हो, इसे मुझसे अलग मत कीजिए और कृपा करके इसका हाल शुरू से कहिए।'

☐ महाराज जयसिंह और सुरेन्द्रसिंह के पूछने पर सिद्धनाथ बाबा ने इस दिलचस्प पहाड़ी और कुमारी चन्द्रकान्ता का हाल कहना शुरू किया।

बाबाजी, 'मुझे मालूम था कि यह पहाड़ी एक छोटा-सा तिलिस्म है और चुनार के इलाके में भी कोई तिलिस्म है। जिसके हाथ से वह तिलिस्म टूटेगा उसकी शादी जिसके साथ होगी उसी के दहेज के सामान पर यह तिलिस्म बँधा है और शादी होने के पहिले वह इसकी मालिक होगी।'

सुरेन्द्र०, 'पहिले यह बताइए कि तिलिस्म किसे कहते हैं और वह कैसे बनाया जाता है?'

बाबा, 'तिलिस्म वही शख्स तैयार करता है जिसके पास बहुत माल-खजाना हो और वारिस न हो। तब वह अच्छे ज्योतिषी और नजूमियों से दरियाफ्त करता है कि इसके या उसके भाइयों के खानदान में कभी कोई प्रतापी या लायक पैदा होगा या नहीं? आखिर ज्योतिषी या नजूमी इस

बात का पता देते हैं कि इतने दिनों के बाद आपके खानदान में एक लड़का प्रतापी होगा, बल्कि उसकी एक जन्मपत्री लिखकर तैयार कर देते हैं। उसी के नाम से खजाना और अच्छी-अच्छी कीमती चीजों को रखकर उस पर तिलिस्म बाँधते हैं।

जयसिंह, 'खैर इसका हाल कुछ-कुछ मालूम हो गया, बाकी कुमार की जुबानी तिलिस्म का हाल सुनते और गौर करने से मालूम हो जायेगा। अब आप इस पहाड़ी और मेरी लड़की का हाल कहिए कि महाराज शिवदत्त इस खोह से क्योंकर निकलकर भागे और फिर क्योंकर कैद हो गये?'

बाबा, 'सुनिये मैं बिलकुल हाल आपसे कहता हूँ। जब कुमारी चन्द्रकान्ता चुनार के तिलिस्म में फँसकर इस खोह में आई तो दो दिन तक तो इस बेचारी ने तकलीफ से काटा। तीसरे रोज खबर लगने पर मैं वहाँ पहुँचा और कुमारी को उस जगह से छुड़ाया जहाँ फँसी हुई थी और जिसको मैं आप लोगों को दिखाऊँगा। इस तिलिस्म में कुमारी को कुछ भी तकलीफ न हुई और न ताकत की जरूरत पड़ी, क्योंकि इसका लगाव उस तिलिस्म से था जिसे कुमार ने तोड़ा है। वह तिलिस्म या उसके कुछ हिस्से अगर न टूटते तो यह तिलिस्म भी न खुलता।

कुमार, '(सिद्धनाथ की तरफ देखकर) आपने यह तो कहा ही नहीं कि कुमार के पास किस राह से पहुँचे? हम लोग जब इस खोह में आए थे और कुमारी को बेबस देखा था तथा बहुत सोचने पर भी कोई तरकीब ऐसी न मिली थी जिससे कुमारी के पास पहुँचकर इन्हें उस बला से छुड़ाते।'

बाबा, 'सिर्फ सोचने से तिलिस्म का हाल नहीं मालूम हो सकता है। मैं भी सुन चुका था कि इस खोह में कुमारी चन्द्रकान्ता फँसी पड़ी हैं। और आप छुड़ाने की फिक्र कर रहे हैं मगर कुछ बन नहीं पड़ता। यहाँ पहुँचकर कुमारी को छुड़ा सकता था लेकिन मुझे मंजूर न था कि यहाँ का माल असबाब कुमारी के हाथ लगे।'

कुमार, 'आप योगी हैं, योगबल से हर जगह पहुँच सकते हैं मगर मैं क्या कर सकता था!'

बाबा, 'आप लोग इस बात को बिल्कुल मत सोचिए कि मैं योगी हूँ। जो काम आदमी के या ऐयारों के किये नहीं हो सकता उसे मैं भी नहीं कर सकता। मैं जिस राह से कुमारी के पास पहुँचा और जो-जो किया सो कहता हूँ, सुनिये।'

☐ सिद्धनाथ योगी ने कहा, 'पहिले इस खोह का दरवाजा खोल मैं इसके अन्दर पहुंचा, पहाड़ी के ऊपर एक दर्रे में बेचारी चन्द्रकान्ता को बेबस पड़े हुए देखा। अपने गुरु से मैं सुन चुका था कि इस खोह में कई छोटे-छोटे बाग हैं जिनका रास्ता उस चश्मे में है जो खोह में बह रहा है, खोह के अन्दर आने पर आप लोगों ने उसे जरूर देखा होगा, क्योंकि खोह में उस चश्मे की खूबसूरती भी देखने के काबिल है।

मैं लँगोटी बाँधकर चश्मे में उतर गया और चश्मे में इधर-से-उधर और उधर-से-इधर घूमने लगा। यकायक पूरब तरफ जल के अन्दर एक छोटा-सा दरवाजा मालूम हुआ, गोता लगाकर उसके अन्दर घुसा। आठ-दस हाथ तक बराबर जल मिला इसके बाद धीरे-धीरे जल कम होने लगा। यहाँ तक कि कमर तक जल हुआ तब मालूम पड़ा कि यह कोई सुरंग है जिसमें चढ़ाई के तौर पर ऊँचे की तरफ चला जा रहा हूँ।

आधा घण्टा चलने के बाद मैंने अपने को इस बाग के (जिसमें आप बैठे हैं) पश्चिम और उत्तर के कोण में पाया और घूमता-फिरता इस कमरे में पहुँचा। (हाथ से इशारा करके) यह देखिये दीवार में जो अलमारी है असल में यह अलमारी नहीं दरवाजा है, लात मारने से खुल जाता है। मैंने लात मारकर यह दरवाजा खोला और इसके अन्दर घुसा। भीतर बिल्कुल अंधकार था। लगभग दो सौ कदम जाने के बाद दीवार मिली इसी तरह वहाँ भी लात मारकर दरवाजा खोला और ठीक उसी जगह पहुँचा जहाँ कुमारी चन्द्रकान्ता और चपला बेबस पड़ी रो रही थीं। मेरे बगल से ही एक दूसरा रास्ता उस चुनारगढ़ वाले तिलिस्म को गया था, जिसके एक टुकड़े को कुमार ने तोड़ा है।

मुझे देखते ही ये दोनों घबरा गईं। मैंने कहा, 'तुम लोग डरो मत, मैं तुम दोनों को छुड़ाने आया हूँ।' यह कहकर जिस राह से मैं गया था उसी राह से चन्द्रकान्ता और चपला को साथ ले इस बाग में लौट आया।

मैंने अपने जी का हाल कुमारी और चपला से कहा और यह भी कहा कि अगर मेरी बात न मानोगी तो तुम्हें इसी बाग में छोड़कर मैं चला जाऊँगा। आखिर लाचार होकर कुमारी ने मेरी बात मंजूर की और कसम खाई कि मेरे कहने के खिलाफ कोई काम न करेगी।

मुझे यह तो मालूम ही न था कि यहाँ का माल असबाब क्योंकर हाथ लगेगा और इस खजाने की ताली कहाँ है मगर यह यकीन हो गया कि कुमारी जरूर तिलिस्म की मालिक होगी। इसी फिक्र में दो रोज तक परेशान रहा। इन बागों की हालत बिल्कुल खराब थी, मगर दो चार फलों

के पेड़ ऐसे थे कि हम तीनों ने भूख की तकलीफ न पाई।

तीसरे दिन पूर्णिमा थी। मैं इस बावली के किनारे बैठा सोच रहा था, कुमारी और चपला इधर-उधर टहल रही थीं, इतने में चपला दौड़ी हुई मेरे पास आई और बोली, 'जल्दी चलिए, इस बाग में एक ताज्जुब की बात दिखाई पड़ी है।'

मैं सुनते ही उठ खड़ा हुआ और चपला के साथ वहाँ गया जहाँ कुमारी चन्द्रकान्ता पूरब की दीवार तले खड़ी गौर से कुछ देख रही थीं। मुझे देखते ही कुमारी ने कहा, 'बाबाजी देखिये इस दीवार की जड़ में एक सूराख है जिसमें से सफेद रंग की बड़ी-बड़ी चींटियाँ निकल रही हैं। यह क्या मामला है?'

मैंने अपने उस्ताद से सुना था कि सफेद चींटियाँ जहाँ नजर पड़ें समझना कि वहाँ जरूर कोई खजाना या खजाने की ताली है। यह ख्याल करके मैंने अपनी कमर से खंजर निकाल कुमारी के हाथ में दे दिया और कहा कि तुम इस जमीन को खोदो। अस्तु मेरे कहे मुताबिक कुमारी ने उस जमीन को खोदा। हाथ ही भर के बाद काँच की छोटी-सी हाँडी निकली जिसका मुँह बन्द था। कुमारी के ही हाथ से वह हाँडी मैंने तोड़वाई। उसके भीतर किसी किस्म का तेल भरा हुआ था जो हाँडी के टूटते ही बह गया और ताली का एक गुच्छा उसके अन्दर से मिला जिसे पाकर मैं बहुत खुश हुआ।

उस गुच्छे में तीस तालियाँ थीं, कई दिनों में खोजकर हम लोगों ने तीसों ताले खोले। तीन दरवाजे तो ऐसे मिले जिनसे हम लोग ऊपर ही ऊपर इस तिलिस्म के बाहर हो जायें। चार बाग और तेईस कोठरियाँ असबाब और खजाने की निकलीं जिनमें हर एक किस्म का अमीरी का सामान और बेहद खजाना मौजूद था।

जब ऊपर-ही-ऊपर तिलिस्म से बाहर हो जाने का रास्ता मिला तब मैं अपने घर गया और कई लौंडियाँ और जरूरी चीजें कुमारी के वास्ते लेकर फिर यहाँ आया। कई दिनों में यहाँ के सब ताले खोले गए, तब तक यहाँ रहते-रहते कुमारी की तबियत घबरा गई, मुझसे कई दफे उन्होंने कहा कि 'मैं इस तिलिस्म के बाहर घूमना-फिरना चाहती हूँ।'

बहुत जिद्द करने पर मैंने इस बात को मंजूर किया। अपनी कारीगरी से इन लोगों की सूरत बदली और दो-तीन घोड़े भी ला दिये जिन पर सवार होकर ये लोग कभी-कभी तिलिस्म के बाहर घूमने जाया करती थीं। इस बात की ताकीद कर दी थी कि अपने को छिपाये रहें जिससे

कोई पहिचानने न पाये। इन्होंने भी मेरी बात पूरे तौर पर मानी और जहाँ तक हो सका अपने को छिपाया। इसी बीच में धीरे-धीरे इन बागों की भी दुरुस्ती हो गई।

कुँअर बीरेन्द्रसिंह ने उस तिलिस्म का खजाना हासिल किया और यहाँ का माल असबाब जो कुछ छिपा था कुमारी को मिल गया (जयसिंह की तरफ देखकर) आज तक यह कुमारी चन्द्रकान्ता मेरी लड़की या मालिक थी, अब आपकी जमा आपके हवाले करता हूँ।

महाराज शिवदत्त की रानी पर रहम खाकर कुमारी ने दोनों को छोड़ दिया था और इस बात की कसम खिला ली थी कि कुमार से किसी तरह की दुश्मनी न करेगा। मगर उस दुष्ट ने न मानी, पुराने साथियों से मुलाकात होने पर बदमाशी पर कमर बाँधी और कुमार के पीछे लश्कर की तबाही करने लगा। आखिर लाचार होकर मैंने उसे गिरफ्तार किया और इस खोह में उसी ठिकाने फिर ला रक्खा जहाँ कुमार ने उसे कैद करके डाल दिया था। अब और जो कुछ आपको पूछना हो पूछिये, 'मैं सब हाल कह आप लोगों की शंका मिटाऊँ।'

सुरेन्द्र०, 'पूछने को तो बहुत-सी बातें थीं मगर इस वक्त इतनी खुशी हुई है कि वे तमाम बातें भूल गया हूँ, क्या पूछूं? खैर फिर किसी वक्त पूछ लूँगा। कुमारी की मदद आपने क्यों की?

जयसिंह, हाँ यही सवाल मेरा भी है, क्योंकि आपका हाल जब तक नहीं मालूम होता तबीयत की घबराहट नहीं मिटती, तिस पर आप कई दफे कह चुके हैं कि 'मैं योगी या महात्मा नहीं हूँ' यह सुनकर हम लोग और भी घबरा रहे हैं कि अगर आप वह नहीं हैं जो सूरत से जाहिर है तो फिर कौन हैं!

बाबा, 'आप जल्दी क्यों करते हैं! अभी थोड़ी देर में मेरा हाल आपको मालूम हो जायेगा, पहिले चलकर उन चीजों को तो देखिये जो कुमारी चन्द्रकान्ता को इस तिलिस्म से मिली हैं।

बाबाजी उसी वक्त खड़े हुए और सभी को साथ ले दूसरे बाग की तरफ चले।

[ ] बाबाजी यहाँ से उठकर महाराज जयसिंह वगैरह को साथ ले दूसरे बाग में पहुँचे और वहाँ घूम-फिरकर तमाम बाग, इमारत, खजाना और सब असबाबों को दिखलाने लगे जो इस तिलिस्म में से कुमारी ने पाया

था।

महाराज जयसिंह उन सब चीजों को देखते ही एकदम बोल उठे, 'वाह वाह, धन्य थे वे लोग जिन्होंने इतनी दौलत इकट्ठी की थी। मैं अपना बिल्कुल राज्य बेचकर भी अगर इस तरह के दहेज का सामान इकट्ठा करना चाहता तो इसका चौथाई भी न कर सकता !'

सबसे ज्यादा खजाना और जवाहिरखाना उस बाग और दीवानखाने के तहखाने में नजर पड़ा जहाँ कुँअर बीरेन्द्रसिंह ने कुमारी चन्द्रकान्ता की तस्वीर का दरबार देखा था।

तीसरे और चौथे भाग के शुरू में इस पहाड़ी बाग कोठरियों और रास्ते का कुल हाल हम लिख चुके हैं। दो-तीन दिनों में सिद्ध बाबा ने इन लोगों को उन जगहों की पूरी सैर कराई।

जब इन सब कामों से छुट्टी मिली और सब कोई दीवानखाने में बैठे उस वक्त महाराज जयसिंह ने सिद्धबाबा से कहा—

'आपने जो कुछ मदद कुमारी चन्द्रकान्ता की करके उसकी जान बचाई उसका एहसान तमाम उम्र हम लोगों के सिर रहेगा। आज जिस तरह हो आप अपना हाल बतलाकर हम लोगों के तरद्दुद को दूर कीजिए, अब सब्र नहीं किया जाता।'

महाराज जयसिंह की बात सुन सिद्धबाबा मुस्कराकर बोले, 'मैं अभी अपना हाल आप लोगों पर जाहिर करता हूँ जरा सब्र कीजिये।' इतना कह जोर से जफील (सीटी) बजाई। उसी वक्त तीन-चार लौंडियाँ दौड़ती हुई आकर उनके पास खड़ी हो गईं। सिद्धनाथ बाबा ने हुक्म दिया, 'हमारे नहाने के लिए जल और पहिरने के लिए असली कपड़ो का सन्दूक (उंगली का इशारा करके) इस कोठरी में लाकर जल्द रक्खो ! आज मैं इस मृग-छाले और लम्बी दाढ़ी को इस्तीफा दूँगा।'

थोड़ी ही देर में सिद्ध बाबा के हुक्म की तामील हो गई। तब तक इधर-उधर की बातें होती रहीं। इसके बाद सिद्ध बाबा उठकर उस कोठरी में चले गए जिनमें उनके नहाने का जल और पहिरने के कपड़े रखे हुए थे।

थोड़ी ही देर में नहा-धोकर और कपड़े पहिनकर सिद्ध बाबा उस कोठरी के बाहर निकले। अब तो उनको सिद्धबाबा कहना मुनासिब नहीं, आज तक बाबाजी कह चुके बहुत कहा, अब तो तेजसिंह के बाप जीतसिंह कहना ठीक है।

अब पूछने का हाल-चाल मालूम करने की फुरसत कहाँ ! महाराज

सुरेन्द्रसिंह तो जीतसिंह को पहिचानते ही उठे और यह कह के कि 'तुम मेरे से भी हजार दर्जे बढ़ के हो' गले लगा लिया।

और कहा, 'जब महाराज शिवदत्त और कुमार से लड़ाई हुई तब तुमने सिर्फ पाँच सौ सवार लेकर कुमार की मदद की थी।[1] आज तो तुमने कुमार से भी बढ़कर नाम पैदा किया और पुश्तहापुश्त के लिए नौगढ़ और विजयगढ़ दोनों राज्यों के ऊपर अपने एहसान का बोझ रखा।' देर तक गले लगाये रहे, इसके बाद महाराज जयसिंह ने भी उन्हें बराबरी का दर्जा देकर गले लगाया। तेजसिंह और देवीसिंह वगैरह ने भी बड़ी खुशी से उनकी पूजा की।

अब मालूम हुआ कि कुमारी चन्द्रकान्ता की जान बचाने वाले, नौगढ़ और विजयगढ़ दोनों की इज्जत रखने वाले, दोनों राज्यों की तरक्की करने वाले, आज तक अच्छे-अच्छे ऐयारों को धोखे में डालने वाले, कुँवर वीरेन्द्र-सिंह को धोखे में डालकर विचित्र तमाशा दिखाने वाले, पहाड़ी से कूदते हुए कुमार को रोककर जान बचाने और चुनार राज्य में फतह का डंका बजाने वाले सिद्ध बाबा योगी बने हुए यही महात्मा जीतसिंह थे।

इस वक्त की खुशी का क्या अन्दाज है। अपने-अपने में सब ऐसे मग्न हो रहे हैं कि त्रिभुवन की सम्पत्ति की तरफ हाथ उठाने को जी नहीं चाहता। कुँवर बीरेन्द्रसिंह को कुमारी चन्द्रकान्ता से मिलने की खुशी भी जैसी थी आप खुद ही सोच-समझ सकते हैं, इसके सिवाय इस बात की खुशी बेहद हुई कि सिद्धनाथ का एहसान किसी के सर न हुआ, या अगर हुआ तो जीतसिंह का, सिद्धनाथ बाबा तो कुछ थे ही नहीं।

इस वक्त महाराज जयसिंह और सुरेन्द्रसिंह का आपस में दिली प्रेम कितना बढ़-चढ़ रहा है वे ही जानते होंगे। कुमारी चन्द्रकान्ता को घर ले जाने के बाद शादी के लिए खत भेजने की ताब किसे? जयसिंह ने उसी वक्त कुमारी चन्द्रकान्ता का हाथ पकड़ के राजा सुरेन्द्रसिंह के पैर पर डाल दिया और डबडबाई आँखों को पोंछकर कहा, 'आप आज्ञा कीजिए कि इस लड़की को मैं अपने घर ले जाऊँ, और जात-बिरादरी तथा पण्डित लोगों के सामने कुँअर बीरेन्द्रसिंह की लौंडी बनाऊँ।'

राजा सुरेन्द्रसिंह ने कुमारी को अपने पैर से उठाया और बड़ी मुहब्बत के साथ महाराज जयसिंह को गले लगाकर कहा, 'जहाँ तक जल्दी हो सके आप कुमारी को लेकर विजयगढ़ जायें क्योंकि इसकी माँ बेचारी मारे गम

---

1. देखिये दूसरा भाग, पाँचवाँ बयान।

के सूखकर काँटा हो रही होगी!'

इसके बाद महाराज सुरेन्द्रसिंह ने पूछा, 'अब क्या करना चाहिए ?'

जीत०, 'अब सभी को यहाँ से चलना चाहिए, मगर मेरी समझ में यहाँ से माल असबाब और खजाने को ले चलने की कोई जरूरत नहीं, यह माल असबाब सिवाय कुमारी चन्द्रकान्ता के किसी के मतलब का नहीं, इसलिए कि दहेज का माल है, इसकी तालियाँ भी पहिले ही से इनके कब्जे में हो रही हैं।'

यहां से उठाकर ले जाने और फिर इनके साथ भेजकर लोगों को दिखाने की कोई जरूरत नहीं, दूसरे यहां की आबोहवा कुमारी को बहुत पसन्द है। जहां तक मैं समझता हूँ, कुमारी चन्द्रकान्ता फिर यहां आकर कुछ दिन जरूर रहेगी इसलिए हम लोगों को यहां से खाली हाथ सिर्फ कुमारी चन्द्रकान्ता को लेकर बाहर होना चाहिए।

बहादुर और पूरे ऐयार जीतसिंह की राय को सभी ने पसन्द किया और वहां से बाहर होकर नौगढ़ जाने के लिए तैयार हुए।

जीतसिंह ने कुछ लौंडियों को जिन्हें कुमारी की खिदमत के लिए वहां लाये थे बुलाकर कहा, 'तुम लोग अपने-अपने चेहरे को साफ करके असली सूरत में उस पालकी को लेकर जल्द यहां आओ जो कुमारी के लिए मैंने पहिले से मँगा रक्खी है।'

जीतसिंह का हुक्म पाकर वे लौंडियाँ जो गिनती में बीस होंगी दूसरे बाग में चली गईं और थोड़ी ही देर बाद अपनी असली सूरत में एक निहायत उम्दा सोने की जड़ाऊ पालकी अपने कन्धे पर लिए हाजिर हुईं।

कुँअर वीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह ने अब इन लौंडियों को पहिचाना।

'वाह-वाह, अपने घर की लौंडियों को आज तक मैंने न पहिचाना! मेरी मां ने भी यह भेद मुझसे न कहा।'

☐ जिस राह से कुँवर बीरेन्द्रसिह वगैरह आया जाया करते थे और महाराज जयसिंह आये थे वह राह इस लायक नहीं थी कि कोई हाथी या घोड़ा या पालकी पर सवार होकर आए, और ऊपर वाली दूसरी राह से खोह के दरवाजे तक जाने में कुछ चक्कर पड़ता था, इसलिए जीतसिंह ने कुमारी के वास्ते पालकी मँगाया मगर दोनों महाराज और कुँवर बीरेन्द्र-सिंह किस पर सवार होंगे अब वे सोचने लगे।

वहां खोह में दो घोड़े भी थे जो कुमारी की सवारी के वास्ते आये

गये थे। जीतसिंह ने उन्हें महाराज जयसिंह और राजा सुरेन्द्रसिंह की सवारी के लिए तजवीज करके कुमार के वास्ते एक हवादार मँगवाया, लेकिन कुमार ने उस पर सवार होने से इनकार करके पैदल चलना कबूल किया।

उसी बाग के दक्खिन तरफ बड़ा फाटक था जिसके दोनों बगल लोहे की दो खूबसूरत पुतलियाँ थीं। बाईं तरफ वाली पुतली के पास जीतसिंह पहुँचे और उसकी दाहिनी आँख में उँगली डाली, साथ ही उसका पेट दो पल्लों की तरह खुल गया और बीच में चाँदी का एक मुट्ठा नजर पड़ा जिसे जीतसिंह ने घुमाना शुरू किया।

जैसे-जैसे मुट्ठा घुमाते थे तैसे-तैसे वह फाटक जमीन में घुसता जाता था। यहाँ तक कि तमाम फाटक जमीन के अन्दर चला गया और बाहर खुशनुमा सब्ज भरा हुआ मैदान नजर पड़ा।

फाटक खुलने के बाद जीतसिंह इन लोगों के पास आकर बोले, 'इसी राह से हम लोग बाहर चलेंगे।'

दिन आधी घड़ी से ज्यादा न बीता होगा जब महाराज जयसिंह और सुरेन्द्रसिंह घोड़े पर सवार हो कुमारी चन्द्रकान्ता की पालकी आगे कर फाटक के बाहर हुए[1]। दोनों महाराजों के बीच दोनों हाथों से घोड़ों की रिकाब पकड़े हुए जीतसिंह बातें करते और इनके पीछे कुँवर वीरेन्द्रसिंह अपने ऐयारों को चारों तरफ लिए कन्हैया बने खोह के फाटक की तरफ रवाना हुए।

पहर भर चलने के बाद ये लोग उस लश्कर में पहुँचे जो खोह के दरवाजे पर उतरा हुआ। रात-भर उसी जगह रहकर सुबह को कूच किया। यहाँ से खूबसूरत और कीमती कपड़े पहिरे कहारों ने कुमारी की पालकी उठाई और महाराज जयसिंह के साथ विजयगढ़ रवाना हुए मगर वे लौंडियाँ भी जो आज तक कुमारी के साथ थीं और यहाँ तक उनकी पालकी उठाकर लाई थीं, मुहब्बत की वजह और महाराज सुरेन्द्रसिंह के हुक्म से कुमारी के साथ गईं।

राजा सुरेन्द्रसिंह कुमार को साथ लिए हुए नौगढ़ पहुँचे, कुंवर वीरेन्द्र-सिंह पहिले महल में जाकर अपनी माँ से मिले और कुलदेवी की पूजा कर

1. फाटक के बाहर भी उसी ढंग की दो पुतलियाँ थीं। उसी तरफ बाईं तरफ वाली पुतली का पेट खोल मुट्ठा उलटा घुमाकर फाटक बन्द किया गया।

बाहर आये।

अब तो बड़ी खुशी से दिन गुजरने लगे, आठवें ही रोज महाराज जयसिंह का भेजा हुआ तिलक पहुँचा और धूमधाम से बीरेन्द्रसिंह को चढ़ाया गया।

पाठक, अब तो कुँवर बीरेन्द्रसिंह और चन्द्रकान्ता का वृत्तान्त समाप्त ही हुआ समझिए। बाकी रह गई सिर्फ कुमार की शादी, सो इस वक्त तक सब किस्से को मुख्तसर में लिखकर सिर्फ बारात के लिए कई वर्क कागज के रंगना मुझे मंजूर नहीं। मैं यह नहीं लिखना चाहता कि नौगढ़ से विजयगढ़ तक रास्ते की सफाई की गई, केवड़े के जल से छिड़काव किया गया, दोनों तरफ बिल्लौरी हांडियाँ रोशन की गईं, इत्यादि। आप खुद ख्याल कर सकते हैं कि ऐसे आशिक माशूक की बारात किस धूमधाम की होगी, तिस पर दोनों ही राजा और दोनों ही को एक-एक औलाद! तिलिस्म फतह करने और माल खजाना पाने की खुशी ने और भी दिमाग बढ़ा रखा था। मैं सिर्फ इतना ही लिखना पसन्द करता हूँ।

अच्छी सायत में कुँवर बीरेन्द्रसिंह की बारात बड़े धूमधाम से विजयगढ़ की तरफ रवाना हुई।

बारात को मुख्तसर ही में लिखकर बला टाली मगर एक आखिरी दिल्लगी लिखे बिना जी नहीं मानता, क्योंकि वह पढ़ने के काबिल है।

विजयगढ़ में जनवासे की तैयारी सबसे बढ़ी-चढ़ी थी। बारात पहुँचने के पहिले ही से समा बँधा हुआ था, अच्छी-अच्छी खूबसूरत और गाने के इल्म को पूरे तौर पर जानने वाली रंडियों से महफिल भरी हुई थी, मगर जिस वक्त बारात पहुँची अजब झमेला मचा।

बारात के आगे महाराज शिवदत्त बड़ी तैयारी से घोड़े पर सवार सर-पेच बाँधे कमर में दोहरी तलवार लगाये, हाथ झंडा लिये जनवासे के दरवाजे पर पहुँचे इसके बाद धीरे-धीरे जलूस पहुँचा। दूल्हा बने हुए कुमार घोड़े से उतरकर जनवासे के अन्दर गए।

कुमार बीरेन्द्रसिंह का घोड़े से उतरकर जनवासे के अन्दर जाना था कि बाहर ही हल्ला मच गया। सब कोई देखने लगे कि दो महाराज शिवदत्त आपस में लड़ रहे हैं। दोनों की तलवारें तेजी के साथ चल रही हैं और दोनों ही के मुंह से यही आवाज निकल रही है कि 'हमारी मदद को कोई न आवे, सब दूर से तमाशा देखें।' एक महाराज शिवदत्त तो वहीं थे जो अभी-अभी सरपेच बाँधे हाथ में झण्डा लिए घोड़े पर सवार आये थे और दूसरे महाराज शिवदत्त मामूली पोशाक पहिरे हुए थे मगर बहादुरी के

साथ लड़ रहे थे।

थोड़ी ही देर में हमारे महाराज शिवदत्त को (जो झण्डा उठाये घोड़े पर सवार आये थे) इतना मौका मिला कि कमर में से कमन्द निकाल अपने मुकाबले वाले दुश्मन महाराज शिवदत्त को बाँध लिया और घसीटते हुए जनवासे के अन्दर चले। पीछे-पीछे बहुत-से आदमियों की भीड़ भी इन दोनों को ताज्जुब भरी निगाहों से देखती हुई अन्दर पहुँची।

हमारे महाराज शिवदत्त ने दूसरे साधारण पोशाक पहिरे हुए महाराज शिवदत्त को एक खम्भे के साथ खूब कसकर बाँध दिया और एक मशालची के हाथ से जो उसी जगह मशाल दिखा रहा था मशाल लेकर उनके हाथ में थमा आप कुँवर बीरेन्द्रसिंह के पास जा बैठे। उसी जगह सोने का जड़ाऊ बर्तन गुलाबजल से भरा हुआ रखा था, उसी से रूमाल तर करके हमारे महाराज शिवदत्त ने अपना मुँह पोंछ डाला। पोशाक वही, सरपेच वही, मगर सूरत तेजसिंह बहादुर की !

अब तो हँसी के मारे पेट में बल पड़ने लगा। पाठक, आप तो इस दिल्लगी को खूब समझ गए होंगे, लेकिन अगर कुछ भ्रम हो गया हो तो लिखे देता हूँ।

हमारे तेजसिंह अपने कौल के मुताबिक महाराज शिवदत्त की सूरत बन सरपेच (फतह का सरपेच जो देवीसिंह लाए थे) बाँध झण्डा ले कुमार की बारात के आगे-आगे थे, उधर असली महाराज शिवदत्त भी जो महाराज सुरेन्द्रसिंह से जान बचा तपस्या का बहाना कर जंगल में चले गए थे कुँवर बीरेन्द्रसिंह की बारात की कैफियत देखने आए। फकीरी करने का तो बहाना ही था असल में तो तबीयत से बदमाशी और खुटाई गई नहीं थी।

महाराज शिवदत्त बारात की कैफियत देखने आये मगर आगे-आगे झण्डा हाथ में लिए अपनी सूरत देख समझ गए कि किसी ऐयार की बदमाशी है। क्षत्रीपन का खून जोश में आ गया, गुस्से को सम्हाल न सके, तलवार निकालकर लड़ ही तो गए। आखिर नतीजा यह हुआ कि उनको महफिल में मशालची बनना पड़ा और कुँवर बीरेन्द्रसिंह की शादी खुशी-खुशी कुमारी चन्द्रकान्ता के साथ हो गई। □□